CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

72

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५२३

5262

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय अभिलेख

एस. एस. राणा
एम. ए., पी-एच डी.
प्रिंसिपल, शिवाजी कालेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

भारतीय विद्या प्रकाशन
दिल्ली (भारत) वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :

भारतीय विद्या प्रकाशन

१. १-यू. बी. जवाहर नगर, बैंगलो रोड, दिल्ली-७
२. पोस्ट बॉक्स १०८, कचौड़ी गली वाराणसी-१

© लेखक

State Museum Library • Lucknow •

5262

प्रथम संस्करण : अगस्त १९७८

मूल्य : ५०.०० (राज-संस्करण)
३०.०० (सामान्य-संस्करण)

मुद्रक :
निरुपमा प्रिंटर्स
लड्डू घाटी, पहाड़गंज
नई दिल्ली-५५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्राद्यायै स्वभार्यायै
प्रभायै परितुष्टये ।
हितेषु तत्परायै मे
कृतिमिमां समर्पये ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के स्रोतों में अभिलेखों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अशोक के काल से लेकर एक समृद्ध अभिलेख परम्परा का हमें ज्ञान है। अनेक सहस्र अभिलेख उपलब्ध एवं प्रकाशित हो चुके हैं। नए नए अभिलेख प्रकाश में आ रहे हैं और अतीत के हमारे ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं।

प्राचीन काल में भारतीयों की इतिहास-दृष्टि नहीं थी—इस आरोप को मिथ्या सिद्ध करने के लिए अभिलेख प्रबल साक्ष्य हैं। सम्राट् अशोक ने अभिलेखों में स्वयं अपने बारे में तो जानकारी दी ही है साथ ही अपने समकालीन पड़ोसी राजाओं के नाम भी दिए हैं जिनके शासन काल की तिथियां हमें अन्य प्रमाणों से ज्ञात हैं। इस से अशोक के शासनकाल को निश्चित करने में सहायता मिलती है। खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख एक मात्र स्रोत है जिससे हमें कलिंग के इस प्रतापी राजा का विस्तृत विवरण मिलता है। हरिषेण रचित इलाहाबाद प्रशस्ति में गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के विजय अभियानों एवं उसके व्यक्तित्व का विशद चित्रण है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। पुलिकेशी (द्वितीय) के एहोले अभिलेख से हर्ष-पुलिकेशी सम्बन्ध पर प्रकाश पड़ता है। स्कन्दगुप्त के गिरनार तथा भिटारी अभिलेखों से तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का पता चलता है। गुप्त साम्राज्य के ह्रासकाल में उदीयमान मध्य-भारतीय सम्राट् यशोधर्मन् की जानकारी हमें केवल उसके अभिलेखों से ही होती है।

तिथि-युक्त अभिलेखों से हमें अनेक राजाओं के शासनकाल निर्धारित करने में सहायता मिलती है। गुप्त संवत् ६१ के मथुरा अभिलेख से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त (द्वितीय) गुप्त संवत् ५६ में सिंहासनारूढ़ हुए। गुप्त संवत् ९३ के साँची अभिलेख से पता चलता है कि इस वर्ष वे शासन कर रहे थे। गुप्त संवत् ९६ के बिलसड़ अभिलेख के समय कुमारगुप्त (प्रथम) राजा थे। इन अभिलेखों से हम इन दोनों राजाओं के शासनकाल का लगभग निर्धारण कर सकते हैं। गुप्त संवत् १६५ के बुधगुप्त-कालीन एरण अभिलेख तथा तोरमाण-कालीन एरण अभिलेख की तुलना से हम भारत में हूण राज्य स्थापना का काल निश्चित कर पाते हैं। अफसद अभिलेख में उत्तरवर्ती गुप्त वंश के राजा कुमारगुप्त (द्वितीय) तथा मौखरि राजा ईशानवर्मन् की समकालीनता है। हड़ाहा अभिलेख से ईशानवर्मन् की एक तिथि ६११ विक्रम संवत् ज्ञात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है । इन साक्ष्यों से हम उत्तरवर्ती गुप्त वंश के प्रादुर्भाव-काल का अनुमान लगा सकते हैं ।

संस्कृत साहित्य के विकास क्रम को जानने एवं काल निर्धारण करने में अभिलेखों का महत्त्वपूर्ण योगदान है । शक संवत् ७२ का गिरनार अभिलेख अलंकृत गद्यकाव्य का सुन्दर उदाहरण है । यह संस्कृत भाषा में सबसे पुराना लम्बा लेख है । समुद्रगुप्त की हरिषेण-रचित इलाहाबाद प्रशस्ति चम्पू काव्य का सुन्दर नमूना है । पट्टवाय श्रेणि के मन्दसौर अभिलेख के रचयिता वत्स-भट्टि पर कालिदास का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । ५५६ शक संवत् के एहोले अभिलेख में रविकीर्ति ने कालिदास और भारवि का उल्लेख किया है । इससे हमें इन दोनों कवियों के काल की अवरसीमा ज्ञात हो जाती है । गुप्त संवत् २१४ के शर्वनाथ के खोह ताम्र-पट्ट अभिलेख में महाभारत को शतसाहस्री संहिता कहा गया है । इससे ज्ञात होता है कि गुप्त संवत् २१४ (५३३-३४ ईसवी) तक महाभारत का वर्तमान कलेवर बन चुका था ।

प्राचीन भारत के आर्थिक जीवन के विषय में भी अभिलेखों से पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है । भूमिदान के शासनों से कर व्यवस्था का पता चलता है । भू-राजस्व से सम्बन्धित विभिन्न सरकारी अधिकारियों का उल्लेख दान-पट्टों में मिलता है । श्रेणि, निगम आदि व्यापारी संघों तथा उनके आर्थिक कार्य-कलापों का भी वर्णन इन में किया गया है । कृषि के विकास पर भी ये अभिलेख प्रकाश डालते हैं । रुद्रदमन् और स्कन्दगुप्त के गिरनार के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि प्रचीन काल में राज्य की ओर से सिंचाई की व्यवस्था की जाती थी ।

धार्मिक अवस्था का चित्रण करने के लिए भी अभिलेखों में प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध होती है । वास्तव में मन्दिर निर्माण मूर्ति स्थापना, मन्दिर या मूर्ति के लिए स्थायी दान अथवा कोई अन्य धार्मिक अनुष्ठान असंख्य अभिलेखों के विषय हैं । प्रायः प्रशस्तियों के मंगल श्लोकों में विभिन्न आराध्य-देवों की स्तुति की गई है । यशोधर्मन् के मन्दसौर स्तम्भ अभिलेख में हूण राजा मिहिरकुल को शिव का उपासक कहा गया है । बेसनगर गरुड़ स्तम्भ अभिलेख में यूनानी राजदूत हेलियोदोरस को भागवत की संज्ञा दी है । कुषाण राजाओं के अभिलेख व मुद्रालेखों से उनके द्वारा विभिन्न भारतीय धर्म-सम्प्रदाय अपनाए जाने का पता चलता है । शक राजाओं के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उन्होंने भारतीय संस्कृति को अपनाया था । इस प्रकार अभिलेखों के अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट है । अभिलेखों के महत्त्व को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ध्यान में रखते हुए भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रमों में विभिन्न कालों के अभिलेख निर्धारित किए हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में इस पाठ्य-क्रम को संस्कृत विभाग में प्रथमतः संयोजित करने का श्रेय श्री साधुराम को जाता है। अध्यापन करते हुए मुझे उपयुक्त अभिलेखों के एकत्र उपलब्ध न होने की कमी अनुभव हुई। जो ग्रन्थ उपलब्ध थे उनमें या तो नवीनतम पाठशोध नहीं थे या वे इतनी लापरवाही से छापे गए थे कि छात्रों के लिए उन पर निर्भर करना घातक था। हाँ, दिनेश चन्द्र सरकार का ग्रन्थ Select Inscriptions Bearing on Ancient Indian History and Civilisation एक अपवाद है परन्तु उसका प्रथम भाग ही छपा है जिसमें छठी शताब्दी तक के ही अभिलेख समाविष्ट हैं। अतः कुछ वर्ष पूर्व मैंने अभिलेखों का एक प्रतिनिधि संग्रह तैयार करने का निश्चय किया। इसके लिए आवश्यक था कि पूर्व प्रकाशित अभिलेखों के प्रतिचित्रों की परीक्षा करके संदिग्ध स्थलों के पाठ निर्धारित करूँ। अनेक विद्वानों द्वारा विभिन्न शोध पत्रिकाओं में दिए सुझावों की परीक्षा करूँ यह भी वाञ्छनीय था। इस प्रक्रिया में कुछ समय लगा परन्तु मुझे सन्तोष है कि यह कार्य पूर्ण हो सका और ग्रंथ पाठकों के सम्मुख है।

इस ग्रंथ में अभिलेख चार खण्डों में विभाजित हैं। प्रथम खण्ड में अशोक के अभिलेख लिए गए हैं। द्वितीय खण्ड में अशोक के काल के बाद से गुप्त-काल आरम्भ होने तक के अभिलेख सम्मिलित हैं। तृतीय खण्ड में गुप्त वंश के प्रमुख राजाओं के तथा अन्य समकालीन शासकों के अभिलेख हैं। चतुर्थ खण्ड में गुप्तकाल के बाद के अभिलेख हैं जिनमें मुख्यतया मौखरि, मैत्रक, उत्तरवर्ती गुप्त एवं हर्षके अभिलेखों का समावेश है। अन्त में परिशिष्ट में कुछ प्रकीर्ण अभिलेख दे दिये गए हैं। अभिलेखों के आरम्भ में संक्षिप्त परिचय हैं तथा यथासंभव संदर्भ भी दिए गए हैं जिससे पाठकों को अभिलेखों की विस्तृत चर्चा उपलब्ध हो सके। ग्रन्थ के अन्त में बारह चित्रफलक दिए गए हैं जिनमें विभिन्न कालों के प्रतिनिधि अभिलेखों के प्रतिचित्र हैं। आशा है इनसे पाठकों को लिपि अभ्यास करने में सहायता मिलेगी।

इस संग्रह को तैयार करने में मैं अनेक विद्वानों की कृतियों से उपकृत हुआ हूँ उन सबके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ। श्री साधुराम ने समय-समय पर मुझे अपने सत्परामर्श से उपकृत किया है। मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। अनेक मित्रों ने अपनी शुभाशंसाओं से ग्रन्थ तैयार करने में मुझे प्रोत्साहित किया है। मैं उन सभी का आभारी हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'भारतीय विद्या प्रकाशन' के मालिक श्री किशोरचन्द जैन ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सारा भार लेकर मुझे कृतार्थ किया है। इसके लिए वे मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

मुद्रण में सावधानी रखने पर भी अनेक त्रुटियाँ रह गई हैं। शुद्धिपत्र में उन्हें दूर करने का प्रयास किया गया है। फिर भी कुछ त्रुटियाँ शेष रह गई हों तो विज्ञ पाठक क्षमा करेंगे।

शिवाजी कालेज, नई दिल्ली। **—एस. एस. राणा**

१६ अगस्त, १९७८।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रम

प्रस्तावना [७]

चित्रफलक-सूची [१५]

संक्षेप-सूची [१७]

ब्राह्मी लिपि की तालिका [१९]

खण्ड १ : अशोक के अभिलेख

१-१४. प्रधान शिला अभिलेख (१-१४) १-३१

१५-२१. प्रधान स्तम्भ अभिलेख (१-७) ३२-५२

२२. बैराट लघु शिला-फलक अभिलेख ५३

२३. गुजर्रा लघु शिला अभिलेख ५६

२४. रुम्मिनदेई स्तम्भ अभिलेख ५८

खण्ड २ : मौर्योत्तर-कालीन अभिलेख

१. हेलियोदोरस का बेसनगर गरुड-स्तम्भ अभिलेख ६१

२. धनदेव का अयोध्या अभिलेख ६३

३. पभोसा गुहा अभिलेख ६४

४. शिनकोट (बजौर) में मिनेन्द्र-कालीन अभिलेख ६६

५. मेरिडर्ख थियोडोरस का स्वात अभिलेख ६८

६. शोडास-कालीन मथुरा अभिलेख ६९

७. पतिक का तक्षशिला ताम्र-पट्ट अभिलेख ७०

८. गोण्डोफर्नीस का तख्ते-बाही अभिलेख ७२

९. कलवान ताम्र-पट्ट अभिलेख ७४

१०. तक्षशिला रजत-पट्ट अभिलेख ७६

११. कनिष्क-कालीन सारनाथ बौद्ध-प्रतिमा अभिलेख ७८

१२. कनिष्क-कालीन सुई विहार ताम्र-पट्ट अभिलेख ८०

१३. कनिष्क-कालीन जेदा अभिलेख ८२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. कनिष्क-कालीन माणिकियाला अभिलेख ८३
१५. कनिष्क-कालीन सेत-महेत प्रतिमा अभिलेख ८५
१६. हुविष्क का मथुरा प्रस्तर अभिलेख ८६
१७. कनिष्क (द्वितीय)-कालीन आरा भिलेख ८८
१८. हुविष्क-कालीन खवत (वदंक) अभिलेख ९०
१९. नहपान-कालीन नासिक गुहा अभिलेख ९२
२०. नहपान-कालीन कार्लें-गुहा अभिलेख ९५
२१. अन्धाऊ में चष्टन एवं रुद्रदामन्-कालीन अभिलेख ९७
२२. रुद्रदामन् का गिरनार अभिलेख १००
२३. श्रीधरवर्मन् का साँची अभिलेख १०४
२४. नाँदसा यूप अभिलेख १०६
२५. श्री यज्ञशातकर्णि-कालीन नासिक गुहा अभिलेख १०८
२६. नानाघाट में नागम्निका का गुहा अभिलेख ११०
२७. गौतमीपुत्र शातकर्णि का नासिक गुहा अभिलेख ११६
२८. वासिष्ठीपुत्र पुलुमायी का नासिक गुहा अभिलेख ११८
२९. खारवेल का हाथी-गुम्फा अभिलेख १२३
३०. भद्रमघ-कालीन कोसम प्रस्तर-खण्ड अभिलेख १३१

खण्ड ३ : गुप्त-कालीन अभिलेख

१. समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख १३४
२. समुद्रगुप्त-कालीन एरण स्तम्भ अभिलेख १३९
३. चन्द्रगुप्त (द्वितीय)-कालीन मथुरा स्तम्भ अभिलेख १४२
४. चन्द्रगुप्त (द्वितीय)-कालीन साँची स्तूप-प्राचीर अभिलेख १४४
५. चन्द्रगुप्त (द्वितीय)-कालीन उदयगिरि गुहा अभिलेख १४६
६. चन्द्र का महरौली लोह-स्तम्भ अभिलेख १४७
७. कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन बिलसड स्तम्भ अभिलेख १४९
८. कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन उदयगिरि गुहा अभिलेख १५१
९. कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन करमदाण्डा अभिलेख १५३
१०. कुमारगुप्त (प्रथम) का दामोदरपुर ताम्र-पट्ट अभिलेख (संवत् १२४) १५५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११. कुमारगुप्त (प्रथम) का दामोदरपुर ताम्र-पट्ट अभिलेख (संवत् १२८) १५७
१२. स्कन्दगुप्त का गिरनार अभिलेख १५९
१३. स्कन्दगुप्त-कालीन कहाऊँ स्तम्भ अभिलेख १६६
१४. स्कन्दगुप्त-कालीन इन्दौर ताम्र-पट्ट अभिलेख १६८
१५. स्कन्दगुप्त का भिटारी स्तम्भ अभिलेख १७१
१६. बुधगुप्त-कालीन सारनाथ बुद्ध-प्रतिमा अभिलेख १७४
१७. बुधगुप्त-कालीन एरण स्तम्भ अभिलेख १७५
१८. पट्टवाय-श्रेणि का मन्दसौर अभिलेख १७७
१९. कुमारगुप्त (द्वितीय) का भिटारी मुद्रा लेख १८४
२०. वैण्यगुप्त का गुणैघर ताम्र-पट्ट अभिलेख १८६
२१. गोपराज का एरण स्तम्भ अभिलेख १९१
२२. प्रभावतीगुप्ता का पूना ताम्र-पट्ट अभिलेख १९२
२३. प्रभावतीगुप्ता का रिथपुर ताम्र-पट्ट अभिलेख १९५
२४. प्रवरसेन (द्वितीय) का चम्मक ताम्र-पट्ट अभिलेख १९८
२५. तोरमाण-कालीन एरण वराह-मूर्ति अभिलेख २०४
२६. मिहिरकुल-कालीन ग्वालियर अभिलेख २०६
२७. यशोधर्मन् का मन्दसौर स्तम्भ अभिलेख २०९
२८. यशोधर्मन् (विष्णुवर्द्धन)-कालीन मन्दसौर अभिलेख २१२
२९. प्रभाकर-कालीन मन्दसौर अभिलेख २१७
३०. महाराज हस्तिन् का खोह ताम्र-पट्ट अभिलेख २२०
३१. महाराज संक्षोभ का खोह ताम्र-पट्ट अभिलेख २२४

खण्ड ४ : गुप्तोत्तर-कालीन अभिलेख

१. महानामन् का बोध-गया अभिलेख २२९
२. यशोवर्मदेव-कालीन नालन्दा अभिलेख २३२
३. द्रोणसिंह का भमोद्र-मोहोता ताम्र-पट्ट अभिलेख २३६
४. आदित्यसेन-कालीन शाहपुर सूर्य-प्रतिमा अभिलेख २३९
५. आदित्यसेन का अफसद अभिलेख २४०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. धरसेन(द्वितीय) का मालिया ताम्र-पट्ट अभिलेख २४६
७. विष्णुगुप्त-कालीन मनग्राँव अभिलेख २५१
८. जीवितगुप्त(द्वितीय) का देवबरणार्क अभिलेख २५३
९. शीलादित्य(सप्तम) का अलीना ताम्र-पट्ट अभिलेख २५६
१०. ईश्वर वर्मन् का जौनपुर अभिलेख २६९
११. ईशानवर्मन् का हड़ाहा अभिलेख २७१
१२. शर्ववर्मन् का असीरगढ़ मुद्रा अभिलेख २७६
१३. अनन्तवर्मन् का बराबर गुहा अभिलेख २७८
१४. अनन्तवर्मन् का नागार्जुनी (उत्तरी) गुहा अभिलेख २८०
१५. अनन्तवर्मन का नागार्जुनी (दक्षिणी) गुहा अभिलेख २८२
१६. हर्षवर्धन का बाँसखेड़ा ताम्र-पट्ट अभिलेख २८४
१७ हर्षवर्धन का मधुबन ताम्र-पट्ट अभिलेख २८७
१८. शशाङ्क-कालीन मिदनापुर ताम्र-पट्ट अभिलेख २९०
१९. पुलिकेशी(द्वितीय)का एहोळे अभिलेख २९४
२०. महेन्द्रपाल का पेहवा अभिलेख २९९
२१. वीसलदेव का दिल्ली-टोपरा स्तम्भ अभिलेख ३०३

परिशिष्ट: प्रकीर्ण अभिलेख

१. पिप्रावा अस्थि-कलश अभिलेख
२. वीरदेव का घोसरवा अभिलेख ३०८
३. दन्तिदुर्ग का एलोरा ताम्र-पट्ट अभिलेख ३११
४. विजयसेन का देवपारा अभिलेख ३१४

शुद्धि-पत्र ३२१

चित्रफलक-१-१२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रफलक-सूची

१. अशोक के गिरनार शिला अभिलेख १-२

२. अशोक के गिरनार शिला अभिलेख ३-४

३. अशोक के दिल्ली-टोपरा स्तम्भ अभिलेख १-३

४. समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख

५. कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन उदयगिरि गुहा अभिलेख

६. स्कन्दगुप्त-कालीन कहाऊँ अभिलेख

७. यशोधर्मन्-कालीन मन्दसौर अभिलेख

८. महानामन् का बोधगया अभिलेख

९. धरसेन (द्वितीय) का मालिया ताम्र-पट्ट अभिलेख

१०. अनन्तवर्मन् का बराबर गुहा अभिलेख

११. अनन्तवर्मन् का नागार्जुनी (उत्तरी) गुहा अभिलेख

१२. अनन्तवर्मन् का नागार्जुनी (दक्षिणी) गुहा अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संक्षेप-सूची

ABORI—Annals of Bhandarkar Oriental Research Institute.
AO —Acta Orientalia.
ASI, AR—Archaeological Survey of India, Annual Report.
ASWI —Archaeological Survey of Western India.
CII —Corpus Inscriptionum Indicarum.
EHVS —Early History of Vaiṣṇava Sects.
EI —Epigraphia Indica.
HLI —Historical and Literary Inscriptions.
IA —Indian Antiquary.
IC —Indian Culture.
IHQ —Indian Historical Quarterly.
IS —Indological Studies (Journal of the Deptt. of Sanskrit University of Delhi).
JA —Journal Asiatique
JAIH —Journal of Ancient Indian History.
JASB or JBAS—Journal of Asiatic Society of Bengal.
JBBRAS—Journal of the Bombay Branch of Royal Asiatic Society.
JBORS —Journal of the Bihar and Orissa Research Society.
JGNJRI or JGJRI—Journal of Ganga Nath Jha Research Institute.
JIH —Journal of Indian History.
JNSI —Journal of the Numismatic Society of India.
JOR —Journal of Oriental Research.
JPASB (NS)—Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal (New Series).
JRAS —Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

JRASBL—Journal of the Royal Asiatic Society of Bengal, Letters.

KURJ —Kurukshetra University Research Journal.

MASB —Memoirs of the Asiatic Society of Bengal.

NIA —New Indian Antiquary.

PASB —Proceedings of the Asiatic Society of Bengal.

PIHC —Proceedings of the Indian History Congress.

SI —Seclect Inscriptions Bearing on Ancient Indian History and civilisation.

SSI —Selections from Sanskrit Inscriptions.

VIJ —Visvesvaranand Indological Journal.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मी लिपि की तालिका

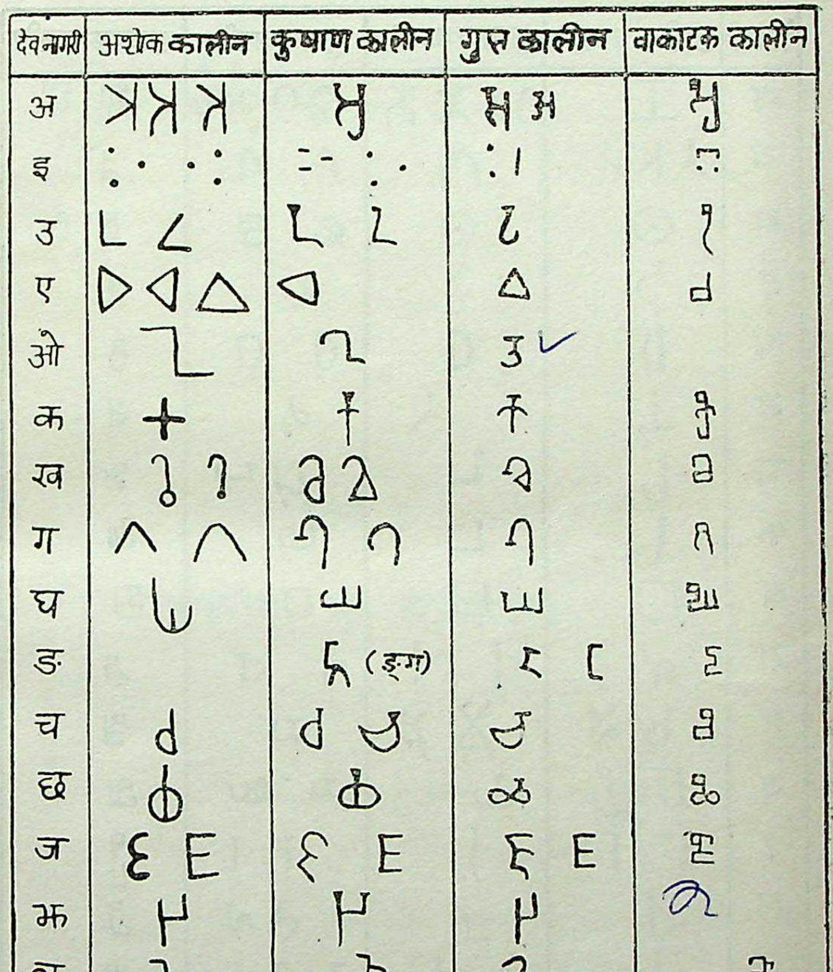

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

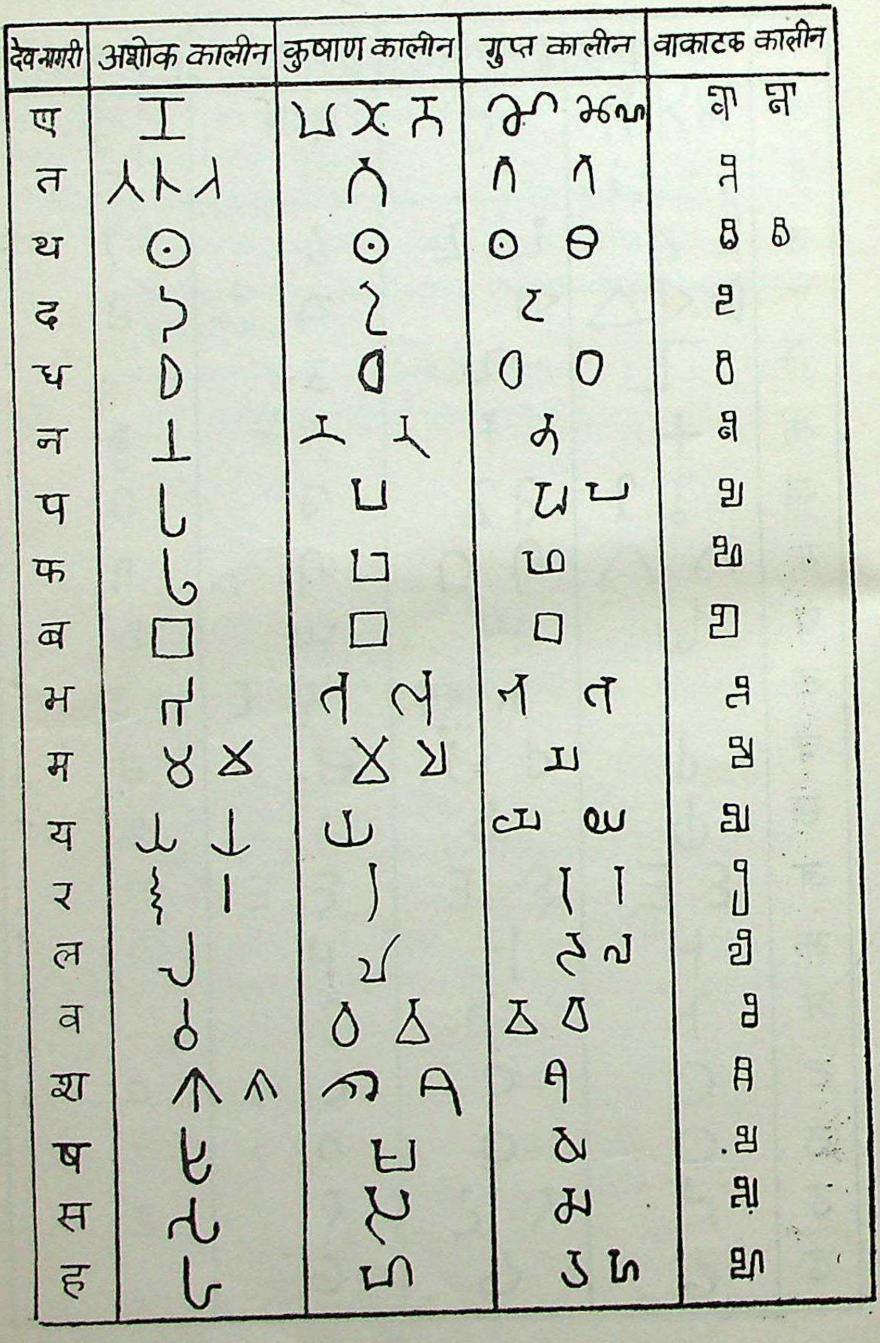

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खण्ड १

अशोक के अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रधान शिला अभिलेख

(गिरनार शिला)

गुजरात के जूनागढ़ नगर से लगभग दो किलोमीटर पूर्व को गिरनार नामक पहाड़ी की एक शिला के पूर्वोत्तरी भाग पर अशोक के चौदह अभिलेख उत्कीर्ण हैं। इन में से प्रथम पाँच शिला के बाएँ आधे भाग में तथा तथा छटे से बारहवें तक दाएँ आधे भाग में उत्कीर्ण हैं। तेरहवाँ एवं चौदहवाँ नीचे हैं। इन अभिलेखों को पृथक सूचित करने के लिए बीच में रेखाएँ दी गई हैं। सड़क बनाने के लिए बारूद से शिला उड़ा देने से पाँचवें और तेरहवें अभिलेखों के कई अंश खण्डित हो गए हैं।

इन अभिलेखों की लिपि प्राचीन ब्राह्मी है जो अशोक के काल में समस्त भारत में प्राचलित थी। भारत की प्रायः सभी परवर्ती लिपियाँ इसी लिपि से विकसित हुई हैं। अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम पढ़ने का श्रेय जेम्स प्रिंसेप को जाता है। उनके बाद अनेक विद्वानों ने इन अभिलेखों के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित की है। इनमें कनिंघम (CII, I), हुल्श, (CII, I), भण्डारकर (अशोक), बरुआ (अशोक एण्ड हिज़ इन्सक्रिप्शन्स), आर० के० मुकर्जी (अशोक), राजबली पाण्डेय (अशोक के अभिलेख), रोमिला थापर (अशोक एण्ड दी डिक्लाइन ऑफ दी मौर्याज़) इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथम शिला अभिलेख

विषय : यज्ञ में पशु बलि का निषेध। हिंसापरक 'समाजों' पर प्रतिबन्ध। अशोक के अपने रसोई घर में भी मांस पकाने में कटौती तथा भविष्य में मांस के लिए कोई भी जीव न मारने का संकल्प।

संदर्भ : मणीन्द्र मोहन बोस, IHQ, 4, 1928, pp. 110-23; एन॰ जी॰ मजुमदार, समाज, IA, 47, 1918, pp. 1-23

१. इयं धंमलिपी देवानंप्रियेन
इयं धर्मलिपिः देवानांप्रियेण

२. प्रियदसिना राञा लेखापिता इध न कि-
प्रियदर्शिना राज्ञा लेखिता। इह न क-

३. चि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं
श्चित् जीवः आलभ्य प्रहोतव्यः,

४. न च समाजो कतव्यो बहुकं हि दोसं
न च समाजः कर्तव्यः। बहुकं हि दोषं

५. समाजम्हि पसति देवानंप्रियो प्रियदसि राजा
समाजे पश्यति देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा।

६. अस्ति पि तु एकचा समाजा साधुमता देवानं-
सन्ति अपि तु एके[1] समाजाः साधु-मताः देवानां-

---

१. सरकारः एकत्या : (=एकविधाः =केचित्)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. प्रियस प्रियदसिनो राञो पुरा महानसम्हि[1]
प्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः। पुरा महानसे

८. देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो अनुदिवसं ब-
देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञो अनुदिवसं ब-

९. हूनि प्राणसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय
हूनि प्राण-शत-सहस्राणि आलभ्यन्त सूपार्थाय।

१०. स अज यदा अयं धंमलिपि लिखिता ती एव प्रा-
तत् अद्य यदा इयं धर्मलिपिः लिखिता, त्रयः एव प्रा-

११. णा आरभरे सूपाथाय द्वो मोरा एको मगो सो पि
णाः आलभ्यन्ते सूपार्थाय—द्वौ मयूरौ, एकः मृगः, सः अपि

१२. मगो न ध्रुवो[2] एते पि त्री प्राणा पछा न आरभिसरे
मृगः न ध्रुवः। एते अपि त्रयः प्राणाः पश्चात् न आलप्स्यन्ते।

---

१. महानसेम्हि उत्कीर्ण है। संभवतः पहले शुद्ध 'संस्कृत 'महानसे' उत्कीर्ण किया गया। पश्चात् 'म्हि' जोड़कर प्राकृत रूप दिया गया।

२. सेनार्ट, तथा सरकार : ध्रुवो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीय शिला अभिलेख

विषय : राज्य में सर्वत्र तथा पड़ोसी राज्यों में जन कल्याण के हेतु औषधि उगाने, मार्गों पर छायादार पेड़ लगवाने तथा कुएँ खुदवाने का वर्णन ।

संदर्भ : एस०के० आयंगर : सतियपुत्र, JIH, 14, 1935, pp. 276-79, पी०जे० थोमा : दी आइडेण्टीफिकेशन ऑफ सत्यपुत्र, JRAS, 1923, pp. 411-14; वी० आर०आर० दीक्षितार : दी सतियपुत्रस्, सातकर्णीस् एण्ड नासत्यस्, इण्डोयूरोपियन, 2, 1936, pp. 549-56

१. सर्वत विजितम्हि देवानंप्रियस प्रियदसिनो[१] राञो

सर्वत्र विजिते देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः,

२. एवमपि प्रचंतेसु यथा चोडा पाडा सतियपुतो केतलपुतो[२] आतंब-

एवमपि प्रत्यन्तेष यथा चोलाः, पाण्ड्याः, सत्य-पुत्रः, केरल-पुत्रः आताम्र -

३. पंणी अंतियको योनराजा ये वा पि तस अंतियकस सामीपा[३]

पर्णि, अन्तियकः योनराजः, ये वा अपि तस्य अन्तियकस्य सामीपाः

---

१. सरकार : पियादसिनो ।

२. केरलपुतो पढें । केललपुते (कालसी), केरडपुत्रो (शाहाबाजगढ़ी) केरलपुत्र (मानसेहरा) ।

३. ब्यूलर : सामीनं; संशोधन, सामंता । हुल्श : पहले सामंता उत्कीर्ण, फिर सामीपं (या सामीहा) में परिवर्तित ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. राजानो सर्वंत देवानंप्रियस प्रियदसिनो रात्रो द्वे
राजानः—सर्वत्र देवानांप्रिययस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः द्वे
चिकीछा कता
चिकित्से कृते,

५. मनुसचिकीछा च पसुचिकीछा च ओसुढानि च यानि
मनुष्य-चिकित्सा च पशु-चिकित्सा च । ओषधयः च याः
मनुसोपगानि च
मनुष्योपगाः च

६. पसोपगानि च यत-यत नास्ति सर्वंत्र[1] हारापितानि च
पशूपगाः च यत्र यत्र न सन्ति, सर्वत्र हारिताः च
रोपापितानि च
रोपिताः च ।

७. मूलानि च फलानि च यत-यत नास्ति[2] सर्वत्र[3] हारापितानि च
मूलानि च फलानि च यत्र यत्र न सन्ति, सर्वत्र हारितानि च
रोपापितानि च
रोपितानि च

८. पंथेसू कूपा च खानापिता व्रछा च रोपापिता परिभोगाय
पथिषु कूपाः च खानिताः, वृक्षाः च रोपिताः परिभोगाय
पसुमनुसानं
पशु-मनुष्याणाम् ।

---

१. सेनार्ट : सर्वंता; पाण्डेय : सर्वत्रा ।
२. 'ना' के आगे 'स्ति' से पहले 'र' का चिह्न दिखाई देता है ।
३. सरकार तथा पाण्डेय : सर्वंत ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीय शिला अभिलेख

विषय : युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक नामक अधिकारियों को हर पाँचवें वर्ष दौरे पर जाने का आदेश तथा मितव्ययता एवं सन्तुलित संग्रह की आवश्यकता पर बल ।

संदर्भ : जायसवाल : दी टर्म्स अनुसंयान, राजुक एण्ड फार्मर किंग्स इन अशोकस् इन्सक्रिप्शन्स, JBORS, 4, 1918, pp. 36-43; जोन बीम्स : रजुक आॅर लजुक, JRAS, 1895, pp. 66-162; ए० के० बोस : आॅन दी टर्म अनुसंयान, IHQ, 9, 1933, pp. 810-13.

१, देवानंप्रियो पियदसि राजा एवं अह[1] द्बादसवासाभिसितेन[2] मया
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—द्वादश-वर्षाभिषिक्तेन मया
इदं आञपितं
इदम् आज्ञप्तं—

२. सर्वत विजिते मम युता च राजूके च प्रादेसिके च पंचसु पंचसु
सर्वत्र विजिते मम युक्ताः च, रज्जुकाः च, प्रादेशिकाः च पञ्चसु पञ्चसु
वासेसु अनुसं-
वर्षेषु अनुसं-

३. यानं नियातु एतायेव अथाय इमाय धंमानुसस्टिय यथा अञा—
यानाय निर्यान्तु एतस्मायेव अर्थाय—अस्यै धर्मानुशस्तये[3], यथा अन्य—

---

१. आह पढ़ें ।
२. द्वा पढ़ें ।
३. पाण्डेय : धर्मानुशिष्टये ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. य पि कंमाय साधु मातरि च पितरि च सुस्रूसा मितासंस्तुत-
स्मै अपि कर्मणे—साधु मातरि च पितरि च शुश्रूषा; मित्र-संस्तुत-
ञातीनं बाम्हण-
ज्ञातिभ्य: ब्राह्मण-

५. समणानं साधु दानं प्राणानं साधु अनारंभो अपव्ययता
श्रमणेभ्य: साधु दानं, प्राणानां साधु: अनालम्भ:, अल्प-व्ययता
अपभांडता[1] साधु
अल्प-भाण्डता साधु ।

६. परिसा पि युते आञपयिसति गणनायं हेतुतो च व्यंजनतो च
परिषत् अपि युक्तान्[2] आज्ञापयिष्यति गणनायां हेतुत: च व्यञ्जनत: च ।

---

१. पाण्डेय : 'अपभाडता' ।
२. पाण्डेय 'परिसा' का संस्कृत रूप परिषद: (बहुवचन) देते हैं और आञपयिसति का 'आज्ञापयिष्यन्ति'। परन्तु इस बहुवचन ग्रहण की आवश्यकता नहीं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ शिला अभिलेख

विषय : अशोक के प्रयत्नों से प्रजा में धर्माचरण की वृद्धि। भविष्य में भी धर्म की वृद्धि करने का संकल्प।

संदर्भ : यार्ल शार्पेंटियर (Jarl charpentier) : रिमार्क्स ऑन दी रॉक एडिक्ट IV ऑफ अशोक, IHQ, 9, 1933, pp. 76-87; एस० के० आयंगर : अग्निस्कन्ध एण्ड दी फोर्थ रॉक एडिक्ट ऑफ अशोक, IA, 44, 1915, pp. 203-6; साधुराम : इण्टरप्रटेशन ऑफ ए पैसेज इन रॉक एडिक्ट IV ऑफ अशोक, JGJRI, 22, 1966, pp. 111-13.

१. अतिकातं अंतरं बहूनि वाससतानि वढितो एव प्राणारंभो विहिंसा
अतिक्रान्तम् अन्तरं बहूनि वर्ष-शतानि वर्धित एव प्राणालम्भः, विहिंसा
च भूतानं ञातीसु
च भूतानां, ज्ञातिषु

२. अ[सं]प्रतिपती ब्रा[म्ह]णस्रमणानं असंप्रतीपती[1] त[2] अज
असम्प्रतिपत्तिः, ब्राह्मण-श्रमणानाम् असम्प्रतिपत्तिः। तत् अद्य
देवानंप्रियस प्रियदसिनो[3] राञो
देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः

३. धंमचरणेन भेरीघोसो अहो धंमघोसो विमानदसणा[4] च
धर्म-चरणेन भेरी-घोषः अभवत् धर्म-घोषः। विमान-दर्शनात् च
हस्तिद[स]णा च
हस्तिदर्शनात् च,

---

१. 'प' छोटे आकार का पीछे जोड़ा गया है।
२. 'त' पीछे जोड़ा गया है।
३. 'द' पीछे जोड़ा गया है।
४. सरकार : विमानदंसणा; हुल्श तथा पाण्डेय : विमानदर्सणा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. अगिखंधानि च अञानि च दिव्यानि रूपानि दसयित्पा जनं
अग्नि-स्कन्धान् च, अन्यानि च दिव्यानि रूपाणि दर्शयित्वा जनं
यारिये बहूहि वाससतेहि
यादृशं बहुभिः वर्ष-शतैः

५. न भूतपुव[1] तारिसे अज वढिते देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो
न भूत-पूर्वं, तादृशम् अद्य वर्धितं देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः
धंमानुसस्टिया अनारं-
धर्मानुशस्त्या अनालं-

६. भो प्राणानं अविहीसा[2] भूतानं ञातीनं संपटिपती बम्हणसमणानं
भः प्राणानाम् अविहिंसा भूतानां, ज्ञातीनां सम्प्रतिपत्तिः, ब्राह्मण-श्रमणानां
संपटिपती मातरि पितरि
संप्रतिपत्तिः, मातरि पितरि

७. सुस्रुसा थैरसुस्रुसा एस अञे च बहुविधे [धं]मचरणे
शुश्रूषा, स्थविर-शुश्रूषा। एतत् अन्यत् च बहु-विधं धर्म-चरणं

---

१. 'पुवे पढ़ें'।
२. 'ही' पीछे जोड़ा गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचम शिला अभिलेख

विषय : धर्मवृद्धि के हेतु तथा, धार्मिक जनों के हित एवं सुख के लिए 'धर्म-महामात्र' नामक अधिकारियों की नियुक्ति ।

१. देवानंप्रियो पियदसि राजा[1] एवं आह कलाणं दुकरं य[ो]
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवं आह—कल्याणं दुष्करम् यः
[आदिकरो] कलाणेस[2] सो दुकरं करोति
आदि-करः कल्याणस्य सः दुष्करं करोति ।

२. त मया बहु कलाणं कतं त मम पुता च पोता[3] च परं च तेन
तत् मया बहु कल्याणं कृतम् ।तत् मम पुत्राः च पौत्राः च, परं च तेभ्यः
ये मे अपचं आव संवटकपा अनुवतिसरे तथा
यानि मे अपत्यानि यावत् संवर्त-कल्पं अनुवर्तिष्यन्ते तथा,

३. सो सुकतं कासति यो तु एत-देसं पि हापेसति सो [दु]कतं
ते सुकृतं करिष्यन्ति । यः तु एकदेशम् अपि हास्यति सः दुष्कृतं
कासति सुकरं हि पापं अतिकातं अंतरं
करिष्यति । सुकरं हि पापम् । अतिक्रान्तम् अंतरं

---

१. 'रा' के पहले और पीछे एक-एक अक्षर उत्कीर्ण करके काट दिया गया दिखाई देता है ।

२. कलाणस पढ़ें ।

३. ब्यूलर : पोत्रा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. न भूतप्रुवं[1] धंममहामाता नाम त मया तैदस[2]वासाभि[सितेन]
न भूत-पूर्वाः धर्म-महामात्राः नाम। ते मया त्रयोदश-वर्षाभिषिक्तेन
धंममहामाता कता ते सवपासंडेसु व्यापता धंमाधिस्टानाय[3]
धर्म-महामात्राः कृताः। ते सर्वपाषण्डेषु व्यापृताः धर्माधिष्ठानाय

५. ......धंमयुतस च योण[4]कंबो[ज] गंधारानं रिस्टिकपेतेणिकानं
धर्म-युक्तस्य च। योन-कम्बोज-गन्धाराणां राष्ट्रिक-पेतेनिकानां
ये वापि अंञे [अ]पराता भतमयेसु व
ये वा अपि अन्ये अपरान्ताः भृतिमयेषु वा

६. ......[सु]खा[य धंम]युतानं अपरिगोधाय व्यापता ते
सुखाय धर्म-युक्तानां अपरिगोधाय व्यापृताः ते
बंधनबधस[5] पटिविधानाय
बन्धन-बद्धस्य प्रतिविधानाय

७. ......[प्र]जा कताभीकारेसु वा थैरेसु व व्यापता ते
प्रजासु कृताभिकारेषु वा स्थविरेषु वा व्यापृताः ते
पाटलिपुते च बाहिरसु[6] च
पाटलिपुत्रे च बाह्येषु च

८. ......[ये] वा पि मे अञे ञातीका सर्वत व्यापता ते यो अयं
ये वा अपि मे अन्ये ज्ञातिकाः सर्वत्र व्यापृताः ते। यः अयं
धंमनिस्रितो ति वा
धर्मनिश्रितः इति वा

---

१. सेनार्ट (Senart) : पुवं; ब्यूलर : प्रुवं।
२. पाण्डेय : त्रैदस।
३. पाण्डेय : धामधिस्टानाय।
४. ब्यूलर : योन।
५. 'न' पीछे जोड़ा गया है।
६. बाहिरेसु पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९. ......[ते धं]ममहामाता एताय[1] अथाय अयं धंमलिपि लिखिता

ते धर्म-महामात्राः । एतस्मै अर्थाय इयं धर्मलिपिः लिखिता ।

वढीते[2] वढयिसनि चेव देवानंप्रियो

वर्धितं, वर्धयिष्यति चैव देवानांप्रियः

१०. [प्रि]यदसि[3] राजा धंम[च]रणं इदं पुत्रा च पोत्रा च प्रपोत्रा

प्रियदर्शी राजा धर्म-चरणं इदम् । पुत्राः च, पौत्राः च प्रपौत्राः

च देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो

च देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः

११. [प्र]वधयिसंति इदं [धं]मचरणं आव सवटकपा[4] धंमम्हि

प्रवर्धयिष्यन्ति इदं धर्म-चरणं यावत् संवर्तकल्पं, धर्मे

सीलम्हि तिस्टंतो [धं]मं अनुसासिसंति

शीले तिष्ठन्तः धर्मम् अनुशासिष्यन्ति ।

१२. [ए]स हि सेस्टे कंमे य धंमानुसासनं धमंचरणे पि न भवति

एतत् हि श्रेष्ठं कर्म यत् धर्मानुशासनम् । धर्मचरणम् अपि न भवति

असीलस [त] इमम्हि अथम्हि

अशीलस्य । तत् अस्मिन् अर्थे

---

१. 'य' पीछे जोड़ा गया है ।
२. सरकार तथा पाण्डेय : वढिते ।
३. पाण्डेय : प्रियद्रसि ।
४. ब्यूलर : संवटकपा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३. [व]धी च अहीनी च साधु एताय अथाय[1] इदं लेखापितं
वृद्धिः च अहीनिः च साधु। एतस्मै अर्थाय इदं लेखितम्
इमस अथ[स] वधि युजंतु हीनि[2] च
अस्य अर्थस्य वृद्धिः युज्यतां, हीनिः च

१४. [नो] लोचेतव्या द्बादसवासाभिसितेन[3] देवानंप्रियेन
नो रोचयितव्या। द्वादश-वर्षाभिषिक्तेन देवानांप्रियेण
प्रियदसिना राञा इदं लेखितं
प्रियदर्शिना राज्ञा इदं लेखितम्।

---

१. 'था' और 'य' के बीच तीन अक्षर उत्कीर्ण करके मिटाये गए प्रतीय होते हैं।
२. 'हि' और 'नि' के बीच एक अक्षर उत्कीर्ण करके मिटाया गया प्रतीत होता है।
३. द्वादस—पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठ शिला अभिलेख

विषय : राज्य-कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रतिवेदकों की नियुक्ति और इस लोक और परलोक में प्रजा के हित की इच्छा।

संदर्भ : के पी. जायसवाल : दि राक एडिक्ट VI ऑफ अशोक, IA, 42, 1913, pp. 282-84; वासुदेवशरण अग्रवाल, 'वचसि' इन रॉक एडिक्ट VI ऑफ अशोक, IHQ, 15, 1939, pp. 143-46.

१. देवा[नंप्रियो पियदसि] राजा एवं आह अतिक्रातं अंतरं
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवं आह—अतिक्रान्तम् अन्तरं

२. न भूतप्रुव [सवे काले] अथकंमे व पटिवेदना वा त मया
न भूत-पूर्वं सर्वस्मिन् काले अर्थ-कर्मणि[1] वा प्रतिवेदना वा। तत् मया
एवं कतं
एवं कृतम्—

३. सवे काले भुंजमानस मे ओरोधनम्हि गभागारम्हि वचम्हि व
सर्वस्मिन् काले भुञ्जाने मयि, अवरोधने, गर्भागारे, व्रजे वा

४. विनीतम्हि च उयानेसु च सवत्र पटिवेदका स्टिता अथे मे
वैनीतके च, उद्यानेषु च सर्वत्र प्रतिवेदकाः स्थापिताः—अर्थं मे
जनस
जनस्य

५. पटिवेदेथ इति सर्वत्र च जनस अथे करोमि च किंचि मुखतो
प्रतिवेदयत इति, सर्वत्र च जनस्य अर्थं करोमि यत् च किञ्चित् मुखतः

---

१. सरकार : अर्थ-कर्म (=कार्यसम्पादनं)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. आञपयामि स्वयं दापकं वा स्रावापकं वा य वा पुन महामात्रेसु
आज्ञापयामि स्वयं दापकं वा, श्रावकं वा, यत् वा पुनः महामात्रेषु

७. आचायिके[1] आरोपितं[2] भवति ताय अथाय विवादो निझती व
आत्यायिकम् आरोपितं भवति, तस्मै अर्थाय विवादः निध्यात्यां वा
संतो परिसायं
सति परिषदि,

८. आनंतरं पटिवेदेतव्यं मे सर्वत्र सर्वे काले एवं मया आञपितं
अनन्तरं प्रतिवेदितव्यं मे सर्वत्र सर्वस्मिन् काले एवं मया आज्ञप्तम्।
नास्ति हि मे तोसो
नास्ति हि मे तोषः

९. उस्टानम्हि अथसंतीरणाय व क़तव्यमते हि मे सर्वलोकहितं
उत्थाने अर्थ-संतीरणायां वा। कर्तव्य-मतं हि मे सर्व-लोक-हितम्।

१०. तस च पुन एस मूले उस्टानं च अथसंतीरणा च नास्ति हि
तस्य च पुनः एतत् मूलम्—उत्थानं च, अर्थ-संतीरणा च। नास्ति हि
कंमतरं
कर्मतरं

११. सर्वलोकहिततपा य च किंचि पराक्रमामि अहं किंति भूतानं
सर्व-लोक-हितत्वात्। यत् च किञ्चित् पराक्रमे अहं किमिति भूतानाम्
आनंणं गछेयं
आनृण्यं गच्छेयम्,

---

१. सेनार्ट और ब्यूलर : आचायिक।
२. सरकार तथा पाण्डेय : अरोपितं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२. इध च नानि सुखापयामि परत्रा च स्वगं आराधयंतु त[1] एताय

इह च एतान् सुखयामि परत्र च स्वर्गम् आराधयन्तु । तत् एतस्मै

अथाय

अर्थाय

१३. अयं धंमलिपी लेखापिता किंति चिरं तिस्टेय इति तथा च मे

इयं धर्म-लिपिः लेखिता किमिति चिरं तिष्ठेत् इति, तथा च मे

पुत्रा पोता च प्रपोता च

पुत्राः पौत्राः च प्रपौत्रा च

१४. अनुवतरं सवलोकहिताय दुकरं तु इदं अञात्र[2] अगेन

अनुवर्तेरन् सर्व-लोक-हिताय । दुष्करं तु इदम् अन्यत्र अग्रयात्

पराक्रमेन

पराक्रमात् ।

---

१. पाण्डेय 'त' के स्थान पर 'ति' पाठ को अच्छा बताते हैं।

२. सेना तथा ब्यूलर : अञात ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सप्तम शिला अभिलेख

विषय : सभी धार्मिक सम्प्रदायों को परस्पर सहनशीलता, संयम तथा भाव-शुद्धि रखने का उपदेश।

१. देवानंपियो पियदसि राजा सर्वत इछति सवे पासंडा वसेयु सवे
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा सर्वत्र इच्छति सर्वे पाषण्डाः[१] वसेयुः। सर्वे
ते समयं च
ते संयमं च

२. भावसुधि च इछति जनो तु उचावचछंदो उचावचरागो ते सर्वं
भावशुद्धिं च इच्छन्ति। जनः तु उच्चावचच्छन्दः उच्चावचरागः, ते सर्वं
व कासंति एकदेसं व कसंति
वा काङ्क्षन्ति एकदेशं वा करिष्यन्ति।

३. विपुले तु पि दाने यस नास्ति सयमे भावसुधिता व कतंञता व
विपुले तु अपि दाने[२] यस्य नास्ति संयमः भावशुद्धिः वा कृतज्ञता वा,
दढभतिता च निचा बाढं
दृढभक्तिता च[सः]नीचः[३] बाढम्।

---

१. भण्डारकर : पार्षदा :
२. पाण्डेय : विपुलं तु अपि दानं।
३. पाण्डेय : नित्या वा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टम शिला अभिलेख

विषय : विहारयात्रा के स्थान पर धर्मयात्रा का आरम्भ।

संदर्भ : मणीन्द्रमोहन बोस, IHQ, 4, 1928, pp. 110-123.

१. अतिकातं अंतरं राजानो[1] विहारयातां अयासु एत मगव्या
अतिक्रान्तम् अन्तरं राजानः विहार-यात्रां ययुः। अत्र मृगया,
अञानि च एतारिसनि
अन्यानि च एतादृशानि

२. अभीरमकानि अहुंसु सो देवानंप्रियो पियदसि राजा
अभिरमकाणि अभूवन् तद् देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा
दसवसाभिसितो[2] संतो शयाय संबोधि
दश-वर्षाभिषिक्तः सन् अयात् सम्बोधिम्।

३. तेनेसा धंमयाता एतयं होति बाम्हणसमणानं दसणे च दाने च
तेनैषा धर्म-यात्रा। अत्रेदं भवति—ब्राह्मण-श्रमणानां दर्शनं च, दानं च,
थैरानं दसणे च
स्थविराणां दर्शनं च,

४. हिरंणपटिविधानो च जानपदस च जनस दस्पनं[3] धंमानुसस्टी च
हिरण्य-प्रतिविधानं च, जानपदस्य च जनस्य दर्शनं धर्मानुशस्तिः च,
धंमपरिपुछा च
धर्म-परिपृच्छा च

५. तदोपया एसा भुय रति भवति देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो भागे
तदुपगा। एषा भूयः रतिः भवति देवनांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः भागः
अंञे
अन्यः।

---

१. कालसी की प्रति में राजानो के स्थान पर देवानंपिया पाठ मिलता है।

२. पाण्डेय : दसवर्साभिसितो; सरकार : दसवसभिसितो।

३. दसनं पढ़ें। क्या यहां दस्सन अभिप्रेत था?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवम शिला अभिलेख

विषय : विवाह, पुत्रोत्पत्ति तथा ऐसे ही अन्य अवसरों पर विशेष रूप से स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले मंगल-कार्यों को निरर्थक एवं अल्पफल वाले बताकर धर्ममंगल करने का उपदेश दिया जाना।

संदर्भ : मणीन्द्रमोहन बोस, IHQ, 4, 1928, pp. 110-123.

१. देवानंपियो प्रियदसि राजा एव[1] आह अस्ति जनो उचावचं मंगलं
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—अस्ति जनः, उच्चावचं मङ्गलं
करोते आबाधेसु वा
कुरुते। अबाधेषु वा,

२. आवाहवीवाहेसु वा पुत्रलाभेसु वा प्रवासंम्हि[2] वा एतम्हि च
आवाह-विवाहेषु वा, पुत्र-लाभेषु वा, प्रवासे वा—एतस्मिन् च
अञम्हि च जनो उचावचं मंगलं करोते
अन्यस्मिन् च जनः उच्चावचं मङ्गलं कुरुते।

३. एत तु महिडायो बहुकं च बहुविधं च छुदं च निरथं च मंगलं
अत्र तु महिलाः बहुकं च बहु-विधं च क्षुद्रं च, निरर्थं च मङ्गलं
करोते त कतव्यमेव तु मगलं[3] अपफलं तु खो
कुर्वते। तत् कर्तव्यमेव तु मङ्गलम् अल्प-फलं तु खलु

४. एतरिसं[4] मंगलं अयं तु महाफले मंगले य धंममंगले त[ते]त
एतादृशं मङ्गलम्। इदं तु महा-फलं मङ्गलं, यत् धर्म-मङ्गलम्। तत्रैतत्
दासभतकम्हि सम्यप्रतीपती गुरूनं अपचिति साधु
दास-भृतकेषु सम्यक्-प्रतिपत्तिः, गुरूणाम् अपचितिः साधुः,

---

१. ब्यूलर : एवं।
२. प्रवासम्हि पढ़ें।
३. मंगलं पढ़ें।
४. एतारिसं पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. पाणेसु सयमो बम्हणसमणानं साधु दानं एत च अञ च
प्राणेषु संयमः साधुः ब्राह्मण- श्रमणानां साधु दानम्—एतत् च अन्यत् च
एतारिसं धंममंगलं नाम त वतव्यं पिता व
एतादृशं धर्मं-मङ्गलं नाम । तत् वक्तव्यं पित्रा वा,

६. पुत्रेन वा भात्रा व स्वामिकेन वा इदं साधु इदं कतव्य[1] मंगलं
पुत्रेण वा, भ्रात्रा वा, स्वामिकेन वा—इदं साधु, इदं कर्तव्यं मङ्गलं
आव तस अथस निस्टानाय अस्ति च पि वुतं
यावत् तस्य अर्थस्य निष्ठानम्। अस्ति च अपि उक्तं—

७. साधु दन[2] इति न तु एतारिसं अस्ति दानं व अनगहो[3] व
साधु दानम् इति। न तु एतादृशम् अस्ति दानं वा अनुग्रहः वा
यारिसं धंमदानं व धमनुगहो व त तु खु मित्रेन व सुहृदयेन वा
यादृशं धर्म-दानं वा धर्मानुग्रहः वा तत् तु खलु मित्रेण वा सुहृदयेन वा,

८. ञतिकेन व सहायन[4] व ओवादितव्यं तम्हि तम्हि पकरणे[5]
ज्ञातिकेन व सहायेन वा अववदितव्यं तस्मिन् तस्मिन् प्रकरणे—
इदं कचं इदं साधं[6] इति इमिना सक
इदं कृत्यम्, इदं साधु इति अनेन शक्यः

९. स्वगं आराधेतु इति कि च इमिना कतव्यतरं यथा स्वगारधी
स्वर्गः आराधयितुम् इति। किं च अस्मात् कर्तव्यतरं यथा स्वर्गाराधना ?

---

१. ब्यूलर : कतव्यं।
२. दानं पढ़ें।
३. अनुगहो पढ़ें।
४. सहायेन पढ़ें।
५. पकरणे पढ़ें।
६. साधु पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दशम शिला अभिलेख

विषय : अशोक का अपना यश व कीर्ति प्रजा के धर्माचरण एवं पाप परिहार में समझना।

१. देवानंप्रियो[१] प्रियदसि राजा यसो व कीति व न महाथावहा
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा यशः वा, कीर्ति वा न महार्थवहां
मञते[२] अञत तदात्पनो दिघाय च मे जनो
मन्यते अन्यत्र [अस्मात्, तद्यथा] तदात्वे[३] दीर्घाय च मे जनः

२. धंमसुस्रुसा सुस्रुसता धंमवुतं च अनुविधियतां एतकाय देवानं-
धर्म-शुश्रूषां शुश्रूषतां, धर्म-वृत्तं[४] च अनुविधत्ताम्। एतस्मै देवानां-
पियो पियदसि राजा यसो व किति व इछति
प्रियः प्रियदर्शी राजा यशः वा, कीर्ति वा इच्छति।

३. यं तु किचि परिकमते[५] देवानं[६] प्रियदसि राजा त सवं
यत् तु किञ्चित् परिक्रमते देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा, तत् सर्वं
पारत्रिकाय किति सकले अपपरिस्रवे अस एस तु
पारत्रिकाय किमिति सकलः [लोकः] अल्प-परिस्रवः स्यात्। एषः तु
परिसेव[७] य अपुंञं
परिस्रवः, यत् अपुण्यम्

---

१. पांण्डेय : पियो।
२. ब्यूलर : मंञते।
३. पाण्डेय : तदात्मनः।
४. पाण्डेय : धर्मोक्तं।
५. 'क' पर आ-मात्रा चिह्न सा अनावश्यक है।
६. देवानं के आगे 'प्रिय' उत्कीर्ण होने से छूट गया है।
७. सरकार तथा पाण्डेय : परिसवे।

5262

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. दुकरं तु खो एत छुदकेन व जनेन उसटेन व अञत्र अगेन
दुष्करं तु खलु एतत् क्षुद्रकेण वा जनेन, उत्सृतेन[1] वा अन्यत्र अग्रचात्
पराक्रमेन सवं परिचजितपा एत तु खो उसटेन दुकरं
पराक्रमात् सर्वं परित्यज्यं । एतत् तु खलु उत्सृतेन दुष्करम् ।

१. पाण्डेय : उच्छ्रितेन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकादश शिला अभिलेख

विषय : धर्म-दान, धर्म-मित्रता, धर्म-सम्बन्ध की श्रेष्ठता पर बल। धर्म द्वारा इस लोक तथा परलोक में पुण्य प्राप्ति।

संदर्भ : मणीन्द्रमोहन बोस, IHQ, 4, 1928, PP. 110-123

१. देवानंप्रियो[1] पियदसि राजा एवं आह नास्ति एतारिसं दानं
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—नास्ति एतादृशं दानं
यारिसं धंमदानं धंमसंस्तवो वा धंमसंविभागो वा धंमसंबधो[2] च
यादृशं धर्म-दानं, धर्म-संस्तवः वा, धर्म-संविभागः वा, धर्म-संबन्धो वा।

२. तत इदं भवति दासभतकम्हि सम्यप्रतिपती मातरि पितरा[3]
तत्र इदं भवति—दास-भृतकेषु सम्यक्-प्रतिपत्तिः मातरि पितरि
साधु सुस्रुसा मितसस्तुतञातिकानं बाम्हणस्रमणानं[4] साधुदान
साधु-शुश्रूषा, मित्र-संस्तुत-ज्ञातिकेभ्यः ब्राह्मण-श्रमणेभ्यः साधु-दानं,

३. प्राणानं अनारंभो साधु एत वतव्यं पिता व पुत्रेन व भाता व
प्राणानाज् अनालम्भः साधुः। एतत् वक्तव्यं पित्रा वा पुत्रेण वा भ्रात्रा वा
मितसस्तुतञातिकेन व आव पटीवेसियेहि[5] इद साधु इद[6] कतव्यं[7]
मित्र-संस्तुत-ज्ञातिकेन वा, यावत् प्रतिवेशिकैः इदं साधु इदं कर्तव्यम्।

---

१. पाण्डेय : देविनंप्रिय। यद्यपि 'वा' में दीर्घ मात्रा सीधी नहीं है फिर भी यहां 'इ' से अभिप्राय रहा हो ऐसा नहीं लगता।
२. धंमसंबंधी पढ़ें।
३. पितरि पढ़ें।
४. ब्यूलर तथा सेनार्ट : समणानं।
५. पाण्डेय : पटिवेसियेहि। हुल्त्शः पटीवेसियेहि।
६. इदं पढ़ें।
७. पाण्डेय : प्रतिवेश्यैः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. सो तथा करु इलोकचस आरधा होति परत च अनंतं
तत् तथा कृते इह-लौकिकस्य आराधना भवति, परत्र च अनन्तं
पुइञं भवति तेन धंमदानेन
पुण्यं भवति [ए]तेन धर्म-दानेन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chándigarh

द्वादश शिला अभिलेख

विषय : अशोक द्वारा सभी धार्मिक सम्प्रदायों का सम्मान किया जाना तथा सभी सम्प्रदायों की सारवृद्धि की कामना। एक दूसरे के सम्प्रदाय की निन्दा करना छोड़कर उन्नति की कामना करने का उपदेश।

१. देवानंपिये पियदसि राजा सवपासंडानि च पवजितानि च
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा सर्वपाषडान्[१] च प्रव्रजितान् च
घरस्तानि च पूजयति दानेन, च विविधाय[२] च पूजाय
गृहस्थान् च पूजयति, दानेन च विविधया च पूजया
पूजयति ने
पूजयति एनान्

२. न तु तथा दानं व पूजा व देवानंप्रिय मंञते यथा किति
न तु तथा दानं वा पूजां वा देवानांप्रियः मंन्नते यथा किमिति
सारवढी अस सवपासंडानं[३] साखढी तु बहुविधा
सारवृद्धिः स्यात् सर्वपाषण्डानाम्[४]। सारवृद्धिः तु बहुविधा,

३. तस[५] तु इदं मूलं य वचिगुती किंति आतपपसंड पूजा
तस्याः तु इदं मूलं, यत् वचो-गुप्तिः। किमिति ? आत्म पाष५५ पूजा
व परपासंड- गरहा[६] व नो भवे अपकरणम्हि लहुका व अस
वा, पर-पाषण्ड-गर्हा वा नो भवेत् अप्रकरणे, लघुका वा स्यात्

४. तम्हितम्हि प्रकरणे पूजेतया तु एव परपासंडा तेन तेन
तस्मिन्-तस्मिन् प्रकरणे। पूजयितव्याः तु एव पर-पाषडाः तेन तेन

---

१. भण्डारकर : पार्षदान्।
२. पाण्डेय : विवाधाय।
३. पाण्डेय : सबपासंडानं।
४. भण्डारकर : सर्वपार्षदानाम्।
५. पहले 'तस' 'तस' उत्कीर्ण किया गया था। बाद में पहले 'तस' का 'स' तथा पिछले 'तस' का 'त' खुरच दिए गए दिखाई पड़ते हैं।
६. सं बाद में जोड़ा गया है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकरणेन एवं करु आत्पपासंडं च वढयति परपासंडस च
प्रकरणेन । एवं कुर्वन् (जनः) आत्म-पाषण्डं च वर्धयति, पर-पाषण्डस्य च
उपकरोति
उपकरोति;

५. तदंञथा करोतो आत्पपासंडं च छणति परपासंडस च पि
तदन्यथा कुर्वाणः आत्म-पाषण्डं च क्षिणोति, पर-पाषण्डस्य च अपि
अपकरोति यो हि कोचि आत्पपासंडं पूजयति परपासंडं व
अपकरोति । यः हि कश्चित् आत्म-पाषण्डं पूजयति, पर-पाषण्डं वा
गरहति
गर्हति—

६. सवं आत्पपासंडभतिया किंति आत्पपासंडं दीपयेम इति सो च
सर्वम् आत्म-पाषण्ड-भक्त्या, किमिति—आत्म-पाषण्डं दीपयेम इति । सः च
पुन तथ करातो आत्पपासंडं बाढतरं उपहनाति त समवायो एव
पुनः तथा कुर्वाणः आत्म-पाषण्डं बाढतरम् उपहन्ति । तत्, समवायः एव
साधु
साधुः,

७. किंति अंञमंञस धंमं स्रुणारु च सुसुसेर[1] च एवं हि
किमिति (जनाः) अन्योन्यस्य धर्मं शृण्वीरन् च, शुश्रूषेरन् च । एवं हि
देवानं प्रियस इछा किंति सवपासंडा बहुस्रुता च असु
देवानांप्रियस्य इच्छा, किमिति--सर्वपाषण्डाः बहु-श्रुताः च स्युः,
कलाणागमा च असु
कल्याणागमाः च स्युः

८. ये च तत तत प्रसंना तेहि वतव्य्—देवानंपियो नो तथा
ये च तत्र तत्र प्रसन्नाः, तेभ्यः[2] वक्तव्यम्—देवानांप्रियः नो तथा

---

१. पाण्डेय : सुसुंसेर ।
२. पाण्डेय : तैः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दानं व पूजां व मंञते यथा किंति सारवढी अस
दानं वा पूजां वा मन्यते यथा, किमिति ? सार-वृद्धिः स्यात्
सर्व-पासडानं[1] बहुकं च एताय
सर्व-पाषण्डानाम् । बहुकाः च एतस्मै

६. अथा[2] व्यापता धंममहामाता च इथीभखमहामाता
अर्थाय व्यापृताः— धर्ममहामात्राः च स्त्र्यध्यक्षमहामात्राः
च वचभूमीका च अंञे च निकाया अयं च एतस
च वज्रभूमिकाः च अन्ये च निकायाः । इदं च एतस्य
फल य आत्पपासंडवढी च होति धंमस च दीपना
फलं यत् आत्म-पाषण्ड-वृद्धिः च भवति धर्मस्य च दीपना ।

१. पासंडानं पढ़ें ।
२. 'था' के आगे 'य' छूट गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

त्रयोदश शिला अभिलेख

विषय : कलिंग-विजय में जनवध तथा प्राण-हानि पर अशोक का पश्चात्ताप। धर्म-विजय ही वास्तविक विजय है।

संदर्भ : पी० एच०एच० एग्गरमाण्ड : दी डेट ऑफ अशोकस् रॉक एडिक्ट १३, AO, 18, 1940, PP. 103—23 **वी० आर०आर० दीक्षितार : दी थर्टीन्थ रॉक एडिक्ट ऑफ अशोक, वुलनर कॉमेमोरेटिव वॉल्यूम** PP. 25—30

१. [देवानंपियेन पियदसिना रा]ञो कलिंगा विज[ता]
देवानांप्रियेण प्रियदर्शिना राज्ञा[1] कलिङ्गाः विजिताः।……………

[अपवढे] सतसहस्रमात्रं तत्रा हतं बहुतावतकं मतं[1] तता पछा
अपोढं, शत-सहस्र-मात्रं तत्र हतं, बहु-तावत्कं मृतम्। ततः पश्चात्

अधुना[2] लधेसु कलिंगेसु तीवो धंमवायो
अधुना लब्धेषु कलिङ्गेषु तीव्रः धर्म-वातः

२. ………[अनुस]यो देवानंप्रियस विज……वधो व मरणं व
………[अनु]शयः देवानांप्रियस्य विजि[त्य]…वधः वा, मरणं वा

अपवाहो व जनस त बाढं वेदनमतं च गुरुमतं च देवानंपि[य]स
अपवाहः वा जनस्य, तत् बाढं वेदनीय-मतं च, गुरु-मतं च देवानांप्रियस्य

३. ………बाम्हणा व समणा व अञे…[सुसुं]सा मात्रि पितरि
………ब्राह्मणाः वा, श्रमणाः वा, अन्ये……शुश्रूषा, मातरि पितरि

सुसुंसा गुरुसुसुंसा मितसंस्ततसहायञातिकेसु दास[भतकेसु]…
शुश्रूषा, गुरु-शुश्रूषा, मित्र-संस्तुत-सहाय-ज्ञातिकेषु दास-भृ[तकेषु]…

---

१. ब्यूलर : मतं।
२. ब्यूलर : अधना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. ···—अभिरतानं व विनिखमण येसं वा प [स)हाय-
······अभिरक्तानां वा विनिष्क्रमणम् । येषां वा अपि······ सहाय-
ञातिका व्यसनं प्रापुणति तत सो पि तेस उसघातो हाति[1]
ज्ञातिकाः व्यसनं प्राप्नुवन्ति, तत्र तत् अपि तेषां उपघातः भवति ।
पटीभागो चेसा सव[मनुसानं]······
प्रतिभागः चैषः सर्व-मनुष्याणां······

५. ······[अ]स्ति इमे निकाया अञात्र योनेसु··· [जनपद]म्हि यत्र
······सन्ति इमे निकायाः—अन्यत्र यवनेभ्यः······जनपदे यत्र
नास्ति मनुसानं[2] एकतरम्हि पासंडम्हि न नाम प्रसादो यावतको
नास्ति मनुष्याणाम् एकतरे पाषण्डे न नाम प्रसादः । यावत्कः
जनो तदा
जनः तदा

६. ······[सह]स्रभागो व गरुमतो देवानं[पियस]······न य सकं
······सहस्र-भागः वा गुरु-मतः देवानांप्रियस्य···—न यः शक्यः
छमितवे या च पि अटवियो देवानंपियस[3] पिजिते पाति
क्षमितुम् । याः च अपि अटव्यः देवानांप्रियस्य विजिते भवन्ति (?)

७. ······चते तेसं देवानंपियस······सवभूतानं अछति च सयमं
——उच्यते (?)तेषां देवानांप्रियस्य सर्व-भूतानाम् अक्षति च संयमं
च समचैरं[4] च मादव च
च, सम-चर्या च, मार्दवं च,

८. ······लधो ····[देवा]नंप्रियस इध सवेसु च······योनराज परं
लब्धः [देवा]नांप्रियस्य इह सर्वेषु च यवनराजः, परं

---

१. होति पढ़ें ।
२. पाण्डेय : मानुसानं ।
३. पियस के आगे एक अक्षर उत्कीर्ण करके काट दिया गया है ।
४. सम और चैरं के बीच पत्थर त्रुटित है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

च तेन चत्पारो राजानो तुरमायो च अंतेकिन च मगा च
च तस्मात् चत्वारः राजानः तुलमयः च अन्तेकिनः च, मगः च,

९. ······इध राजविसयम्हि योनकंबो[जेसु]······[अं]धपारिंदेसु
इह राज-विषये, यवन-कम्बो[जेषु] [आ]न्ध्र-पारदेषु—
सवत देवानंपियस धंमानुसस्टि अनुवतरे यत पि दूति
सर्वत्र देवानांप्रियस्य धर्मानुशिष्टयः अनुवृत्येरन्। यत्र अपि दौत्यं

१०. ······[विध]नं धमानुसस्टि[५] च थमं अनुविधियरे······विजयो
[विधा]नं धर्मानुशिष्टि च धर्मम् अनुविधीयरन् विजयः
सवथा पुन विजयो पीतिरसो सा[६] लधा सा पीती होति
सर्वथा पुनः विजयः प्रीति-रसः सः। लब्धा सा प्रीतिः भवति
धंमविजयम्हि
धर्म-विजये

११. ······[देवानंप्रि]यो एताय [अथा]य अयं धंम-लि[पि]···
देवानांप्रियः। एतस्मै अर्थाय इयं धर्म-लिपिः
[न]वं विजयं मा विजतव्यं मंञा सरसके एव विजये छाति च
नवं विजयं मा विजेतव्यं मन्येरन् सदृशे एव विजये क्षान्तिः च

१२. ······[इलो]किको च पारलोकिको······इलोकिका च
ऐहलौकिकः च पारलौकिकः ऐहलौकिका च
पारलोकिका[८] च
पारलौकिका च

---

५. धंमानुसस्टिं पढ़ें।

६. ब्यूलर : 'सो'।

७. विजितव्यं पढ़ें।

८. पार तथा लोकिका के बीच शिला त्रुटित है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्दश शिला अभिलेख

विषय : उपसंहार लेख । लेखों में पुनरावृत्ति का कारण ।

१. अयं धंमलिपी देवानंप्रियेन प्रियदसिना राञा लेखापिता अस्ति एव
इयं धर्म-लिपिः देवानांप्रियेण प्रियदर्शिना राज्ञा लेखिता । अस्ति एव

२. संखितेन अस्ति मझमेन अस्ति विसततन[1] न च सर्व सवत घटितं
संक्षिप्तेन, अस्ति मध्यमेन, अस्ति विस्तृतेन । न च सर्वं सर्वत्र घटितं—

३. महालके हि विजितं बहु च लिखितं लिखापयिसं चेव अस्ति च एत कं
महल्लकं हि विजितं, बहु च लिखितं, लेखयिष्यामि चैव । अस्ति च अत्र किञ्चित्

४. पुन पुन वुतं तस तस अथस[2] माधूरताय किं ति जनो तथा पटिपजेथ
पुनः पुनः उक्तं—तस्य तस्य अर्थस्थ मधुरतायै[3] किमिति जनः तथा प्रतिपद्येत ।

५. तत्र एकदा असमातं लिखितं अस देसं व संछाय कारणं व
तत्र एकदा असमाप्तं लिखितं स्यात्—देशं वा संख्याय[4] कारणं वा

६. अलोचेत्पा लिपिकरापरधेन व
आलोच्य लिपिकरापराधेन वा ।

---

१. विस्ततेन पढ़ें ।
२. 'स' पीछे जोड़ा गया है ।
३. पाण्डेय : माधुर्याय ।
४. पाण्डेय तथा सरकार : संक्षयकारणं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्तम्भ अभिलेख

(दिल्ली-टोपरा स्तम्भ)

दिल्ली के कोटला-फीरोज़शाह नामक स्थान पर अशोक का एक स्तम्भ स्थित है। मूलतः यह स्तम्भ हरयाणा के अम्बाला जिले के रोपरा गाँव में स्थित था। फीरोजशाह तुगलक इसे दिल्ली लाए थे। इस स्तम्भ पर अशोक के सात अभिलेख उत्कीर्ण हैं जिनमें से प्रथम छः अन्य पाँच स्तम्भों पर भी प्राप्त होते हैं। इनके अतिरिक्त इस स्तम्भ पर राजा बीसलदेव के तीन अभिलेख हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथम स्तम्भ अभिलेख

विषय : धर्माचरण द्वारा इहलोक और परलोक में कल्याण । विभिन्न अधिकारियों द्वारा प्रजा को धर्माचरण की प्रेरणा और सब कार्य धर्मानुसारकरने का उपदेश ।

१. देवानंपिये पियदसि लाज हेवं आहा—सडुवीसति-
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—षड्विंशति-

२. वस अभिसितेन मे इयं धंमलिपि लिखापिता
वर्षाभिषिक्तेन मया इयं धर्म-लिपिः लेखिता ।

३. हिदतपालते दुसंपटिपादये अंनत अगाया धंमकामताया
ऐहत्रपारत्रं[1] दुःसम्प्रतिपाद्यम् अन्यत्र अग्रयायाः[2] धर्म-कामतायाः,

४. अगाय पलीखाया अगाय सुसूसाया अगेन भयेना[3]
अग्रयायाः परीक्षायाः, अग्रयायाः शुश्रूषायाः, अग्रयात् भयात्,

५. अगेन[4] उसाहेना एस चु खो मम अनुसथिया
अग्रयात् उत्साहात् । एषा तु खलु मम अनुशिष्टिः

६. धंमापेखा धंमकामता चा सुवेसुवे वढिता वढीसति चेवा
धर्मापेक्षा धर्म-कामता च श्वः-श्वः वर्धिता, वर्धिष्यते चैव ।

७. पुलिसा पि च मे उकसा चा गेवया चा मझिमा चा अनुविधोयंती
पुरुषाः अपि च, मे उत्कृष्टाः च गेवकाः[5] च मध्यमाः च अनुविदधति

---

१. सरकार : ऐहत्य-पारत्रं, पाण्डेय : इहत्य-पारत्र्यं ।
२. सरकार : यहां और आगे—अग्रात्
३. पाण्डेय : भयेन ।
४. पाण्डेय : अगन ।
५. पाण्डेय : गम्याः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. संपटिपादयंति चा अलं च पलं समादपयितवे हेमेवा[१] अंत-
सम्प्रतिपादयन्ति च, अलं च, परं समादापयितुम् । एवमेव अन्त-

९. महामाता पि एस हि[२] विधि या इयं धंमेन पालना धंमेन विधाने
महामात्राः अपि । एष हि विधिः—यत् इदं धर्मेण पालनं, धर्मेण विधानं,

१०. धंमेन सुखियना धंमेन गोती ति[३]
धर्मेण सुखयनं[४], धर्मेण गुप्तिः इति ।

---

१. पाण्डेय : हेमेमा ।

२. 'ह' 'प' से भिन्न नहीं लगता । ब्यूलर तथा सेनार्ट (Senart) ने 'पि' पढ़ा ।

३. पाण्डेय : सुखीयनं; सरकार : सुखना ।

४. इसके आगे द्वितीय अभिलेख आरम्भ हो जाता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीय स्तम्भ अभिलेख

विषय : धर्म की परिभाषा। अशोक के अनुग्रह कार्यों का उल्लेख।

१. 'देवानंपिये पियदसि लाज'
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा

२. हेवं आहा धंमे साधू कियं चु धंमे ति अपासिनवे बहुकयाने
एवम् आह—धर्मः साधुः। कियान् तु धर्मः इति ? अल्पास्नवः बहु-कल्याणं

३. दया दाने सचे सोचये चखुदाने पि मे बहुविधे दिने दुपद-
दया दानं सत्यं शौचम्। चक्षुर्दानम् अपि मया बहुविधं दत्तम्। द्विपद-

४. चतुपदेसु पखिवालिचलेसु विविधे मे अनुगहे कटे आपान-
चतुष्पदेषु पक्षि-वारिचरेषु विविधः मया अनुग्रहः कृतः, आ-प्राण-

५. दाखिनाये अंनानि पि च मे बहूनि कयानानि कटानि एताये
दाक्षिण्यात्। अन्यानि अपि च मया बहूनि कल्याणानि कृतानि। एतस्मै
मे
मया

---

१. यह अभिलेख प्रथम की समाप्ति पर उसी पंक्ति से आरम्भ किया गया है।

२. सेनार्ट और ब्यूलर : लाजा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. अठाये इयं धंमलिपि लिखापिता हेवं अनुपटिपजंतु चिलं-
अर्थाय इयं धर्म-लिपिः लेखिता। एवम् अनुप्रतिपद्यन्तां (जनाः) चिर-

७. थितिका च होतू ती ति[1] ये च हव[2] संपटिपजीसति से सुकटं
स्थितिका च भवतु इति। यः च एवं संप्रतिपत्स्यते, सः सुकृतं
कछती ति
करिष्यति इति।

---

१. 'ती' अनावश्यक है। अन्य स्तम्भों पर यहाँ केवल 'ति' उत्कीर्ण है।
२. हेवं पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीय स्तम्भ अभिलेख

विषय : आत्म-निरीक्षण की आवश्यकता। मानव को पतन की ओर ले जाने वाले दोषों से बचने के लिए चेतावनी।

१. देवानंपिये पियदसि लाज हेवं अहा कयानंमव[1] देखति इयं मे
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवं आह—कल्याणमेव पश्यति इदं मया

२. कयाने कटे ति नो मिन पापं देखति इयं मे पापे कटे ति
कल्याणं कृतम् इति। नो मनाक् पापं पश्यति इदं मया पापं कृतम् इति
इयं वा आसिनवे
अयं वा आस्नवः[2]

३. नामा ति दुपटिवेखे चु खो एसा हेवं चु खो एस देखिये इमानि
नाम इति। दुष्प्रतिवीक्ष्यं[3] तु खलु एतत्। एवं तु खलु एतत् पश्येत् इमानि

४. आसिनवगामीनि नाम अथ चंडिये निठूलिये कोधे माने इस्या
आस्नवगामीनि नाम यथा चाण्डयं नैष्ठुर्यं क्रोधः मानः ईर्ष्या

५. कालनेन व हकं मा पलिभसयिसं एस बाढ देखिए इयं मे
[एषां] कारणेन एव अहं मा परिभ्रंशयिष्यामि। एतत् वाढं पश्येत् इदं मे
हिदतिकाये इयं मन मे पालतिकाये
ऐहिकाय इदं अन्यत् मे पारत्रिकाय।

---

१. पाण्डेय तथा सरकार : कयानंमेव। कयानमेव पढ़ें।
२. पाण्डेय : आसिनवं, सरकार : आस्नवं।
३. पाण्डेय तथा सरकार : दुष्प्रत्यवेक्ष्यं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ स्तम्भ अभिलेख

विषय : रज्जुकों को कार्य-सम्पादन में स्वतन्त्रता। व्यवहार-समता व दण्डसमता की आवश्यकता। रज्जुकों का कार्य धाया के समान। मृत्यु-दण्ड-प्राप्त अपराधियों को बचाने की व्यवस्था।

१. देवानंपिये पियदसि लाज हेवं आहा सडुवीसतिवस
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—षड्विंशतिवर्षा-

२. अभिसितेन मे इयं धंमलिपि लिखापिता लजूका मे
भिषिक्तेन मया इयं धर्म-लिपिः लेखिता। रज्जुकाः मे

३. बहूसु पानसतसहसेसु जनसि आयता तेसं ये अभिहाले वा
बहुषु प्राण-शत-सहस्रेषु जनेषु आयताः। तेषां यः अभिहारः वा,

४. दंडे वा अतपतिये मे कटे किंति लजूका अस्वथ
दण्डः वा आतमपतिकः[1] मया कृतः। किमिति?—रज्जुकाः आश्वस्ताः
अभीता
अभीताः

५. कंमानि पवतंयेवू[2] जनस जानपदसा हितसुखं उपदहेवू
कर्माणि प्रवर्तयेयुः, जनस्य जानपदस्य हित-सुखम् उपदध्युः,

६. अनुगहिनेवु चा[3] सुखीयनं दुखीयनं जानिसंति धंमयुतेन च
(तान्) अनुगृह्णीयुः च। सुखयनं दुःखयनं[4] ज्ञास्यन्ति, धर्मयुक्तेन च

---

१. पाण्डेय : आत्म-प्रत्ययः।
२. पवतयेवू पढ़ें।
३. पाण्डेय : च।
४. सरकार : सुखन-दुःखनम्; पाण्डेय : सुखीयनं दुःखीयनं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. वियोवदिसंति जनं जानपदं किंति हिदतं च पालतं च

व्यववदिष्यन्ति[1] जनं जानपदं—किमिति ऐहत्रं च पारत्रं च

८. आलाधयेवू ति लजूका पि लघंति पटिचलितवे [मं पुलिसानि

आराधयेयुः इति। रज्जुकाः अपि अर्हन्ति[2] प्रतिचलितु[3] मां, पुरुषान्

पि मे

अपि मे

९. छंदंना[नि पटिचलिसंति ते पि च कानि वियोवदिसंति

छन्दज्ञान् प्रतिचलिष्यन्ति[4]। ते अपि च—केऽपि—व्यववदिष्यन्ति[5]

येन मं लजूका

येन मां रज्जुकाः

१०. चघंति आलाधयितवे अथा हि पजं वियताये धातिये निसिजितु

शक्ष्यन्ति[6] आराधयितुम्। यथा हि प्रजां विज्ञातायै[7] धात्र्यै निःसृज्य

११. अस्वथे होति वियत धाति चघति मे पजं सुखं पलिहटवे

आश्वस्तः भवति—विज्ञाता धात्री शक्ष्यति[8] मे प्रजां सुखं परिहर्तुम्[9]।

१२. हेवं ममा लजूका कटा जानपदस हितसुखाये येन एते अभीता

एवं मया रज्जुकाः कृताः जानपदस्य पित-सुखाय। येन एते अभीताः

---

१. सरकार : व्युपदेक्ष्यन्ति।

२ पाण्डेय : चेष्टन्ते; सरकार : रंघन्ते।

३. सरकार तथा पाण्डेय : परिचरितु॑।

४. सरकार तथा पाण्डेय : परिचरिष्यन्ति।

५. सरकार तथा पाण्डेय : व्युपदेक्ष्यन्ति।

६. पाण्डेय : चेष्टन्ते; सरकार : जाग्रति।

७. सरकार तथा पाण्डेय : व्यक्तायै।

८. सरकार : जागर्त्ति; पाण्डेय : चेष्टते।

९. सरकार : प्रतिहर्तुं; पाण्डेय : परिदातुम्।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३. अस्वथ संतं अविमना कंमानि पवतयेवू ति एतेन मे
आश्वस्ताः सन्तः अविमनस्काः कर्माणि प्रवर्तयेयुः इति, एतेन मया
लजूकानं
रज्जुकानाम्

१४. अभीहाल व दंडे वा अतपतिये कटे इछितविये हि एसा
अभिहारः वा, दण्डः वा आत्मपतिकः कृतः एष्टव्यं हि एतत्—
किंति
किमिति

१५. वियोहालसमता च सिय दंडसमता चा अव इते पि च मे
व्यवहार-समता च स्यात्, दण्ड-समता च। यावत् इदम् अपि च मे
आवुति
आवृतिः[1]—

१६. बंघनबधानं मुनिसानं तीलितदंडानं पतवधानं तिंनि दिवसानि
बन्धन-बद्धेभ्यः मनुष्येभ्यः तीरित-दण्डेभ्यः प्राप्त-वधेभ्यः त्रयः दिवसाः
मे
मया

१७. योते दिंने नातिका व कानि निझपयिसंति जीविताये तानं
यौतं दत्तम्। ज्ञातिकाः वा केऽपि निध्यापयिष्यन्ति जीविताय तेषां

१८. ना संतं वा निझपयिता दानं दाहंति पालतिकं उपवासं
न सति वा निध्यापयितरि, दानं दास्यन्ति पारत्रिकम्, उपवासं
वं कछंति
वा करिष्यन्ति।

---

१. पाण्डेय : आज्ञप्तिः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९. इछा हि मे हेवं निलुधसि पि कालसि पालतं आलाधयेवू ति
इच्छा हि मे एवं निरुद्धे अपि काले पारत्रम् आराधयेयुः इति,
जनस च
जनस्य च

२०. वढति विविधे धंमचलने संयमे दानसविभागे ति
वर्धंते विविधं धर्म-चरणं संयमः दान-संविभागः इति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचम स्तम्भ अभिलेख

विषय : कुछ जन्तुओं के वध का पूर्ण निषेध। अन्य का वध विशिष्ट दिनों में प्रतिषिद्ध। प्रतिवर्ष बन्दियों की बन्धनमुक्ति।

संदर्भ : एम. एन. चक्रवर्ती : एनीमल्स इन दी इन्सक्रिप्शन्स ऑफ पियदसि MASB, 1, 1906, PP. 361—74; एम. सी. मुल्वानी : IA, 37, 1908; P. 31. सरकार : EI, 35, Pt. 2, PP. 95—102.

१. देवानंपिये पियदसि लाज हेवं अहा सडुवीसतिवस
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवन् आह—षड्विंशति-वर्षा-

२. अभिसितेन मे इमानि जातानि अवधियानि कटानि से यथा
भिषिक्तेन मया इमानि जातानि अवध्यानि कृतानि, तत् यथा—

३. सुके सालिका अलुने चकवाके हंसे नंदीमुखे गेलाटे
शुकः सारिका अरुणः चक्रवाकः हंसः नन्दीमुखः गेलाटः

४. जतूका अंबाकपीलिका दड़ी अनठिकमछे वेदवेयके
जतूकः आम्र-पिपीलिका[1] दुडिः अनस्थिक-मत्स्यः वेदवेयकः

५. गंगापुपुटके संकुजमछे कफटसयके पंनससे सिमले
गंगा-पुपुटकः संकुज-मत्स्यः कमठ-शयंकः पर्ण-शशः सृमरः

६. संडके ओकपिंडे पलसते सेतकपोते गामकपोते
षण्ढकः ओकपिण्डः पलयशतः श्वेत-कपोतः ग्राम-कपोतः,

---

१. पाण्डेयः अम्बाकपीलिका।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. सवे चतुपदे ये पटिभोगं नो एति न च खादियती[१] [अजकानानि]
सर्वे चतुष्पादाः यत् [यत्] प्रतिभोगं न एति, न च खाद्यते। अजकाद्याः,

८. एडका चा सूकली चा गभिनी व पायमीना व अवधिय पोतके
एडकाः च, शूकर्यः च—गर्भिण्यः वा पाययमानाः वा—अवध्याः, पोतकाः

९. पि च कानि आसंमासिके वधिकुकुटे नो कटविये तुसे सजीवे
अपि च ये आषण्मासिकाः। वध्रि-कुक्कुटः नो कर्त्तव्यः। तुषः सजीवः

१०. नो झापेतविये दावे अनठाये वा विहिसाये वा नो झापेतविये
नो दाहयितव्यः। दावः अनर्थाय वा विहिंसायै वा नो दाहयितव्यः।

११. जीवेन जीवे नो पुसितविये तीसु चातुंमासीसु तिसायं पुंनमासियं
जीवेन जीवः नो पोषयितव्यः। तिसृषु चातुर्मासीषु, तिष्य-पौर्णमास्यां

१२, तिनि दिवसानि चावुदसं पंनडसं पटिपदाये धुवाये चा
त्रिषु दिवसेषु—चतुर्दशे पञ्चदशे प्रतिपदि—ध्रुवे च

१३. अनुपोसथं मछे अवधिये नो पि विकेतविये एतानि येवा[२] दिवसानि
अनूपवसथं मत्स्यः अवध्यः, नो अपि विक्रेतव्यः। एतान् एव दिवसान्

१४. नागवनसि केवटभोगसि यानि अंनानि पि जीवनिकायानि
नाग-वने कैवर्त-भोगे, ये अन्ये अपि जीव-निकायाः,

१५. नो हंतवियानि अठमीपखाये चावुदसाये पंनडसाये तिसाये
नो हन्तव्याः। अष्टमी-पक्षे चतुर्दश्यां पञ्चदश्यां तिष्ये[३]

१६. पुनावसुने तीसु चातुंमासीसु सुदिवसाये गोने नो नीलखितविये
पुनर्वसौ, तिसृषु चातुर्मासीषु, सुदिवसे गोः नो निर्लिखितव्यः,[४]

१७. अजके एडके सूकले ए वा पि अंने नीलखियति नो नीलखितविये
अजकः एडकः शूकरः, यः वा अपि अन्यः निर्लिख्यते, नो निर्लिखितव्यः।

---

१. ब्यूलरः खादियति।
२. ब्यूलरः येव।
३. पाण्डेयः तिष्यायां।
४. पाण्डेय : निर्लक्षयितव्याः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८. तिसाये पुनावसुने चातुंमासिये चातुंमासिपखाये अस्वसा गोनसा
तिष्ये[1] पुनर्वसौ चातुर्मास्यां चातुर्मासी-पक्षे अश्वस्य गोः

१९. लखने नो कटविये याव सडुवीसतिवस अभिसितेन मे एतायें
लेखनं[2] नो कर्तव्यम्। यावत् षड्विंशति-वर्षाभिषिक्तेन मया एतस्मिन्

२०. अंतलिकाये पंनवीसति बंधनमोखानि कटानि
अन्तरे[3] पञ्चविंशतिः बन्धन-मोक्षाः कृताः।

---

१. पाण्डेय : तिष्यायां।
२. पाण्डेय : लक्षणं।
३. पाण्डेय : अन्तरिकायां।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठ स्तम्भ अभिलेख

विषय : अशोक द्वारा प्रजा के हित एवं सुख के प्रयत्न तथा सब धर्म-सम्प्रदायों को आश्वासन।

१. देवानंपिये पियदसि लाज हेवं अहा दुवाडस-
देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—द्वादश-

२. वस अभिसितेन मे धंमलिपि लिखापिता लोकसा
वर्षाभिषिक्तेन मया धर्म-लिपिः लेखिता लोकस्य

३. हितसुखाये से तं अपहटा तं तं धंमवढि पापोवा
हितसुखाय येन तत् अप्रहर्ता तां तां धर्मवृद्धि प्राप्नुयात्

४. हेवं लोकसा हितसुखे ति पटिवेखामि अथ इयं
एवं लोकस्य हित-सुखम्[1] इति प्रतिवीक्षे[2] । यथा इदं

५. नातिसु हेवं पतियासंनेसु हेवं अपकठेसु
ज्ञातिषु एवं प्रत्यासन्नेषु एवं अपकृष्टेषु

६. किमं कानि सुखं अवहामी ति तथ च विदहामि[3] हेमेवा
किं कान् सुखम् आवहामि इति तथा च विदधामि। एवमेव

७. सवनिकायेसु पटिवेखामि सवपासंडा पि मे पूजिता
सर्वनिकायेषु प्रतिवीक्षे। सर्वपाषण्डाः अपि मया पूजिताः

---

१. पाण्डेय : हितसुखे।
२. पाण्डेय : प्रत्यवेक्षे।
३. 'हा' के नीचे बायें को एक गोलाकार चिह्न अनावश्यक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. विविधया पूजया ए च इयं अतना[1] पचूपगमने
विविधया पूजया । यत् तु इदम् आत्मना प्रत्युपगमनं

९. से मे मोख्यमते सडुवीसतिवस[2] अभिसितेन मे
तत् मे मुख्यमतम् । षड्‌विंशतिवर्षाभिषिक्तेन मया

१०. इयं धंमलिपि लिखापिता
इयं धर्मलिपिः लेखिता ।

---

१. ब्यूलर : अतुना ।
२. पाण्डेय : सडुविसतिवस ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सप्तम स्तम्भ अभिलेख

विषय : यह अभिलेख केवल दिल्ली-टोपरा स्तम्भ पर ही मिलता है। यह छः अभिलेखों के एक वर्ष पश्चात् उत्कीर्ण करवाया गया। इसमें अशोक के धर्मकृत्यों का सिंहावलोकन है।

संदर्भ : फ्लीट : दी मीनिंग ऑफ 'अढकोसिक्य' इन दी सेवन्थ पिलर एडिक्ट ऑफ अशोक, JRAS, 1906, PP. 401-17

१. देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आहा ये अतिकंतं
देवनांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—ये अतिक्रान्ते

२. अंतलं लाजाने हुसु हेवं इछिसु कथं जने
अन्तरे राजानः अभुवन् एवम् ऐषिषुः—कथं जनः

३. धंमवढिया वढेया नो चु जने अनुलुपाया धंमवढिया
धर्म-वृद्ध्या वर्धेत। नो तु जनः अनुरूपया धर्म-वृद्ध्या

४. वढिथा एतं देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आहा एस मे
अवर्द्धिष्ट। अत्र देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—एतत् मे

५. हुथा अतिकतं च अंतलं हेवं इछिसु लाजाने कथं जने
अभूत्—अतिक्रान्ते च अन्तरे एवम् एषिषुः राजानः कथं जनः

६. अनुलुपाया धंमवढिया वढेया ति नो च जने अनुलुपाया
अनुरूपया धर्म-वृद्ध्या वर्धेत इति। नो च जनः अनुरूपया

७. धंमवढिया वढिथा से किनसु जने अनु पटिपजेया[1]
धर्म-वृद्ध्या अवर्द्धिष्ट। तत् कथं-स्वित्[2] जनः (धर्मम्) अनु प्रतिपद्येत,

---

१. दूसरा 'प' पंक्ति के ऊपर पीछे जोड़ा गया है।
२. सरकार तथा पाण्डेय : केन स्वित्।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. किनसु जने अनुलुपाया धंमवढिया वढेया ति किनसु
कथं-स्वित्[1] जनः अनुरूपया धर्म-वृद्ध्या वर्धेत इति, कथं-स्वित्[2]
कानि
कांश्चित्

९. अभ्युंनामयेहं धंमवढिया ति एतं देवानंपिये पियदसि लाजा
अभ्युन्नामयेयं धर्म-वृद्ध्या इति । अत्र देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा
हेवं
एवम्

१०. आहा एस मे हुथा धंमसावनानि सावापयामि धंमानुसथिनि
आह—एतत् मे अभूत् धर्म-श्रावणानि श्रावयामि, धर्मानुशस्तीः

११. अनुसासामि एतं जने सुतु अनुपटीपजीसति अभ्युंनमिसति
अनुशास्मि । एताः जनः श्रुत्वा अनुप्रतिपत्स्यते, अभ्युन्नंस्यति,

१२. धंमवढिया च बाढं वढिसति एताये मे अठाये धंमसावनानि
धर्म-वृद्ध्या च बाढं वर्द्धिष्यते । एतस्मै मया अर्थाय धर्म-श्रावणानि
सावापितानि धंमानुसथिनि विविधानि आनपितानि [यथा पुलि]
श्रावितानि, धर्मानुशस्तयः विविधाः आज्ञप्ताः, यथा—पुरुषाः
सापि बहुने जनसि आयता ए ते पलियोवदिसंति पि पविथलिसंति
अपि बहुषु जनेषु आयताः ये ते पर्यववदिष्यन्ति[3] अपि, प्रविस्तारयिष्यन्ति
पि लजूका पि बहुकेसु पानसतसहसेसु आयता ते पि मे
अपि, रज्जुकाः अपि बहुकेषु प्राण-शत-सहस्रेषु आयताः । तेऽपि मया
आनपिता हेवं च हेवं च पलियोवदाय
आज्ञप्ताः—एवं च एवं च पर्यववदत[4]

---

१. २. सरकार तथा पाण्डेय : केन स्वित् ।

३. सरकार : पर्यवदेक्ष्यन्ति ।

४. वही : पर्यवदिशत ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३. जनं धंमयु[तं] देवानंपिये पियदसि हेवं आहा एतमेव मे
जनं धर्म-युक्तम्। देवानांप्रियः प्रियदर्शी एवम् आह—एतदेव मया
अनुवेखमाने धंमथंभानी कटानि धंममहामाता कटा धंम-
अनुवीक्षमाणेन धर्म-स्तम्भाः कृताः, धर्म-महामात्राः कृताः, धर्म-
[सावने] कटे देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आहा मगेसु पि
श्रावणं कृतम्। देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—मार्गेषु अपि
मे निगोहानि लोपापितानि छायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं
मया न्यग्रोधाः रोपिताः—छायोपगाः भविष्यन्ति पशु-मनुष्याणाम्,
अंबावडिक्या लोपापिता अढकोसिक्यानि पि मे उदपानानि
आम्रवाटिकाः रोपिताः। आष्ट-कोशिकानि[1] अपि मया उदपानानि

१४. खानापापितानि निंसि[ढ]या च कालापिता आपानानि मे बहुकानि
खानितानि, निषद्याः च कारिताः, आपानानि मया बहुकानि
ततत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसानं ल[हुके चु][2] एस
तत्र-तत्र कारितानि प्रतिभोगाय पशु-मनुष्याणां लघुकाः तु एते
पटीभोगे नाम विविधाया हि सुखायनाया पुलिमेहि पि लाजीहि
प्रतिभोगाः[3] नाम। विविधैः हि सुखयनैः[4] पूर्वैः अपि राजभिः,
ममया च सुखयिते लोके इमं चु धंमानुपटीपती अनुपटीपजंतु
मया च सुखयितः[5] लोकः। इमां तु धर्मानुप्रतिपत्तिम् अनुप्रतिपद्यन्तां(जनाः)
ति एतदथा मे
इति, एतदर्थाय मया

१५. एस कटे देवानंपिये पियदसि हेवं आहा धंममहामाता पि
एतत् कृतम्। देवानांप्रियः प्रियदर्शी एवम् आह—धर्म-महामात्राः अपि

---

१. पाण्डेय : अर्धक्रोशकानि।
२. हुल्श का अनुमान।
३. पाण्डेय : एषः प्रतिभोगः।
४. सरकार : विविधया हि सुखनया।
५. सरकार तथा पाण्डेय : सुखितः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मे ते बहुविधेसु अठेसु आनुगहिकेसु वियापटा से पवजीतानं चेव
मे ते बहु-विधेसु अर्थेषु आनुग्रहिकेषु व्यापृताः, तत् प्रव्रजितानां चैव
गिहिथानं च सव[पासं]डेसु पि च वियापटा से संघठसि पि
गृहस्थानां च सर्व-पाषण्डेषु अपि च व्यापृताः। तत् संघार्थे अपि
मे कटे इमे वियापटा होहंति हेमेव बाभनेसु
मया कृतम्—इमे व्यापृताः भविष्यन्ति इति । एवमेव ब्राह्मणेषु
आजीविकेसु पि मे कटे
आजीविकेषु अपि मया कृतम्—

१६. इमे वियापटा होहंति ति निगंठेसु पि मे कटे इमे वियापटा
इमे व्यापृताः भविष्यन्ति इति । निर्ग्रन्थेषु अपि मया कृतम्—इमे व्यापृताः
होहंति नानापासंडेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंति
भविष्यन्ति । नाना-पाषण्डेषु अपि मया कृतम्—इमे व्यापृताः भविष्यन्ति
ति पटिविसिठं पटीविसिठं तेसु तेसु ते ते महामाता धंममहामाता
इति । प्रतिविशिष्टं-प्रतिविशिष्टं तेषु-तेषु ते ते महामात्राः धर्म-महामात्राः
चु मे एतेसु चेव वियापटा सवेसु च अंनेसु पासंडेसु देवानंपिये
तु मे एतेषु चैव व्यापृताः, सर्वेषु च अन्येषु पाषण्डेषु[1] । देवानांप्रियः
पियदसि लाजा हेवं आहा
प्रियदर्शी राजा एवम् आह—

१७. एते च अंना[2] च बहुका मुखा दानविसगसि वियापटा से मम चेव
एते च अन्ये च बहुकाः मुख्याः दान-विसर्गे व्यापृताः। तत् मम चैव
देविनं च सवसि च मे ओलोधनसि ते बहुविधेन आ[का]लेन तानि-
देवीनां च। सर्वेषु च मे अवरोधनेषु ते बहु-विधेन आकारेण तानि-
तानि तुठायतनानि पटी[वेदयंति[3]] हिद चेव दिसासु च दालकानं
तानि तुष्ट्यायतनानि प्रतिवेदयन्ति, इह चैव दिशासु च दारकाणाम्

---

१. भण्डारकर : पार्षदेषु ।
२. सरकार तथा पाण्डेय : अंने ।
३. पाण्डेय का अनुमान-पटी[पादयंति] ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पि च मे कटे अंनानं च देविकुमालानं इमे दानविसगेसु
अपि च मया कृतम्, अन्येषां च देवी-कुमाराणाम्—इमे दान-विसर्गेषु
वियापटा होहंति ति
व्यापृताः भविष्यन्ति इति

१८. धंमापदानठाये धंमानुपटिपतिये एस हि धंमापदाने धंमपटीपति
धर्मावदानार्थाय[1] धर्मानुप्रतिपत्तये। एतत् हि धर्मावदानं धर्म-प्रतिपत्तिः
च या इयं दया दाने सचे सोचवे मदवे साध[वे] च लोकस
च, यानि इमानि—दया, दानं, सत्यं, शौचं, मार्दवं, साधवं च लोकस्य
हेवं वढिसति ति देवानंपिये [पियदसि] लाजा हेवं आहा यानि
एवं वर्धिष्यन्ते इति। देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—यानि
हि कानिचि ममिया साधवानि कटानि तं लोके अनुपटीपंने
हि कानिचित् मया साधवानि कृतानि, तानि लोकः अनुप्रतिपन्नः,
तं च अनुविधियंति तेन वढिता च
तानि च अनुविदधति[2] तेन वर्धिताः च

१९. वढिसंति च मातापितिसु[3] सुसुसाया गुलुसु सुसुसाया वयोमहाल-
वर्धिष्यन्ते च माता-पितृषु शुश्रूषया, गुरुषु शुश्रूषया वयो-महल्ल-
कानं अनुपटीपतिया बाभनसमनेसु कपनवलाकेसु आव दासभटकेसु
कानाम् अनुप्रतिपत्त्या, ब्राह्मण-श्रमणेषु कृपण-वराकेषु यावत् दास-भृतकेषु
संपटीपतिया देवानंपि[ये पि]यदसि लाजा हेवं आहा मुनिसानं
संप्रतिपत्त्या। देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह—मनुष्याणां
चु या इयं धंमवढि वढिता दुवेहि येव आकालेहि धंमनियमेन च
तु या इयं धर्म-वृद्धिः वर्धिता द्वाभ्याम् एव आकाराभ्यां धर्मनियमेन च
निझतिया च
निध्यात्या च।

---

१. पाण्डेय : धर्मापदानार्थाय।
२. वही : अनुविधीयन्ते।
३. वही : मातापितुसु।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२० तत चु लहु से धंमनियमे निझतिया व भुये धंमनियमे चु खो
तत्र तु लघुः सः धर्म-नियमः, निध्यात्या एव भूयः। धर्म-नियमः तु खलु
एस ये मे इयं कटे इमानि च इमानि जातानि अवधियानि
एषः यत् मया इदं कृतम्—इमानि च इमानि जातानि अवध्यानि।
अंनानि पि चु बहु[कानि] धंमनियमानि यानि मे कटानि
अन्ये अपि तु बहुकाः धर्म-नियमाः ये मया कृताः।
निझतिया व चु भुये मुनिसानं धंमवढि वढिता अविहिंसाये
निध्यात्या एव तु भूयः मनुष्याणां धर्म-वृद्धिः वर्धिता अविहिंसायै
भूतानं
भूतानाम्,

२१. अनालंभाये पानानं से एतायं अथाये इयं कटे पुता-
अनालम्भाय प्राणानाम् तत् एतस्मै अर्थाय इयं [धर्मलिपिः] कृता—पुत्र-
पपोतिके चंदमसुलियिके होतु ति तथा च
प्रपौत्रिकी[1] चान्द्रम-सौर्यिकी भवतु इति, तथा च [इमां धर्मं-लिपिं जनाः]
अनुपटीपजंतु ति हेवं हि अनुपटीपजंतं हिदत[पाल] ते
अनुप्रतिपद्यन्ताम् इति। एवं हि अनुप्रतिपद्यमाने [धर्मे]ऐहत्र-पारत्रम्[2]
आलधे होति सतविसतिवसाभिसितेन मे इयं धंमलिबि
आराद्धं[3] भवति। सप्तविंशति-वर्षाभिषिक्तेन मया इयं धर्म-लिपिः
लिखापापिता ति एतं देवानंपिय आह इयं
लेखिता इति एतत् देवानांप्रियः आह—इयं

२२. धंमलिबि अत अथि सिलाथंभानि वा सिलाफलकानि वा तत
धर्म-लिपिः—यत्र सन्ति शिला-स्तम्भाः वा, शिला-फलकानि वा तत्र
कटविया एन एस चिलठितिके सिया
कर्तव्या, येन एषा चिर-स्थितिका स्यात्।

---

१. सरकार तथा पाण्डेय : पौत्र-प्रपौत्रिकी।
२. पाण्डेय : ऐहत्य-पारत्र्यम्।
३. वही : आलब्धं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैराट लघु शिला-फलक अभिलेख

स्थान : राजस्थान के जयपुर नगर से ६७ किलोमीटर पूर्वोत्तर को बैराट नामक नगर के निकट बीजक पहाड़ी की शिला पर उत्कीर्ण। १८४० ईसवी में बर्ट द्वारा उपलब्ध और बंगाल एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता के पुस्तकालय में सुरक्षित।

विषय : संघ के सदस्यों को बौद्ध धर्म-ग्रन्थों का नित्य पारायण करने का उपदेश।

संदर्भ : सेनार्ट, IA, 20, 1891, PP. 165; विल्सन, JRAS, 16, P. 357.

१. प्रियदसि[1] लाजा मागधे[2] संघं अभिवादेति[3] [ए]नं
प्रियदर्शी राजा मागधः सङ्घम् अभिवादयति एनं [च]

आहा अपबाधतं[4] च फासुविहालतं चा
आह अपबाधतां च सुख-विहारतां च।

२. विदिते वे भंते आवतके हमा बुधसि धंमसि
विदितम् एव[हे] भवन्तः, यावत् अस्माकं बुद्धे धर्मे

संघसी ति गालवे[5] च प्रसादे[6] च ए केचि भंते
सङ्घे इति गौरवं च प्रसादः च। यत् किञ्चित्[हे] भवन्तः,

---

१. पाण्डेय : पियदसि।
२. वही : मागधं।
३. 'दे' के ऊपर 'ति' स्पष्ट दिखाई देता है। अन्य विद्वान् यहाँ पर 'तू' अनुमानित करके अभिवादेतूनं पढ़ते हैं, तथा संस्कृत रूप अभिवाद्य करते हैं।
४. पाण्डेय : अल्पाबाधतां।
५. सेनार्ट : गलवे।
६. वही : पसादे।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. भगवता बुधेन भासिते सवे से सुभासिते वा
भगवता बुद्धेन भाषितं सर्वं तत् सुभाषितम् एव ।

ए चु खो भंते हमियाये दिसेया हेवं सधंमे
यत् तु खलु [हे] भवन्तः ! अस्माभिः दृश्यते एवं सद्धर्मः

४. चिल[ठि]तीके होसती ति अलहामि हकं तं वीतवे[1]
चिर-स्थितिकः भविष्यति इति अर्हामि अहं तत् वक्तुम् ।

इमानि भंते धंमपलियायानि विनयसमुकसे
इमे भवन्तः ! धर्म-पर्यायाः विनय-समुत्कर्षः;

५. अलियवसाणि अनागतभयानि मुनिगाथा मोनेयसूते
आर्य-वंशाः, अनागत-भयानि, मुनि-गाथा मौनेय-सूत्रम्,

उपतिसप्रसिने ए चा लाघुलो-
उपतिष्य-प्रश्नः यः च राहुल-

६. वादे मुसावादं अधिगिच्य भगवता बुधेन भासिते एतानि
वादः मृषा-वादम् अधिकृत्य भगवता बुद्धेन भाषिताः । एतान्

भंते धंमपालियायानि इछामि—
भवन्तः[2] ! धर्म-पर्यायान् इच्छामि—

७. किति बहुके भिखुपाये चा भिखुनिये चा अभिखिनं
किमिति ? बहुकः भिक्षु-पादः[3] च भिक्षुण्यः च अभीक्ष्णं[4]

सुनेयु चा उपधालयेयू चा
शृण्वन्तु च उपधारयेयुः च ।

---

१. वतवे या वातवे पढ़ें ।
२. पाण्डेय : भदन्ताः ।
३. वही : बहुकाः भिक्षुपादाः ।
४. वही : अभिक्षणं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. हेवंमेवा उपासका च उपासिका चा एतेनि भंते इमं
एवम् एव उपासकाः च उपासिकाः च। एतेन भवन्तः ! इमां
लिखापयामि अभिपेतं मे जानंतू ति
लेखयामि अभिप्रेतं मे जानन्तु इति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुजर्रा लघु शिला अभिलेख

स्थान : मध्यप्रदेश के दतिया जिले में गुजर्रा नामक ग्राम के निकट की पहाड़ी की शिला पर उत्कीर्ण। बहादुर चन्द्र छाबड़ा द्वारा १९५४ में उपलब्ध यह दशम लघु शिला अभिलेख है। मास्की अभिलेख की भांति इसमें 'अशोक' नाम पाया जाता है।

विषय : पराक्रम द्वारा अशोक का आत्मोन्नति वर्णन तथा धर्माचरण द्वारा क्षुद्र व्यक्ति की उन्नति।

संदर्भ : बहादुर चन्द्र छाबड़ा, PIHC, 1954, सरकार, EI, 21, p. 205

१. देवा[नं]पिय[स] पियदसिनो असोकराजस अ[ढ]तियानि
देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः अशोकराजस्य। अर्ध-तृतीयान्
संवछरानि[1] उपासके सि[म] साधिके संवछ[रे] य च मे संघे
संवत्सरान् उपासकोऽस्मि। साधिकं[2] संवत्सरं यत् च अहं संघं
य[ा]ते ति [हं] बा-
यातः इति अहं बा-

२. [ढं]च परकंते ती [आ]हा एतेना अन्तरेना जंबुदीपसि
ढं च पराक्रान्तः[3] इति आह। एतेन अन्तरेण ,जम्बु-द्वीपे
देवानंपिय[स] अमिसं देवा संतो मुनिस मिसं देवा कटा
देवानांप्रियस्य[4] अमिश्रदेवाः सन्तः मनुष्याः मिश्र-देवा कृताः।
परकमस इयं फले नो [चइ]यं महतेना ति व
पराक्रमस्य इदं फलम्। नो च इदं महता इति एव

---

१. 'र' पंक्ति से ऊपर पीछे उत्कीर्ण।
१. पाण्डय : सार्द्धकं (सार्द्धकं)।
३. वही : प्रकान्तः।
४. पाण्डेय : देवानांप्रियेण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. छकिये[1] पापोतवे खुदाकेण पी परकममीनेना धंमं चरमीनेना
शक्यं प्राप्तुम्। क्षुद्रकेण अपि पराक्रममाणेन धर्मं चरता
पानेसू संयतेना विपुले पी स्वगे छकिये[2] आराधयितवे से एताये
प्राणेषु संयतेन विपुलः अपि स्वर्गः शक्यः आराधयितुम्। तद् एतस्मै

४. अठा[ये] इयं सावणे खुदाके चा उडारे चा धंमं चरंतू [यो]गं
अर्थाय इदं श्रावणम्। क्षुद्रकाः च उदाराः च धर्मं चरन्तु योगं
युजंतू अंता पि चा जानंतू किति च चिलथि[ति]के
युञ्जन्तु। अन्ता अपि च जानन्तु किमिति च चिरस्थितिकं
धंमच[रने]
धर्माचरणम्।

५. [इयं अठे वढिसि][2]ति[च] एनं वा धंमं चरं अति[यो] इयं
अयम् अर्थः वर्धिष्यते च इमं वा धर्मं चरन् अतीव। इदं
च सावने विवुथे[न] [२००]५० ६
च श्रावणं व्युषितेन २०० ५० ६।

---

१. पाण्डेय : चकिये।
२. सरकार का सुझाव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुम्मिनदेई स्तम्भ अभिलेख

स्थान : नेपाल की तराई में परिया के निकट रुम्मिनदेई के मन्दिर के पास स्तम्भ ।

विषय : बुद्ध के जन्म स्थान लुम्बिनी की अशोक द्वारा यात्रा और इस अवसर पर स्तम्भ व शिलाभित्तिका की स्थापना तथा कर से मुक्ति ।

संदर्भ : ब्यूलर, EI, 5, p. 1; हुल्श, CII, I, p. 164; सरकार, SI, P.67

१. देवानपियेन पियदसिन लाजिन वीसतिवसाभिसितेन
देवानांप्रियेण प्रियदर्शिना राज्ञा विंशतिवर्षाभिषिक्तेन

२. अतन अगाच महीयिते हिद बुधे जाते सक्यमुनीति
आत्मना आगत्य महीयितम् इह बुद्धः जातः शाक्यमुनिः इति

३. सिलाविगडभीचा कालापित सिलाथभे च उसपापिते
शिला-विकटभित्तिका[1] कारिता शिला-स्तम्भः च उत्सर्पितः

४. हिद भगवं जाते ति लुंमिनीगामे उबलिके कटे
इह भगवान् जातः इति लुम्बिनी-ग्रामः उद्बलिकः कृतः

५. अठ-भागिये च
आष्टभागिकः च :

---

१. सरकार : शिला-विकृत-भित्तिका: ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खण्ड २

मौर्योत्तर–कालीन अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हेलियोदोरस का बेसनगर गरुड-स्तम्भ अभिलेख

स्थान : मध्यप्रदेश के भिलसा (विदिशा) जिले में बेसनगर ग्राम में स्थित गरुड-स्तम्भ पर उत्कीर्ण ।

लिपि : मौर्योत्तर-कालीन ब्राह्मी ।

विषय : यवन राजा अन्तियलकीदास के राजदूत हेलियोदोरस द्वारा विष्णु-मन्दिर के सम्मुख गरुड-ध्वज की स्थापना ।

संदर्भ : फोगल, ASIAR, 1908-9, p. 126; रैप्सन, Ancient India, p. 133-34 and 157; डी. आर. भण्डारकर, JBBRS, 23, p. 104; रायचौधरी, EHVS, P. 99; सरकार, SI, p. 88-89.

भाग क

१. [दे]वदेवस वा[सुदे]वस गरुडध्वजे अयं
देव-देवस्य वासुदेवस्य गरुड-ध्वजः अयं

२. कारिते इ[अ] हेलिओदोरेण भाग-
कारितः इह हेलियोदोरेण भाग-

३. वतेन दियस पुत्रेण तख्खसिलाकेन
बतेन दियस्य पुत्रेण तक्षशिलाकेन

४. योनदूतेन आगतेन महाराजस
यवनं-दूतेन आगतेन महाराजस्य

५. अंतलिकितस उपता सकासं रञो
अन्तलिकितस्य उपान्तात् सकाशं राज्ञः

६. कोसीपु[त] स[1][भ]ागभद्रस त्रातारस
कौत्सी-पुत्रस्य भागभद्रस्य त्रातुः

---

१. सरकार : कासीपुत्रस ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. वसेन च[तु]दसेंन[1] राजेन वधमानस[2]
घर्षेण चतुर्दशेन राज्येन [च] वर्धमानस्य ।

भाग ख

१. त्रिनि अमुतपदानि [इअ] सु अनुठितानि
त्रीणि अमृत-पदानि इह स्वनुष्ठितानि

२. नेयंति [स्वगं] दम चाग अप्रमाद
नयन्ति स्वर्गं—दमः त्यागः अप्रमादः ।

---

१. दसेन पढ़ें ।

२. भण्डारकर पूरी पंक्ति को निम्न प्रकार से पढ़ते हैं :
धासिना मभ[दे]से नईराजे नवध[ं]मानुसासनाय ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धनदेव का अयोध्या अभिलेख

स्थान : उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में अयोध्या नगर से लगभग एक किलो मीटर दूर बाबा संतबख्श की समाधि के पूर्वी द्वार पर लगे शिला-खंड पर उत्कीर्ण जिसका मूल स्थान अज्ञात है।

लिपि : उत्तरी क्षत्रपों के अभिलेखों की लिपि के सदृश ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत। उपलब्ध संस्कृत लेखों में यह लेख प्राचीनतम है।

विषय : कौशिकी-पुत्र धनदेव द्वारा फल्गुदेव (संभवतः धनदेव के पिता) के पुण्यस्थान (समाधि) का निर्माण।

संदर्भ : जगन्नाथदास रत्नाकर, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, ५, भाग १, पृ० ९९; गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, वही, पृ०, २०१; काशी प्रसाद जायसवाल, JBORS, 10, p. 302; 13, p. 247; ए. बैनर्जी शास्त्री, Modern Review, Jan, 1925, P, 59; एन.के. भट्टसाली, Modern Review, Feb. 1925, p. 202; एन. जी. मजुमदार, ABORI, 7, p. 160; दयाराम साहनी, EI, 20, p. 54, सरकार, SI, P. 94.

१. कोसलाधिपेन द्विरश्वमेध-याजिनः सेनापतेः पुष्यमित्रस्य[1] षष्ठेन कौशिकी-पुत्रेण धन[देवेन[2]

२. धर्म-राज्ञा (राजेन) पितुः फल्गुदेवस्य केतनं कारितं[3] [॥]

---

१. सरकार द्वारा संशोधन : पुष्यमित्रात्।

२. सरकार द्वारा प्रस्तावित अन्य विकल्प : धनदेन, धनकेन, धननन्दिना धनभूतिना, धनमित्रेण, धनदत्तेन, धनदासेन।

३. कारितम् पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पभोसा गुहा अभिलेख

वर्ष १०

स्थान : उत्तरप्रदेश के अलाहाबाद के दक्षिण-पश्चिम में लगभग ५० किलोमीटर दूर पभोसा नामक ग्राम की पहाड़ी की एक गुहा के बाहर और भीतर उत्कीर्ण ।

लिपि : ईसा पूर्व द्वितीय या प्रथम शताब्दी की ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत प्रभावित प्राकृत ।

विषय : राजा बृहस्पति-मित्र के मामा आषाढ-सेन द्वारा गुहा निर्माण ।

संदर्भ : हॉर्नले, PASB, March, 1887, p. 105; ए. फ्यूरर, EI, 2, p. 240; सरकार, SI, p. 99.

१ (गुहा के बाहर की शिला पर)

१. राज्ञो गोपाली-पुत्रस
राज्ञः गोपाली-पुत्रस्य

२. बहसपति-मित्रस
बृहस्पति मित्रस्य

३. मातुलेन गोपालीया
मातुलेन गोपालिका-

४. वैहिदरी-पुत्रेन [आसा][1]
वैहिदरी-पुत्रेण

५. आसाढसेनेन लेनं
आषाढसेनेन लयनं

---

१. यहाँ से मिटा कर 'आसा' को अगली पंक्ति में उत्कीर्ण किया गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. कारितं [उदाकस] दस-
कारितं उदाकस्य दश-

७. मे सवछरे वपिफ(छ?)त्र[1] अरहं-
मे संवत्सरे वपिछत्र-अर्हं

८. [तानं]······
तां······

२ (गुहा के भीतर की भित्ति पर)

१. अहिछत्राया राञो शोनकायन[2]-पुत्रस्य वंग-पालस्य
अहिच्छत्रायाः[3] राज्ञः शौनकायन-पुत्रस्य वंग-पालस्य

२. पुत्रस्य राञो तेवणी-पुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण
पुत्रस्य राज्ञः त्रैवर्णी-पुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण

३. वैहिदरी-पुत्रेण आषाढसेनेन कारितं[॥]
वैहिदरी-पुत्रेण आषाढसेनेन कारितं[लयनम्[4]] ॥

---

१. फ्यूरर : कश्शपीयानं। प्रदत्त पाठ सरकार का।
२. सरकार के अनुसार शोनकायनी होना चाहिए।
३. सरकार शुद्धरूप अधिचछत्रायाः मानते हैं।
४. सरकार का सुझाव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिनकोट (बजौर) में मिनेन्द्र-कालीन अभिलेख

वर्ष ५

स्थान : उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रदेश (पाकिस्तान) के पार पञ्चकोरा-स्वात नदियों के संगम से लगभग ३० किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में बजौर जन-जाति-क्षेत्र में शिनकोट नामक स्थान।

लिपि : खरोष्ठी।

भाषा : प्राकृत।

विषय : महात्मा बुद्ध के अवशेषों का प्रतिष्ठापन।

संदर्भ : एन.जी. मजुमदार, EI, 24, p. 1,ff; सरकार, वही, 26, pp. 318; स्टेन कोनो, NIA, Jan. 1940, pp. 639-48; EI, 27, pp. 52 ff; सरकार, SI, pp. 102-3

भाग — १

(ढक्कन के किनारे पर)

···मिनेद्रस महरजस कटिग्रस दिवस ४ ४ ४ १ १
···मीनेन्द्रस्य महाराजस्य कार्त्तिकस्य दिवसः ४ ४ ४ १ १

प्र[ण]-[स]मे[द]...
प्राण-समेतं...

(ढक्कन के मध्य)

...[प्रति][थवि]त[।*]
...प्रतिष्ठापितम् ।

(ढक्कन का भीतरी भाग)

प्रण-समे[द] [शरिर*] [भगव*] [तो] शक-मुनिस [।*]
प्राण-समेतं शरीरं भगवतः शाक्य-मुनेः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(मञ्जूषा के भीतर)

वियकमित्रस अप्रच-रजस [।*]

वीर्यकमित्रस्य अ-प्रत्यग्-राजस्य

भाग—२

(ढक्कन के मध्य)

विजय[मित्रे]ण···

विजयमित्रेण···

पते प्रदिथविदे [।*]

पात्रं प्रतिष्ठापितम् ।

(मञ्जूषा के भीतर)

१. इमे शरिर पलुग-भुदओ न सकरे अत्रित [।*] स

इदं शरीरं प्ररुग्ण-भूतकं न सत्कारेण आदृतम् । तत्

शरिअत्रि कलद्रे नो शध्रो न पिंडोयकेयि पित्रि ग्रिणयत्रि [।*]

शीर्यति कालतः न श्रद्धः न पिण्डोदकानि पितॄन् ग्राहयति ।

२. तस ये पत्रे अपोमुअ [।*]वषये पंचमये ४ १

तस्य एतत् पत्रम् अवमुक्तम् । वर्षके पञ्चमके ४ १

वेश्रखस मसस दिवस पंचविश्रये इयो

वैशाखस्य मासस्य दिवसे पञ्च-विंशके इह

३. प्रत्रिथवित्रे विजयमित्रेण अप्रचरजेन भग्रवतु शकिमुणिस

प्रतिष्ठापितं विजयमित्रेण अ-प्रत्यग्-राजेन भगवतः शाक्यमुनेः

सम सबुधस शरिर

सम्यक् सम्बुद्धस्य शरीरम् ।

(मञ्जूषा की पृष्ठ पर)

विश्पिलेन अणंकतेन लिखित्रे [।*]

विश्विलेन आज्ञाकृता लिखितम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरिडर्ख थियोडोरस का स्वात अभिलेख

स्थान : पाकिस्तान की स्वात घाटी के एक ग्राम से प्राप्त पात्र पर उत्कीर्ण। यह पात्र लाहौर संग्राहलय में सुरक्षित है।

लिपि : खरोष्ठी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : थियोडोरस द्वारा भगवान बुद्ध के अवशेषों का प्रतिष्ठापन।

संदर्भ : एफ, डब्ल्यू, थॉमस, Festschrift Ernst Windisch, Leipzig, 1914, p. 362; स्टेन कोनो, CII, II, pt. I, p. 1; सरकार, SI, p. 111.

१. थेउडोरेन मरिदर्खेन प्रतिठविद्र इमे शरिर शकमुणिस
थेवदोरेण मेरिदर्खेन प्रतिष्ठापितं इदं शरीरं शाक्यमुनेः

भग्रवतो बहु-जाण-[हिति] ये[1] [।।*]
भगवतः बहु-जन-हिताय ।।

---

१. थॉमस : जतिष्ठितिये; स्टेन कोनो : जणस्तितिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शोडास-कालीन मथुरा अभिलेख

वर्ष ७२

स्थान : उत्तरप्रदेश के मथुरा नगर में कङ्काली टीला ।

लिपि : ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत प्रभावित प्राकृत ।

विषय : जैनभिक्षु-शिष्या अमोहिनी तथा उसके पुत्रों-पालघोष, प्रोष्ठघोष, धनघोष—द्वारा आर्यवती (जैनियों की आयागपट नामक पूजा शिला जिस पर आर्य या अर्हत की आकृति होती है) की प्रतिष्ठापना ।

संदर्भ : ब्यूलर, EI, 2, P, 199; 9, P. 243; सरकार, SI, P. 120.

१. नम अरहतो वर्धमानस
नमः अर्हते वर्धमानाय ।

२. स्व [ा] मिस महक्षत्रपस शोडासस सवत्सरे ७०[1] २ हेमंत-मासे
स्वामिनः महाक्षत्रपस्य शोडासस्य संवत्सरे ७२ हेमन्तमासे
२ दिवसे ९ हरिति-पुत्रस्य पालस भयाये सम[न*]स[ा]विकाये
२ दिवसे ९ हारीती-पुत्रस्य पालस्य भार्यया श्रमण-श्राविकया

३. कोछिये अमोहिनिये सहा पुत्रेहि पालघोषेन पोठघोषेन
कौत्स्या अमोहिन्या सह पुत्रैः पालघोषेण प्रोष्ठघोषेण
धनघोषेन आर्यवति [प्र]तिथापिता प्रिय...
धनघोषेण आर्यवती प्रतिष्ठापिता [प्रियकस्य कृतिः][2]...

४. आयवंती[3] अरहत-पूजाये [।।*] .
आर्यवती अर्हत्-पूजायै ।।

---

१. ब्यूलर : ४० ।
२. सरकार का सुझाव ।
३. ब्यूलर : आर्यवती ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पतिक का तक्षशिला ताम्र-पट्ट अभिलेख

वर्ष ७८

स्थान : तक्षशिला (अब पाकिस्तान में) के पूर्वोत्तर में थुपकिया ग्राम से उपलब्ध ताम्र-पट्ट पर उत्कीर्ण जो अब रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

लिपि : शक कालीन खरोष्ठी।

भाषा : प्राकृत।

विषय : महाक्षत्रप पतिक द्वारा शाक्यमुनि की अस्थियों पर स्तूप का तथा संघाराम (विहार) का निर्माण।

संदर्भ : ब्यूलर, EI, 4, PP. 55-57; स्टेन कोनो, CII, II, Pt. I, PP,28; मनतोषचन्द्र चौधरी, KURJ, I, 2, PP. 251-59; सरकार, SI, pp 124-25.

१. [संवत्स]रये अठसततिमए २० २० २० १० ४ ४ महरयस
संवत्सरके अष्ट-सप्ततितमके २० २० २० १० ४ ४ महाराजस्य

महंतस [मो]गस प[ने*]मस मसस दिवसे पंचमे ४ १ एतये
महतः मोगस्य पनेमस्य मासस्य दिवसे पञ्चमे ४ १ एतस्यां

पूर्वये क्षहर [त*] [स]
पूर्वायां [तिथौ] क्षहरातस्य

२. चुख्सस च क्षत्रपस लिग्रको कुसुलुको नम तस पुत्रो [पतिक]
चुख्सस्य च क्षत्रपस्य, लियकः कुसुलुकः नाम, तस्य पुत्रः पतिकः

तखशिलये नगरे उतरेण प्रचु-देशो क्षेम नम अत्र
तक्षशिलायां नगरे। उत्तरेण प्राच्य-देशः क्षेमः नाम। अत्र

१. सरकार : क्षहर [स] (=क्षहरस्य)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. [दे*]'शे पतिको अप्रतिठवित भगवत शक-मुनिस शरिरं
देशे पतिकः अ-प्रतिष्ठापितं भगवतः शाक्य-मुनेः शरीरं

[प्र][तिथवेति][२] [सं]घरमं च सर्व-बुधन पुयए मस-पितरं
प्रतिष्ठापयति सङ्घारामं च सर्व-बुद्धानां पूजायै, माता-पितरौ

पुयय[ंतो]
पूजयन्,

४. क्षत्रपस स-पुत्र-दरस अयु-बल-वर्धिए भ्रतर सर्व [च]
क्षत्रपस्य स-पुत्र-दारस्य आयुर्बल-वृद्धये, भ्रातृ़न् सर्वान् च

[ञतिग]-[बं*]धवस[३] च पुययंतो [।*] महदनपति पतिक सज
ज्ञातिक—बान्धवान् च पूजयन् । महादानपतिः पतिकः सार्धं

उव[झ]ए[नं*]
उपाध्यायेन

५. रोहिणिमित्रेण य इम(मि?) संघरमे नवकमिक
रोहिणीमित्रेण यः अस्मिन् सङ्घारामे नवकर्मिकः ।

६. पतिकस क्षत्रप लिअक
पतिकस्य क्षत्रपः लियकः ।

---

१. ब्यूलर का अनुमान ।
२. डायसन का अनुमान ।
३. सरकार : (ञतिग) भ्रत्रस (=ज्ञातिकाधिवासान्) ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोण्डोफर्नीस का तख्ते-बाही अभिलेख

संवत् १०३, शासनवर्ष २६

स्थान : पाकिस्तान के पेशावर जिले में यूसुफजई क्षेत्र के मर्दाननगर के लगभग १२ किलोमीटर पश्चिम में तख़्ते बाही।

लिपि : खरोष्ठी।

भाषा : प्राकृत।

विषय : पूजागृह को दान।

संदर्भ : **डायसन**, JRAS, 1875, PP. 375 ff; 1877, PP. 144 ff; **कनिंघम**, ASI, 5, 1875, PP. 58 ff. **सेनार्ट**, JA, 8, 1890, PP. 144 ff; **स्टेन कोनो**, EI, 18, P. 282; CII, II, Pt. I, P. 62; **सरकार**, SI, P. 125.

१. महरयस गुदुव्हरस वष २० ४ १ १
महाराजस्य गुदुव्हरस्य वर्षे २६

२. सव[त्सरए ति] शतिमए १ १०० १११ वेशखस मसस दिवसे
संवत्सरके त्रिशततमके १०३ वैशाखस्य मासस्य दिवसे

३. [प्र]ठ[मे दि १ अत्र (इशं ?) पुन्न (दिणे, क्षुणे ?) पक्षे]
प्रथमे दि १ अत्र पुण्य(दिने, क्षणे) पक्षे

व[ल-स]मिस [वो]यणस[1]
बलस्वामिनो बोयणस्य

---

१. सरकार : प्रठमे पुञ्ञे बहले पक्षे ब(बि)लसमिस बोयणस।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. प[रि]वर [श]ध-दण स-पु[त्र-धितरस][1] मिर बोयणस
परिवारः श्रद्धा-दानं सपुत्रस्य केनमिर-बोयनस्य

५. एर्भुण कपसस्न पुयए मदु-
एर्भुन कप···स्य पूजायै माता-

६. पिदु पुय[ए] [।।]
पित्रोः पूजायै ।।

---

१. सरकार : स-पुत्रस केणमिर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कलवान ताम्र-पट्ट अभिलेख

वर्ष १३४

स्थान : पाकिस्तान में रावलपिण्डी जिले के सिरकप नाम स्थान से ५ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में एक स्तूप की नींव से प्राप्त ।

लिपि : खरोष्ठी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : धर्म नाम व्यक्ति की पुत्री तथा भद्रपाल की पत्नी चन्द्राभी द्वारा महात्मा बुद्ध के अवशेषों का प्रतिष्ठापन ।

संदर्भ : स्टेनकोनो, EI, 21, P. 259; सरकार, SI, P. 131.

१. संवत्सरये १०० २० १० ४ अजस श्रवणस मसस दिवसे
संवत्सरके १३४ अयस्य श्रावणस्य मासस्य दिवसे

त्रेविशे २० १ १ १ इमेण क्षुणेण चंद्रभि उपसिअ
त्रयोविंशे २३ अनेन क्षणेन चन्द्राभी उपासिका

२. ध्रंमस ग्रहवतिस धित भद्रवलस भय छडशिलए शरिर
धर्मस्य गृहपतेः दुहिता भद्रपालस्य भार्या छत्रशिलके शरीरं

प्रईस्तवेति[1] गहथू-
प्रतिष्ठापयति गृहस्तू-

३. वभि सध भ्रदुण णंदिवढणेण[2] ग्रहवतिण सध पुत्रेहि शमेण
पे सार्द्धं भ्रात्रा नन्दिवर्धनेन गृहपतिना सार्द्धं पुत्राभ्यां शमेन

सईतेण च धितुणच
सजितेन च दुहित्रा च

---

१. सरकार : प्रइस्तवेति ।
२. सरकार : नंदिवढणेण ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. ध्रमये सध ष्णुषएहि रजए इद्रए य[1] सध जिवणंदिण
धर्मया सार्द्धं स्नुषाभ्यां लज्जया इन्द्रया च सार्द्धं जीवनन्दिना

शम-पुत्रेण अयरिएण य[1] स[र्व]स्ति-
शम-पुत्रेण आचार्याणां च सर्वास्ति-

५ वअ्रण परिग्रहे रठ-णिकमो पुयइत सर्व-स्वत्वण पुयए णिवणस
वादिनां परिग्रहे राष्ट्र-निगमौ पूजयित्वा सर्वसत्त्वानां पूजायै निर्वाणस्य

प्रतिअ्रए होतु [।।]
प्रत्याये भवतु ।।

---

१ च पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तक्षशिला रजत-पट्ट अभिलेख

विक्रम (?) संवत् १३६

स्थान : तक्षशिला (अब पाकिस्तान में) के उत्खनन में धर्मराजिक स्तूप के पश्चिमवर्ती एक कक्ष से प्राप्त गोलाई में लपेटे एक रजत-पट्ट पर उत्कीर्ण ।

लिपि : खरोष्ठी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : नवाचल नगरवासी इन्तप्रिय के पुत्र द्वारा धार्मिक भावना से प्रेरित होकर धर्मराजिक स्तूप में भगवान बुद्ध के अवशेषों का प्रतिष्ठापन ।

संदर्भ : स्टेनकोनो, EI, 14. PP. 184; CII, II, Pt. I, PP. 70; **सरकार,** SI, PP. 133; **साधुराम,** IS, 2, Pt. I, PP. 45-52.

१. स १ १०० २० १० ४ ११ अयस अषढस मसस
सं १ १०० २० १० ४ ११ अयस्य आषाढस्य मासस्य
दिवसे १० ४ १ इश दिवसे प्रदिस्तवित भगवतो
दिवसे १० ४ १ अस्मिन् दिवसे प्रतिष्ठापिताः भगवतो
धातु[ओ] उर[श]-
धातवः औरश-

२. केण [इं]तव्हिय-पुत्रेण बहलिएण णोअचए णगरे
केन इन्तप्रिय-पुत्रेण बाहलिकेन नवाचले नगरे
वस्तवेण तेण इमे प्रदिस्तवित भगवतो धातुओ धम-र-
वास्तव्येन तेन इमे प्रतिष्ठापिताः भगवतो धातवः धर्म-रा-

३. इए तक्षशि[ल]ए तणुवए बोसि(धि)सत्व-गहमि महरजस
जिके तक्षशिलाके तनुवके बोधिसत्त्व-गृहे महाराजस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रजनिरजस देव-पुत्रस खुषणस अरोग-दक्षिणए
राजातिराजस्य देव-पुत्रस्य कुषाणस्य आरोग्य-दक्षिणायै

४. सर्व-[बुध]ण पुयए पच(चे)ग-बुधण पुयए अरह [त]ण पु[य]ए
सर्व-बुद्धानां पूजायै प्रत्येक-बुद्धानां पूजायै अर्हतां पूजायै
सर्व-स[त्व]ण पुयए मत-पितु पुयए मित्रमच-ञति-स-
सर्व-सत्त्वानां पूजायै माता-पित्रोः पूजायै मित्रामात्य-ज्ञाति-स

५. लोहि[त]ण पुयए अत्वणो अरोग-दक्षिणए णिवणए
लोहितानां पूजायै आत्मनः आरोग्य-दक्षिणायै निर्वाणाय

होतु अ[य]दे सम-परिचगो
भवतु आयतः सम्यक्-परित्यागः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कनिष्क-कालीन सारनाथ बौद्ध-प्रतिमा अभिलेख

वर्ष ३

स्थान : उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट सारनाथ से उपलब्ध बोधिसत्त्व मूर्ति के छत्रस्तम्भ पर उत्कीर्ण।

लिपि : कुछ-कुछ प्रारम्भिक गुप्तकालीन लिपि से मिलती-जुलती कुषाण ब्राह्मी।

भाषा : प्राकृत।

विषय : बल नामक भिक्षु द्वारा बोधिसत्त्व मूर्ति का दान।

संदर्भ : जे. पी एच. फोगल, EI, 8, PP. 173.ff. सरकार, SI, P. 136.

१. महारजस्य कणिष्कस्य सं ३ हे ३ दि २० २
महाराजस्य कनिष्कस्य सं ३ हे ३ दि २० २

२. एताये पुर्वये भिक्षुस्य पुष्यवुद्धिस्य सद्ध्येवि-
एतस्यां पूर्वायां भिक्षोः पुष्यबुद्धेः सार्ध-वि-

३. हारिस्य भिक्षुस्य बलस्य त्रेपिटकस्य
हारिणः भिक्षोः बलस्य त्रैपिटकस्य

४. वोधिसत्वो छत्रयष्टि च प्रतिष्ठापितो
बोधिसत्त्वः छत्र-यष्टिः च प्रतिष्ठापिता

५. वाराणसिये भगवतो चंकमे सहा मात[ा]-
वाराणस्यां भगवतः चङ्क्रमे सह माता-

६. पितिहि सहा उपद्ध्यायाचेरेहि[1] सद्ध्येविहारि-
पितृभ्यां सह उपाध्यायाचार्यैः सार्ध-विहारि-

---

१. सरकार : चर्येहि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७ हि अन्तेवासिकेहि च सह बुद्धमित्रये त्रेपिटिक-
भिः अन्तेवासिकैः च सह बुद्धमित्रया त्रैपिटक-

८. ये सहा क्षत्रपेण वनस्फरेन[1] खरपल्ला-
या सह क्षत्रपेण वनस्फरेण खरपल्ला-

९. नेन च सहा च[तु]हि परिषाहि सर्वसत्वनं
नेन च सह चतसृभि परिषद्भिः सर्व-सत्त्वानां

१०. हितसुखार्त्थं
हित-सुखार्त्थम् ।।

१. वही : वनस्परेन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कनिष्क-कालीन सुई विहार ताम्र-पट्ट अभिलेख

शासनवर्ष ११

स्थान : पाकिस्तान में बहावलपुर से २५ किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम को सुई विहार नामक खण्डित स्तूप से प्राप्त ताम्र-पट्ट जो अब एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता में सुरक्षित है ।

लिपि : खरोष्ठी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : बलजय की माता उपासिका विहार-स्वामिनी द्वारा भिक्षु नागदत्त की यष्टि की स्थापना ।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, 5, 1875, 57 f; सेनार्ट, JA, 8; XV, 1890, PP. 135; वोयर, वही, 10, iii, 1904, PP. 466 ff; ई. टामस, JRAS, 1877, P. 9, n. 1; ब्यूलर, वही, 1894, P. 535; बेनर्जी, IA, 1908, PP. 46, 72; स्टेन कोनो, EI, 19, PP. 1 ff; CII, II. Pt. I, PP. 138 ff.; सरकार, SI, PP. 140-41.

१. महरजस्य रजतिरजस्य देवपुत्रस्य क[नि]ष्कस्य
महाराजस्य राजातिराजस्य देवपुत्रस्य कनिष्कस्य

संव[त्स]रे एकदशे सं १० १ दइसिकस्य मस[स्य]दिव[से]
संवत्सरे एकादशे सं ११ दैसिकस्य मासस्य दिवसे

अठविशे २० ४ ४
अष्टाविंशे दि २८

२. [अय]त्र[1] दिवसे भिक्षस्य नगदतस्य ध[र्म]-कथिस्य अचर्य-
अत्र दिवसे भिक्षोः नागदत्तस्य धर्मकथिनः आचार्य-

---

१. सरकार का पाठ; वेली : अत्रे; डायसन : अन्त्र; इन्द्रजी : अत्र; हॉर्नले : व्यत्र ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धमत्रत-शिष्यस्य अचर्य भवे(व)-प्रशिष्यस्य यठिं आरोपयत
धर्मत्रात-शिष्यस्य आचार्य भव-प्रशिष्यस्य यष्टिम् आरोपयति[1]

इह द[मे]न
इह दमेन

३. विहिर-स्वमिणि उपसिक [ब]लनंदि[कु]-टिंबिनी बलजय-
विहार-स्वामिनी उपासिका बलनन्दि-कुटुम्बिनी बलजय-

मत च इयं यठि प्रतिठनं ठप[इ]चं अनुपरिवरं ददरि[2]
माता च इदं यष्टि-प्रतिष्ठानं स्थापयित्वा अनुपरिवारं ददाति ।

सर्व-सत्वनं
सर्व-सत्त्वानां

४. हित-सुखय भवतु [।।*]
हित-सुखाय भवतु ।।

---

१. स्टेन कोनो : यष्टिम् आरोपयतः ।
२. ददति पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कनिष्क-कालीन जेदा अभिलेख

वर्ष ११

स्थान : पाकिस्तान में उण्ड के निकट जेदा नामक ग्राम ।

लिपि : खरोष्ठी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : कूप खनन एवं प्रपा निर्माण ।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, 1875, p. 57; सेनार्ट, JA, 8, P. 135; ब्यूलर, JRAS, 1894, P. 535; स्टेनकोनो, EI. 19, P. 1; CII, II, Pt. 1, P. 142; सरकार, SI, P. 14.

१. सं १० १ अषडस मसस दि २० उत्तर फगुणे इशे क्षुणमि
सं ११ आषाढस्य मासस्य दि २० उत्तर-फाल्गुने अस्मिन्क्षणे

२. खदे कुए [मुरो]डस[1] मर्भ्कस्य कनिष्कस्य रजमि [तोयं]द
खातः कुपः मुरुण्डस्य मर्भ्कस्य कनिष्कस्य राज्ये। तोयदा

च भुइ दणसुख हिपेअधिअस स'[वस्ति]वदतिवधस पुजणे लिअक-
च भूयः दणमुखं हिपेयधियस्य सर्वास्तिवादातिवर्धाय पूजने लियक-

३. स क्ष[त्र]पस उप[क]चअ म[दु]कत दण अनुग्र[हेण]
स्य क्षत्रपस्य उपकृत्यायाः मातुः कृतं दानं अनुग्रहेण

[वुध]स संघमित्र रजस [।।*]
वृद्धस्य संघमित्रराजस्य ।।

---

१. सरकार : वेरोडस ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कनिष्क-कालीन माणिकियाला अभिलेख

वर्ष १८

स्थान : पाकिस्तान में रावलपिण्डी जिले के माणिकियाला ग्राम में स्तूप के भीतर उपलब्ध एक वृहद् शिला पर उत्कीर्ण।

लिपि : खरोष्ठी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : दण्डनायक लल द्वारा विहार में भगवान बुद्ध के अवशेषों की स्थापना।

संदर्भ : प्रिंसेप, JASB, 1834, P.507; कनिंघम, Bhilsa topes, P. 129; JASB, 1834, P. 703; ASI, 2, 1871, P. 129; डायसन, JRAS, 1863, P. 250; सेनार्ट, JA, 9, vii P. 1. ff; स्टेनकोनो CII, II, Pt. I, P. 149; सरकार, SI, P. 142.

१. सं १० ४ ४ कर्तियस मस [स०] दिवसे २०[1] [एत्र]पुर्वंए[2]
सं १८ कार्त्तिकस्य मासस्य दिवसे २०। अत्र पूर्वायां
महरजस कणे-
महाराजस्य कनि

२. ष्क[स्य] गुषण-वश-संवर्धक लल
ष्कस्य कुषाणवंश-संवर्धकः ललः

३. दड-णयगो वेश्पशिस क्षत्रपस
दण्डनायकः वेश्पसेः क्षत्रपस्य

४. होरमु[र्तो][3] स तस अपनगे विहरे
होरमुर्त्तः सः तस्य आत्मके विहारे

---

१. कर्तियस…२० पाठ अभिलेख के बाहर दूसरी पंक्ति के सामने उत्कीर्ण हैं।

२. पार्जिटर : क्षत्र-पुर्वंस्य।

३. स्कीथियन शब्द = दानपति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. होरमुर्तो एत्र णण भगव-बुद्ध-थुव
होरमुर्त्तः अत्र नाना भगवद्-बुद्ध-स्तूपान्

६. [प्र]तिस्तवयति सह तए[न] वेश्यशिएण खुदचिए[न][1]
प्रतिष्ठापयति सह त्रयेण[2] वेश्यशिकेन क्षुदेचियेन

७. बुरितेण च विहर-कर[व्ह]एण
बुरितेन च विहार-कारकेण

८. संवेण च परिवरेण सध एतेन कु-
साम्बेन च परिवारेण सार्द्धम् । एतेन कु-

९. शल-मुलेन बुधेहि च ष[व]एहि[3] [च]
शल-मूलेन बुद्धैः च श्रावकैः च

१०. समं सद[4] भवतु
समं सदा भवतु

११. भ्रतर स्वरबुधिस अग्रप[डि]अशए
भ्रातुः स्वरबुद्धेः अग्रप्रत्यंशाय

१२. सध बुधिलेन नवकर्मिगेण[5] [।।*]
सार्द्धं बुद्धिलेन नवकर्मिकेण ।।

---

१. सेनार्ट : खडचियेन; ल्यूडर्स : खुजचिएन; पार्जिटर : खुदेण्टिएन ।
२. पर्जिटर : तेन ।
३. ल्यूडर्स : षवकहि=श्रावकैः; मजुमदार : अठकहि ।
४. सेनार्ट : सच सद; पार्जिटर : सवसन; ल्यूडर्स : सछसन ।
५. सेनार्ट तथा पार्जिटर : संघ बुधिलेन सवकर्मिगेण ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कनिष्क-कालीन सेत-महेत प्रतिमा अभिलेख

स्थान : उत्तर प्रदेश में गोण्डा और भडाइच की सीमा पर सेत-महेत से प्राप्त प्रतिमा ।

लिपि : ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत-प्रभावित प्राकृत ।

विषय : भिक्षु बल द्वारा बोधिसत्त्व की प्रतिमा, छत्र तथा यष्टि की स्थापना ।

संदर्भ : ब्लॉख, EI, 8, P. 180; सरकार, SI, P. 145

१. महाराजस्य देवपुत्रस्य कनिष्कस्य सं······दि १० ९ एतये
महाराजस्य देवपुत्रस्य कनिष्कस्य सं······दि १९ एतस्यां
पुर्वये भिक्षुस्य पुष्य[वु]
पूर्वायां भिक्षोः पुष्यवृ-

२. [द्धिस्य][1] सद्धयेविहारिस भिक्षुस्य बलस्य त्रेपिटकस्य दानं[2]
द्धेः सार्द्धं विहारिणः भिक्षोः बलस्य त्रैपिटकस्य दानं
[बो]धिसत्वो छात्रं दाण्डश्च शावस्तिये भगवतो चंकमे
बोधिसत्त्वः छत्रं दण्डः च श्रावस्त्यां भगवतः चङ्क्रमे

३. कोसंबकुटिये अ[च]र्य्याणां सर्वस्तिवादिनं परिगहे [।।*]
कौशाम्बकुटयाम् आचार्याणां सर्वास्तिवादिनां परिग्रहे ।।

---

१. सरकार का सुझाव :
२. दान उत्कीर्ण है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुविष्क का मथुरा प्रस्तर अभिलेख

शक-संवत् २८

स्थान : उत्तर प्रदेश में मथुरा के चौरासी जैन मन्दिर के निकट लाल कुएं से प्राप्त स्तम्भ पर उत्कीर्ण जो मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है।

लिपि : कुषाण-कालीन ब्राह्मी।

भाषा : प्राकृत।

विषय : सरुकमानपुत्र खरासलेर-पति वकनपति द्वारा पुण्यशाला में ब्रह्म-भोजादि के लिए एक श्रेणी को स्थायी दान।

संदर्भ : स्टेन कोनो, EI, 21, pp. 55-61; जायसवाल, JBORS, 18, p. 4 ff. एच. के. देब, IHQ, 8, p. 117 ff.

१. सिद्ध[1] [।।*] संवत्सरे २० ८ गुर्प्पिये दिवसे १ अयं पुण्य-
सिद्धम् ।। संवत्सरे [अष्टाविंशे] २२ गुर्पिये दिवसे [प्रथमे] १ इयं पुण्य-

२. शाला प्राचिनीकन सरुकमान-पुत्रेण खरासले-
शाला प्राचीनीकेन सरुकमाण-पुत्रेण खरासले-

३. र-पतिन वकन-पतिना अक्षय-नीवि दिन्न तुतो[2] वृ[द्धि]-
र-पतिना वकन-पतिना अक्षयनीविः दत्ता। ततः वृद्धि-

४. तो मासानुमासं शुद्धस्य चतुदिशि पुण्य-शा[ला]-
तः मासानुमासं शुद्धस्य चतुर्दश्यां पुण्यशाला-

५. यं ब्राह्मण-शतं परिविषितव्यं दिवसे दिव[से]
यां ब्राह्मण-शतं परिवेशयितव्यं; दिवसे दिवसे

६. च पुण्य-शालाये द्वार-मुले धारिये साद्यं-सक्तना[3][ ] आ
च पुण्य-शालायाः द्वार-मूले धार्यं स्वाद्य-सक्तूनाम् आ-

---

१. चिह्न द्वारा प्रदर्शित। २. ततो पढ़ें। ३. स्टेन कोनो : सक्तूनां।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. ढका ३ लवृण[1]-प्रस्थो १ शक्त[2]-प्रस्थो १ हरित-कलापक-
ढकाः [त्रयः], लवण-प्रस्थः [एकः] १, शुक्त-प्रस्थः [एकः] १, हरित-कलाप-

८. घटक[ा] ३ मल्लक[ा] ५ एतं अनाध[ा]नां कृतेन दा[तव्य]
घटकाः[त्रयः] ३, मल्लकः [पञ्च] ५ । एतत् अनाथानां कृतेन दातव्यं

९. बभक्षितन पिबसितनं य चत्र पुण्य तं देवपुत्रस्य
बुभुक्षितानां पिपासितानां [च] यत् च अत्र पुण्यं तत् देवपुत्रस्य

१०. षाहिस्य हुविष्कस्य येषा च देवपुत्रो प्रियः तेषामपि पुण्य
षाहेः हुविष्कस्य । येषां च देवपुत्रः प्रियः तेषाम् अपि पुण्यं

११. भवतु सर्वायि[3]च पृथिवीये पुण्य भवतु अक्षय-निवि दिन्ना
भवतु । सर्वस्याः पृथिव्याः पुण्यं भवतु । अक्षय-नीविः दत्ता

१२. ......[र]ाक-श्रेण[ी]ये पुराण-शत ५०० ५०
......[र]ाक-श्रेण्यां पुराण-शतानि [सार्द्ध-पञ्च] ५५०

समितकर-श्रेणी-
समिताकर-श्रेण्यां

१३. [ये च*] पुराण-शत ५०० ५००
च पुराण-शतानि [पार्द्ध-पञ्च] ५५० ॥

---

१. लवण° पढ़ें । २. शुक्त पढ़ें । ३. सर्वायि पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कनिष्क (द्वितीय)-कालीन आरा अभिलेख

वर्ष ४१

स्थान : पाकिस्तान में अटक नगर के समीप आरा ग्राम।

लिपि : खरोष्ठी।

भाषा : प्राकृत।

विषय : दाषपर द्वारा कूप-खनन।

संदर्भ : राखलदास बेनर्जी, IA, 37, P. 58; ल्यूडर्स, IA, 37, P. 142; स्टेन कोनो, EI: 14, p. 143; CII, II, pt. 1, P. 162; सरकार, SI, P. 154.

१. महरजस रजतिरजस देवपुत्रस [क]इ[स]रस
महाराजस्य राजातिराजस्य देवपुत्रस्य कैसरस्य

२. व[झि]ष्प[1]-पुत्रस कनिष्कस संवत्सरए एकचत[रि]-
वासिष्क-पुत्रस्य कणिष्कस्य संवत्सरे एकचत्वारिं-

३. [शए] सं २० २० १ जेठस मासस दिव[से]१इ[शे]
शे सं ४१ ज्येष्ठस्य मासस्य दिवसे १ अस्मिन्

दिवस-क्षुणामि ख[दे]
दिवस-क्षणे खातः

४. [कुपे] दषव्हरेन पोष-पुरिअ-पुत्रण मतर-पितरण पुय[ए]
कूपः दाषपरेण पोष-पुरिक-पुत्राणां माता-पित्रोः पूजायै

---

१. बेनर्जी : वसिष्य...

२. स्टेन कोनो : २० ४ १ (=२५)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. अत्मणस[1] सभर्य[स स]पुत्रस अनुग्रहर्थए सर्व [सप]ण
आत्मनः सभार्यस्य सपुत्रस्य अनुग्रहार्थाय सर्वसत्त्वानां

६. जति[षु] हितए इमो च लिखितो म[धु]······[।।]
जातिषु हिताय[2]। इदं च लिखितं मधु·········।।

---

१. सरकार : हिरंणस (=हिरण्यस्य)।
२. सरकार : छतए (=छदाय=रक्षायै)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुविष्क-कालीन खवत (वर्दक) अभिलेख

वर्ष ५१

स्थान : अफगानिस्तान में काबुल के पश्चिम ४८ किलोमीटर वर्दक के निकट खवत नामक स्थान से प्राप्त भरत-धातु के पात्र पर उत्कीर्ण।

लिपि : खरोष्ठी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : कम-गूल्य-पुत्र वग्रमरेग द्वारा अपने विहार में शाक्यमुनि के अवशेषों का प्रतिष्ठापन।

संदर्भ : राजेन्द्रलाल मित्र, JASB, 30, P. 337; डायसन, JRAS, 20, P. 231-68; JASB, 32, P. 428; पार्जिटर, EI 11, P, 202; सेनार्ट, JA, 11, 569; सरकार, SI, P. 157.

१. सं २० २० १० १ म[स्य] अर्थमिसिय सस्तेहि १० ४ १
सं ५१ मासस्य अर्थमिस्याः सस्तेहि[1] १५

इमेण गड्रिग्रेण कमगुल्य-पु[त्र]वग्रमरेग्र स्र इश[2] खवदम्रि[3] कदलयिग्र
अनेन घटिकेन कमगूल्य-पुत्रः वग्रमरेगः सः इह खवदे कृतालयकः

वग्रमरिग्र-विहरम्रि थु[बं]म्रि[4] भग्रवद शक्यमुणे शरिर
वग्रमरेग-विहारे स्तूपे भगवतः शाक्यमुनेः शरीरं

---

१. सेनार्ट : संस्था।
२. सरकार : इय।
३. वर्तमान स्थल खवत का नाम।
४. सरकार : थुस्तिम्रि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिठवेति
प्रतिष्ठापयति ।

२. इमेण कुशल-मुलेण महरज-रजतिरज-होवेष्कस्र अग्रभग्रए
अनेन कुशल-मूलेन महाराज-राजातिराज-हुविष्कस्य अग्र-भागाय

भवतु मद पिदर मे पुयए भवतु भ्रदर मे हष्थुना मरेग्रस्य
भवतु। माता-पित्रोः मे पूजायै भवतु भ्रातुः मे हष्थुराण-मरेगस्य

पुयए भवतु यो[1] च मे भुय णतिग्र-मित्र-संभतिग्रण पूयए भवतु ।
पूजायै भवतु एतत् च मे भूयः ज्ञातिक-मित्र-संभ्रातृकाणां पूजायै भवतु

महिय च वग्र-मरेग्रस्य अग्र-भग्र पड्रियंशं[ए]
मम[2] च वग्र-मरेगस्य अग्र-भाग-प्रत्यंशाय

३. भवतु सर्व-सत्वण अरोग-दक्षिणए भवतु अविय[3]नरग्र-पर्यंत
भवतु। सर्वसत्त्वानां आरोग्य-दक्षिणायै भवतु। अपि च नरक-पर्यन्तात्

यव भवग्र यो अत्र अंतरं अंडजो जलयुग शपतिग अरूप्यत
यावद् भवाग्रं[4] यः अत्र अन्तरे अण्डजः जारायुकः शष्पादिकं अरूप्यात्मा

सर्विण पूयए भवतु महिय च रोहण[5] सद सर्विण
सर्वेषां पूजायै भवतु। मम च रोहाणां सदा सर्वेषां

सपरिवर च अग्र-भग-पड्रियंशए भवतु अवषड्रिगण
सपरिवारं च अग्र-भाग-प्रत्यंशाय भवतु। अपाषण्डिकानां

मिथ्यगस्र च अग्र-भग भवतु
मिथ्यागस्यः च अग्र-भागः भवतु ।

४. एष विहर अचर्यण महसंघि-गण परिग्रह
एषः विहारः आचार्याणां महासाङ्घिकानां परिग्रहः ॥

---

१. थॉमस का संशोधन : सो ।
२: ल्यूडर्स : मह्यम् ।
३. पार्जिटर का संशोधन : अरिय=आर्य; स्टेन कोनो : अपि च ।
४. पार्जिटर : भ्राव-भावक ।
५. सेनार्ट : बोहण=बोधन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहपान-कालीन नासिक गुहा अभिलेख

वर्ष ४१, ४२, ४५

स्थान : महाराष्ट्र के नासिक नगर से दक्षिण-पश्चिम में आठ किलोमीटर दूर पाण्डुलेणा की दशम गुहा पर ।

लिपि : ब्राह्मी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : भिक्षुओं के आवासार्थ गुहा-निर्माण तथा उनके भरण-पोषण के लिये श्रेणियों में धन का न्यास ।

संदर्भ : ब्यूलर, ASWI, 4, P. 102; सेनार्ट, EI, 8, p. 82; सरकार, SI, P. 166.

१. सिधं[।।*] वसे ४० २ वेसाख-मासे राञो क्षहरातस
सिद्धम् ।। वर्षे ४२ वैशाखमासे राज्ञः क्षहरातस्य

क्षत्रपस नहपानस जामातरा दीनीक-पुत्रेन उषवदातेन
क्षत्रपस्य नहपानस्य जामात्रा दीनीक-पुत्रेण ऋषभदत्तेन

संघस चातुदिसस इमं लेणं नियातितं दतं चानेन
सङ्घाय चातुर्दिशाय इदं लयनं निर्यातितम् । दत्ता च अनेन

अक्षय-निवि काहापण-सहस्रा-
अक्षयनीविः कार्षापण-सहस्रा-

२. नि त्रिणि ३००० संघस चातुदिसस ये इमस्मि लेणे
णि त्रीणि ३००० सङ्घाय चातुर्दिशाय या अस्मिन् लयने

१. सरकार : त्रीणि ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वसातानं[1] भविसंति चिवरिक कुशण-मूले च एते
वसतां भविष्यति चैवरिक कुशान्न-मूल्यं च। एतानि

च काहापणा प्रयुता गोवधनं वाथवासु श्रेणिसु
च कार्षापणानि प्रयुक्तानि गोवर्द्धने वास्तव्यासु श्रेणिषु

कोलीक—निकाये २००० वृधि पडिक-शत अपर कोलीक-निका
कौलिकनिकाये २००० वृद्धिः प्रतिक-शतं अपर-कौलिक-निका-

३. ये १००० वधि पायून-पडिक-शत एते च काहापणा
ये १००० वृद्धिः पादोनप्रतिक-शतं। एतानि च कार्षापणानि

अपडिदातवा वधि-भोजा एतो चिवरिक-सहसानि बे
अप्रतिदातव्यानि वृद्धि-भोज्यानि। एतयोः चैवरिकं सहस्रे द्वे

२००० ये पडिके सते एतो मम लेणे वसवुथान भिखुनं
२००० ये प्रतिक-शतम्। एतस्मात् मम लयने वास्तव्यानां भिक्षूणां

वीसाय एकीकस चिवरिक बारसक य सहस्र प्रयुतं
विंशतये एकैकस्य चैवरिकं द्वादशकं तत् सहस्रं प्रयुक्तं

पायुन-पडिके शते अतो कुशन—
पादोनप्रतिक—शतम् अतः कुशान्न—

४. मूल कापूराहारे च गामे चिखलपद्रे ददानि नाळिगेरान
मूल्यम्। कर्पूराहारे च ग्रामे चित्खलपद्रे दत्तानि नारिकेलानां

मुल-सहस्राणि अठ ८०,०० एत च सवं स्रावितं निगम-
मूल-सहस्राणि अष्ट ८००० एतत् च सर्वं श्रावितं निगम-

सभाय निबध च फलकवारे चरित्रतो ति भूयो नेन दतं
सभायां निबद्धं च फलकवारे चरित्रतः इति। भूयः अनेन दत्तं

वसे ४० १ कातिक-शुधे[1] पनरस पुवाक वसे ४० ५
वर्षे ४१ कार्तिक-शुद्धे पञ्चदशे पौर्वकं वर्षे ४५

---

१. सरकार का संशोधन : वसंतानं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. पनरस नियुतं भगवतां देवानं ब्राह्मणानं च कार्षापण-सहस्राणि
पञ्चदशे नियुक्तं भगवद्भ्यः देवेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः च कार्षापण-सहस्राणि

सतरि ७०००० पंचत्रिशक सुवणं कृता दिन सुवर्ण-सहस्रणं मूल्यं
सप्तति ७०,००० पञ्चत्रिशतकं सुवर्णं कृत्वा द्वयोः सुवर्ण-सहस्रयोः मूल्यं

६. फलक-वारे चरित्रतोति
फलकवारे चरित्रतः इति ॥

---

१. सरकार : त्रीणि ः

२. सरकार का संशोधन : वसंतानं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहपान-कालीन कार्ले-गुहा अभिलेख

स्थान : महाराष्ट्र के पूना जिले में कार्ले गुहा ।

लिपि : ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : नहपान के जामाता उषवदात द्वारा भिक्षुओं को करजिक नामक ग्राम का दान ।

संदर्भ : बर्गेस तथा भगवानलाल इन्द्रजी, Cave Temples of Western India, p. 33; बर्गेस तथा ब्यूलर, ASWI, 4, p. 101; सेनार्ट, EI. 7, p. 57; सरकार, SI, P. 171.

१. सिधं [।।*] रञो खहरातस खतपस नहपानस जा[म]तरा
सिद्धं ।। राज्ञः क्षहरातस्य क्षत्रपस्य नहपानस्य जामात्रा

[दीनीक]-पूतेन उसभदातेन ति
दीनीक-पुत्रेण ऋषभदत्तेन त्रि

२. गो-सतसहस-[दे]ण नदिया बणासाया [सु]वण[1]-तिथ-करेन
गो-शतसहस्र-देन नद्यां पर्णाशायां सुवर्ण-तीर्थकरेण

[देवतान] ब्रह्मणन च सोळ[स]-गा-
देवताभ्यः ब्राह्मणेभ्यः च षोडश-ग्रा-

३. म[देन] पभासे पूत-तिथे व्राह्मणाण अठभाया-प[देन]
मदेन प्रभासे पुण्यतीर्थे ब्राह्मणेभ्यः अष्ट-भार्या-प्रदेन

१. सरकार ने यहां दान जोड़ने का सुझाव दिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[अ]नुवासं पि तु सत-सहसं भो-
अनुवर्षं पित्रे शत-साहस्री-भो-

४. जयित वलूरकेसु लेण-वासिन पवजितानं चातुदसस सघस
जयित्रा वलूरकेषु लयन-वासिभ्यः प्रवजितेभ्यः चतुर्द्दिशस्य सङ्घस्य

५. यापणथ गामो[कर]जिको दतो स[वा]न[वा] स-वासिताननं [।।*]
यापनार्थं ग्रामः करजिकः दत्तः सर्वेभ्यः वर्षाव्युषितेभ्यः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्धाऊ में चष्टन एवं रुद्रदामन्-कालीन अभिलेख

वर्ष ५२

स्थान : गुजरात के कच्छ जिले में खावड़ा के निकट अन्धाऊ।

लिपि : ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत से प्रभावित प्राकृत।

विषय : औपशति-गोत्रीय मदन द्वारा भगिनी ज्येष्ठवीरा, भ्राता ऋषभदेव तथा भार्या यशोदत्ता की यष्टियों की स्थापना। त्रेष्टदत्त द्वारा पुत्र ऋषभदेव की यष्टि की स्थापना।

संदर्भ : राखलदास बेनर्जी, EI, 16, p, 19; सरकार, SI, p. 173.

(क)

१. [राज्ञो] [चाष्ट]नस य्सामोतिक-पुत्रस राज्ञो रुद्रदामस
राज्ञः चष्टनस्य जामोतिक-पुत्रस्य राज्ञः रुद्रदाम्नः

जयदाम-पुत्रस
जयदाम-पुत्रस्य

२. व[र्षे द्वि] पंचा[शे] [५०]२ फगुण-बहुलस [द्वि]तिय-वारे[1] [२]
वर्षे द्विपञ्चाशे ५२ फाल्गुण बहुलस्य द्वितीय-वारे २

मदनेन सीहिल-पुत्रेन [भ]गिनिये जेष्टवीराये
मदनेन सिंहिल-पुत्रेण भगिन्याः ज्येष्ठवीरायाः

३. [सी]हि[लधि]तये ओपशति-सगोत्राये लष्टि उथापित [।।*]
सिंहिल-दुहितुः औपशतिक-सगोत्रायाः यष्टिः उत्थापिता ।।

---

१. सरकार का पाठ; बेनर्जी : व (=बहुल)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ख)

१. [राज्ञो चाष्ट]नस य्सामोतिक
राज्ञः चष्टनस्य ज़ामोतिक-

२. पु[त्र]स राज्ञो [रु]द्रदामस
पुत्रस्य राज्ञः रुद्रदाम्नः

३. जयदाम-पुत्रस वर्षे द्वि-पं
जयदाम-पुत्रस्य वर्षे द्विप-

४. [चा]शे ५० २ फगुण-बहुलस
ञ्चाशे ५२ फाल्गुण-बहुलस्य

५. द्वितीय-वारे २ ऋषभदेवस
द्वितीय-वारे २ ऋषभदेवस्य

६. सीहिल-पुत्रस ओपशति-सगोत्रस
सिंहिल-पुत्रस्य औपशति-सगोत्रस्य

७. भ्रात्रा [मदने]न[सीहि]ल-पुत्रेन
भ्रात्रा मदनेन सिंहिल-पुत्रेण

८. लष्टि उथापित [।।*]
यष्टिः उत्थापिता ।।

(ग)

१. राज्ञो चाष्टनस य्सामोतिक-पुत्रस राज्ञो रुद्रदामस
राज्ञः चष्टनस्य ज़ामोतिक-पुत्रस्य राज्ञः रुद्रदाम्नः

जयदाम-पुत्रस वर्षे द्विपंचाशे ५० २
जयदाम-पुत्रस्य वर्षे द्विपञ्चाशे ५२

२. फगुण-बहुलस द्वितिय-वा २ यशदताये सीहमित-धीता
फाल्गुण-बहुलस्य द्वितीयवारे २ यशोदत्तायाः सिंहमित्र-दुहितुः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शेनिक[१]-सगोत्राये[२] शामणेरिये
शैनिक-सगोत्रायाः श्रामणेर्याः

३. मदनेन सीहिल-पुत्रेन कुटुबिनिये [लष्टि] उथापिता [।।*]
मदनेन सिंहिल-पुत्रेण कुटुम्बिन्याः यष्टिः उत्थापिता

(घ)

१. राज्ञो चाष्टनस ख्सामोतिक-पु[त्रस राज्ञो रुद्रदामस जयदाम][३]-
राज्ञः चष्टनस्य ज़ामोतिक-पुत्रस्य राज्ञः रुद्रदाम्नः जयदाम-

२. पुत्र[स] वर्षे ५० २ फगु[न]बहुलस [द्वितीय]-वारे २
पुत्रस्य वर्षे ५२ फाल्गुण-बहुलस्य द्वितीय-वारे २

३. ऋषभ-देवस त्रेष्टदत-पुत्र[स] ओपश[ति]गो[त्र]स
ऋषभ-देवस्य त्रेष्टदत्त-पुत्रस्य औपशतिक-गोत्रस्य

४. पि[त्रा] त्रेष्टदतेन श्रामणेरेन लष्टि उथापित [।।*]
पित्रा त्रेष्टदत्तेन श्रामणेरेण यष्टिः उत्थापिता ।।

---

१. बेनर्जी ने शिनिक भी सुझाया है ।
२. बेनर्जी ने सगोत्राया पढ़कर सगोत्राये संशोधन किया है ।
३. दूसरे अभिलेखों के आधार पर कल्पित पाठ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुद्रदामन् का गिरनार अभिलेख

शक संवत् ७२

स्थान : गुजरात के जूनागढ़ नगर से लगभग दो किलोमीटर पूर्व को गिरनार नामक पहाड़ी की एक शिला के पश्चिमी-मुख पर ऊपर के भाग में उत्कीर्ण। इसी शिला पर अशोक के १४ अभिलेख तथा स्कन्दगुप्त का अभिलेख भी उत्कीर्ण है।

लिपि : ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : महाक्षत्रप रुद्रदामन् के अमात्य सुविशाख द्वारा सुदर्शन झील के बांध का पुनर्निर्माण। प्रसंगेन रुद्रदामन् की प्रशस्ति।

संदर्भ : प्रिंसेप JASB, 7, p. 338; भाऊदाजी, JBBRAS, 7, p. 113, 118, 125; भगवानलाल इन्द्रजी तथा ब्यूलर, 1A, 7, p. 257; कीलहॉर्न, EI, 8, p. 42; सरकार, SI, p. 175; पाण्डेय, HLI, p. 91; दिसकलकर, SSI, pp. 1-16.

१. सिद्धं [।।*] इदं तडाकं[1] सुदर्शनं गिरिनगरादपि सम[न्तात्][2] ······[मृत्ति]कोपल-विस्तारायामोच्छ्रय-निःसन्धि-बद्ध-दृढ़-सर्व्वं-पालीकत्वात्पर्व्वत-पा-

२. द-प्प्रतिस्पर्द्धि-सुश्लि]ष्ट]-[बन्धं]*············मवजातेनाकृत्त्रिमेण सेतु-वन्धेनोपपन्नं सुप्प्रति-विहित-प्प्रणाली-षरीवाह-

३. मीढ-विधानं च त्रि-स्क[न्ध]·········नादिभिरनुग्रहैर्मंहत्युपचये वर्त्तते]।*] तदिदं राज्ञो महाक्षत्रपस्य सुगृही-

---

१. ब्यूलर तथा प्रिंसेप : तटाकं।

२. ब्यूलर तथा भगवानलाल इन्द्रजी : ०नगरा [द्रि-पाद-रम]। कीलहॉर्न : नगरादूरमन्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. त-नाम्नः स्वामि-चष्टनस्यः पौत्र[स्य राज्ञः महाक्षत्रपस्य सुगृहीत-
नाम्नः स्वामिजयदाम्न]ः पुत्रस्य राज्ञो महाक्षत्रपस्य गुरुभिरभ्यस्त-
नाम्नो रुद्रदाम्नो वर्षे द्वि-सप्ततितमे ७० २

५. मार्ग्गशीर्ष-बहुल-प्र[1] [तिपदि]...... [निः]सृष्ट[2]वृष्टिना पर्ज्जन्येन
एकार्णवभूतायामिव पृथिव्यां कृतायां गिरेरूर्जयतः सुवर्णसिकता-

६. पलाशिनी-प्रभृतीनां नदीनां[3]अतिमात्रोद्वृत्तै र्वेगैः सेतुम......[य]-[4]
माणानुरूप-प्रतीकारमपि गिरि-शिखर-तरु-तटाट्टलकोपतल्प-द्वार-
शरणोच्छ्रय-विध्वंसिना युग-निधन-सदृ-

७. श-परम-घोर-वेगेन वायुना प्रमथित-सलिल-विक्षिप्त-जर्ज्ज-
रीकृताव[दीर्ण]........क्षिप्ताश्म-वृक्ष-गुल्म-लता-प्रतानं[5]आनदी
तलादित्युद्घाटितमासीत्[।*]चत्वारि हस्तशतानि वीशदुत्तराण्या-
यतेन[6] एतावन्त्येव विस्तीर्णेन

८. पंच-सप्तति[7]-हस्तानवगाढेन भेदेन निस्सृत-सर्व्व-तोयं मरु-धन्व-
कल्पमतिभृशं दु[र्दर्शनमासीत्] [।*]......[स्या]र्थे मौर्यस्य राज्ञः
चन्द्रगुप्तस्य राष्ट्रियेण [वै]श्येन पुष्यगुप्तेन कारितं[8] अशोकस्य
मौर्यस्य[कृ*]ते[9]यवन-राजेन तुषास्फेनाधिष्ठाय

९. प्रणालीभिरल[ं] कृत [ं] [।*] तत्कारितया च राजानुरूप-कृत-
विधानया तस्मिं[10] [भेदे] दृष्टया प्रनाड्या वि[स्तृ]त-से[तु]......

---

१. ब्यूलर : प
२. इन्द्रजी तथा ब्यूलरः : सुसृष्ट ।
३. नदीनाम् पढ़ें ।
४. इन्द्रजी तथा ब्यूलर : [र्य] ।
५. प्रतानम् पढ़ें ।
६. विंशुत्यु॰ पढ़ें ।
७. कीलहॉर्न : सप्तति ।
८. कारितम् पढ़ें ।
९. भाऊदाजी : तेन; इन्द्रजी : तत् ।
१०. तस्मिन् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

णा आ गर्भात्प्रभृत्यविहत-समुदि[त]-राज-लक्ष्मी-धारणा-गुणतस्सर्व्व-वर्णैरभिगम्य रक्षणार्थं पतित्वे वृतेन [आ]प्राणोच्छ्-वासात्पुरुषवध-निवृत्ति-कृत-

१०. सत्य-प्रतिज्ञेन अन्य[त्र] संग्रामेष्वभिमुखागत-सदृश-शत्रु-प्रहरण-वितरणत्वाविगुण-रिपु........[धृ]त-करुण्येन स्वयमभिगत-जनपद-प्रणिपतितायुष-शरणदेन[1] दस्यु-व्याल-मृग[2]-रोगादिभिरनु-पसृष्ट-पूर्व्व-नगर-निगम-

११. जनपदानां स्व-वीर्य्यार्जितानामनुरक्त-सर्व्व-प्रकृतीनां पूर्व्वा-पराकरावन्त्यनूप--नीवृदानर्त्त--सुराष्ट्र--श्वभ्र--मरु-कच्छ--सिन्धु-सौवीर-कुकुरापरांत-निषादादीनां समग्राणां तत्प्रभावाद्य-[थावत्प्राप्तधर्मार्त्थ]-काम-विषयाणां[3] पतिना[4] सर्व्व-क्षत्राविष्कृत-

१२. वीर-शब्द-जा[तो]त्सेकाविधेयानां यौधेयानां प्रसह्योत्सादकेन दक्षिणापथ-पतेस्सातकर्णेर्द्विरपि निर्व्याजमवजित्यावजित्य संबंधाविदूरतया[5] अनुत्सादनात्प्राप्त-यशसा वा....[प्रा]प्त-विजयेन भ्रष्ट-राज-प्रतिष्ठापकेन यथार्त्थ-हस्तो-

१३. च्छ्रयार्जितोर्जित-धर्मानुरागेण[6] शब्दार्त्थ-गान्धर्व्व-न्यायाद्यानां विद्यानां महतीनां पारण-धारण-विज्ञान-प्रयोगावाप्त-विपुल-कीर्त्तिना तुरग-गज-रथचर्य्यासि-चर्म-नियुद्धाद्या..ति-पर-बल-लाघव-सौष्ठव-क्रियेण अहरहर्द्दान-मानान-

---

१. इन्द्रजी तथा ब्यूलर : पणिपत्ति-[विशे]ष°; सरकार : प्रणिपतितजनायु° । °पतितायुश्शरणदेन पढ़ें ।

२. सरकार मृगोरगा° संशोधन सुझाते हैं ।

३. ब्यूलर : य[थेप्सितावाप्त-सर्व] काम° । ४. पत्या पढ़ें । ५. त पंक्ति के ऊपर उत्कीर्ण है ।

४. सरकार 'रागेन' पाठ देकर 'रागेण' संशोधन करते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. वमान-शीलेन स्थूल-लक्षेण यथावत्प्राप्तैर्बलिशुल्क-भागैः कनक-रजत-वज्र-वैडूर्य-रत्नोपचय-विष्यन्दमानकोशेन स्फुट-लघु-मधुर-चित्र-कान्त-शब्द-समयोदारालंकृत-गद्य-पद्य[काव्य-विधान-प्रवीणे]-न प्रमाण-मानोन्मान-स्वर-गति-वर्ण्ण-सार-सत्वादिभिः[१]

१५. परम-लक्षण-व्यंजनैरुपेत-कान्त-मूर्त्तिना स्वयमधिगत-महाक्षत्रप-नाम्ना नरेंद्र-कन्या-स्वयंवरानेक-माल्य-प्राप्त-दाम्ना महा-क्षत्रपेण रुद्रदाम्ना वर्ष-सहस्राय गो-ब्रा[ह्मण]......[हितात्थं] धर्म्म-कीर्त्ति-वृद्ध्यथं च अपीडयित्वा कर-विष्टि-

१६. प्रणय-क्रियाभिः पौर-जानपदं जनं स्वस्मात्कोशान् महता धनौघेन अनतिमहता च कालेन त्रिगुण-दृढतर-विस्तारायामं सेतुं विधा[य स]र्व्वं-त[टे][२]......[सु]दर्शनतरं कारितमिति[।*] [अ]स्मिन्नर्थे......

१७. [च]महाक्षत्रपस्य मतिसचिव-कर्मसचिवैरमात्य-गुण-समुद्यु-क्तैरप्यतिमहत्वाद्[३]भेदस्यानुत्साह-विमुख-मतिभिः प्रत्याख्या-तारंभं

१८. पुनः-सेतु-बन्ध-नैराश्याद् हा[४]हाभूतासु प्रजासु इहाधिष्ठाने पौर-जानपद-जनानुग्रहार्थं[५] पार्थिवेन कृत्स्नानामानर्त्त-सुराष्ट्रानां[६] पालनार्थन्नियुक्तेन

१९. पह्लवेन कुलैप-पुत्रेणामात्येन सुविशाखेन यथावदर्थ-धर्मव्यवहार-दर्शनैरनुरागमभिवर्द्धयता शक्तेन दान्तेनाचपलेनाविस्मितेना-र्य्येणाहार्य्येण

२०. स्वधितिष्ठता धर्म-कीर्त्ति-यशांसि भर्तु रभिवर्द्धयतानुष्ठि(?)तमिति ।

---

१. °सत्त्वादिभिः पढ़ें ।
२. इन्द्रजी तथा ब्यूलर : [सर्व्वं]नग[र] ।
३. °महत्त्वा° पढ़ें ।
४. यहां सन्धि नियमानुसार 'त्' को 'ध्' नहीं किया ।
५. इन्द्रजी : °हात्थं ।
६. °णां पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रीधरवर्मन् का साँची अभिलेख

शक संवत् २०१

स्थान : मध्यप्रदेश में साँची के निकट कानाखेड़ा ग्राम से प्राप्त शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण ।

लिपि : ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत

विषय : शक क्षत्रप स्वामी जीवदामन् के महादण्डनायक श्रीधरवर्मन् द्वारा कूप-निर्माण ।

संदर्भ : आर. डी, बेनर्जी, EI, 16, pp. 230-33; एन. जी. मजुमदार, JPASB, 19, pp. 343, ff; सरकार, SI, pp. 186-87.

१. सिद्धम्[१] ।। भगवतस्त्रिदश-गण-सेनापतेरजितसेनस्य स्वामि-महासेन-महातेज······सादित्य-वीर्य्य-जीवदाम[२]·········

२. धर्म्मविजयेन[३] शक-नन्द-पुत्रेण महादण्डनायकेन शकेन श्रीधरव-[र्म्म]णा वर्म्म···· स्रा (श्रि)य[४] स्वराज्याभिवृद्धि-करे वेजयिके[५] संवत्सरे त्रयोदश[मे][६]

३. श्रवण[७]-बहुलस्य दशमी-पूर्व्वमेतद्दिवसं[८] कल्याणाभ्युदय-वृद्ध्यर्थ-

---

१. तीसरी और चौथी पंक्ति के बांएं प्रान्त में उत्कीर्ण ।

२. सरकार: वीर्य्या[ज्जिंतविजय] ।

३. वही : °विजयिना ।

४. वही : वर्ष[सह]स्राय ।

५. वैजयिके पढ़ें ।

६. त्रयोदशे पढ़ें ।

७. श्रावण पढ़ें ।

८. °पूर्व्वके एतद्दिवसे पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मक्षय-स्वर्ग्गावाप्तिमेतद्धर्म[1]-यशो[ऽ*]र्त्थं धर्म्मासि[2]-संबुद्धया श्राद्ध[3]

४. शाखाते चतुः-सत्य······तुक[ऽ*]यं[4]······। ·········मापि·········
कापि[ञ्च][5]म·········सलिलः सर्व्वाधिगम्यः सदा

५. सत्वा(त्त्वा)[नां] प्रिय-दर्शनो जल-निधिर्द्धर्म्मामलः गतः······
प्य······प्राच्य······[6]

६. [कू]पः श्रीधरवर्म्मणा गुणवता खानापितो[7][ऽ*]यं शुभः [।।*]
२०० १······स······स्तु ।।

---

१. सरकार : °वाप्तिहेतोर्द्धर्मं°
२. धर्माभि° पढ़ें।
३. सरकार : श्रा(श्र)द्ध[या]।
४. वही। शाश्व[तं]चन्द्रादित्य-[कालिकोयं]।
५. वही : कागत; मिराशी : ग्राकारेप्रतिमः।
६. मिराशी का अनुमान : प्रणम्य मनसा द्रव्यस्य कृत्वा व्ययं।
७. खानितः पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाँदसा यूप अभिलेख

विक्रम संवत् २८२

स्थान : राजस्थान के सहारा जिले में नाँदसा ग्राम ।

लिपि : ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : राजा सोम द्वारा एक-षष्टि-रात्र यज्ञ की स्मृति में यूप की स्थापना ।

संदर्भ : आर. आर. हालदार, IA, 58, p. 53; **अनन्त सदाशिव अल्तेकर,** EI, 27, p. 252.

१. सिद्धम् । कृतयोर्द्वयोर्वर्ष-शतयोर्द्वयशीतयोः २०० ८० २ चैत्र-पूर्णमासी(स्या)मस्याम्पूर्व्वायां महता स्व-शक्ति-गुण-गुरुणा पौरुषेण प्रथम-चन्द्र-दर्शनमिव मा[लव-गण-विषयमवतार]-

२. यित्वैकषष्टि-रात्रमतिसत्रमपरिमित-धर्म्म-मात्रं समुद्धृत्त्य (त्य)पितृ-पैतामहि(ही)न्धुरमावृत्त्य (त्य) सु-विपुल-द्यावापृथि-व्योरन्तरमनुत्तमेन यशसा [स्व-कर्म-संपदया विपुलां समु]-

३. पगतामृद्धिमात्म-सिद्धि वितत्य मायामिव सत्र-भूमौ सर्व्व-कामौघ-धारां-वसोर्द्धारामिव ब्राह्मणाग्नि-वैश्वानरेषु हुत्वा ब्रह्मेन्द्र-प्रजापति-महर्षि-विष्णु-[स्थानेषु कृतावकाशस्य पाप-नि]

४. रवकाशस्य सित-सभावसथ-तडाक-कुप-देवायतन-यज्ञ-दान-सत्त्य (त्य)-प्रजा-विपुल-पालन-प्रसङ्ग‿पुराणं(ण)-राजर्षि-धर्म्म-पद्धती(ति)-सतत-कृत-समनुगमन-निश्च[यस्य स्व गुणातिशय-विस्तरैर्मनु]-

५. निर्व्विशो(शे)षमिव भुवि मनुष्य-भावं यथार्थमनुभवत इक्ष्वाकु-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथित-राजर्षि-वंशे मालव-वंशे प्रसूतस्य जयनर्तन-पुर्भा(प्रभा)ग्र-वर्द्धन-पौत्रस्य जयसोम-पुत्रस्य सोगिने[तुः श्री? सोमस्यानेक-गो-शत-सहस्र]-

६. दक्षिणा [।]वृष-प्रमत्त-शृङ्ग-विप्रघृष्ट-चित्त्य(त्य)-वृक्ष-यूप-संकट-तीरो(रे) पुष्कर-प्प्रतिलम्भ-भूते स्व-धर्म-सेतौ महा[तडाके यूप-प्रतिष्ठा कृता] [।*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री यज्ञशातकर्णि-कालीन नासिक गुहा अभिलेख

वर्ष ७

स्थान : महाराष्ट्र में नासिक नगर के दक्षिण-पश्चिम में ८ किलोमीटर दूर पाण्डुलेणा की २०वीं गुहा के आलिन्द की पृष्ठ-भित्ति ।

लिपि : ब्राह्मी

भाषा : प्राकृत ।

विषय : महासेनापति भवगोप की भार्या द्वारा पहले से अर्धनिर्मित गुहा का सम्पूर्ण निर्माण कराकर भिक्षु सङ्घ को दान ।

संदर्भ : ब्यूलर, ASWI, 4, p. 114; सेनार्ट, EI, 8, p. 93; सरकार, SI, p. 210.

१. सिधं [॥*] रञो गोतमि-पुतस सामि-सिरि-यञसातकणिस
सिद्धम् ॥ राज्ञः गौतमीपुत्रस्य स्वामि-श्री-यज्ञशातकर्णेः

संवछरे सातमे ७ हेमन्ताण पखे तितिये ३
संवत्सरे सप्तमे ७ हेमन्तस्य पक्षे तृतीये ३

२. दिवसे पथमे कोसिकस महासेणापतिस [भ]वगोपस भारजाय
दिवसे प्रथमे कौशिकस्य महासेनापतेः भवगोपस्य भार्यया

महासेणापतिणिय वासुय लेण
महासेनापत्न्या वास्वा लयनं

३. बोपकि-यति-सुजमाने[1] अपयवसित-समाने[2] बहुकाणि वारिसाणि
बोपकि-यति-सृज्यमानं अपर्यवसित-समानं बहुकानि वर्षाणि

---

१. सेनार्ट : सुजमान ।

२. ब्यूलर : माणस ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उकुते पयवसाणे नितो चातुदि-
अवकृतम् पर्यवसानं नीतं, चातुर्दि-

४. सस च भिखु सघस आवासो[1] दतो ति।
शाय च भिक्षु-सङ्घाय आवासः दत्तः इति।

---

१. सरकार : अवसो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नानाघाट में नागम्निका का गुहा अभिलेख

स्थान : महाराष्ट्र के पूना जिले में नानाघाट की गुहा ।

लिपि : ब्राह्मी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : शातकर्णि (प्रथम) की पत्नी नागम्मिका द्वारा अनेक यज्ञों में धन, पशु, एवं ग्राम का दान ।

संदर्भ : ब्यूलर, ASWI, 5, p. 60, 86; **सरकार,** SI, p, 192.

भाग (१)

१. [सिधं।।*]······नो धंमस नमो ईदस नमो संकंसन-वासुदेवानं
सिद्धम् ।।······धर्माय नमः इन्द्राय नमः सङ्कर्षण-वासुदेवाभ्यां

चंद-सूरानं [महि]मा[व]तानं चतुंनं च लोकपालानं
चन्द्र-सूर्याभ्यां महिमवद्भ्यां चतुर्भ्यः च लोकपालेभ्यः

यम-वरुन-कुबेर-वासवानं नमो कुमारवरस ख[द]सिरिस र[ञो]
यम-वरुण-कुबेर-वासवेभ्यः नमः। कुमारवरस्य स्कन्दश्रियः राज्ञः

२. [वी]रस सूरस अप्रितहत-चकस दखि[नप]ठ-[पतिनो]······[1]
वीरस्य शूरस्य अप्रतिहतचक्रस्य दक्षिणापथ-पतेः

३. [मा]······[बाला*]य महारठिनो अंगिय-कुल-वधनस सगर-
मात्रा······बालया महारथिनः अङ्गिक-कुल-वर्द्धनस्य सागर-

गिरिवर-वल[या)य पथविय पथम-वीरस वस······य व
गिरिवर-वलयायाः पृथिव्याः प्रथमवीरस्य

१. सरकार यहां **सातकंणिसिरिस पुतस मातुय नायनिकाय** पाठ का अनुमान लगाते हैं। इनका दूसरा सुझाव है **शिमुक-सातवाहनसवंस-वधनस ।**

अलह······सलसु······महतो········ महह·······················
································मह·······················

४. सिरिस······भारिया देवस पुतदस वरदस कामदस धनदस
श्रियः·········भार्यया देवस्य पुत्रदस्य वरदस्य कामदस्य धनदस्य

[खद]-सिरिमातु सतिनो सिरिमतस च मातु[य]सीम·········
स्कन्द-श्री-मातुः[१] शक्तेः श्रीमतः च मातुः[१] सीम·········

५. वरिय······[न]ागवर-दयिनिय मासोपवासिनिय गह-तापसाय
वरया······नागवर-दायिन्या मासोपवासिन्या गृह-तापस्या

चरित-ब्रह्मचरियाय दिख-व्रत-यंञ-सुंडाय यञा हुता धूपन-
चरित-ब्रह्मचर्यया दीर्घ-व्रत-यज्ञ-शौण्डया यज्ञाः हुताः धूपन-

सुगन्धा य नियं······
सुगन्धाः य निय······

६. रायस[२]······[य*]ञेहि यठिं वनो अगाधेय यंञो द[खि]ना
राजस्य······यज्ञैः इष्टग् वर्णः—अग्न्यधिप्रः यज्ञः दक्षिणा

दिना गावो बारस १० २ असो च १ अनारभनियो यंञो
दत्ता गावः द्वादश १२ अश्वः च १ अनारम्भणीय यज्ञः

दखिना धेनु·········
दक्षिणा धेनुः·········

७. ······दखिनायो दिना गावो १००० ७०० हथी १०······
······दक्षिणा दत्ताः गावः १७०० हस्तिनः १०······

८. ······स···ससतरय [व]ासलठि २०० ८० ९ कुभियो रूपामयियो
स सछत्राः वंश-यष्टयः २८९ कुम्भ्यः रौप्यमय्यः

---

१. सरकार : मात्रा।

२. राय : सातकणिना सह पाठ सुझाया जा सकता है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१० ७ भि·········

१७ भि·········

९. ······रिको यंञो दखिनायो दिना गावो १०००० १०००
······रिको: यज्ञः दक्षिणा दत्ता गावः ११००० अश्वाः

असा १००० पस[पको*]
१००० प्रसर्पकः

१०. ···१० २ गाववरो १ दखिना काहापना २०००० ४००० ४००
·········१२······ग्रामवरः १ दक्षिणा कार्षापणानि २४४००

पसपको काहापना ६००० । राज[सूयो यंञो]··सकटं
प्रसर्पकः कार्षापणानि ६००० । राजसूयः यज्ञः शकटं

(भाग-२)

११. धंञगिरि-तंस-पयुतं सपटो १ असो १ अस-रथो १ गावीनं १००
धान्यगिरि-तंस-प्रयुक्तं सत्पट्टम् १ अश्वः १ अश्वरथः १ गवीनां १००

असमेधो यंञो बितियो [यि*]ठो दखिनायो [दि]ना असो
अश्वमेधः यज्ञः द्वितीयः इष्टः दक्षिणा दत्ता अश्वः

रुपालं[का]रो १ सुवनं······नि १० २ दखिना दिना काहापना
रौप्यालङ्कारः १ सुवर्णालङ्काराः १२ दक्षिणा दत्ता कार्षापणानि

१०००० ४००० गामो १ [हथि]······[दखि]ना दि[ना]
१४००० ग्रामः १ हस्ति·········दक्षिणा दत्ता

१२. गावो[1] सकटं धंञगिरितस पयुतं···········ेवायो
गावः ६००० शकटं धान्यगिरितंसप्रयुक्तं···········ेवायः

---

१. इन्द्रजी के अनुसार गावो के पश्चात ६००० है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यंञो······ १० ७. [धेनु] ··ो ·ोवाय···सतरस

यज्ञः······ १७ धेनु·····ो··ोवाय···सप्तदशातिरात्र[१]:

१३. ······१० ७ अच न···लय··पसपको दि[नो]······

······१७ अच···न···लय···प्रसर्पकः दत्तः·········

दखिना दिना सु·····पीनि १० २ असो रुप[लं]कारो

दक्षिणा दत्ता············ १२ अश्वः रौप्यालङ्कारः

१ दखिना काहाप[ना] १००००

१ दक्षिणा कार्षापणानि १००००

१४. ······गावो २०००० [भगल]दसरतो यंञो यि[ठो]

····· गावः २०००० भगाल-दशरात्रः यज्ञः इष्टः

[दखिना दि]ना[गावो] १०००० । गर्गतिरतो यञो यिठो

दक्षिणा दत्ता गावः १०००० । गर्गातिरात्रः यज्ञः इष्टः

[दखिना]······पसपको पटा ३०० । गवामयनं यंञो

दक्षिणा दत्ता प्रसर्पकः पट्टानि ३०० । गवामयनं यज्ञः

यिठो [दखिना दिना] गावो १००० १०० ।···गावो १०००

इष्टः दक्षिणा दत्ता गावः ११०० । ······गावः ११०० ।

१०० पसपको काहापना·····पटा १०० अतुयामो यंञो

प्रसर्पकः कार्षापणानि···पट्टानि १०० आप्तोर्यामः यज्ञः

१५ ······[ग.]वामयनं य[ञो] दखिना दिना गावो १००० १०० ।

······गवामयनं यज्ञः दक्षिणा दत्ता गावः ११०० ।

अंगिरस[ा]मयनं यंञो यिठो [द]खिना गावो १००० १०० ।

अङ्गिरसामयनं यज्ञः इष्टः दक्षिणा गावः ११०० ।

---

१. सरकार का सुझाव ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

त······[दखिना दि]ना गावो १००० १०० । सतातिरतं यंञो

·· रात्रः···दक्षिणा दत्ता गावः ११०० । शतातिरात्रः यज्ञः

······१००···[यं]ञो दखिना ग[ावो] १००० १०० अंगि-

······१००···यज्ञः दक्षिणा गावः ११०० अङ्गि-

रसतिरतो यंञो यिठो [दखि]ना गा[वो]·········

रसातिरात्रः यज्ञः इष्टः दक्षिणा गावः·········

१६. ······[गा]वो १००० २ छन्दोमप[व]मा[नतिरत] दखिना

······गावः १००२ छन्दोमपवमानातिरात्रः दक्षिणा

गावो १००० । अं[गि]र[सतिर]तो यं[ञो] [यि]ठो द[खिना]···

गावः १००० । अङ्गिरसातिरात्रः यज्ञः इष्टः दक्षिणा······

रतो यिठो यंञो दखिना दिना·····तो यंञो यिठो

···रात्रः इष्टः यज्ञः दक्षिणा दत्ता····· तः यज्ञः इष्टः

दखिना·····यंञो यिठो दखिना दिना गावो १००० ।

दक्षिणा······यज्ञः इष्टः दक्षिणा दत्ता गावः १००० ।

१७. ·····न स सयं······दखिना दिना गावो·········त·········

······न स सयं······दक्षिणा दत्ता गावः·········त·········

[अं]गि[रसा]मयनं छवस······[दखि]ना दिना गाव १०००···

अङ्गिरसामयनं षड्वर्ष······दक्षिणा दत्ता गावः १०००···

[दखिना]दिना गावो १००० । तेरस·····अ···

दक्षिणा दत्ता गावः १००० । त्रयोदशरात्रः

१८. ··तेरसरतो स···छ···[अ]ग-दखिना गावो···दसरतो म·····

·· त्रयोदशरात्रः अग्र्यदक्षिणा गावः दशरात्रः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[दि]ना गावो १००० ।····· १००० । द·········
दत्ता गावः १००० ।······१०००० । द·········

१९. ···[यं]ञो दखिना दि[ना]······
यज्ञः दक्षिणा दत्ता······

२०. [द]खिना दिना······
दक्षिणा······दत्ता·········

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गौतमीपुत्र शातकर्णि का नासिक गुहा अभिलेख

वर्ष १८

स्थान : महाराष्ट्र के नासिक नगर के दक्षिण-पश्चिम को ८ किलोमीटर दूर पाण्डुलेणा की तृतीय गुहा की छत पर उत्कीर्ण।

लिपि : ब्राह्मी।

भाषा : प्राकृत।

विषय : उसवदत द्वारा पूर्वोपभुक्त कखडी ग्राम के क्षेत्र का शातकर्णि द्वारा भिक्षुओं को दान।

संदर्भ : ब्यूलर, ASWI, 4, P. 104; सेनार्ट, EI, 8, p. 71; सरकार, SI, P. 197.

१. [सिधं][॥*] सेनाये वेजयंतिये विजय-खधावारा गोवधनस
सिद्धम् ॥ सेनायाः विजयमानायाः विजय-स्कन्धावारात् गोवर्द्धनस्य
बेनाकट-स्वामि गोतमि-पुतो सिरि सदकणि
वेनाकटक-स्वामी गौतमी-पुत्रः श्री-शातकर्णिः

२. आनपयति गोवधने अमच वि[ण्हु]पालितं गामे अपर-
आज्ञापयति गोवर्द्धने अमात्यं विष्णुपालितम्—ग्रामे अपर-
करवडिये [य] खेतं अजकालकियं उसभदातेन भूतं निवतन-
कखट्यां यत् क्षेत्रं अद्यकालकीयं ऋषभदत्तेन भुक्तं निवर्त्तन-

३. सतानि बे २०० एत अम्ह-खेत निवतण-सतानि बे २०० इमेस
शते द्वे २०० एतत् अस्मत्क्षेत्रं निवर्त्तन-शते द्वे २०० एभ्यः
पवजितान तेकिरसिण[1] वितराम एतस चस[2]खेतस परिहार
प्रवजितेभ्यः त्रैरश्मिकेभ्यः वितरामः। एतस्य च क्षेत्रस्य परिहारं

---

१. तेरसिकानं (त्रैरश्मिकानां) शुद्ध पाठ था।
२. च पढ़ें।

४. वितराम अपावेसं अनोमसं अ-लोण-खादकं अ-रठसविनयिकं
वितरामः अप्रावेश्यं, अनावमश्यं, अ-लवण-खातकं, अ-राष्ट्र-संविनयिकं
सवजातपरिहारिक च एत हि न परिहारेहि परिह[र]हि
सर्वजातिपारिहारिकं च। एतैः एनं परिहारैः परिहर।

५. एते चस[1] खेत-परिहारे च एथ निबधापेहि[2] अवियेन आणतं
एतत् च अस्य क्षेत्र-परिहारं च अत्र निबन्धय । उक्तेन आज्ञप्तम् ।
अमचेन सिवगुतेन छतो महासामियेहि उपरिखतो
अमात्येन शिवगुप्तेन क्षतं। महास्वामिकैः उपलक्षितं।

६. दता पटिका सवछरे १० ८ वास-पखे २ दिवसे १ तापसेन
दत्ता पट्टिका संवत्सरे १८ वर्षा-पक्षे २ दिवसे १ तापसेन
कटा [।।*]
कृता ।।

---

१. च पढ़ें।
२. ब्यूलर : निबधो लिहि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वासिष्ठीपुत्र पुळुमायी का नासिक गुहा अभिलेख

वर्ष १९

स्थान : महाराष्ट्र में नासिक नगर के दक्षिण पश्चिम में ८ किलोमीटर दूर पाण्डुलेणा की तृतीय गुहा के प्रवेश द्वार के ऊपर, अलिन्द की पृष्ठ भित्ति।

लिपि : ब्राह्मी

भाषा : प्राकृत

विषय : शातकर्णि की माता गौतमी बलश्री द्वारा गुहा-निर्माण तथा उसका भिक्षुसंघ को दान और पुलुमायी द्वारा पिशाचीपद्रक ग्राम का दान।

संदर्भ : ब्यूलर, ASWI, 4, p. 180, No. 18; सेनार्ट, EI, 8, p. 60 ff; सरकार, SI, p. 202.

१. सिद्धं [।।*] रञो वासिठीपुतस सिरिपुळुमायिस सवछरे[1] एकुनवीसे
सिद्धम् ।। राज्ञः वासिष्ठी-पुत्रस्य श्री-पुलुमायिनः[2] संवत्सरे एकोनविंशे

१० ९ गीम्हाणं पखे बितीये २ दिवसे तेरसे १० ३ राजरञो
१९ ग्रीष्मस्य पक्षे द्वितीये २ दिवसे त्रयोदशे १३ राजराजस्य,

गोतमीपुतस हिमव[त]मेरु-
गौतमी-पुत्रस्य, हिमवन्-मेरु-

२. मंदरपवतसमसारस असिक-असक-[3]मुळक-सुरठ-कुकुरापरंत-
मन्दर-पर्वत-सम-सारस्य, असिक[4]-अश्मक-मूलक-सुराष्ट्र-कुकुरापरान्त-

---

१. ब्यूलर : संवछरे; सेनार्ट : सविछरे।
२. सरकार : °पुलुमावेः।
३. इन्द्रजी : सुसक।
४. सरकार : ऋषीक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुप-विदभ-आकरावंतिराजस विझ-छवत-पारियात-सह्य-
अनूप-विदर्भ-आकरावन्ति-राजस्य, विन्ध्य-ऋक्षवत्-पारियात्र-सह्य-

कण्हगिरि-मचसिरिटन-मलय-महिद-
कृष्णगिरि-मर्त्यश्रीस्तन[2]-मलय-महेन्द्र-

३. सेटगिरि-चकोरपवत-पतिस सव-राज[लोकमं]डल-पतिगहीत-
श्रेष्ठगिरि-चकोरपर्वत-पतेः, सर्वं-राजलोकमण्डल-प्रतिगृहीत-

सासनस दिवसकर-[क]र-विवोधित-कमलविमल-सदिस-वदनस
शासनस्य, दिवसकर-कर-विवोधित-कमल-विमल-सदृश-वदनस्य,

तिसमुद-तोय-पीत-वाहनस पटिपू[3]ण-चद-मडल-ससिरीक-
त्रि-समुद्र-तोय-पीत-वाहनस्य, प्रतिपूर्ण[4]-चन्द्र-मण्डल-सश्रीक-

४. पियदसनस वर-वारण-विकम-चारु-विकमस भुजगपति-भोग-
प्रिय-दर्शनस्य, वरवारण-विक्रम-चारु-विक्रमस्य, भुजगपति-भोग-

पीन-वाट[5]-विपुल-दीध-सुद[र*]भुजस अभयोदक-दान-किलिन-
पीन-वृत्त-विपुल-दीर्घ-सुन्दर-भुजस्य, अभयोदक-दान-क्लिन्न-

निभय-करस अविपन-मातु-सुसूसाकस सुविभत्त-तिवग-
निर्भय-करस्य, अ-विपन्न-मातृ-शुश्रूषकस्य, सुविभक्त-त्रिवर्ग-

देसकालस
देश-कालस्य

५. पोरजन-निविसेस-सम-सुख-दुखस खतिय-दप-मान-मदनस
पौरजन-निर्विशेष-सम-सुख-दुःखस्य, क्षत्रिय-दर्प-मान-मर्दनस्य,

---

१. ब्यूलर : परिवात ।
२. सरकार : मत्स्य-श्रीस्तन ।
३. सेनार्ट : पटिपुण
४. सरकार : परिपूर्ण ।
५. इन्द्रजी तथा ब्यूलर : वट ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सक-यवन-पल्हव-निसूदनस धमोपजित-कर-विनियोगकरस
शक-यवन-पल्हव-निषूदनस्य, धर्मोपचित-कर-विनियोगकरस्य,

कितापराधे अपि सतुजने अ-पाणहिसा-रुचिस दिजावर-कुटूब-
कृतापराधे अपि शत्रु-जने अ-प्राणहिंसा-रुचेः, द्विजावर-कुटुम्ब-

विवध-
विवर्द्ध-

६. नस खखरात-वस[1]निरवसेसकरस सातवाहन-कुल-यस-
नस्य, क्षहरात-वंश-निरवशेष-करस्य, सातवाहनकुल-यशः-

पतिथापन-करस सव-मंडलाभिवादित-च[र]णस विनिवतित-
प्रतिष्ठापन-करस्य सर्व-मण्डलाभिवादित-चरणस्य, विनिर्वतित-

चातूवण-संकरस अनेक-समरावजित-सतु-सघस अपराजित-
चातुर्वर्ण्य-संकरस्य, अनेक-समरावजित-शत्रु-संघस्य, अ-पराजित-

विजयपताक-सतुजन-दुपधसनीय-
विजयपताका-शत्रुजन-दुष्प्रधर्षणीय-

७. पुर-वरस कुल-पुरिस-परपरागत-विपुल-राजसदस आगमान[2]
पुर-वरस्य, कुल-पुरुष-परम्परागत-विपुल-राजशब्दस्य, आगमानां

[नि]लयस सपुरिसानं असयस सिरी[ये] अधिठानस
निलयस्य, सत्पुरुषाणाम् आश्रयस्य, श्रियाः अधिष्ठानस्य,

उपचारान[3] पभवस एककुसस एकधनुधर। एकसूरस[4]
उपचाराणां प्रभवस्य, एकाङ्कुशस्य, एक-धनुर्धरस्य, एक-शूरस्य,

---

१. ब्यूलर : वंस।
२. इन्द्रजी : आगमानं।
३. वही : °रानं ।
४. ब्यूलर की प्रतिलिपि में यह शब्द छूट गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकबम्हणस राम-
एक-ब्रह्मण्यस्य, राम-

८. केसवाजुन-भीमसेन-तुल-परकमस छण-धनुसव-समाजकारकस
केशवार्जुन-भीमसेन-तुल्य-पराक्रमस्य, क्षण-धनोत्सव-समाज-कारकस्य,

नाभाग-नहुस-जनमेजय-सगर-य[या]ति-रामावरीस-सम-तेजस
नाभाग-नहुष-जनमेजय-सगर-ययाति-रामाम्बरीष-सम-तेजसः

अपरिमितमखय-मचितमभुत पवन-गरुड़[1]-सिध-यख-रखस-
अ-परिमितमक्षय मचिन्त्यमद्भुतं पवन-गरुड-सिद्ध-यक्ष-राक्षस-

विजाधर-भूत-गधव-चारण-
विद्याधर-भूत-गन्धर्व-चारण-

९. चद-दिवाकर-नखत-गह-विचिण-समर-सिरसि जित-रिपुसघस
चन्द्र-दिवाकर-नक्षत्र-ग्रह-विचीर्ण-समर-शिरसि जित-रिपुसंघस्य,

नागवर[2]-खधा गगन-तलमभिविगाढस कुलविपु[लसि]रि-करस
नागवर-स्कन्धात् गगन-तलमभिविगाढस्य, कुल-विपुल-श्री-करस्य,

सिरि-सातकणिस मातुय महादेवीय गोतमिय बलसिरीय
श्री-शातकर्णेः मात्रा महादेव्या गौतम्या बलश्रिया

सचवचन-दान-खमाहिसा[3]-निरताय तप-दम-निय-
सत्यवचन-दान-क्षमाऽहिंसा-निरतया तपो-दम-निय-

१०. मोपवास-तपराय राजरिसि-वधु[4]-सदमखिलमनुविधीयमानाय
मोपवास-तत्परया राजर्षि-वधू-शब्दमखिलमनुविदधत्या

कारित देय-धम [केलासपवत]सिखर-सदिसे तिरण्हु-पवत-
कारितः देय-धर्मः कैलाश-पर्वत-शिखर-सदृशे त्रिरश्मि-पर्वत-

---

१. सरकार: गरुळ ।
२. इन्द्रजी : णंगवर ।
३. वही : हिंसा ।
४. ब्यूलर : वधू ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिखरे विम[ान]-वर-निविसेस महिढीक लेण[।*] एत च लेण
शिखरे विमान-वर-निर्विशेषं महर्द्धिकं लयनम्। एतत् च लयनं

महादेवी महाराज-माता महाराज-[पि]तामही ददाति निकायस
महादेवी महाराज-माता महाराज-पितामही ददाति निकायाय

भदावनीयान भिखु-सघस[1]
भद्रायणीयानां भिक्षु-संघाय।

११. एतस च लेण[स] चितण-निमित महादेवीय अयकाय सेव-कामो
एतस्य च लयनस्य चित्रण-निमित्तं महादेव्याः आर्यकायाः सेवाकामः

पियकामो च ण[ता][सिरि-पुलुमायी*][दखिणा*] पथेसरो[2]
प्रियकामः च नप्ता [श्री-पुलुमायी] दक्षिणापथेश्वरः

पितु-पतियो[3] धमसेतुस [ददा]ति गामं तिरण्हु-पवतस अपर-
पितृ-प्रीतये धर्मसेतवे ददाति ग्रामं त्रिरश्मिपर्वतस्य अपर-

दखिण-पसे पिसाजिपदक[4] सवजात-भोग-निरठि[5]
दक्षिण-पार्श्वे पिशाचीपद्रकं सर्वजात-भोग-निरस्तम्।

---

१. इन्द्रजी : संघस।
२. ब्यूलर : पठिसरी।
३. °पतिये पढ़ें।
४. ब्यूलर : पिसाची°।
५. निरठं पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खारवेल का हाथी-गुम्फा अभिलेख

स्थान : उड़ीसा के पुरी जिले में उदयगिरी पहाड़ी की दक्षिणा-भिमुख एक गुहा के ऊपर की शिला पर उत्कीर्ण । काशीप्रसाद जायसवाल तथा ग्रार. डी. बेनर्जी का सुझाव है कि इसी गुहा में रहकर भगवान महावीर ने कलिङ्ग प्रदेश में जैन धर्म का प्रचार किया था ।

लिपि : ईसापूर्व प्रथम से द्वितीय शताब्दी के बीच की ब्राह्मी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : प्रतापी राजा खारवेल की प्रशस्ति तथा उसके वीर चरितों का वर्णन ।

संदर्भ : प्रिंसेप, JASB, 6, pp. 1075-91; कनिंघम, CII, 1, pp. 27 ff; 98-101; 132 ff; ग्रार. एल. मित्र, Antiquities of Orissa, 2, pp. 26 ff; भगवानलाल इन्द्रजी, Actes du sixieme congres international des Orientalistes, pt.III, séc 2, pp. 152-77; व्यूलर, Indian Studies, III, p. 13; फ्लीट, JRAS, 1910, pp. 242 ff; 824; काशीप्रसाद जायसवाल, JBORS, 3, pp. 425 ff; 4, pp. 364 ff; 13, pp. 221 ff; 14, pp. 250 ff; स्टेनकोनो, Acta Orientalia, 1, PP. 12 ff, एफ. डब्ल्यू. थॉमस, JRAS, 1922, PP. 83 ff; काशीप्रसाद जायसवाल तथा ग्रार. डी. बेनर्जी, EI, 50, PP. 71-89; बी. एम. बरुग्रा, Old Brahmi Inscriptions No, 1; IHQ, 14, PP. 261 ff; सरकार, SI, PP. 213-221. साधुराम, JGJKSV, 28, Ps, 3-4, 1972, PP. 11-65.

१. नमो ग्ररहंतानं नमो सव सिधानं एरेण महाराजेन महामेध-
नमः ग्रर्हद्भ्यः । नमः सर्वसिद्धेभ्यः ॥ ग्रार्येण[1] महाराजेन महामेघ-

---

१. एक ग्रन्य रूप 'ऐलेन' सुझाया जाता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाहनेन चेति-राजव[ं]स-वधनेन पसथ-सुभ-लखनेन[१] चतुरंतलुठ[ण]-
वाहनेन चेदि-राजवंश-वर्द्धनेन प्रशस्त-शुभ-लक्षणेन चतुरन्तलुण्ठन-

गुण-उपितेन[२] कलिंगाधिपतिना सिरि-खारवेलेन
गुणोपेतेन कलिङ्गाधिपतिना श्री-खारवेलेन

२. [पं]दरस-वसानि सीरि-[कडार]-सरीरवता कीडिता कुमार-
पञ्चदश-वर्षाणि श्री-कडार-शरीरवता क्रीडिता कुमार-

कीडिका ततो लेख-रूप-गणना-ववहार-विधि-विसारदेन सव-
क्रीडिका ॥ ततः लेख-रूप-गणना-व्यवहार-विधि-विशारदेन सर्व

विजावदातेन नव-वसानि योवरज [प]सासितं संपुंण-चतुवीसति
विद्यावदातेन नव-वर्षाणि यौराज्यं प्रशिष्टम् ॥ सम्पूर्ण-चतुर्विंशति-

वसो तदानि वधमानसेसयो-वेनाभिविजयो[३] ततिये
वर्षः तदानीं बर्द्धमानशैशव-वेण्याभिविजयः तृतीये

३. कलिंग-राज-वसे(स)-पुरिस-युगे महाराजाभिसेचनं पापुनाति
कलिङ्ग-राजवंश-पुरुषयुगे महाराजाभिसेचनं प्राप्नोति

अभिसिमतो च पथमे वसे वात-विहत-गोपुर-पाकार-निवेसनं
अभिषिक्तवान् च प्रथमे वर्षे वात-विहत-गोपुर-प्राकार-निवेशनं

पटिसंखारयति कलिंगनगरि खिबी[रं][४] सितल-तडाग-पाडियो च
प्रतिसंस्कारयति कलिङ्गनगरीं खिबीरम्। शीतलतड़ाग-पाल्यः च

बंधापयति सवूयान-प[टि]संथपनं च
बन्धयति । सर्वोद्यान-प्रतिसंस्थापनं च

४. कारयति पनसि(ति)साहि सत-सहसेहि पकतियो च रंजयति
कारयति पञ्चत्रिंशता शतसहस्रैः [मुद्राणां] प्रकृतीःच रञ्जयति ॥

---

१. बरुआ : लखणेन
२. वही : गुण-उपेतेन; जायसवाल : °लुठितगुणोपहितेन ।
३. बरुआ : वधमान-सेसयोवनाभिविजयो ।
४. जायसवाल तथा बेनर्जी : खिवीर-इसि-ताल-तडाग ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुतिये च वसे अचितयिता सातकंनि पछिम-दिसं हय-गज-नर-रध-
द्वितीये च वर्षे अचिन्तयित्वा शतकर्णि पश्चिमदिशं हय-गज-नर-रथ-

बहुलं दंडं पठायति कन्हवेंणां-[1]गताय च सेनाय वित्रासिति[2]
बहुलं दण्डं प्रस्थापयति । कृष्णवेण्वा-गतया च सेनया वित्रासयति

असिकनगरं[3] ततिये पुन वसे
ऋषिकनगरम् ।। तृतीये पुनः वर्षे

५. गंधव-वेद-बुधो दप-नत-गीत-वादित-संदसनाहि उसव-समाज-
गन्धर्व-वेद-बुधः दर्पनृत्यगीतवादित्र-सन्दर्शनैः उत्सव-समाज-

कारापनाहि च कीडापयति नगरिं तथा चवुथे वसे विजाधराधि-
कारणाभिः च क्रीडयति नगरीम् ।। तथा चतुर्थे वर्षे विद्याधराधि-

वासं अहतपुवं कलिंग(?)-पुवराज-[निवेसितं]····· वितध-
वासम् अहतपूर्वं कलिङ्ग-पूर्वराज - निवेशितं······वितथ-

म[कु]ट[4]·······च निखित-छत(?)
मुकुट···········च निक्षिप्तच्छत्र-

६. भिंगारे [हि]त-रतन-समतेये सव-रठिक-भोजके पादे वंदापयति
भृङ्गारं हृत-रत्न-सम्पत्तिकं सर्व-राष्ट्रिक-भोजकं पादौ वन्दयति ।।

पंचमे च दानी वसे नंदराज-तिवससत-ओ[घा]टितं तनसुलिय-
पञ्चमे च इदानीं वर्षे नन्दराजत्रिवर्षशतोद्घाटितां तन-सुळिय

वाटा पणाडिं नगरं पवेस[य]ति सो······[अ*]भिसितो च
वर्त्मनः प्रणाळीं नगरं प्रवेशयति स·········।। अभिषिक्तः च

---

१. जायसवाल तथा बेनर्जी : कन्ह ।
२. जायसवाल : वितासितं (=वित्रासितं) ।
३. जायसवाल तथा बेनर्जी : मुसिक° ।
४. बरुआ : मकुटे । जायसवाल तथा बेनर्जी आगे खण्डित अंश में 'सबिलंढिते तथा बरुआ 'सबिप्रवजिते' सुझाते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[छठे वसे*]राजसेयं[१] संदंसयंतो सवकर-वण।
षष्ठे वर्षे राजैश्वर्यं सन्दर्शयन् सर्वाकार-वर्णा-

७. अनुगह-अनेकानि सत सहसानि बिसजति पोर-जानपदं सतमं
नुग्रहानेकानि शतसहस्राणि[मुद्राणां] विसृजति पौरजानपदम् ।। सप्तमं

च वसं[२] [पसा]सतो वजिरघर··· [३]स मतुक पद······[कु]म···अठमे
च वर्षं प्रशासत् ।। अष्टमे

च वसे महता सेन [ा]······गोरधगिरिं
च वर्षे महता सेना·········गोरथगिरिं

८. घातापयिता राजगहं[४] उपपीडयति एतिन[ा] च कंमपदान-
घातयित्वा राजगृहम् उपपीडयति । एतेन च कर्मापदान-

स[ं]नादेन······सेन-वाहने[५] विपमुचितु मधुरं अपयातो
संनादेन·········सेना-वाहनं विप्रमोक्तुं मधुरां (=मथुराम्)अपयातः

यवनरा[ज] [डिमित ?)······यछति······पलव··
यवनराजः डिमितः·········यच्छति······पल्लव ··

९. कपरुखे हय-गज-रथ-सह यति[६] सव-घरावास······[७]सव गहणं
कल्पवृक्षः हय-गज-रथैः सह याति सर्व-गृहावास·········सर्व-ग्रहणं

---

१. जायसवाल : राजसुयं । परन्तु जैसे सरकार ने कहा है, जैन राजा खारवेल के साथ राजसूय जोड़ना ठीक नहीं ।

२. बरुआ : सतमे च वसे [अ]स-सतो ।

३. वही : वजिरघर-खतिय-सत-घटनि-सभतक पदषंन संतिपद··· ;जायसवाल : °घरवति-धुसित-घरिनि स मतुक-पद-पुंग····· ।

४. प्रिंसेप : राजगर्भ; कनिंघम : राजगेभु; इन्द्रजी : राजगहनपं पीडापयति ।

५. प्रिंसेप : पंवात; जायसगाल : संबित; बरुआ : पवंत ।

६. बरुआ : यं[ति]; इन्द्रजी : सह-यत; जायसवाल : सह-यंते ।

७. प्रिंसेप : घरवसय······;कनिंघम : घरवसय-अनतिकगवय; इन्द्रजी : घरवसधं·····; जायसवाल : घरावास-परिवेसने अगिणथिया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

च कारयितु ब्रह्मणानं ज[य][1]-परिहारं ददाति अरहत……
च कारयितुं ब्राह्मणेभ्यः जय-परिहारं ददाति ॥ अर्हत……

[नवमे च वसे*]……
नवमे च वर्षे………

१०. ……[2]महाविजय[3]-पासादं कारयति अठतिसाय
……महाविजय-प्रासादं कारयति अष्टत्रिंशता

सत-सहसेहि दसमे च वसे
शतसहस्रैः [मुद्राणां] ॥ दशमे च वर्षे

दंड-संधी-सा[ममयो][4] ? भरधवस-पठा(?)नं मह[ी]जयनं[5]
दण्ड-सन्धि-साम-मयः भारतवर्ष-प्रस्थानां महीजयं

कारयति ॥ [एकादसमे च वसे*] प[ा]यातानं च
कारयति ॥ एकादशे च वर्षे अपयातानां च

म[नि]-रतनानि उपलभते
मणिरतनानि उपलभते ।

११. ……पुवं राजनिवेसितं[6] पीथुडं गदभ-नंगलेन कासयति
……पूर्वं राजनिवेशितं पृथूदं गर्दभ-लाङ्गलेन कर्षयति ।

जन[प[द-भावनं च तेरस-वस-सत-कतं[7]भि[ं]दति त्रमिर-दह[8]
जनपद-भावनं च त्रयोदशवर्षशतकृतं भिनत्ति तिमिर-दह-

---

१. प्रिंसेप : जत; जायसवाल : जाति ।
२. जायसवाल : मानतिराजसंनिवासं ।
३. वही : महाविजयं ।
४. कनिंघम : दितिभिसर ।
५. वही : महयन ।
६. जायसवाल : मंडं अवराज-निवेसितं; बरुआ : पुवराज-निवेसित पिधुडग-छभ नगले नेकसयपि ।
७. जायसवाल : सतिकं अभिं ।
८. इन्द्रजी : तमर-देह; जायसवाल : त्रमिर-तेष (=तमिल देश)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(?)-संघातं बारसमे च वसे······[1][सह]सेहि वितासयति
सङ्घातम् ।। द्वादशे च वर्षे सहस्रैः वित्रासयति

उतरापध-राजानो
उत्तरापथराजान्

१२. म[ा]गधानं च विपुलं भयं जनेतो हथसं गंगाय[2] पाययति
मागधानां च विपुलं भयं जनयन् हस्त्यश्वं गङ्गायां पाययति ।

म[ाग]ध[ं] च राजानं बहसतिमितं पादे वंदापयति नंदराज-
मागधं च राजानं वृहस्पतिमित्रं पादौ वन्दयति । नन्दराज-

नीतं च का[लि]ग-जिनं[3] संनिवेस······[4]अंग-मगध-वसुं च
नीतं च कलिङ्ग-जिनं संन्निवेश······अङ्ग-मगध-वसुं च

नयति
नयति ।

१३. ······[क]तु[ं] जठर-[लखिल-] [गोपु]राणि सिहराणि
······कर्त्तुं जठर-लक्ष्मील-गोपुराणि शिखराणि

निवेसयति सत-विसिकनं[प]रि-हारेहि अभुतमछरियं च
निवेशयति[मुद्राणां]शत-विंशिकानां परि-हारैः अद्भुतम् आश्चर्यं च

हथी-निवा[स[5]] परिहर हय-हथि-रतन-[मानिकं]
हस्तिनिवासं परिहरति हय-हस्ति-रत्न-[मानिकं]

पंडराजा [मुत]-मनि रतनानि आहरापयति , इध
पाण्ड्यराजात् मुक्ता-मणि-रत्नानि आहारयति . इह

---

१. बरुआ यहां 'सिवकानं' सुझाते हैं ।

२. जायसवाल 'हथी सुगंगीयं पाययति' पढ़ते हैं तथा मुद्राराक्षस में वर्णित 'सुगांग' प्रासाद से सम्बन्ध जोड़ते हैं ।

३. बरुआ : नंदराज-जितं च कलिगजन-संनिवेसं ।

४. इन्द्रजी : गह-रतन-परिहारेहि; जायसवाल : °पडीहारेहि; बरुआ : कितव-नय-निपुनेति ।

५. प्रिंसेप : हथिनवुन; कनिंघम : हथिनवेन; बरुआ : हथिनाव[तं] ।

सत[सहसानि]
शतसहस्राणि

१४. ······सिनो वसीकरोति तेरसमे च वसे सुपवत-विजय-चके
······वासिनः वशीकरोति ॥ त्रयोदशे च वर्षे सुप्रवृत्त-विजय-चक्रे

कुमारीपवते अरहते [हि*] पखिन-सं[सि]तेहि कायनिसीदियाय[1]
कुमारीपर्वते अर्हद्भ्यः प्रक्षीण-संश्रितेभ्यः काय-निषद्यायै

यापूजावकेहि[2] राजभितिनि[3] चिन-वतानि(नं)
यापोद्यापकेभ्यः राजभृतानां चीर्णव्रतानां

वास[ा][सि]तनि(नं) पूजानुरत[4]-उवा[सग-खा]रवेलसिरिना
वर्षाश्रितानां पूजानुरक्तोपासक-खारवेलश्रिया

जीवदेह-सायिका[5] परिखाता[6]
जीवदेहाश्रयिका: परिखानिताः ।

१५······सकत-समण सुविहितानं च सव[7]-दिसानं ञ[नि]नं(?)
······सत्कृत-श्रमणः सुविहितानां च सर्वदिशानां ज्ञानिनां

तपसि-इ[सि]न[8] संघियनं अरहतनिसीदिया-समीपे पभारे
तपस्व्यृषीणां सङ्घीयानाम् अर्हन्निषद्या-समीपे प्राग्भारे

वराकार-समुथापिताहि अनेकयोजना-हिताहि······सिलाहि[9]···
वराकार-समुत्थापिताभिः अनेकयोजनाहृताभिः·········शिलाभिः

---

१. बरुआ : कय्य°
२. प्रिंसेप : यापुहवकेहि, कनिंघम : यापुजकेहि; जायसवाल : यापञवकेहि ।
३. तिनं पढ़ें ।
४. बरुआ : पूजायरत ।
५. कनिंघम : जिविमक; जायसवाल : सिरिका; बरुआ : सयिका ।
६. प्रिंसेप तथा कनिंघम : °रिखित; बरुआ : पनिखाता ।
७. जायसवाल : सत ।
८. कनिंघम : सिमपुस; बरुआ : [सम]पसि[नं] ।
९. बरुआ : पक्वसिसेहि सत[सहसा]हि सिलाहि ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६. ......[1]चतरे च वेडुरिय-गभे थंभे पतिठापयति पानतरीय-सत-
......चत्वरे च वैदूर्यगर्भं स्तम्भं प्रतिष्ठापयति पञ्चोत्तर-शत-

सहसेहि मु[खि]य[2]-कल[3]-वोछिनं[4] च चोय[ठि]-अंग[5] संतिक[ं][6]
सहस्रैः [मुद्राणां], मुख्यकलावच्छिन्नं च चतुःषष्ठचङ्गं शान्तिकं

तुरियं उपादयति खेम-राजा स वढ[7]-राजा स भिखु-राजा
तौर्यं उत्पादयति । क्षेमराजः स वृद्धराजः स भिक्षुराजः

धम-राजा पसं[तो] सुनं[तो] अनुभव[तो] कलानानि
धर्मराजः पश्यन् शृण्वन् अनुभवन् कल्याणानि

१७. गुण-विसेस-कुसलो सव-पासंड-पूजको सव-दे[वाय]तन-
गुणविशेषकुशलः सर्व-पार्षद-पूजकः सर्व-देवायतन-

सकार-कारको अपतिहत-चक[8]-वाहनबलो चकधरो[9] गुत-चको-
संस्कार-कारकः अप्रतिहतचक्रवाहिनीबलः चक्रधरः गुप्त-चक्रः

पवत-चको राजसि-वसू-कुल-विनिश्रितो[10] महाविजयो राजा
प्रवृत्त-चक्रः राजर्षिवसु-कुल-विनिःसृतः महाविजयः राजा

खारवेल-सिरि
खारवेल-श्रीः ॥

---

१. प्रिंसेप : पठलके; इन्द्रजी : पटालके; जायसवाल : पटलको ।

२. इन्द्रजी तथा स्टेन कोनो : मुरिय ।

३. इन्द्रजी तथा फ्लीट : काल । परन्तु यहाँ मौर्यकाल (संवत्) के उल्लेख की संभावना नहीं है ।

४. बरुआ : वोछिने ।

५. प्रिंसेप : चोयथ अगि; कनिंघम : चेयठ अगे; इन्द्रजी : चोयथ अगें; बरुआ : चोठ अंगे ।

६. इन्द्रजी : संतिकु । ७. बरुआ : वध° । ८. जायसवाल : चकि ।

९. वही : चकधुर° ।

१०. बरुआ : राजिसि-वंस-कुल°; कनिंघम : °विनिगत ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भद्रमघ-कालीन कोसम प्रस्तर-खण्ड अभिलेख

वर्ष ८१

स्थान : उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद जिले में कोसम से लगभग दो किलोमीटर पश्चिमोत्तर को नौहई नामक ग्राम के निकट एक पुराने सूखे नाले के किनारे से प्राप्त प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण ।

लिपि : परवर्ती कुषाण-काल की ब्राह्मी ।

भाषा : प्राकृत ।

विषय : कत्स के पत्थर शिल्पियों की एक श्रेणि द्वारा आसन-पट्ट का निर्माण ।

संदर्भ : कृष्णदेव, EI, 24. p. 253.

१. महारजस्य श्री-भद्रमघस्य सवत्सरे एकसीते ८० १ गृष्म-पक्षे
महाराजस्य श्री-भद्रमघस्य संवत्सरे एकाशीतितमे ८० १ ग्रीष्म-पक्षे

द्वितीय[1] २ दिवसे पञ्चमे ५
द्वितीये २ दिवसे पञ्चमे ५

२. एतये पुरुवये कत्स-पस्थरिक-श्रेणिय आसन-पट्टा स्थपत [।।*]
एतस्यां पूर्वायां कत्स-प्रस्तरिक-श्रेण्या आसन-पट्टाः स्थापिताः ।।

---

१. द्वितीये पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खण्ड-३

गुप्त-कालीन अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[ін]

समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख

स्थान : उत्तरप्रदेश में इलाहाबाद के दुर्ग के भीतर स्थित पत्थर के स्तम्भ पर उत्कीर्ण। पूर्ववर्ती सम्राट् अशोक के अभिलेख भी इस स्तम्भ पर उत्कीर्ण हैं। मूलतः यह स्तम्भ इलाहाबाद के निकट कोसम (कौशाम्बी) ग्राम में गड़ा हुआ था। मुग़ल राजा अकबर ने इसे लाकर वर्तमान स्थान पर स्थापित कराया।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी जो साधारणतया गुप्त ब्राह्मी भी कही जाती है, यद्यपि यह नाम समीचीन नहीं, क्योंकि सभी गुप्तअभिलेखों में वर्णमाला के अक्षर एक समान नहीं हैं।

भाषा : संस्कृत; गद्य-पद्य मिश्रित।

विषय : समुद्रगुप्त की वंशावली और उसके व्यक्तित्व तथा यश का वर्णन। उसकी दिग्विजय का वर्णन विस्तार-पूर्वक किया गया है।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. I; सरकार, SI, p. 262; पाण्डेय, HLI, p. 72; छाबड़ा, 1HQ, 24, pp. 104-13; राघवन, JOR, Madras, 16, PP. 59-62; साधुरास, VIJ, III, pt. 1, PP. 105-6; दिसकलकर, SS1, PP. 25-43.

१. [यः] कुल्यैः स्वै·········तस·········

२. [यस्य]································
································[।।*] १

३- पुं व·················त्र·················

४. [स्फु] रद्वं·······························क्षः स्फुटो-[द्ध्वं]सित
···············प्रवितत·················[।।*] २

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. यस्य प्रज्ञानुषङ्गोचित-सुख-मनसः शास्त्रतत्त्वा[1]र्त्थ-भर्त्तुः
[— —] स्तब्धो [⏑— —⏑) नि(⏑⏑⏑⏑—)
नोच्छ्र [——⏑——]

६. [स]त्काव्य-श्री-विरोधान्बुध-गुणित-गुणाज्ञाहतानेव कृत्वा विद्वल्लोके
[ऽ*]वि[नाशि] स्फुट-बहु-कविता-कीर्त्ति-राज्यं भुनक्ति [।।*]३

७. [आ]र्य्यो हीत्युपगुह्य[2] भाव-पिशुनैरुत्कर्ण्णितै रोमभिः सभ्येषूच्छ्व-
सितेषु तुल्य-कुलज-म्लानाननोद्वीक्षितः [।*]

८. स्नेह-व्यालुलितेन बाष्प-गुरुणा तत्त्वेक्षिणा चक्षुषा यः पित्रा-[ऽ*]
भिहितो निरीक्ष्य निखि[लां पाह्ये]वमुर्व्वी]मिति[3] [।।*]४

९. [दृ]ष्ट्वा कर्म्माण्यनेकान्यमनुज-सदृशान्यद्भुतोद्भिन्न-हर्षा
भा[ा]वैरास्वादय[न्त ⏑⏑⏑⏑⏑⏑———⏑——⏑]
[के]-चित्[।*]

१०. वीर्य्योत्तप्ताश्च केचिच्छरणमुपगता यस्य वृत्ते[ऽ*]प्रणामे[4] [ऽ*]
प्य[र्त्तिग्रस्तेषु— —⏑⏑⏑⏑⏑⏑— —⏑— — —⏑— —] [।।*]५

११. संग्रामेषु स्व-भुज-विजिता नित्यमुच्चापकाराः श्वः-श्वो मान-प्र
[⏑⏑⏑⏑— — —⏑— — —⏑— —][।*]

१२. तोषोत्तुङ्गैः स्फुट-बहु-रस-स्नेह-फुल्लैर्म्मनोभिः पश्चात्तापं व-
[⏑⏑⏑⏑— —⏑] [मं] स्य[ा]द्वसन्त[म्] [।।*] ६

१३. उद्वेलोदित-बाहु-वीर्य्य-रभसादेकेन येन क्षणादुन्मूल्याच्युत-
नागसेन-ग-[णपत्यादीन्नृपान्संगरे ।*][5]

---

१. °त्त्वा° पढ़ें ।
२. छाबड़ा : एह्येहीत्युगुह्य ।
३. वही : पाहि त्वमुर्व्वीमिति ।
४. फ्लीट : वृत्ते प्रणामे ।
५. सरकार का अनुमान ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. दण्डैर्ग्राहयतैव कोत-कुलजं पुष्पाह्वये क्रीडता सूर्य्ये नित्य [⌣–⌣–]तट[⌣–––⌣––⌣–] [।।*] ७

१५. धर्म्म-प्राचीर-बन्धः शशि-कर-शुचयः कीर्त्तयः स-प्रताना वैदुष्यं तत्त्व-भेदि प्रशम [⌣⌣⌣]कु[ल्य⌣]मु[–⌣]-तार्त्थम् [।*]

१६. अद्धयेयः सूक्तमार्ग्गः कवि-मति-विभवोत्सारणं चापि काव्यं को नु स्याद्यो[ऽ*]स्य न स्याद् गुण इति[1] विदुषां ध्यान-पात्रं य एकः [।।*] ८

१७. तस्य विविध-समर-शतावतरण-दक्षस्य स्व-भुज-बल-पराक्रमैक-बन्धोः पराक्रमाङ्कस्य परशु-शर-शङ्कु-शक्ति-प्रासासि-तोमर-

१८. भिन्दिपाल-न[ा*]राच-वैतस्तिकाद्यनेक-प्रहरण-विरूढ़ाकुल-व्रण-शताङ्क-शोभा-समुदयोपचित-कान्ततर-वर्ष्मणः

१९. कौसलकमहेन्द्र-माह[ा*]कान्तारकव्याघ्रराज-कौराळकमण्टाराज-[2] पैष्टपुरकमहेन्द्रगिरि[3]-कौट्टूरकस्वामिदत्तैरण्डपल्लकदमन-काञ्चेयकविष्णुगोपावमुक्तक-

२०. नीलराज-वैङ्गेयकहस्तिवर्म्म-पालक्कोग्रसेन-दैवराष्ट्रककुबेर-कौस्थलपुरकधनञ्जयप्रभृति-सर्व्वदक्षिणापथराज-ग्रहण-मोक्षानुग्रहजनित-प्रतापोन्मिश्र-माहाभाग्यस्य

२१. रुद्रदेव-मतिल-नागदत्त-चन्द्रवर्म्म-गणपतिनाग-नागसेनाच्युतनन्दि-[4] बलवर्म्माद्यनेकार्य्यावर्त्तराज-प्रसभोद्धरणोद्धृत-प्रभाव-महतः परि-

---

१. फ्लीट : गुणमति॰ ।

२. फ्लीट के अनुसार कौरालक के स्थान पर कैरलक होना चाहिये ।

३. फ्लीट गिरि को कौट्टूरक के साथ मिलाकर स्थान का नाम 'गिरि(पहाड़ी) पर कोट्टूर' ग्रहण करते हैं ।

४. सरकार अच्युत और नन्दि को दो भिन्न नाम मानते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चारकीकृत-सर्व्वाटविक-राजस्य

२२. समतट-डवाक-कामरूप-नेपाल-कर्त्तृपुरादि-प्रत्यन्त-नृपति-
भिर्म्मालवार्जुनायन-यौधेय-माद्रकाभीर-प्रार्जुन-सनकानीक-
काक-खरपरिकादिभिश्च सर्व्व-कर-दानाज्ञाकरण-प्रणामागमन-

२३. परितोषित-प्रचण्ड-शासनस्य अनेक-भ्रष्ट-राज्योत्सन्न-राजवंश-
प्रतिष्ठापनोद्भूत-निखिल-भु[व]न-[विचरण]-शान्त-यशसः दैव-
पुत्र-षाहि-षाहानुषाहि-शकमुरुण्डैः सैंहळकादिभिश्च

२४. सर्व्व-द्वीप-वासिभिरात्म-निवेदन-कन्योपायन-दान-गरुत्मदङ्क-
स्व-विषयभुक्ति-शासन-[या]चनाद्युपाय-सेवा-कृत-बाहु-वीर्य्य-
प्रसर-धरणि-बन्धस्य पृ[१]थिव्यामप्रतिरथस्य

२५. सुचरित-शतालङ्कृतानेक-गुण-गणोत्सिक्तिभिश्चरण-तल-
प्रमृष्टान्य-नरपति-कीर्त्तेः साद्ध्वसाधूदय-प्रलय-हेतु-पुरुषस्याचि-
न्त्यस्य[२]भक्त्यवनति-मात्र-ग्राह्य-मृदुहृदयस्यानुकम्पावतो[ऽ*]
नेकगो-शतसहस्र-प्रदायिनः

२६. कृपण-दीनानाथातुर-जनोद्धरण-सत्त्रदीक्षाभ्युपगत-मनसः[३] समि-
द्धस्य विग्रहवतो लोकानुग्रहस्य धनद-वरुणेन्द्रान्तक-समस्य स्व-
भुज-बल-विजितानेक-नरपति-विभव-प्रत्यर्प्पणा-नित्य-व्यापृता-
युक्तपुरुषस्य

२७. निशित-विदग्ध-मति-गान्धर्व्व-ललितैर्व्व्रीडित-त्रिदशपतिगुरु-
तुम्बुरु-नारदादेर्व्विद्वज्जनोपजीव्यानेक-काव्य-क्रियाभिः प्रति-
ष्ठित-कविराज-शब्दस्य सुचिर-स्तोतव्यानेकाद्भुतोदार-
चरितस्य

---

१. पृ॰ पढ़ें।
२. तुलना करें—परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (गीता)
३. फ्लीट : स(म)न्त्रदीक्षाद्युपगत॰।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२८. लोकसमय-क्रियानुविधान-मात्र-मानुषस्य लोक-धाम्नो देवस्य महाराज-श्री-गुप्त-प्रपौत्रस्य महाराज-श्री-घटकोत्कच-पौत्रस्य महाराजाधिराज-श्री-चन्द्रगुप्त-पुत्रस्य

२९. लिच्छवि-दौहित्रस्य महादेव्यां कुमारदेव्यामुत्फ(त्प)न्नस्य महा-राजाधिराज-श्री-समुद्रगुप्तस्य सर्व्व-पृथिवी-विजय-जनितोदय-व्याप्त-निखिलावनितलां कीर्त्तिमितस्त्रिदशपति-

३०. भवन-गमनावाप्त[१]-लळित-सुख-विचरणामचक्षाण इव भुवो बाहु-रयमुच्छ्रितः स्तम्भः [।*] यस्य ।[२] प्रदान-भुज-विक्रम-प्रशम-शास्त्र-वाक्योदयैरुपर्य्युपरि-सञ्चयोच्छ्रितमनेक-मार्ग्गं यशः [।]

३१. पुनाति भुवन-त्रयं पशुपतेर्ज्जटान्तर्गुहा-निरोध-परिमोक्ष-शीघ्र-मिव फाण्डु गाङ्गं [पयः] [।।] ९ एतच्च काव्यमेषामेव भट्टा-रक-पादानां दासस्य समीप-परिसर्प्पणानुग्रहोन्मीलित-मतेः

३२. खाद्यटपाकिकस्य महादण्डनायक-ध्रुवभूति-पुत्रस्य-सान्धिविग्र-हिक-कुमारामात्य-म[हादण्डनाय]क-हरिषेणस्य सर्व्व-भूत-हित-सुखायास्तु ।

३३: अनुष्ठितं च फरमभट्टारक-पादानुध्यातेन महादण्डनायक-तिल-भट्टकेन [।।*][३]

---

१. फ्लीट ने यहां समुद्रगुप्त के इन्द्र के भवन (स्वर्गलोक) को जाने का अर्थ किया है जबकि यहां वर्णन कीर्ति का है ।

२. यहां एक पड़ी रेखा अर्ध विराम के चिह्न के रूप में अनावश्यक है । संभवतः यस्य पद को आगे आने वाले श्लोक से भिन्न दिखाने के लिए इसका प्रयोग किया गया है ।

३. पंक्ति ३२ तथा ३३ के बीच अधिक अन्तराल है । सम्भवतः पंक्ति ३३ प्रशस्ति से भिन्न होने के कारण अलग उत्कीर्ण की गई है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समुद्रगुप्त-कालीन एरण स्तम्भ अभिलेख

स्थान : मध्य प्रदेश के सागर जिले में एरण (एरिकिण) ग्राम के सुप्रसिद्ध जीर्ण वराह-मन्दिर के निकट पड़े एक चौकोर स्तम्भ-खण्ड पर उत्कीर्ण, जो आजकल इण्डियन म्यूज़ियम में सुरक्षित है ।

लिपि : मध्य-भारतीय ब्राह्मी । अक्षरों के सिर वर्गाकार होने के कारण अंग्रेजी में इस लिपि को बॉक्स-हेडिड कहा जाता है ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : किसी सामन्त अथवा राज्यपाल द्वारा एरिकिण (एरण) में मन्दिर (?) बनवाए जाने का उल्लेख एवं अपने अभिभावक महाराजाधिराज समुद्रगुप्त की प्रशस्ति ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 2; सरकार, SI, P. 268; पाण्डेय, HLI, P. 76; साधुराम, KURJ, I, 1, PP. 13—19; मिराशी, IA, (3rd series), I, 3, 1964, PP. 174-76.

७[1]. [––⏑ –⏑⏑ ⏑–⏑] सुवर्ण्ण-दाने

८. [न्यक्का]रिता[2] नृपतयः[3] पृथु-राघवाद्याः [॥*] २

९. [भूपो][4] बभूव धनदान्तक-तुष्टि-कोप-तुल्यः

---

१. प्रथम छः पंक्तियों से युक्त भाग टूटकर खो गया है ।

२. सरकार : [संवा]रिता; जगन्नाथ : विस्मारिता ।

३. 'त' पंक्तियों के नीचे पीछे जोड़ा गया है ।

४. सरकार : [पुत्रो] ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१०. [पराक्क]¹म-नयेन समुद्रगुप्तः [।*]

११. [यं प्रा]¹प्य पार्त्थिव-गणस्सकलः पृथिव्याम्

१२. [पर्य्य]¹स्त-राज्य-विभव-द्ध्रुतमास्थितो[ऽ*]भूत् [।।*]३

१३. [ताते]¹न भक्ति-नय-विक्रम-तोषितेन

१४. [यो] राज-शब्द-विभवैरभिषेचनाद्यैः [।*]

१५. [सम्मा]¹नितः परम-तुष्टि-पुरस्कृतेन

१६. [सोऽयं ध्रु]¹वो नृपैरप्रतिवार्य्य-वीर्य्यः [।।*] ४

१७. [श्रीर]स्य² पौरुष-पराक्रम-दत्त-शुल्का

१८. [हस्त्य]श्व-रत्न-धन-धान्य-समृद्धि-युक्ता [।*]

१९. [नित्य]ङ्गृहेषु³ मुदिता बहु-पुत्र-पौत्र-

२०. [स]ङ्क्रामिणी कुल-वधु⁴ व्रतिनी निविष्टा [।।*]५

२१. [यस्य] र्जितं समर-कर्म्म-पराक्रमेद्धं

२२. [शुभ्रं]⁵ यशः सु-विपुलम्परिबम्भ्रमीति [।*]

[कर्म्मा]णि⁶ यस्य रिपवश्च रणोर्ज्जितानि

१९. [स्व]प्नान्तरेष्वपि विचिन्त्य परित्रसन्ति [।।*]६

२०. [––⌣–⌣⌣⌣–⌣⌣–⌣⌣–⌣–⌣––] [—]प्तः (?)⁷ स्व-

भोग-नगरैरिकिण-प्रदेशे [।*]

१. सरकार द्वारा अनुमानित पाठ।

२. सरकार : [दत्ता]स्य; मिराशी : एतस्य।

३. मिराशी : [तस्य] गृहेषु। साधुराम : [सेय]ङ्गृहेषु।

४. वधून्न पढ़ें।

५. सरकार : [पृथ्व्यां];]दीप्तं भी किसी ने सुझाया है। परन्तु इसका भाव 'इद्धं' में आ गया है।

६. सरकार : कर्याणि।

७. सरकार : [स्तम्भः]।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२१. [––⏑–⏑⏑⏑–⏑⏑–⏑––] [सं] स्थापितस्स्व-यशसः परिबृङ्हना'र्त्थम्,[।।*]७

२२. [––⏑–⏑⏑⏑–⏑⏑–⏑–––] [––⏑]वो नृपति-राह यदा [⏑– –] [।*]

१. णा पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ii)

चन्द्रगुप्त (द्वितीय)-कालीन मथुरा स्तम्भ अभिलेख

गुप्त संवत् ६१

स्थान : उत्तर प्रदेश की मथुरा नगरी में चण्डूल-मण्डूल वाटिका में स्थित स्तम्भ पर उत्कीर्ण ।

लिपि : दूसरी शती ईसवी की कुषाण लिपि से मिलती-जुलती ब्राह्मी जिसे मध्य-ब्राह्मी की संज्ञा दी जाती है ।

भाषा : संस्कृत, कहीं-कहीं प्राकृत प्रभाव ।

विषय : पाशुपत (शैव) उदिताचार्य द्वारा अपने गुरु उपमित-विमल तथा कपिल-विमल की उपमितेश्वर तथा कपिलेश्वर नामक दो प्रतिमाएं गुर्वायतन में स्थापित कराने का वर्णन ।

संन्दर्भ : डी० आर० भण्डारकर, EI, 21, P. 8; डी० बी० दिसकलकर, ABORI, 18, p. 166; सरकार, SI,p.277; IHQ, 18, P. 272; पाण्डेय, HLI, P. 78; साधुराम, KURJ, I, P. 13; श्रीनिवासन, JAIH, pts. 1-2, 1969-70, pp. 101-22.

१. सिद्धम् [।] भट्टारक-महाराज-[राजाधि]राज-श्री-समुद्रगुप्त-स-

२. [त्पु]त्रस्य भट्टारक-म[हाराज-राजाधि]राज-श्री-चन्द्रगुप्त-

३. स्य विज[य]-राज्य[1]-संवत्स[रे] [पं]चमे [५] कालानुवर्त्तमान[2]-सं-

४. वत्सरे एकषष्ठे (°षष्टितमे) ६० १ [आषाढ मासे ? प्र]थमे शुक्ल-दिवसे पं-

---

१. भण्डारकर : रज्य ।

२. काला° से पहले भण्डारकर 'गुप्त' पढ़ते हैं परन्तु जैसे सरकार ने निर्दिष्ट किया है मूल में ऐसे अक्षर दिखाई नहीं देते ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. चम्यां[1] [।*] अस्यां पूर्व्वा[यां भ]गव[त्कु[शिकाद्दशमेन भगव-
६. त्पराशराच्चतुर्थेन [भगवत्क*]पि[ल]विमल-शि-
७. ष्य-शिष्येण भगव[दुपमित*]विमल-शिष्येण
८. आर्य्योदि[ता]चार्य्ये[ण] [स्व]-पु[ण्या]प्यायन-निमित्तं
९. गुरूणां च कीर्त्य[र्थमुपमितेश्व]र-कपिलेश्वरौ
१०. गुर्व्वायतने गुरु-[प्रतिमा-युतौ ?][2] प्रतिष्ठापितो(तौ) [।*] नै-
११. तत्ख्यात्यर्थमभिलि[ख्यते] [।*] [अथ*] माहेश्वराणां वि-
१२. ज्ञप्ति × क्रियते सम्बोधनं च [।*] यथाका[ले]नाचार्या-
१३. णां परिग्रहमिति(परिग्रह इति) मत्वा विशङ्कं [पू]जा-पुर-
१४. स्कार(रं) परिग्रह-परिपाल्यं [कुर्य्या]दिति[3] विज्ञप्तिरिति [।*]
१५. यश्च कीर्त्यभिद्रोहं कुर्य्या[ा]द्य[श्चा]भिलिखित[मुप]र्य्यधो
१६. वा[4][स] पंचभिर्मह[ा]पातकैरुपपातकैश्च संयुक्तस्स्यात् [।*]
१७. जयति च भगवा[ण्ड(न्द)ण्ड:] रुद्रदण्डो[ऽ]ग्र-[ना]यको
नित्य[म्*] [।।*]

---

१. सरकार 'पंचमे' पाठ अच्छा समझते हैं। संभवतः वे इसे दिवसे के साथ मिलाते है। परन्तु पंचम्यां का अभिप्राय पंचम्यां तिथौ से है।
२. भण्डारकर का अनुमान,
३. सरकार के अनुसार कुर्युः इति पाठ अच्छा है।
४. भण्डारकर के अनुसार वा के पश्चात् उच्छिन्द्यात् या कोई अन्य ऐसा ही शब्द होना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(in)

चन्द्रगुप्त (द्वितीय)-कालीन साँची स्तूप-प्राचीर अभिलेख

गुप्त संवत् ९३

स्थान : मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध साँची स्तूप के पूर्वी द्वार के बाहर दायीं ओर प्राचीर पर उत्कीर्ण।

लिपि : दक्षिणी ब्राह्मी। कुमारगुप्त-कालीन मन्दसौर अभिलेख की लिपि से कुछ मिलती-जुलती।

भाषा : संस्कृत।

विषय : चन्द्रगुप्त के अधिकारी आम्रकार्द्दव द्वारा काकनादबोट-महाविहार-निवासी आर्य सङ्घ को ईश्वरवासक नाम ग्राम अथवा क्षेत्र तथा २५ दीनारों का प्रदान।

संदर्भ : प्रिंसेप, JBAS, 5, P. 451; फ्लीट, CII, III, No, 5; सरकार, SI, P. 280.

१. सिद्धम्[1] [।।*] का[कना]दबोट-श्री-महाविहारे शील-समाधि-प्रज्ञा-[2] गुण-भावितेन्द्रियाय परम-पुण्य-

२. क्षे [त्रग][3]ताय चतुर्द्दिगभ्यागताय श्रमण-पुङ्गवावसथायार्य्य-संघाय महाराजाधि-

३. रा[ज-श्री]-चन्द्रगुप्त-पादप्रसादाप्यायित-जीवित-साधनः अनु-जीविसत्पुरुष-सद्भाव-

---

१. प्रथम पंक्ति के आरम्भिक अक्षरों के ऊपर उत्कीर्ण।

२. प्र के स्थान पर पहले व उत्कीर्ण किया गया था।

३. सरकार का अनुमान। फ्लीट यहां क्ु······ताय पढ़ते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४, वृ[त्तिं][1] जगति प्रख्यापयन् अनेक-समरावाप्त-विजय-यशस्पताकः सुकुलि-देश-न-

५. ष्टी······वास्तव्य उन्दान-पुत्राम्रकार्द्दवो मज-शरभङ्गाम्ररात-राजकुल-मूल्य-क्री-

६. तम······य······ईश्वरवासकं पञ्च-मण्डल्यां प्रणिपत्य ददाति पञ्च-विंशतिश्च[2] दीना-

७. रान् [।।*] त [द्दृ]त्त·········यदर्द्धन[3] महाराजाधिराज-श्री-चन्द्र-गुप्तस्य देवराज इति प्रि-

८. य-नामधे[यस्य सुचरि ?][4] तस्य सर्व्व-गुण संपत्तये यावच्चन्द्रा-दित्यौ तावत्पञ्च भिक्षवो भुंज-

९. तां रत्न-गृहे [च दी]पको ज्वलतु [।*] मम चापरार्द्धात्पञ्चैव भिक्षवो भुंजतां रत्न-गृहे च

१०. दीपक इति [।।*] तदेतत्प्रवृत्तं य उच्छिन्द्यात्स गो-ब्रह्म-हत्यया संयुक्तो भवेत्पञ्चभिश्चान-

११. न्तर्य्यैरिति [।।*] सं ९० ३ भाद्र-पद दि ४ [।।*]

---

१. सरकार : वृ[त्यर्थं]।

२. विंशतिञ्च पढ़ें।

३. फ्लीट तथा सरकार : ···यादर्द्धेन।

४. फ्लीट : नामामात्यो भवत्येतस्य; सरकार : °नाम्नः··· रितस्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(im)

चन्द्रगुप्त (द्वितीय)-कालीन उदयगिरि गुहा अभिलेख

स्थान : मध्यप्रदेश में विदिशा के निकट उदयगिरि की 'तवा'-गुहा की पिछली भित्ति पर उत्कीर्ण। गुहा के ऊपर तवे के आकार की एक बड़ी शिला होने के कारण इसे 'तवा'-गुहा कहते हैं।

लिपि : समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भाभिलेख से मिलती जुलती उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : चन्द्रगुप्त (द्वितीय) के कृत्स्न-पृथ्वी-जयार्थ अभियान में साथ आए सचिव वीरसेन द्वारा शम्भु (शिव) का गुहा मन्दिर बनवाना।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, 10, p. 51; फ्लीट-CII, III, No. 6; सरकार, SI, p. 279; पाण्डेय, HLI, p. 80.

१. सिद्धम्[1] [।।*] य[दं]तज्ज्योतिरर्कभमुर्व्याम्[--⏑-⏑--‒ --⏑--][2] व्यापि चन्द्रगुप्ताख्यमद्भुतम् [।।*]१

२. विक्रमावक्रय-क्रीता दास्य-न्यग्भूत-पार्त्थिव[ा] [---] सन - संरक्ता-धर्म्म[--⏑-⏑-][3] [।।*] २

३. तस्य राजाधिराजर्षेरचिन्त्यो[ज्ज्वलक]र्म्मणः[4] अन्वय-प्राप्त-साचिव्यो व्या[पृत-सन्धि]-विग्रहः [।।*] ३

४. कौत्सश्शाब इति ख्यातो वीरसेनः कुलाख्यया शब्दार्त्थ-न्याय-लोकज्ञ × कवि ⌣ पाटलिपुत्रकः [।।*] ४

५. कृत्स्न-पृथ्वी-जयार्त्थेन राज्ञैवेह सहागतः भक्त्या भगवतश्शम्भोर्ग्गुहामेतामकारयत् [।।*] ५

---

१. मूल में यह शब्द तीसरी पंक्ति के सामने प्रान्त में उत्कीर्ण है।

२. सरकार खण्डित अंश में निम्न पाठ का अनुमान करते हैं—'भाति निरन्तरम्। दिवा-विभावरी'।

३. सरकार : यस्य शासन-संरक्ता धर्म्मज्ञस्य वसुन्धरा।

४. सरकार का अनुमान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[१११]

चन्द्र का महरौली लौह-स्तम्भ अभिलेख

स्थान : दिल्ली में महरौली के कुतुब मीनार के निकट स्थित लोह-स्तम्भ पर उत्कीर्ण ।

लिपि : पाँचवीं शती ईसवी के प्रारम्भ की उत्तरी ब्राह्मी । प्रिंसेप ने इसे तीसरी-चौथी शताब्दी के मध्यवर्ती लिपि माना है, जबकि भाऊदाजी इसे गुप्त-कालोत्तर मानते हैं ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : राजा चन्द्र द्वारा विष्णुपद नाम की पहाड़ी पर भगवान् विष्णु के मन्दिर के सम्मुख ध्वज के रूप में वर्तमान उत्कीर्ण स्तम्भ की स्थापना तथा प्रशस्ति में चन्द्र के प्रताप तथा विजयों का वर्णन ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 32; डी०आर० भण्डारकर JAHRS, 10, p. 86; सरकार, SI, p. 283; JRASBL, 5, p. 407; पाण्डेय HLI, p. 80; दिसकलकर, SSI, pp. 17-22.

१. यस्योद्वर्त्तयतः प्रतीपमुरसा शत्रून्त्स[1]मेत्यागतान्वङ्गेष्वाहव-
वर्त्तिनो[ऽ*]भिलिखिता खड्गेन कीर्त्तिर्भुजे [।*]
२. तीर्त्वा सप्त मुखानि येन समरे सिन्धोर्ज्जिता वाह्लिका[2] यस्या-
द्याप्यधिवास्यते जलनिधिर्व्वीर्य्यानिलैर्द्दक्षिणः [॥*]१
३. खिन्नस्येव विसृज्य गां नरपतेर्ग्गामाश्रितस्येतरां मूर्त्या कर्म्म-
जितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ [।*]
४. शान्तस्येव महावने हुतभुजो यस्य प्रतापो महान्नाद्याप्युत्सृजति
प्रणाशित-रिपोर्य्यत्नस्य शेषः क्षितिम् [॥*]२

---

१. 'न्त्स' के 'त्' की ओर किसी विद्वान का ध्यान नहीं गया ।

२. भाऊदाजी : वाल्हिका । 'व' का दायां भुज दिखाई नहीं देता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. प्राप्तेन स्व-भुजार्ज्जितञ्च सुचिरञ्चैकाधिराज्यं क्षितौ चन्द्राह्वेन समग्र-चन्द्र-सदृशीं वक्त्र-श्रियं बिभ्रता [।*]

६. तेनायं प्रणिधाय[१] भूमि-पतिना भावेन[२] विष्णो[३] मतिं प्रान्शुर्व्विष्णु[४]-पदे गिरौ भगवतो विष्णोर्ध्वजः स्थापितः [।।*]३

---

१. 'ध' के बाद डा जैसा एक अक्षर उत्कीर्ण है जो अनावश्यक है।

२. प्रिंसेप तथा फ्लीट ने धावेन पढ़ा। 'भ' की बाएं ओर की तिरछी रेखा दाएं ओर की सीधी रेखा में मिल गई है। 'भ' पर शिरोरेखा लगी है जबकि 'ध' पर यह नहीं लगती।

३. विष्णौ पढ़ें।

४. प्रांशु° पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन बिलसड स्तम्भ अभिलेख

गुप्त संवत् ९६

स्थान : उत्तर-प्रदेश के एटा जिले में बिलसड ग्राम।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी, किन्तु इस वर्ग के अन्य अभिलेखों की अपेक्षा इसमें मात्राएं अधिक लम्बी हैं।

भाषा : संस्कृत, कहीं-कहीं प्राकृत से प्रभावित।

विषय : स्वामी-महासेन (स्कन्द-कार्तिकेय) के मन्दिर में ध्रुव शर्मा नामक व्यक्ति द्वारा प्रतोली एवं धर्म-सत्र बनवाने तथा इस (अभिलेख वाले) स्तम्भ को स्थापित कराने का वर्णन।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, II, p. 19; फ्लीट, CII, III, No. 10; सरकार, SI, p. 285.

१. [सिद्धम् ।।] [सर्व्व-राजोच्छेत्तु: पृथिव्यामप्रतिरथस्य चतुरुद]धि-सलिलास्वादित-यशसो

२. [धनद-वरुणेन्द्रान्तक-समस्य कृतान्त-परशोः न्यायागतानेक-गो-हि]रण्य-कोटि-प्रदस्य चिरोत्सन्नाश्वमेधाहर्त्तुः

३. [महाराज-श्री-गुप्त-प्रपौत्रस्य महाराज-श्री-घटोत्कच-पौत्रस्य म]हाराजाधिराज-श्री-चन्द्रगुप्त-पुत्रस्य

४. लिच्छवि-दौहि[त्रस्य महादेव्यां कुमारदेव्यामुत्पन्नस्य महारा]-जाधिराज-श्री-समुद्रगुप्त[स्य*][1] पुत्रस्य

५. महादेव्यां दत्तदेव्यामुत्पन्नस्य स्वय[मप्रतिरथस्य परम]-भागवतस्य महाराजाधिराज-श्री-चन्द्रगुप्त[स्य*] पुत्रस्य

---

१. प्रथम चार पंक्तियों में नष्ट हुए अंशों का पाठ समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख तथा स्कन्दगुप्त के भिटारी स्तम्भ अभिलेख के आधार पर अनुमानित किया गया है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. महादेव्यां ध्रुवदेव्यामुत्पन्नस्य महाराजाधिराज-श्री-कुमार-गुप्तस्याभिवर्द्धमान-विजय-राज्य (ज्ये) संवत्सरे षण्णवते[1] [।*]

७. अस्यान्दिवस-पूर्व्वायां[2] भगवतस्त्रैलोक्य-तेजस्संभार-संभूताद्भुत[3]-मूर्त्तेर्ब्रह्मण्य-देवस्य

८. ………… निवासिनः स्वामि-महासेनस्यायतने[ऽ*]स्मिन्कार्त्त-युगाचार-सद्धर्म्म-वर्त्मानुयायिना

९. [मा]ता[4]……… [प]र्षदा मानितेन ध्रुवशर्म्मणा कर्म्म महत्कृते (त) [मि*]दम् ।

१०. कृ[त्व]ा [नेत्रा][5]भिरामां मुनिवसति-[मिह][6] स्वर्ग्ग-सोपान-[रू]पाम् ।[7] कौबेर-च्छन्द-बिम्बां स्फटिक-मणि-दलाभास-गौरां-(रीं) प्रतोलीम् ।

११. प्रासादाग्राभिरूपं गुण-वर-भवनं [धर्म्म-स]त्त्रं यथावत् ।[8] पुण्येष्वेवाभिरामं व्रजति शुभ-मतिस्तात-शर्म्मा ध्रुवो[ऽ*]स्तु । (॥)

१२. [--]ा[--]ा [--]स्य [⏑—]शुभामृत-वर-प्रख्यात-लब्धा भुवि ।[9] [--̀] [--̀] भक्तिरहीन-सत्व (त्त्व)-समता कस्तं न संपूजयेत् ।

१३. येनापूर्व्व-विभूति-सञ्चय-चयैः शैली [⏑ ⏑—] : ।[10] तेनायं ध्रुवशर्म्मणा स्थिर-वरस्स्तंभो[च्छ्र]यः कारितः । (॥) २

---

१. सरकार का संशोधन : षण्णवतितमे ।

२. फ्लीट यहां से आगे तिथी जोड़ते हैं जिसकी आवश्यकता नहीं है । 'पूर्व्वा' तिथि के अर्थ में प्रयुक्त है ।

३. फ्लीट : संतत॰ ।

४. सरकार का अनुमान : मातापित्रोरात्मनश्च पुण्यार्थं साधु-पर्षदा ।

५-६. सरकार का अनुमान ।

७ से १०. चारों स्थानों पर अर्धविराम की पड़ी रेखा अनावश्यक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन उदयगिरि गुहा अभिलेख

गुप्त संवत् १०६

स्थान : मध्य-प्रदेश में विदिशा के निकट उदयगिरि के एक गुहा-मन्दिर की भीतरी भित्ति पर उत्कीर्ण ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : शंकर नामक यति द्वारा जैन तीर्थङ्कर पार्श्व (पार्श्वनाथ) की प्रतिमा की स्थापना ।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, 10, p. 53; हुल्श, IA, II, p. 309; फ्लीट, CII, III, No. 61.

१. नमः सिद्धेभ्यः [।।*] श्री-संयुतानां गुण-तोयधीनां गुप्तान्वयानां नृप-सत्तमानां

२. राज्ये कुलस्याभिविवर्द्धमाने षड्भिर्य्युते वर्ष-शते[ऽ*]थ मासे [।।१।।*] सु-कार्त्तिके बहुल-दिने[ऽ*]थ पंचमे

३. गुहा-मुखे स्फट[1]-विकटोत्कटामिमां [।*] जित-द्विषो जिन-वर-पार्श्व-संज्ञिकां जिनाकृतिं शम-दमवान-

४. चीकरत् [।।२।।*] आचार्य्य-भद्रान्वय-भूषणस्य शिष्यो ह्यसा-वार्य्य-कुलोद्गतस्य [।*] आचार्य्य-गोश-

५. र्म्म-मुनेस्सुतस्तु पद्मावतावश्वपतेर्भटस्य[2] [।।३।।*] परैरजेयस्य रिपुघ्न-मानिनस्स सङ्घि-

---

१. हुल्श : स्फुट ।

२. यहां 'पद्मावतौ' रूप पद्मावति का सप्तमी एकवचन है । शुद्ध शब्द पद्मावती का सप्तमी एकवचन रूप पद्मावत्याम् होता है । यहां छन्द की आवश्यकता के कारण पद्मावति शब्द ग्रहण किया गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. लस्येत्यभिविश्रुतो भुवि [।*] स्व-संज्ञया शङ्कर-नाम-शब्दितो विधान-युक्तं यति-मा-

७. र्ग्गमास्थितः[।।४।।*]स उत्तराणां सदृशे कुरूणां उदग्दिशा-देश-वरे प्रसूतः[।*]

८. क्षयाय कर्म्मारि-गणस्य धीमान् यदत्र पुण्यं तदपासंसर्ज्ज [।।५।।*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(।७)

कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन करमदाण्डा अभिलेख

गुप्त संवत् ११७

स्थान : उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में करमदाण्डा ग्राम के निकट भराढी ढीह् नामक प्राचीन स्थल के उत्खनन से प्राप्त शिव लिङ्ग पर उत्कीर्ण।

लिपि : गुप्त ब्राह्मी का पश्चिमी रूप।

भाषा : संस्कृत।

विषय : चन्द्रगुप्त (द्वितीय) के मन्त्री कुमारामात्य शिखरस्वामी के पुत्र पृथ्वीषेण द्वारा दान का उल्लेख।

संदर्भ : स्टेनकोनो, EI, 10, pp. 70 ff; सरकार, SI, p. 289.

१. नमो महादेवाय। मह[ाराजा]धिराज-[श्री-चन्द्रगुप्त-पादा]-

२. नुध्यातस्य चतुधुदधि[1]-सलिलास्वादित-य[शसो महाराजा]-

३. धिराज-श्री-कुमारगुप्तस्य विजय-राज्य-संवत्सर-शते सप्तदशो-[त्तरे]

४. कार्त्तिक-मास-दशम-दिवसे [ऽ*]स्यान्दिवस-पूर्व्वायां छन्दोग्या-चार्य्य[ाश्व]-वाजि-

५. सगोत्र-कुरमर[व्य ?] भट्टस्य पुत्रो विष्णुपालितभट्टस्तस्य पुत्रो[2] महार[ा]-

६. ज[ा*]धिजाजा (राज) -श्री-चन्द्रगुप्तस्य मन्त्री कुमारामात्य-शिखर-स्वाम्यभूत्तस्य पुत्रः

७. पृथिवीषेणो महाराजाधिराज-श्री-कुमारगुप्तस्य मन्त्री कुमारामात्यो[ऽ*]न-

---

१. चतुरुदधि पढ़ें।

२. पूत्रो उत्कीर्णं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. न्तरं च महाबलाधिकृतः(तो) भगवतो महादेवस्य पृथिवीश्वर इत्येवं समाख्यातस्या-

९. स्यैव भगवतो यथा-कर्त्तव्य-धार्म्मिक-कर्म्मणा पाद-शुश्रूषणाय भगवच्छै-

१०. लेश्वर-स्वामि-महादेव-पाद-मूले ग्रायोध्यक-नाना-गोत्र-चरण-तपः–

११. स्वाध्याय-म[न्त्र]-सूत्र-भा[ष्य-प्रवचन] -पारग-[भारडिद?]-समद-देव-द्रोण्यां

१२. ....

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारगुप्त (प्रथम) का दामोदरपुर ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त संवत् १२४

स्थान : बङ्गलादेश के दीनाजपुर जिले में दामोदरपुर नगर से प्राप्त ताम्र-पट्ट पर उत्कीर्ण। यह स्थान पुण्ड्रवर्द्धन भुक्ति के अन्तर्गत था।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : पुण्ड्रवर्द्धन भुक्ति में अग्निहोत्र के प्रवर्तन के लिए भूमिदान।

संदर्भ : राधागोविन्द बसाक, EI, 15, p. 130; सरकार, SI, p 290.

(प्रथम ओर)

१. सम्ब (संव) [त्सरे*] १०० २ ४ फाल्गुण (न)-दि[1] ७ परमदैवत-परमभट्टारक-महाराज[ा*]-

२. धिराज-श्री-कुमारगुप्ते पृथिवी-पतौ तत्पाद-परिगृहीते पुण्ड्र-वर्द्ध[न*]-

३. भुक्तौ दु(उ)परिक[2]-चिरातदत्तेनानुवहवा(मा)नक-कोटिवर्ष-विषये च त-

४. न्नियुक्तक-कुमारामात्य-वेत्रवर्मन्य(ण्य)धिष्ठाणा(ना)धिकरणञ्च नगर-श्रेष्ठि-

५. धृतिपाल-सार्त्थवाह-व(ब)न्धुमित्र-प्रथम-कुलिक-धृतिमित्र-प्रथम-का[य]-

६. स्थ-शाम्बपाल-पुरोगे संव्यवहरति यतः ब्राह्मण-कर्प्पटिकेन[3]

७. विज्ञापित[म्*] अरर्हथ(अर्हथ) ममाग्निहोत्रोपयोगाय अप्रदा-[ऽ*]प्रहत-खि-

---

१. दिवस का संक्षेप।

२. बसाक : भुक्तादुप°।

३. बसाक : °केण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. ल-क्षेत्र(त्रं) त्र(त्रै)दीनारिक्य-कुल्यवापेण(न) शश्वता (दा)चंद्रार्क्क-तारक-भोज्ये(ग्य) [त*]-

(दूसरी ओर)

९. या-नीवी-धर्म्मेण दातुमिति एवं दीयतामित्युत्पन्ने त्रिनी (त्रीणि) दीना[राण्यु*]-

१०. पसंगृह्य यतः पुस्तपाल-रिशि(ऋषि)दत्त[1]-जयनन्दि-विभुदत्ताना-मवधा-

११. रणया डोङ्गाया उत्तर-पश्चिमोद्देशे[2] कुल्यवापमेकम्(कं) दत्तम्[।।*]

१२. स्व-दत्तां पर-दत्ताम्बा (दत्तां वा) यो हरेत वसुन्धरां(राम्) [।*] भूमि-[दान]-संबद्धा[:*] श्लोका भवन्ति[3] [।*]

१३. स विष्ठायां क्रि(कृ)मिर्भूत्वा पित्रि(तृ)भि[:*] सह पच्यते [इ*]ति [।।१।।*]

---

१. 'पालर्षिदत्त पढ़ें ।

२. बसाक : 'पश्चिणद्देशे ।

३. भूमि-दान-संबद्धः श्लोको भवति पढ़ें। यह वाक्य स्वदत्तां···से पहले होना चाहिए था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारगुप्त (प्रथम) का दामोदरपुर ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त संवत् १२८

स्थान : बङ्गलादेश के दीनाजपुर जिले में दामोदरपुर नगर से प्राप्त ताम्र-पट्ट पर उत्कीर्ण । यह स्थान पुण्ड्रवर्धन भुक्ति के अन्तर्गत था ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : पुण्ड्रवर्धन भुक्ति में पञ्चमहायज्ञ के प्रवर्तन के लिये भूमिदान ।

सन्दर्भ : राधागोविन्द बसाक, El, 15, p. 133; के०एन० दीक्षित, El, 17, p. 193; सरकार, Sl, p. 292.

(प्रथम ओर)

१. स[सं] १०० २० ८ वैशाख-दि १० ३ पर[मदैव]त-परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-[श्री]-[कुमा*]-

२. रगुप्ते पृथिवी-पतौ [तत्पाद]-परिगृहीतस्य पु[ण्ड्र]वर्द्धन-भुक्ता-वुप-[रिक-चि]रातदत्त[स्य]

३. भोगेना[नुव]ह[मानक]-कोटिव[र्षं]-विषये तन्नियुक्तक-कु[मा]रा-मात्य-वे[त्र]-

४. वर्म्मणि[1] अधिष्ठाना[धिकर[णञ्च] नगर-[श्रे]ष्ठि-धृतिपाल-सार्थवा[ह-बन्धुमि]त्र[2]-प्र[थ]-

५. म-कुलिक-धृतिमित्र-[प्रथ]म-कायस्थ-शाम्ब]पाल-पुरो[गे] सम्व्य-(संव्य)व[हर]ति [यतः*]स……[3]

---

१. यहां यण् सन्धि नहीं की गई है ।

२. ब के स्थान पर व उत्कीर्ण है ।

३. बसाक के अनुसार यहां क्रय-कर्ता का नाम रहा होगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. विज्ञापितं (तम्) अ[र्हं]थ मम प[ञ्च]-महायज्ञ-प्रवर्त्तनाय।-
नुवृत्ता-प्रदाक्षय-नि (नी) [वी*]-

७. मर्य्यादया दातुमिति एतद्वि ज्ञाप्यमुपलभ्य पुस्तपा[ल]-रिसिदत्त[१]-
जयन[न्दि-विभुदत्तानामव]-

८. धारणया दीयतामित्यु[त्प]न्ने एतस्माद्य[था]नुवृत्त-त्रैदी-
नारि[क्य-कु]ल्यावापे[न]

(दूसरी ओर)

९. [द्व]यमुप[संगृ]ह्य[२] [ऐरा]वता[गो]-राज्ये पश्चिण (म) -दिशि
पञ्च-द्रो[णा]-

१०. [तम]का: [भूमय:*][३]ह[ट्ट][४]-पानकैश्च सहितेति (सहिता इति)
दत्ता: [।*] तदुत्तर-कालं सम्व्य (संव्य) वहारिभि: [धर्म्मम-
वेक्ष्या]नु[म]-

११. न्तव्या: [।*] अपि च भूमि-दान-सम्व (संब) द्धामि (वि) मौ
श्लोकौ भवत: [।*] पूर्व-दत्तां द्विजाति[भ्यो]

१२. यत्नाद्रक्ष युधिष्ठिर [।*] महीं महीव (म) तां श्रेष्ठ दानाच्छ्रेयो
[ऽ*]नुपा[ल*]नं[५][॥१॥*] बहुभिर्व्वसुधा[६] दत्ता दी[य]ते च

१३. पुन: पुन: [।*] यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल-
मिति[७][॥२॥*]

---

१. 'ऋ' का 'रि' में परिवर्तन द्रष्टव्य। शुद्धरूप 'पुस्तपालर्षिदत्त' है।

२. दीनारद्वयम् से अभिप्राय है।

३. सरकार 'भूखण्डा:' सुझाते हैं।

४. थॉमस : 'अरहट्ट'।

५. °नम् पढ़ें

६. बहु° पढ़ें

७. फलम् [॥२*]इति[॥*] पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(in)-

स्कन्दगुप्त का गिरनार अभिलेख

गुप्त संवत् १३६, १३७, १३८

स्थान : गुजरात के जूनागढ़ नगर से लगभग दो किलो मीटर पूर्व की ओर गिरनार पर्वत की एक शिला पर उत्कीर्ण। इस शिला पर महाराज अशोक के १४ अभिलेख तथा शक क्षत्रप रुद्रदामन् का अभिलेख भी उकीर्ण हैं। नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय के मुख्य द्वार के सामने केवल अशोक के अभिलेखों वाले भाग का प्रतिरूप स्थापित किया गया है।

लिपि : दक्षिण वर्ग की ब्राह्मी। इसे फ्लीट ने पांचमी शती ईसवी की सौराष्ट्री अथवा काठियावाड़ी लिपि कहा है। इसके अक्षर रुद्रदामन् के अभिलेख के अक्षरों का विकसित रूप कहे जा सकते हैं।

विषय : स्कन्दगुप्त द्वारा सुराष्ट्र के गोप्ता के रूप में पर्णदत्त की नियुक्ति तथा पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित द्वारा सुदर्शन झील के बाढ़ से टूटे हुए बांध का प्रति-संस्कार एवं विष्णु मन्दिर का निर्माण।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 14; सरकार, SI, p. 307; पाण्डेय, HLI, p. 92; दशरथ शर्मा, JGNJRI, 6, pp. 303; दिसकलकर, SSI, pp. 44-60.

[भाग—क]

१. सिद्धम् [।।*] श्रियमभिमत-भोग्यां नैक-कालापनीतां त्रिदश-पति-सुखार्त्थं यो बलेराजहार। कमल-निलयनायाः शाश्वतं धाम लक्ष्म्याः

२. स जयति विजितार्त्तिर्व्विष्णुरत्यन्त-जिष्णुः ।।[१*] तदनु जयति शश्वत् श्री-परिक्षिप्त-वक्षाः स्व-भुज-जनित-वीर्यो राजराजाधि-राजः। नरपति-

१. शश्वच्छ्री॰ पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. भुजगानां मान-दर्प्पोत्फणानां प्रतिकृति-गरुडा[ज्ञां] निर्व्विषीं चावकर्त्ता ।।[२*] नृपति-गुण-निकेतः स्कन्दगुप्तः पृथु-श्रीः[१] चतुरुदधि-[जला]न्तां स्फीत-पर्यन्त-देशाम् ।

४. अवनिमवनतारिर्यः[२] चकारात्म-संस्थां पितरि सुर-सखित्वं प्राप्तवत्यात्म-शक्त्या ।।[३*] अपि[३] च जित[मे]व तेन प्रथयन्ति यशांसि यस्य रिपवो[ऽ*]पि [।*] आमूल-भग्न-दर्प्पा नि[वंचना म्लेच्छदेशेषु][४] ।।[४*]

५. क्रमेण बुद्ध्या निपुणं प्रधार्य्य ध्यात्वा च कृत्स्नान्गुण-दोष-हेतून् । व्यपेत्य सर्वान्मनुजेन्द्र-पुत्रांल्लक्ष्मीः[५] स्वयं यं वरयांचकार ।।[५*] तस्मिन्नृपे शासति नैव कश्चिद्धर्म्मादपेतो मनुजः प्रजासु ।

६. आर्तो दरिद्रो व्यसनी कदर्यो दण्डेन[६] वा यो भृशपीडितः स्यात् ।। [६*] एवं स जित्वा पृथवीं समग्रां भग्नाग्रदर्पा[न्] द्विषतश्च कृत्वा । सर्व्वेषु देशेषु विधाय गोप्तृन्[७] संचिन्तया[मा]स बहु-प्रकारम् ।। [७*] स्यात्को [ऽ*]नुरूपो

७. मतिमान्विनीतो मेधा-स्मृतिभ्यामनपेत-भावः । सत्यार्ज्जवौदार्यनयोपपन्नो माधुर्य-दाक्षिण्य-यशो-[ऽ*]न्वितश्च ।।[८*] भक्तो-[ऽ*]नुरक्तो नृ-विशेष-युक्तः सर्व्वोपधाभिश्च विशुद्ध-बुद्धिः । आनृण्य-भावोपगतान्तरात्मा:[८] सर्व्वस्य लोकस्य हिते प्रवृत्तः ।। [९*]

---

१. °श्रीश्चतु° पढ़ें ।
२. °र्यश्चकारा° पढ़ें ।
३. फ्लीट : अपि ।
४. फ्लीट का अनुमान ।
५. पुत्रांँल्लक्ष्मी : पढ़ें ।
६. सरकार का पाठ : फ्लीट : दण्ड्[यो*]न ।
७. गोप्तॄन् पढ़ें ।
८. विसर्ग अनावश्यक ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. न्यायार्जने [ऽ*]र्थस्य च क: समर्थ: स्यादर्जितस्याप्यथ रक्षणे च ।
गोपायितस्यापि [च] वृद्धि-हेतौ वृद्धस्य पात्र-प्रतिपादनाय॥[१०*]
सर्व्वेषु भृत्येष्वपि संहतेषु यो मे प्रशिष्यान्निखिलान्सुराष्ट्रान् ।
आं ज्ञातमेक: खलु पर्णदत्तो भारस्य तस्योद्वहने समर्थ: ॥[११*]

९. एवं विनिश्चित्य नृपाधिपेन नैकानहो-रात्र-गणान्स्व-मत्या । य: संनियुक्तो[ऽ*]र्थनया कथंचित् सम्यक्सुराष्ट्रावनिपालनाय ॥[१२*] नियुज्य देवा वरुणं प्रतीच्यां स्वस्था यथा नोन्मनसो बभूवु[:] [।*] पूर्व्वेतरस्यां दिशि पर्णदत्तं नियुज्य राजा धृतिमांस्तथा [ऽ*] भूत् ॥[१३*]

१०. तस्यात्मजो ह्यात्मज-भाव-युक्तो द्विधेव चात्मात्म-वशेन नीत: । सर्व्वात्मना[ऽऽ*]त्मेव च रक्षणीयो नित्यात्मवानात्मज-कान्त-रूप: । (॥) [१४*] रूपानुरूपैर्ललितैर्व्विचित्रै:[1] नित्य-प्रमोदान्वित-सर्व-भाव: । प्रबुद्ध-पद्माकर-पद्म-वक्त्रो नृणां शरण्य: शरणागतानाम् । ॥[१५*]

११. अभवद्भुवि चक्रपालितो [ऽ*]सावविति नाम्ना प्रथित: प्रियो जनस्य । स्व-गुणैरनुपस्कृतैरुदा[त्तै]: पितरं यश्च विशेषयांचकार । (॥)[१६*] क्षमा प्रभुत्वं विनयो नयश्च शौर्यं विना शौर्य-मह[ा]र्च्चनं च । दाक्ष्यं[2] दमो दानमदीनता च दाक्षिण्यमानृण्यम[शू]न्यता च । (॥)[१७*] सौंदर्यमार्येतरनिग्रहश्च[3] अविस्मयो धैर्यमुदीर्णता च ।

१२. इत्येवमेते[ऽ*]तिशयेन यस्मिन्नविप्रवासेन गुणा वसन्ति । (॥) [१८*] न विद्यते[ऽ*]सौ सकले[ऽ*]पि लोके यत्रोपमा तस्य गुणै: क्रियेत । स एव कार्त्स्न्येन गुणान्वितानां बभूव नृणामुपमानभूत: । (॥)[१९*] इत्येवमेतानधिकानतो[ऽ*]न्यान्गुणान्प-

१. 'विचित्रैर्नित्य' पढ़ें ।

२. फ्लीट : वाक्यं ।

३. छन्द के कारण सन्धि नहीं की गई ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[री]क्ष्य स्वयमेव पित्रा। यः संनियुक्तो नगरस्य रक्षां विशिष्य पूर्वान्प्रचकार सम्यक्। (॥)[२०*]

१३. आश्रित्य वीर्यं [स्वभुज-द्वयस्य स्वस्यैव नान्यस्य नरस्य दर्पं।[1] नोद्वेजयामास च कंचिदेवमस्मिन्पुरे चैव शशास दुष्टा:(न्) (॥) [२१*] विस्रंभमल्पेन शशाम यो[ऽ*]स्मिन्कालेन लोकेषु स-नागरेषु। यो लालयामास च पौर-वर्गान् [पितेव ?]-पुत्रान्सु-परीक्ष्य दोषान्। (॥)[२२*] संरंज्यां च प्रकृत्तीर्बभूव पूर्व्व-स्मिताभाषणमान-दानैः।

१४. निर्यन्त्रणान्योन्य-गृह-प्रवेशैः[2] संवर्द्धित-प्रीति-गृहोपचारैः। (॥) [२३*] ब्रह्मण्य-भावेन परेण युक्तः शुक्लः[3] शुचिर्दान-परो यथा-वत्। प्राप्यान्स काले विषयान्सिषेवे धर्मार्थयोश्चा[प्य*]विरोध-नेन। (॥)[२४*] यो [ऽ*जायतास्मात्खलु][4] पर्णदत्तात्स न्याय-वानत्र किमस्ति चित्रं। मुक्ता-कलापाम्बुज-पद्म-शीताच्चन्द्रा-त्किमुष्णं भविता कदाचित्। (॥)[२५*]

१५. अथ[5] क्रमेणाम्बुद-काल आग[ते नि]दाघ-कालं प्रविदार्य तोयदैः। ववर्ष तोयं बहु संततं चिरं सुदर्शनं येन बिभेद चात्वरात्[6]। ॥ [२६*] संवत्सराणामधिके शते तु त्रिंशद्भिरन्यैरपि षड्भि-रेव। रात्रौ दिने प्रौष्ठपदस्य षष्ठे गुप्त-प्रकाले[7] गणनां विधाय[8]। ॥ [२७*]

---

१. दर्पम् पढ़ें।
२. 'शै' के स्थान पर 'शा' दिखाई देता है।
३. फ्लीट तथा सरकार : शक्लः (=प्रियंवदः)।
४. सरकार का अनुमान।
५. फ्लीट : अथा।
६. च+अत्वरात् (=सहसा)।
७. भाऊदाजी का पाठ—गुप्तस्य कालाद्—फ्लीट तथा सरकार को स्वीकार्य नहीं है।
८. 'धा' तथा 'य' के बीच में अन्तराल है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६. इमाश्च या रैवतकाद्विनिर्गता[:*] पलाशिनीयं सिकता-विला-
सिनी । समुद्रकान्ता:[1] चिर-बन्धनोषिताः पुनः पतिं शास्त्र-यथो-
चितं ययुः । (।।)[२८*] अवेक्ष्य वर्षागम-जं महोद्भ्रमं महोदधे-
रूर्जयता प्रियेप्सुना । अनेक-तीरान्तज-पुष्प-शोभितो

१७. नदीमयो हस्त इव प्रसारितः । (।।)[२९*] विषाद्य[मानाः खलु
सर्वतो ज]नाः कथं-कथं कार्यमिति प्रवादिनः । मिथो हि पूर्वापर-
रात्रमुत्थिता विचिन्तयां चापि बभूवुरुत्सुकाः । (।।)[३०*]
अपीह लोके सकले सुदर्शनं पुमां(मान्) हि दुर्दर्शनतां गतं(तः)
क्षणात् ।

१८. भवेन्नु सो[ऽ*]म्भोनिधि[2]-तुल्य-दर्शनं सुदर्शनं [– –⏑–
⏑–] [।।३१*] [– – –]वणे स भूत्वा पितुः परां
भक्तिमपि प्रदर्श्य । धर्मं पुरोधाय शुभानुबन्धं राज्ञो हितार्थं नग-
रस्य चैव । (।।) [३२*] संवत्सराणामधिके शते तु

१९. त्रिंशद्भिरन्यैरपि सप्तभिश्च । [गुप्त-प्रकाले नय]-शास्त्रवेत्ता[3]
विश्वो[4] [ऽ*]प्यनुज्ञात-महाप्रभावः । (।।)[३३*] आज्य-प्रणामैः[5]
विबुधानथेष्ट्वा धनैर्द्विजातीनपि तर्पयित्वा । पौरांस्तथा[ऽ*]-
भ्यर्च्य यथार्ह-मानैः[6] भृत्यांश्च पूज्यान्सुहृदश्च दानैः ।
(।।)[३४*]

२०. ग्रैष्मस्य मासस्य तु पूर्व-प[क्षे] [– – – प्र]थमे [ऽ*]ह्नि
सम्यक् । मासद्वयेनादरवान्स भूत्वा धनस्य कृत्वा व्ययमप्रमेयम् ।
(।।)[३५*] आयामतो हस्त-शतं समग्रं विस्तारतः षष्टिरथापि
चाष्टौ ।

---

१. °कान्ताश्चिर—पढ़ें ।
२. फ्लीट : साम्भोनिधि-° ।
३. वही : °वेत्ता ।
४. विश्वे पढ़ें ।
५. प्रणामैर्विबु° पढ़ें ।
६. मानैर्भृ° पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२१. उत्सेधतो[ऽ*]न्यत् पुरुषाणि [सप्त ? ⌣ – ⌣ – ह]स्तशत-द्वयस्य । (।।)[३६*] बबन्ध यत्नान्महता नृदेवान[भ्यर्च्य ?] सम्यग्घटितोपलेन । अ-जाति-दुष्टम्प्रथितं तटाकं सुदर्शन शाश्वतकल्प-कालम् । (।।)[३७*]

२२. अपि च सुदृढ-सेतु-प्रान्त(?)-विन्यस्त-शोभ-रथचरण-समाह्व-क्रौंच-हंसास-धूतम् । विमल-सलिल[– – –⌣– –⌣– –] भुवि त[⌣⌣⌣ – – –]द[ने] (ऽ*)र्क: शशी च । (।।)[३८*]

२३. नगरमपि च भूयाद्वृद्धिमत्पौर-जुष्टं द्विज-बहु-शत-गीत-ब्रह्म-निर्नष्ट-पापं[1] । शतमपि च समानामीति-दुर्भिक्ष[मुक्तं ⌣⌣⌣ ⌣⌣⌣ – – –⌣– –⌣– –] [।।३९*] [इति सुद]र्शन-तटाक-संस्कार-ग्रंथ-रचना [स]माप्ता ।।

[भाग—ख]

२४. दृप्तारि-दर्प-प्रणुदः पृथु-श्रियः स्व-वङ्श[2]-केतोः सकलावनी-पतेः । राजाधिराज्याद्भुत[3]-पुण्य-[कर्मणः] [– –⌣– –⌣⌣– –⌣ –⌣] [।।४०*] [– –⌣– –⌣⌣–⌣– – – –⌣– –⌣⌣ –⌣ – –] [।] द्वीपस्य गोप्ता महतां च नेता दण्डस्थि[ता]नां

२५. द्विषतां दमाय । (।।)[४१*] तस्यात्मजेनात्म-गुणान्वितेन गोविन्द पादर्पित-जीवितेन । [- -⌣- -⌣ ⌣ - ⌣ - - - - ⌣– -⌣⌣ - ⌣ - -] [।।४२*] [- -⌣-⌣⌣ -⌣ ⌣-⌣-]ग्धं विष्णोश्च पाद-कमले समवाप्य तत्र । अर्थ-व्ययेन

२६. महता महता[4] च कालेनात्म-प्रभाव-नत-पौर-जनेन तेन । (।।) [४३*] चक्रं बिभर्ति रिपु [- ⌣ ⌣ - ⌣ - - - - ⌣ - ⌣

---

१. पापम् पढ़ें ।

२. वंश पढ़ें ।

३. सरकार राजाधिराजा° पाठ अच्छा समझते हैं ।

४. सरकार ; महतामहता (=महता+अमहता) ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

⏑⏑ - ⏑⏑ - ⏑ - -] [।] [- - ⏑ - ⏑⏑⏑ - ⏑⏑
- ⏑ - -] तस्य स्व-तंत्र-विधि-कारण-मानुषस्य । (।।)[४४*]

२७. कारितमवक्र-मतिना चक्र-भृतः चक्रपालितेन गृहं । वर्ष-शते-[ऽ*]ष्टात्रिंशे गुप्तानां काल-[क्रम-गणिते] [।।४५*] [- - ⏑ - ⏑⏑⏑ - ⏑⏑ - ⏑ - - - - ⏑ - ⏑⏑⏑ - - ⏑⏑ — ⏑ - -[।*] [सा]र्थमुत्थितमिवोर्जयतो [ऽ*]चलस्य

२८. कुर्वत्प्रभुत्वमिव भाति पुरस्य मूर्ध्नि ।।[४६*] अन्यस्य मूर्द्धनि सु[- ⏑⏑ - ⏑ - - - - ⏑⏑⏑ - ⏑⏑ - ⏑ - -] [।*] - - ⏑ - ⏑⏑⏑]

२९. रुद्ध-विहंग-माग विभ्राजते [⏑⏑⏑ - ⏑⏑ - ⏑ - -] [।।४७*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्कन्दगुप्त-कालीन कहाऊँ स्तम्भ अभिलेख

गुप्त संवत् १४१

स्थान : उत्तर-प्रदेश के गोरखपुर जिले में कहाऊँ (कुकुम) ग्राम के निकट उत्तर की ओर स्थित स्तम्भ पर उत्कीर्ण।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी, समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख की लिपि के सदृश।

भाषा : संस्कृत।

विषय : मद्र नामक व्यक्ति द्वारा पाँच आदिकर्ता जैन तीर्थङ्करों की प्रतिमाओं तथा इस स्तम्भ की स्थापना।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No, 15; सरकार, S1, P. 316; पाण्डेय, HLI, p. 92; IHQ, 28, p. 298.

१. सिद्धम्[1] [।।*] यस्योपस्थान-भूमिर्नृपति-शत-शिरः[2]-पात-वाता-वधूता

२. गुप्तानां वन्शजस्य[3] प्रविसृत-यशसस्तस्य सर्व्वोत्तमर्द्धेः [।*]

३. राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिप-शत-पतेः स्कन्दगुप्तस्य शान्ते

---

१. मूल में पंक्ति २ तथा ३ के बाईं ओर प्रान्त में 'सि' ऊपर और 'द्धं' नीचे उत्कीर्ण हैं।

२. विसर्ग से आगे एक छोटी पड़ी रेखा है जिसे फ्लीट और सरकार ने भूल से उत्कीर्ण किया गया अनावश्यक अर्धविराम चिन्ह बताया है। हमारे बिचार से यह रेखा शिरः तथा पात को एक ही समस्तपद के भाग दिखाने के लिए प्रयुक्त की गई है। इसके बिना विसर्ग तथा 'प' के बीच का अन्तराल भ्रामक हो सकता था।

३. वंशजस्य पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. वर्षे त्रिन्शद्दशैकोत्तरक[1]-शततमे ज्येष्ठ-मासि प्रपन्ने । (॥) [१*]

५. ख्याते[ऽ*]स्मिन्ग्राम-रत्ने कुकुभ इति जनैस्साधु-संसर्ग-पूते ।[2]

६. पुत्रो यस्सोमिलस्य प्रचुर-गुण-निधेर्भट्टिसोमो महा[त्म]ा [।*]

७. तत्सूनू रुद्रसोम[:*] पृथुल-मति-यशा व्याघ्र इत्यन्य-संज्ञो ।

८. मद्रस्तस्यात्मजो[ऽ*]भूद्द्विज-गुरु-यतिषु प्रायशः प्रीतिमान्यः । (॥) [२*]

९. पुण्य-स्कन्धं स चक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो

१०. श्रेयोर्त्थं भूत-भूत्यै पथि वि(नि)यमवतामर्हतामादिकर्तॄन्[3] [।*]

११. पञ्चेन्द्रां(न्) स्थापयित्वा धरणिधरमयान्सन्निखातस्ततो[ऽ*]-यम् (यं)

१२. शैलस्तम्भः सुचारुर्गिरिवर-शिखराग्रोपमः कीर्त्ति-कर्त्ता[॥३*]

---

१. त्रिंशद्दशै॰ पढ़ें ।

२. अर्धविराम की रेखा अनावश्यक है।

३. ॰कर्तॄन् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्कन्दगुप्त-कालीन इन्दौर ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त संवत् १४६

स्थान : उत्तरप्रदेश के बुलन्दशहर जिले में टिमाई से ८ किलोमीटर परे इन्दौर नामक उजड़े गाँव के निकट एक नाले में से प्राप्त ताम्र-पट्ट पर उत्कीर्ण। वह गाँव अब खेड़ा मात्र रह गया है।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : देवविष्णु नामक ब्राह्मण द्वारा इन्द्रपुर (इन्दौर) में स्थित सूर्य-मंदिर में दीपक जलाने के व्ययहेतु स्थायी दान।

सन्दर्भ : फ्लीट, CII, III. No. 16; सरकार, SI, p. 318; कीलहॉर्न IA, 18, p. 219.

१. सिद्धम् [।।*] यं विप्रा विधिवत्प्रबुद्ध-मनसो ध्यानैक-तानास्तुव:[1]
यस्यान्तं त्रिदशासुरा न विविदुर्न्नोर्ध्वं न तिर्य-

२. ग्गतिम् [।*] यं लोको बहु-रोग-वेग-विवशः संश्रित्य चेतोलभः
पायाद्वः स जगत्पिधान-पुटभिद्रश्म्या-

---

१. सरकार का संशोधन : स्तवा:। इसकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि 'स्तू' पद भी सिद्ध है जिसका यह प्रथमा बहुवचन रूप है। सरकार का दूसरा सुझाव-स्तुमः स्वीकार्य नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. करो भास्करः ॥[१*] परमभट्टारक-महाराजाधिराज-श्री-स्कन्दगुप्तस्याभिवर्द्धमान-विजय-राज्य[1]-संव्वत्सर-शते षच्च(ट्च)-त्वा-

४. [रि]ङ्शदुत्तरतमे[2] फाल्गुन-मासे तत्पाद-परिगृहीतस्य विषय-पति-शर्व्वनागस्यान्तर्व्वेद्यां भोगाभिवृद्धये वर्त्त-

५. माने चेन्द्रापुरक[3]-पद्मा-चातुर्व्विद्य-सामान्य-ब्राह्मण-देवविष्णु-र्द्देवपुत्रो हरित्रात-पौत्त्रः डुडिक-प्रपौत्त्रः सततग्नि-हो-

६. त्त्र-छ(च्छ)न्दोगो राणायणी(नी)यो वर्षगण-सगोत्त्र इन्द्रापुरक-वणिग्भ्यां क्षत्त्रियाचलवर्म-भृ(भ्रु)कुण्ठसिङ्हाभ्या-मधिष्ठा[4]

७. नस्य प्राच्यां दिशीन्द्रपुराधिष्ठान-माडास्यात-लग्नमेव प्रतिष्ठा-पितक-भगवते सवित्रे दीपोपयोज्यमात्म-यशो-

८. [ऽ*]भिवृद्धये मूल्यं प्रयच्छतिः (ति) [।*] इन्द्रपुर-निवासिन्या-स्तैलिक-श्रेण्या जीवन्त-प्रवराया इतो[ऽ*]धिष्ठानादपक्रम-

९. ण-संप्रवेश-यथास्थिरायाः आजस्त्रिकं ग्रहपतेर्द्विज-मूल्य-दत्तमनया[5] तु श्रेण्या यदभग्नयोगम्[।*]

---

१. फ्लीट, 'राज्ये' संशोधन करते हैं ।

२. °चत्वारिंश० पढ़ें ।

३. फ्लीट : चन्द्रापुरक । पंक्ति ६ में इन्द्रापुरक तथा ७, ८ में इन्द्रपुर ।

४. फ्लीट : °धिष्टा ।

५. दत्तम् । अनया पाठ अच्छा रहता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१०. प्रत्थ(थ)माहर्व्य[व*]च्छिन्न-संस्थं[1] देयं तैलस्य तुल्येन[2] पल-द्वयं तु २[3] चन्द्रावर्क्क-सम-कालीयं [।*]

११. यो व्यक्क्रमेद्दायमिमं[4] निबद्धम्(द्धं) गो-घ्नो गुरु-घ्नो द्विज-घातकः सः [।*] तैः पातकै [:*]

१२. पञ्चभिरन्वितो[ऽ*]धर्ग्ग(धो ग)च्छेन्नरः सोपनिपातकैश्चेति ॥[२*]

---

१. सरकार : प्रथमाहोथ्यच्छिन्न° ।

२. तौल्येन से अभिप्राय है ।

३. संभवतः तुल्येन पलद्वयं का संक्षेप ।

४. सरकार : योऽतिक्रमे° संशोधन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्कन्दगुप्त का भिटारी स्तम्भ अभिलेख

स्थान : उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में भिटारी ग्राम के बाहर स्थित स्तम्भ पर उत्कीर्ण ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी, चन्द्रगुप्त (द्वितीय) के मथुरा अभिलेख से मिलती जुलती ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : स्कन्दगुप्त द्वारा भगवान् शार्ङ्गी (विष्णु) की प्रतिमा एवं इस स्तम्भ को स्थापित करके विष्णु मन्दिर के लिए भिटारी ग्राम का प्रदान ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 13; सरकार, SI, P. 321; पाण्डेय, HLI, P. 99; छाबड़ा, JIH,41, Pt. 3, pp. 543; उपेन्द्र ठाकुर, IHQ, 37, pp. 279-86; जगन्नाथ, IHQ, 22, pp. 112; ABORI, (1968) Golden Jubilee Vol. pp. 325-27; दशरथ शर्मा, JIH, 43, pt. 1, pp. 219-25.

१. [सिद्धम्[१]][।।*] [सर्व्व]-राज[ोच्छे]त्तु: पृथिव्यामप्रतिरथस्य चतु-
रुदधि-सलिलास्वादित-यशसो धनद-वरुणेन्द्र[ा]न्तक-स[मस्य]

२. कृतान्त-परशोः न्यायागत[ा]नेक-गो-हिरण्य-क[ो]टि-प्रदस्य
चिरो[त्स]न्नाश्वमेधाहर्त्तुर्महाराज-श्री-गुप्त-प्रपौत्र[स्य]

३. महाराज-श्री-घटोत्कच-पौत्रस्य महाराजाधिराज-श्री-चन्द्रगुप्त-
पुत्रस्य लिच्छिवि[२]-दौहित्रस्य महादेव्यां कुम[ा]र[दे]व्या-

४. मुत्पन्नस्य महाराजाधिराज-श्री-समुद्रगुप्तस्य पुत्रस्तत्परिगृहीतो
महादेव्यान्दत्तदेव्यामुत्पन्नः स्वयं चाप्रतिरथः

---

१. प्रथम पंक्ति के ऊपर इस शब्द के कुछ चिह्न दिखाई देते हैं ।

२. सामान्यत लिच्छवि ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. परम-भागवतो महाराजाधिर[ा]ज-श्री-चन्द्रगुप्तस्तस्य पुत्रस्तत्पादानुद्ध्यातो महादेव्यां ध्रुवदेव्यामुत्पन्नः परम-

६. भागवतो महाराजाधिर[ा]ज-श्री-कुमारगुप्तस्तस्य— प्रथित-पृथु-मति-स्वभाव[1]-शक्तेः पृथु-यशसः पृथिवी-पतेः पृथु-श्रीः[।*]

७. पि[तृ]-प[रि]गत-पाद-पद्म-वर्त्ती प्रथित-यशाः पृथिवी-पतिः सुतो [ऽ*]यम् [॥१*] जगति भु[ज[-बलाड्यो(ढ्यो) गुप्त-वङ्शैक-वीरः प्रथित-विपुल-

८. धामा नामतः स्कन्दगुप्तः [।*] सुचरित-चरितानां येन वृत्तेन वृत्तं न विहतममलात्मा तान-धीदा-विनीतः [॥२*] विनय-

९. बल-सुनीतैर्व्विक्क्रमेण क्क्रमेण प्रतिदिनमभियोगादीप्सितं येन ल[ब्ध्व]ा [।*] स्वभिमत-विजिगीषा-प्रोद्यतानां परेषां प्रणि-

१०. हित इव लो[के[2] सं]विधानोपदेशः [॥३॥*] विचलित-कुल-लक्ष्मी-स्तम्भनायोद्यतेन क्षितितलशयनीये येन नीतास्त्रियामाः[3] [।*] समु-

११. दित-बल-कोषान्पुष्यमित्रांश्च[4][जि]त्वा क्षितिप-चरण-पीठे स्था-पितो वाम-पादः [॥४*] प्रसभमनुप[मैर्व्विध्वस्त-शस्त्र-प्रतापै-र्विन[य-स]मु-

१२. [चितैश्च] क्षान्ति-शौ[र्यै]र्न्निरूढम् [।*] चरितमल-कीर्त्तेर्ग्गीयते यस्य शुभ्रं दिशि-दिशि परितुष्टैराकुमारं मनुष्यैः [॥५*] [पितरि दिवमुपे[ते]

१३. विप्लुतां वङ्श[5]-लक्ष्मीं भुज-बल-विजितारिर्यः प्रतिष्ठाप्य भूयः [।*] जितमिति परितोषान्मातरं सास्र-नेत्रां हत-रिपुरिव कृष्णो देवकीमभ्युपे-

---

१. जगन्नाथ : प्रभाव ।
२. जमन्नाथ का सुझाव । फ्लीट आदि : लेभे ।
३. फ्लीट तथा सरकार : नीता त्रियामा ।
४. भण्डारकर : °युध्यिमित्रांश्च (=युधि+अमित्रांश्च) ।
५. वंश पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. [त:][1] [।।६*] [स्वै]र्द्द[ण्डैः ⏑⏑]रत्यु[–]त्प्रचलितं वङ्शं[2] प्रतिष्ठाप्य यो बाहुभ्यामवनिं विजित्य हि जितेष्वार्त्तेषु कृत्वा दयाम् [।*] नोत्सिक्तो [न] च विस्मितः प्रतिदिनं

१५. संवर्द्धमानद्युतिर्गीतैश्च[3] स्तुतिभिश्च वृत्तकथने[3] यं ह्लेपत्यार्य्यता[4] [।।७*] हूणैर्य्यस्य समागतस्य समरे दोर्भ्यां धरा कंपिता भीमावर्त्त-करस्य

१६. शत्रुषु शरा [– –⏑–पातिताः ।*]–––⏑⏑–⏑–विरचित प्रख्यापितो [दीप्ति-दा] नद्योति [⏑] नभीषु लक्ष्यत इव श्रोत्रेषु शार्ङ्ग[5]-ध्वनिः [।।८*]

१७. [स्व]-पितुः कीर्ति—……………⏑–⏑ [।]…………… …⏑–………⏑–⏑ [।।९*] न यस्य[6] प्रतिमा[7] काचित्प्रतमां तस्य शार्ङ्गिणः [।*]

१८. [स][8] प्रतीतश्चकारेमां [यावदाचन्द्र-तारकम् [।।१०*] इह चैनां प्रतिष्ठाप्य सुप्रतिष्ठित-शासनः [।*] ग्राममेनं स विदधे पितुः पु[ण्य]ाभिवृद्धये [।।११*]

१९. अतो भगवतो मूर्त्तिरियं यश्चात्र संस्थितः (?) [।*] उभयं निर्द्दिदेशासौ पितुः पुण्याय पुण्य-धीरिति[9] [।।१२*]

---

१. कुछ विद्वान स्कन्दगुप्त की माता का नाम देवकी ग्रहण करते हैं ।
२. वंश पढ़ें ।
३. साधुराम का पाठ । फ्लीट : वन्दकज[नो?] यं प्रापयत्यार्य्यताम् ।
४. छाबड़ा : वन्दकजनैर्यः ख्यापयत्यार्य्यंताम्; जगन्नाथ : वृत्तकथनैर्यं ह्लेपयत्यार्य्यता ।
५. फ्लीट : गार्ङ्ग॰ ।
६. छाबड़ा का पाठ । फ्लीट : कर्त्तव्या । भण्डारकर : प्रकार्य्या ।
७. यहां उपमा अर्थ में प्रयुक्त ।
८. छाबड़ा का पाठ । फ्लीट : सु॰ ।
९. ॰धी : ।।इति।। पाठ अच्छा रहता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुधगुप्त-कालीन सारनाथ बुद्ध-प्रतिमा अभिलेख

गुप्त संवत् १५७

स्थान : उत्तर प्रदेश के वाराणसी नगर के समीप प्रसिद्ध बौद्ध स्थल सारनाथ स प्राप्त एक बुद्ध-प्रतिमा के नीचे उत्कीर्ण ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : बौद्ध भिक्षु अभयमित्र द्वारा भगवान् बुद्ध की प्रतिमा की स्थापना ।

सन्दर्भ : गुप्ते, ASI AR, 1914-15, pp. 124-25; सरकार, SI, p. 331; पाण्डेय, HLI, P. 103; IHQ, 19, pp. 119 ff. and pp. 272.

१. गुप्तानां समतिक्रान्ते सप्त-पंचाशदुत्तरे [।*] शते समानां पृथिवीं बुधगुप्ते प्रशासति ॥[१*] [वैशाख-मास-सप्तम्यां मूले श्यामगते]

२. मया [।*] कारिता[ऽ*]भयमित्रेण प्रतिमा शाक्य भिक्षुणा ॥ [२*] इमामुद्दण्ड[1]-सच्छत्र-पद्मास[न-विभूषितां] [।*] [देवपुत्रवतो दिव्यां]

३. चित्र-वि[न्या]सचित्रितां[2] ॥[३*] यदत्र[3] पुण्यं प्रतिमां कारयित्वा मया भृतम्[4] [।*]माता-[पित्रोर्गुरूणां च लोकस्य च समाप्तये] [॥४*]

---

१. गुप्ते : मुद्धस्त° ।

२. चित्रिताम् पढ़ें । गुप्ते : चित्रविद्यासर्चित्रितां ।

३. सरकार : यदस्ति ।

४. सरकार : ममास्तु तत् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुधगुप्त-कालीन एरण स्तम्भ अभिलेख

गुप्त संवत् १६५

स्थान : मध्यप्रदेश के सागर जिले में एरण ग्राम के लगभग एक किलोमीटर पश्चिम को सुप्रसिद्ध मन्दिर-समूह के निकट स्थित स्तम्भ पर उत्कीर्ण।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी, कई रूपों में समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख की लिपि से मिलती जुलती।

भाषा : संस्कृत।

विषय : बुधगुप्त के सामन्त सुरश्मिचन्द्र के अधीन एरण के प्रशासक मातृविष्णु और उसके अनुज धन्यविष्णु द्वारा भगवान् जनार्दन (विष्णु) के ध्वजस्तम्भ की स्थापना।

संदर्भ : फ्लीट. CII, III, No. 19; सरकार, SI, p. 334; पाण्डेय, HLI, P. 106; हाल, JBAS, 7, pp. 633 ff.

१. जयति विभुश्चतुर्भुजश्चतुरर्णव-विपुल-सलिल-पर्य्यङ्कः [।*] जगतः स्थित्युत्पत्ति-[व्ययादि]-[१]

२. हेतुर्ग्गरुड-केतुः [।।१*] शते पञ्च-षष्ट्यधिके वर्षाणां भूपतौ च बुधगुप्ते। आषाढ-मास-[शुक्ल]-

३. द्वादश्यां[२] सुरगुरोर्दिवसे। [।२*] सं १०० ६० ५ [।।*] कालिन्दी-नर्म्मदयोर्म्मध्यं पालयति लोकपाल-गुणैर्ज्ज (णैः। ज)-गति महार[ाज]-

४. श्रियमनुभवति सुरश्मिचन्द्रे च। [।३*] अस्यां संवत्सर-मास-दिवस-पूर्व्वायां[३] स्व-कर्म्माभिरतस्य क्रतु-याजि[नः]

---

१. फ्लीट तथा सरकार हाल (Hall) का अनुसरण करके 'न्ययादि' पढ़ते हैं।

२. प्रिंसेप : त्रयोदश्यां।

३. तिथौ का अभिप्राय पूर्व्वायां में निहित हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. अधीत-स्वाध्यायस्य विप्रर्षेर्म्मैत्रायणीय-वृषभस्येन्द्रविष्णोः प्रपौत्रेण पितुर्गुणानुकारिणो वरुण [विष्णोः]

६. पौत्रेण पितरमनुजातस्य स्व-वंश-वृद्धि-हेतोर्हरिविष्णोः पुत्रेणा-त्यन्त-भगवद्भक्तेन विधातुरिच्छया स्वयंवरयेव र [ा]ज-

७. लक्ष्म्याधिगतेन चतुः-समुद्र-पर्य्यन्त-प्रथिता-यशसा अक्षीण-मान-धनेनानेक-शत्रु-समर-जिष्णुना महाराज-मातृविष्णुन[ा]

८. तस्यैवानुजेन तदनुविधायिन[ा] तत्प्रसाद-परिगृ[ही]तेन धन्य-विष्णुना च ।[1] मातृपित्रोः (माता-पित्रोः) पुण्याप्यायनार्थमेष भगवतः ।[2]

९. पुण्य-जनार्द्दनस्य जनार्द्दनस्य ध्वज-स्तम्भो [ऽ*] भ्युच्छ्रितः [।।*] स्वस्त्यस्तु गो-ब्राह्मण-[पु]रोगाभ्यः सर्व्वप्रजाभ्य इति । (।।)

१-२ ये अर्ध विराम चिन्ह अनावश्यक ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पट्टवाय-श्रेणि का मन्दसौर अभिलेख

मालव संवत्, ५२९

स्थान : मध्यप्रदेश के मन्दसौर नगर में शिवना नदी के एक घाट की दीवार में लगे प्रस्तरखण्ड पर उत्कीर्ण। यह प्रस्तर खण्ड मन्दिर से हटाकर वर्तमान स्थान पर लगाया गया है।

लिपि : दक्षिणी ब्राह्मी, जो पाँचवीं शताब्दी की पश्चिम-मालव-लिपि का उत्तम रूप है।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : लाट विषय से रेशमी बुनकरों के दशपुर (मन्दसौर) में आकर बसने, उनके द्वारा सूर्यमन्दिर बनवाये जाने तथा कुछ वर्षों बाद इसी मन्दिर का जीर्णोद्धार कराए जाने का वर्णन ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 18; सरकार, SI, p. 299; पाण्डेय, p. 84; जगन्नाथ, JIH, 18; p. 118; दशरथ शर्मा, IC, 6, p. 110; दिसकलकर, SSI, PP. 61-75.

१. [सिद्ध]म् [।।] य[ो] [वृत्त्य]र्त्थमुपास्यते सुर-गणै[स्सिद्धैश्च] सिद्धयर्त्थिभिद्ध्यानैकाग्र-परैर्व्विधेय-विषयैर्म्मोक्षार्त्थिभिर्य्योगिभिः। भक्तया तीव्र-तपोधनैश्च मुनिभिश्शाप-प्रसाद-क्षमैर्हेतुर्य्यो जगत ×क्षयाभ्युदययो‿पायात्स वो भास्करः ।[।१*] तत्व [त्त्व]-ज्ञानविदो[ऽ*]पि यस्य न विदुर्ब्रह्मर्षे-

२. यो [ऽ*]भ्युद्यता ×कृत्स्नं यश्च गभस्तिभिः प्रविसृतै‿पुष्णाति-लोक-त्रयम् । गंधर्व्वामर-सिद्ध-किन्नर-नरैस्संस्तूयते[ऽ*]भ्युत्थितो-भक्तेभ्यश्च ददाति यो [ऽ*]भिलषितं तस्मै सवित्रे नमः ।[।२*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

य ऽ प्रत्यहं प्रतिविभात्युदयाचलेन्द्र-विस्तीर्ण्ण-तुङ्ग-शिखर-स्खलितांशु-जाल: [।*] क्षीबांगना-

३. जन-कपोल-तलाभिताम्र ऽ पायात्स वस्सु[कि]रणाभ[रणो] विवस्वान् । [।३*] कुसुम-भरानत-तरुवर-देवकुल-सभा-विहार-रमणीयात् । लाट-विषयान्नगावृत-शैलाज्जगति प्रथित-शिल्पा: । [।४*] ते देश-पार्त्थिव-गुणापहृता: प्रकाशमद्ध्वादि-जान्यविरलान्यसुखा-

४. न्यपास्य । जातादरा दशपुरं प्रथमं मनोभिरन्वागतास्स-सुत-बन्धु-जनास्समेत्य ।।[५*] मत्तेभ-गण्ड-तट-विच्युत-दान-बिन्दु-सिक्तोपलाचल-सहस्र-विभूषणाया: [।*] पुष्पावनम्र-तरु-षण्ड[१]-वतंसकाया भूमे ऽ परन्तिलक-भूतमिदं क्रमेण ।।[६*] तटोत्थ-वृक्ष-च्युत-

५. नैक-पुष्प-विचित्र-तीरान्त-जलानि भान्ति । प्रफुल्त[२]पद्माभरणानि यत्र सरांसि कारण्डव-संकुलानि ।।[७*] विलोल-वीची-चलितारविन्द-पतद्रज:-पिञ्जरितैश्च हंसै: । स्व-केसरोदार-भरावभुग्नै: क्वचित्सरांस्यम्बुरुहैश्च भान्ति ।[।८*] स्व-पुष्प-भारावनतैर्न्नगेन्द्रैर्मद-

६. प्रगल्भालि-कुल-स्वनैश्च । अजस्र-गाभिश्च पुराङ्गनाभिर्व्वनानि यस्मिन्समलंकृतानि ।।[९*] चलत्पताकान्यबला-सनाथान्यत्यर्त्थ-शुक्लान्यधिकोन्नतानि । तडिल्लता-चित्र-सिताभ्र-कूट-तुल्योपमानानि गृहाणि यत्र[३] ।।[१०*] कैलास-तुङ्ग-शिखर-प्रतिमानि चान्यान्याभान्ति दीर्घ्व-वलभी-

---

१. फ्लीट : मण्ड; आर. जी. भण्डारकर ने 'खण्ड' संशोधन सुझाया ।

२. प्रफुल्ल पढ़ें ।

३. उत्तरमेध के प्रथम श्लोक-विद्युतवन्तं ललितवनिता:·· ·· की छाप यहां स्पष्ट है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. नि स-वेदिकानि । गान्धर्व्व-शब्द-मुखरानि (णि) निविष्ट-चित्र-कर्म्माणि लोल-कदली-वन-शोभितानि ॥[११*] प्रासाद-माला-भिरलंकृतानि धरां विदार्य्यैव समुत्थितानि । विमान-माला-सदृशानि यत्र गृहाणि पूर्ण्णेन्दु-करामलानि ॥[१२*] यद्भात्य-भिरम्य-सरिद्व(द्द्व)येन चपलोर्म्मिणा समुपगूढं[1] [।*]

८. रहसि कुच-शालिनीभ्यां प्रीति-रतिभ्यां स्मराङ्गमिव ॥[१३*] सत्य-क्षमा-दम-शम-व्रत-शौच-धैर्य्य-स्वाद्ध्याय-वृत्त-विनय-स्थिति बुद्ध्य् पेतैः[2] । विद्या-तपो-निधिभिरस्मयितैश्च विप्रैर्य्यद्भ्राजते ग्रह-गणै×खमिव प्रदीप्तैः ॥[१४*] अथ समेत्य निरन्तर-सन्ततै-रहरहः-प्रविजृम्भित-

९. सौहृदाः [।*] नृपतिभिस्सुतवत्प्रतिम[ा]निताः प्रमुदिता न्यवसन्त सुखं पुरे ॥[१५*] श्रवण-सुभगं धानुर्व्वे[द्यं] दृढं परिनिष्ठिताः सुचरित-शतासङ्गा×केचिद्विचित्र-कथाविदः । विनय-निभृता-स्सम्यग्धर्म्म-प्रसङ्ग-परायणा≍प्रियमपरुषं पत्थ्यं चान्ये क्षमा बहु भाषितुं (तुम्) ॥[१६*]

१०. केचित्स्वकर्म्मण्यधिकास्तथान्यैर्व्विज्ञायते ज्योतिषमात्मवद्भिः । अद्यापि चान्ये समर-प्रगल्भा×कुर्व्वन्त्यरीणामहितं प्रसह्य ॥[१७*] प्रज्ञा-मनोज्ञ-वधवः प्रथितोरु-वंशा वंशानुरूप-चरिता-भरणास्तथा [ऽ*]न्ये । सत्य-व्रताः प्रणयिनामुपकार-दक्षा विस्रम्भ-

११. [पूर्व्व]मपरे दृढ-सौहृदाश्च ॥[१८*]विजित-विषय-सङ्गै र्द्धर्म्म-शीलैस्तथा [ऽ*]न्यैर्[मृ[दुभिरधिक-सत्वै(त्त्वै)र्ल्लोक-यात्रामरैश्च । स्व-कुल-तिलक-भूतैर्मुक्त-रागैरुदारैरधिकमभिविभाति श्रेणिरेवं प्रकारैः ॥[१९*] तारुण्य-कान्त्युपचितो [ऽ*]पि सुवर्ण्ण-हार-तांबूल-पुष्प-विधिना सम-

---

१. °गूढम् पढ़ें ।

२. द्ध्य् में ध् साफ उत्कीर्ण नहीं है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२. [लंकृ]तो [ऽ*]पि । नारी-जनः श्रियमुपैति[1] न तावदग्र्यां[2] यावन्न पट्टमय-वस्त्र-[यु[गानि धत्ते ।।[२०*] स्पर्श[व] ता[3] वर्णान्तर-विभाग-चित्रेण नेत्र-सुभगेन । यैस्सकलमिदं क्षितितलमलंकृतं पट्ट-वस्त्रेण ।।[२१*] विद्याधरी-रुचिर-पल्लव-कर्णपूर-वातेरितास्थिरतरं प्रविचिन्त्य

१३. [लो]कं । मानुष्यमर्थ-निचयांश्च तथा विशालांस्तेषां शुभा मतिरभूदचला ततस्तु[4] ।।[२२*] चतुस्समुद्रा[न्त]-विलोल-मेखलां सुमेरु-कैलास-बृहत्पयोधराम् । वनान्त-वान्त-स्फुट-पुष्प-हासिनीं कुमारगुप्ते प्रि(पृ)थिवीं प्रशासति ।।[२२*] समान-धीश्शुक्र-बृहस्पतिभ्यां ललाम-भूतो भुवि

१४. पार्त्थिवानां । रणेषु यः पार्त्थ-समान-कर्म्मा बभूव गोप्ता नृप-विश्वकर्म्मा ।।[२४*]दीनानुकंपन-परः कृपणार्त्त-वर्ग्ग-सन्ध[ा]-प्रदो[ऽ*]धिक-दयालुरनाथ-नाथः । कल्प-द्रुमः प्रणयिनामभयं-प्रदश्च[5] भीतस्य यो जनपदस्य च बन्धुरासीत् ।।[२५*] तस्यात्मजः स्थैर्य्य-नयोपपन्नो बन्धु-प्रिये

१५. बन्धुरिव प्रजानां(नाम्) । बंध्वर्त्ति-हर्त्ता नृप-बन्धुवर्म्मा द्विड्-[दृ]प्त-पक्ष-क्षपणैक-दक्षः ।।[२६*] कान्तो युवा रण-पटुर्व्विनया-न्वितश्च राजा[ऽ*]पि सन्नुपसृतो न मदैः स्मयाद्यैः । शृङ्गार-मूर्त्तिरभिभात्यनलंकृतो[ऽ*]पि रूपेण य[6] × कुसुमचाप इव द्वितीयः ।। [२७*] वैधव्य-तीव्र-व्यसन-क्षतानां

---

१. फ्लीट : श्रियमु° ।

२. फ्लीट °ग्रचां का °श्र्यां संशोधन करते हैं ।

३. जगन्नाथ : स्पर्शाज्जात । परन्तु छन्द में यह अनुकूल नहीं यद्यपि स्पर्शजात अनुकूल है ।

४. 'ततस्तु' का सम्बन्ध पंक्ति १६ में 'कारितं' के साथ है ।

५. अभयप्रदश्च पढ़ें ।

६. फ्लीट : या ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६. स्मि(स्मृ)त्वा यमद्याप्यरि-सुन्दरीणां[1] । भयाद्भवत्यायत-लोचनानां घन-स्तनायास-करः प्रकम्पः ॥[२८*] तस्मिन्नेव क्षितिपतिवृि(वृ)षे बंधुवर्म्मण्युदारे सम्यक्स्फीतं दशपुरमिदं पालयत्युन्नतांसे । शिल्पावाप्तैर्द्धन-समुदयैः पट्टवायैरुदारं श्रेणी-भूतैर्भवनमतुलं कारितं

१७. दीप्त-रश्मेः ॥[२९*] विस्तीर्ण्ण-तुङ्ग-शिखरं शिखरि-प्रकाशमभ्युद्गतेन्द्वमल-रश्मि-कलाप-गौरं[2] । यद्भाति पश्चिम-पुरस्य[3] निविष्ट-कान्त-चूडामणि-प्रतिसमन्नयनाभिरामं[4] ॥[३०*] रामासनाथ-[र]चने दर-भास्करांशु-वह्नि-प्रताप-सुभगे जल-लीन-मीने । चन्द्रांशु-हर्म्यतल-

१८. चन्दन-तालवृन्त-हारोपभोध(ग)-रहिते हिम-दग्ध-पद्मे ॥[३१*] रोध्र्-प्रियंगु-तरु-कुन्दलता-विकोश-पुष्पासव-प्रमु[दि]तालि-कलाभिरामे । काले तुषार-कण-कर्क्कश-शीत-वात-वेग-प्रनृत्त-लवली-नगणैकशाखे ॥[३२*] स्मर-वशग-तरुणजन-वल्लभाङ्गना-विपुल-कान्त-पीनोरु-

१९. स्तन-जघन-घनालिङ्गन-निर्भर्त्सित-तुहिन-हिम-पाते[5] ॥[३३*] मालवानां गण-स्थित्या याते शत-चतुष्टये । त्रि-नवत्यधिके [ऽ*]ब्दानाम्रि(मृ)तौ सेव्य-घन-स्तने[6] ॥[३४*] सहस्य-मास-

---

१ °णाम् पढ़ें । वास्तव में पहले म् उत्कीर्ण किया गया था बाद में उसे काट कर णा पर अनुस्वार लगाया गया ।

२. गौरम् पढ़ें ।

३. पाण्डेय पश्चिमपुरे संशोधन प्रस्तुत करते हैं ।

४. °रामम् पढ़ें । फ्लीट : °रमं ।

५. यह सम्पूर्ण श्लोक एक समस्त पद है । यह प्रयासपूर्ण गौडी रीति का उदाहरण है ।

६. फ्लीट : स्वने ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुक्लस्य प्रशस्ते[ऽ*]ह्नि त्रयोदशे । मङ्गलाचार-विधिना प्रासादो [ऽ*]यं निवेशितः ।।[३५*] बहुना समतीतेन

२०. कालेनान्यैश्च पार्त्थिवैः । व्यशीर्य्यतैक-देशो[ऽ*]स्य भवनस्य ततो [ऽ*]धुना ।।[३६*] स्व-यशो-व्रि (वृ)द्धये सर्व्वमत्युदार-मुदारया संस्कारितमिदं भूयः श्रेण्या भानुमतो गृहं[1] ।।[३७*] अत्युन्नतमवदातं नभ[:]-स्पृशन्निव[2] मनोहरैः शिखरैः । शशि-भान्वोरभ्युदयेष्वमल-मयूखायतन-

२१. भूतं[3] ।।[३८*] वत्सर-शतेषु पंचसु विंशत्यधिकेषु नवसु चाब्देषु । यातेष्वभिरम्य-तपस्य-मास-शुक्ल-द्वितीयायां[4] ।।[३९*] स्पष्टै-रशोकतरु-केतक-सिंदुवार-लोलातिमुक्तकलता-मदयंतिकानां[5] । पुष्पोद्गमैरभिनवैरधिगम्य नूनमैक्यं विजृंभित-शरे हर-पूत-देहे[6] ।। [४०*]

२२. मधु-पान-मुदित-मधुकर-कुलपगीत-नगने (णै) क-पृथु-शाखे । काले नवकुसुमोद्गम-दंतुर-कांत-प्रचुर-रोद्ध्रे ।।[४१*] शशिनेव नभो विमलं कौ[स्तु]भ-मणिनेव शर्ङ्गिणो वक्षः । भवन-वरेण तथेदं पुरमखिलमलंकृतमुदारं[7] ।। [४२*] अ-मलिन-शशि-

---

१. गृहम् पढ़ें ।
२. फ्लीट का संशोधन : स्पृशतीव, सरकार : स्पृशन्निव ।
३. भूतम् पढ़ें ।
४. °याम् पढ़ें ।
५. फ्लीट : मदयन्तिकानां । °नाम् पढ़ें ।
६. फ्लीट का संशोधन : °धूतदेहे ।
७. °दारम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२३. लेखा-दंतुरं पिङ्गलानां परिवहति समूहं यावदीशो जटानां[१]।
विकच[२]-कमल-मालामंस-सक्तां च शार्ङ्गी भवनमिदमुदारं
शाश्वतन्तावदस्तु ॥[४३*] श्रेण्यादेशेन भक्त्या च कारितं भवनं
रवेः। पूर्व्वा चेयं प्रयत्नेन रचिता वत्सभट्टिना ॥[४४*]
२४, स्वस्ति कर्तृ-लेखक-वाचक-श्रोतृभ्यः ॥ सिद्धिरस्तु ॥

---

१. °नाम् पढ़ें।
२. फ्लीट : विकट।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारगुप्त (द्वितीय) का भिटारी मुद्रा लेख

स्थान : उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में भिटारी ग्राम में एक भवन की नींव खोदते समय प्राप्त मुद्रा पर उत्कीर्ण ।

लिपि : पाँचवीं-छठी शताब्दी की उत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : कुमारगुप्त (द्वितीय) तक गुप्त वंशावली ।

संदर्भ : वी. ए. स्मिथ, JBAS, 58, pt. I, PP. 84 ff; हॉर्नले, JASB, 58, pt. I, pp. 89; ff. फ्लीट, IA, 19, 1890, pp. 224 ff.; सरकार, SI, p.329.

१. [सर्व्व]-राज़ोच्छेत्तु ⌒ पृथिव्यामप्रतिरथस्य महाराज-श्री-[गुप्त]-प्रपौ[त्र]स्य महाराज-श्री-घटोत्कच-पौत्रस्य म[हा]-

२. [राजा]धिर[ा]ज-श्री-चन्द्रगुप्त-पुत्रस्य लिच्छ[वि-दौत्रह स्यि] म[हादे]व्य[ां कुमा]रदेव्यामुत्पन्नस्य महाराजाधिराज-

३. [श्री]-समुद्रगुप्तस्य पुत्रस्तत्परि[सृही]तो म[हादेव्मान्दत्तदेव्या]-मुत्पन्नस्स्वयं च[ा]प्रतिरथ[1] ⌒ परम-भाग-

४. [वतो महाराजा]धिराज-श्री-चन्द्रगुप्तस्तस्य [पुत्र]स्तत्पाद[ा]नु-[द्ध्या]तो महादेव्य[ां ध्रु]वदेव्यामुत्पन्नो [महारा]-

५. [जाधि]राज-श्री-कुमार[गुप्त]स्तस्य पुत्रस्तत्पादानुद्ध्या[तो] महादेव्यामनन्तदेव्य[ा[मुत्पन्नो महा[रा]-

---

१. हॉर्नले : च प्रति॰ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. [जाधिरा]ज-श्री-[पुरुगुप्त][1]स्तस्य पुत्रस्तत्पादानुद्धय[ातो]
महादे[व्यां] श्री[2]-चन्द्रदेव्यामुत्प[न्नो] म[हा]-

७. [राजाधिरा]ज-श्री-नरसिंहगुप्तस्तस्य[पु]त्रस्त[त्प]ादा[नुद्धयातो]
मह[ादेव्यां]श्री-म[न्मित्र][3]-

८. [देव्या]मु[त्प]न्न ⌣ परमभ[ा]गवतो मह]ाराजाधिराज[-श्री-
कुम[ा]र[गुप्तः॥]

---

१. आरम्भ में पुरगुप्त पढ़ा गया था।
२. फ्लीट : श्रीवत्स°।
३. वही : महालक्ष्मी°।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वैण्यगुप्त का गुणैधर ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त संवत् १८८

स्थान : बंगलादेश के तिपरा जिले के कोमिल्ला नगर से लगभग ३० किलोमीटर पश्चिमोत्तर को गुणैधर ग्राम के तालाब से उपलब्ध ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण।

लिपि : गुप्तकालीन ब्राह्मी का पूर्वी रूप।

भाषा : संस्कृत।

विषय। महाराज वैण्यगुप्त द्वारा महायान सम्प्रदाय के वैवर्तिक संघ को भूमिदान।

सन्दर्भ : दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य, IHQ, 6, pp. 45-60; मनमोहन घोष, IHQ, 6, p. 561; सरकार, SI, p. 340.

(प्रथम ओर)

१. स्वस्ति [।।*]महानौ-हस्त्यश्व-जयस्कन्धावारात्क्रीपुराद्भगवन्महा-
देव-पादानुद्ध्यातो महाराज-श्री-वैन्यगुप्तः[1]

२. कुशली [ब्राह्मणादीन्कुटुम्बिनः][2] स्व-पादोपजीविनश्च कुशल-
माशंस्य समाज्ञापयति [।*] विदितं भवतामस्तु यथा

३. मया माता-पित्रोरात्मनश्च पु[ण्या]भिवृ[द्ध]ये[ऽ*]-स्मत्पाद-दास-
महाराज-रुद्रदत्त-विज्ञाप्यादनेनैव माहायानिक-शाक्यभिक्ष्वा-

४. चार्य-शान्तिदेवमुद्दिश्य गोप·············[दिग्भागे] कार्य्यमाण-
कार्य्यावलोकितेश्वराश्रम-विहारे अनेनै-

५. वाचार्य्येण प्रतिपादित[क]माहायानिक-वैवर्त्तिक[3]-भिक्षु-संघ[ा*]
नाम्परिग्रहे भगवतो बुद्धस्य सततं त्रिष्कालं (त्रिकालं)

---

१. वैण्य पढ़ें।

२. सरकार का दूसरा सुझाव—समवेतान्कुटुम्बिनः।

३. महायानिकावैवर्त्तिक भी सुझाव दिया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. गन्ध-पुष्प-दीप-धूपादि-प्र[वर्त्तनाय*][त*]स्य भिक्षु-संघस्य चीवर-
पिण्डपात-शयनासन-ग्लानप्रत्यय-भैषज्यादि-

७. परिभोगाय विहारे [च] खण्ड-फुट्ट[1]-प्रतिसंस्कार-करणाय उत्तर-
माण्डलिक-कान्तेडदक-ग्रामे सर्वतो भो-

८. गेनाग्रहारत्वेनैकादश-खिल-पाटकाः पञ्चभिः खण्डैस्ताम्र-
पट्टेनातिसृष्टाः [।*] अपि च खलु श्रुति-स्मृती-

९. [ति*]हा[स]-विहितां[2] पुण्य-भूमिदान-श्रुतिमैहिकामुत्त्रिक-फल-
विशेषे[ण*] स्मृतो(तौ)[3] भावतः समुपगम्य स्वतस्तु पी-

१०. डामप्यूरीकृत्य पात्त्रेभ्यो भूमिं [नापहरेत् बाधाञ्च न कुर्य्यात्][4]
[।*] द्विष(?)द्भिरस्मद्वचन-गौरवात्स्व-यशो-धर्म्मावाप्तये चैते

११. पाटका अस्मिन्विहारे शश्वत्कालमभ्य[नुपालयितव्याः[5][।।] अनु-
पालनम्प्रति च भगवता पराशरात्सजेन वेदव्या-

१२. सेन व्यासेन गीताः श्लोका भवन्ति [।*] षष्टिं वर्ष-स[हस्रा]णि
स्वर्ग्गे मोदति भूमिदः [।*] आक्षेप्ता चानुमन्ता च ता-

१३. न्येव न[र*]के वसेत् [।।१*] स्व-दत्तां पर-दत्ताम्वा(त्तां वा) यो
हरेत [वसु]न्धरां[6][।*] [स] विष्ठायां क्रिमिर्भूत्वा पितृभिः सह
पच्यते [।।२*]

---

१. संस्कृत 'स्फुटित' का प्राकृत रूप।
२. भट्टाचार्य : हापविहिता।
३. कुछ विद्वान 'स्मृतां' सुझाते हैं।
४. सरकार का अनुमान।
५. भट्टाचार्य : °भ्यनुमन्तव्याः।
६. °राम् पढ़ें।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. पूर्व-दत्तां द्विजातिभ्यो यत्नाद्रक्ष युधिष्ठिर [।*] महीं महीमतां श्रेष्ठ दानाच्श्रेयो[1][ऽ*]नुपालनं[2] [॥३*] वर्त्तमानाष्टाशीत्यु (त्यु)-

१५. त्तर-शत-संवत्सरे पौष-मासस्य चतुर्व्विन्श(र्व्विंश)तितम-दिवसे दूतकेन महाप्रतीहार-महापीलुपति-पञ्चाधि-

१६. करणोपरिक-पाट्युपरिक-[पुर][3]पुरपालोपरिक-महाराज-श्री-महासामन्त-विजयसेनेनैतदेकादश-पाटक-दा-

१७. नायाज्ञामनुभाविता: कुमारामात्य-रेवज्स्जवामी भामह-वत्स-भोगिका:(कौ) [च*] [॥*] लिखितं सन्धिविग्रहारि(ध)करण-काय-

१८. स्थ-नरदत्तेन [॥*] यत्रैक-क्षेत्र-खण्डे नव-द्रोणवापाधिक-सप्त-पाटक-परिमाणे सीमा-लिङ्गानि [।*] पूर्व्वेण गुणेका-

१९. ग्रहार-ग्राम-सीमा विष्णुवर्धकि-क्षेत्रश्च(ञ्च) [।*] दक्षिणेन मिदुविलाल(?)-क्षेत्रं राज-विहार-क्षेत्रञ्च [।*] पश्चिमेन सूरी-नाशी-रम्पूर्ण्णक-

२०. क्षेत्रं[4] [।*] उत्तरेण दोषी-भोग-पुष्करि[णी]................. [ए*]वम्पियाकादित्य-व(ब)न्धु-क्षेत्राणाञ्च सीमा [॥*]

२१. द्वितीय-खण्डस्याष्टाविन्श(विंश)ति-द्रोणवाप-परिमाणस्य सीमा [।*] पूर्व्वेण गुणिकाग्रहार-ग्राम-सीमा [।*] दक्षिणेन पक्क-

---

१. दानाच्छ्रेयो पढ़ें।

२. °नम् पढ़ें।

३. भूल से 'पुर' दो बार उत्कीर्ण हो गया लगता है।

४. यहाँ और आगे वाक्यान्त क्षेत्रं को क्षेत्रम् पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२२. विलाल(?)-क्षेत्रं[।*] पश्चिमेन राजविहार-क्षेत्रं [।*] उत्तरेण वैद्य(?)-क्षेत्रं [।।*] तृतीय-खण्डस्य त्रयोविन्श(विंश)ति-द्रोण-वाप-

२३. परिमाणस्य सीमा [।*] पूर्व्वेण..........क्षेत्रं [।*] दक्षिणेन नखद्दार्च्चरिक (?)-क्षेत्र-सीमा [।*] पश्चिमेन

(दूसरी ओर)

२४. ज(जो ?)लारी-क्षेत्रं [।*] उत्तरेण नागी-जोडाक-क्षेत्रं [।।*] चतुर्थस्य त्रिंशद्द्रोणवाप-परिमाण-क्षेत्र-खण्डस्य सीमा [।*] पूर्व्वेण

२५. बुद्धाक-क्षेत्र-सीमा [।*] दक्षिणोन कालाक-क्षेत्रं [।*] पचिमेन [सू]र्य्य-क्षेत्र-सीमा [।*] उत्तरेण महीपाल-क्षेत्रं [।।*] [प]ञ्च-मस्य

२६. पादोन-पाटक-द्वय-परिमाण-क्षेत्र-खण्डस्य सीमा [।*] पूर्व्वेण खण्ड-वि[डु]ग्गुरिक-क्षेत्रं [।*] दक्षिणेन मणिभद्र-

२७. क्षेत्रं[।*] पश्चिमेन यज्ञरात-क्षेत्र-सीमा [।*] उत्तरेण नादडक-ग्राम-सीमेति [।।*] विहार-तल-भूमेरपि सीमा-लिङ्गानि [।*]

२८. पूर्व्वेण चूडामणिनगर-श्रीनौयोगयोर्म्मद्ध्ये[१] जोला [।*] दक्षि-णेन गणेश्वर-विलाल-पुष्करिण्या नौ-खातः [।*]

२९. पश्चिमेन प्रद्युम्नेश्वर-देवकुल-क्षेत्र-प्रान्तः [।*] उत्तरेण प्रडामार-नौयोग-खातः [।।*[एतद्विहार-प्रावेश्य-शून्य-प्रतिकर-

---

१. दो स्थानों के नाम चूड़ामणिनगर तथा श्रीनौयोग अथवा चूड़ामणि तथा नगरश्री हैं। बाद के विकल्प में नौयोग का अर्थ 'नौका ठहराने का स्थान' ग्रहण करना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३०. हज्जिक-खिल-भूमेरपि सीमा-लिङ्गानि [।*] पूर्व्वेण प्रद्यु-म्नेश्वर-देवकुल-क्षेत्र-सीमा [।*] दक्षिणेन शाक्य-भिक्ष्वाचार्य्य-जित-

३१. सेन-वैहारिक-क्षेत्रावसानः[1] [।*] पश्चिमेन ह(?) चात-गंग उत्तरेण दण्डपुष्किणी[2] चेति ॥ सं १० ८० ८ पोष्ष[3]-दि २० ४[।।*]

---

१. °नम् पढ़ें।

२. पुष्करिणी पढ़ें।

३. पौष पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोपराज का एरण स्तम्भ अभिलेख

गुप्त संवत् १९१

स्थान : मध्य प्रदेश के सागर जिले में एरण ग्राम के पास बीना नदी के तट के निकट स्थित स्तम्भ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : गुप्त सम्राट् भानुगुप्त के सामन्त (?) गोपराज का युद्ध में मारा जाना।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 20; सरकार, SI, p. 345.

१. ओम् [।*] संवत्सर-शते एकनवत्युत्तरे श्रावण-बहुल-पक्ष-स[प्त]म्य[ां]

२. संवत् १०० ९० १ श्रावण ब दि ७ ।। [*]ल(?)क्ष-वङ्शा (वंशा)दुत्पन्नो [— —]

३. राजेति विश्रुतः [।*]तस्य पुत्रो [ऽ*]तिविक्रान्तो नाम्ना राजा-(ऽ*)थ माधवः ।।[१*] गोपराज[:]

४. सुतस्तस्य श्रीमान्विख्यात-पौरुषः [।*] शरभराज-दौहित्रः स्व-वङ्श[वंश]तिलको [ऽ*]घु ना (?) [।।२*]

५. श्री भानुगुप्तो जगति प्रवीरो राजा महान्पार्थ-समो [ऽ*]तिशूरः[।] तेनाथ सार्द्धन्त्विह गोपरा[जो]

६. मित्त्रानुगत्येन किलानुयातः ।।[३*] कृत्वा [च*] [यु]द्धं समुहत्प्रक[ा]शं स्वर्ग्गं गतो दिव्य-नरे[न्द्र-कल्पः] [।*]

७. भक्ता[ऽ*]नुरक्ता च प्रिया च कान्ता भ[ार्यावि]ल[ग्न]ा-नुगगता[ऽ*]ग्नि-र[ा]शिम् ।।[४*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रभावतीगुप्ता का पूना ताम्र-पट्ट अभिलेख

शासन वर्ष १३

स्थान : महाराष्ट्र के पूना नगर में एक ताम्रशिल्पी से प्राप्त दो ताम्र-पट्टों पर उत्कीर्ण। यह शिल्पी मूलतः अहमदनगर निवासी था। संभवतः ये ताम्र-पट्ट इसकी पीढ़ियों से सुरक्षित थे।

लिपि : कीलाक्षर दक्षिणी ब्राह्मी। इसमें उत्तरी ब्राह्मी की भी कुछ विशेषताएं हैं।

भाषा : संस्कृत।

विषय : वाकाटक महाराज रुद्रसेन (द्वितीय) की अग्रमहिषी युवराज दिवाकर-सेन की माता प्रभावतीगुप्ता द्वारा आचार्य चनालस्वामी को उङ्गुण ग्राम का दान। प्रभावतीगुप्ता ने इस वाकाटक अभिलेख में केवल पितृकुल की वंशावली दी है।

संदर्भ : पाठक तथा दीक्षित, EI, 15, p. 41; सरकार, SI, p. 435; पाण्डेय, HLI, p. 113.

(मुद्रा)

वाकाटकललामस्य
[क्र]मप्राप्तनृपश्रिय[: ।*]
जनन्या युवराजस्य
शासनं रिपुशासनं[1] [।।*]

(प्रथम पट्ट)

१. सिद्धम् [।।*] दृष्टम्[2][।*] जितं भगवता [।*] स्वस्ति नन्दिवर्द्धनादा-सीद्गुप्तादिराजो मह [राज]-

---

१. 'नम्' पढ़ें।

२. पंक्ति २-३ के सामने प्रान्त में उत्कीर्ण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. श्री-घटोत्कचस्तस्य सत्पुत्रो महाराज-श्री-चन्द्रगुप्तस्तस्य सत्पुत्रो

३. [ऽ*]नेकाश्वमेध-याजी लिच्छवि-दो(दौ)हित्रौ(त्रो) महादेव्यां कुमारदेव्यामुत्पन्नो

४. महाराजाधिराज-श्री-समुद्रगुप्तस्तत्प(त्स)त्पुत्रस्तत्पाद-परिगृहीतः

५. पृथिव्यामप्रतिरथस्सर्वराजोछे(च्छे)त्ता चतुरुदधि-सलिलास्वादित-

६. यशा [अ*]नेक-गो-हिरण्य-कोटी[1]-सहस्र-प्रदः परम-भागवतो महारा-

७. जाधिराज-श्री-चन्द्रगुप्तस्तस्य दुहिता धारण-सगोत्रा नागकुल-सम्भू-

८. ताया[ं*] श्री महादेव्या[ं*] कुबेरनागायामुत्पन्नोभय-कुलालङ्कार-भूता[ऽ*]त्यन्त-भगवद्भक्ता

९. वाकाटकानां महाराज-श्री-रुद्रसेनस्याग्र-महिषी युवराज-

१०. श्री-दिवाकरसेन-जननी श्री-प्रभावति(ती)-गुप्ता सुप्रतिष्ठाहारे

(द्वितीय पट्ट)

११. विलवणकस्य पूर्व-पार्श्वे शीर्ष-ग्रामस्य दक्षिण-पार्श्वे कदापिञ्ज-नस्यापर-पार्श्वे

१२. सिदिविवरकस्योत्तर-पार्श्वे उङ्गुण[2]-ग्रामे ब्राह्मणाद्यान्ग्राम-कुटुम्बिन × कुशल-

१३. मुक्त्वा समाज्ञापयति[।*]विदितमस्तु वो यथैष ग्रामो[ऽ*]स्माभि[ः*] स्व-पुण्याप्यायना[र्थं]

१४. कार्त्तिक-शुक्ल-द्वादश्या [ं*] भगवत्पाद-मूले निवेद्य भगवद्भक्ता-चार्य-चनालस्वामिने[ऽ*]पूर्व्व-

---

१. कोटि पढ़ें ।

२. पाठक तथा दीक्षित : दङ्गुण ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५. दत्त्या उदक-पूर्व्वमतिसृष्टो[1] यतो भवा(व)द्भिरुचित-मर्य्यादया सर्व्वाज्ञा॒कर्त्तव्या[:*] पूर्व्व-

१६. राज्जा(जा)नुम[तां]श्चात्र चातुर्विद्याग्रहारपरोहारान्वितराम-स्तद्यथा[ऽ*]भट-छ(च्छा)त्र-प्रावेश्यः

१७. अ-चारासन-चर्म्माङ्गार-क्लिण्व-क्रोणि-खानकः अ-पा[र*]म्पर[:*] अ-पशु-मेध्यः अ-पुष्प-क्षीर-सन्दोहः

१८. सनिधिस्सोपनिधिस्सक्ल(क्लृ)प्तोपक्ल(क्लृ)प्तः [।*] न(त)-देष भविष्यद्राजि(ज)भिस्संरक्षितव्य[:*] परिवर्द्ध-

१९. यितव्यश्च [।*] यश्चास्मच्छासनमगणयमानस्स्वल्पामप्यत्राबाधां कुर्य्यात्कारयी(ये)त वा

२०. तस्य ब्राह्मण(णै)रावेदितस्य सदण्ड-निग्रहं कुर्य्याम [।*] व्यास-गि(गी)तश्चात्र श्लोको भवति [।*]

२१. स्व-दत्तां पर-दत्तां[*]वा यो हरेत वसुन्धरां[2] [।*] गवां [*]शत-सहस्रस्य हन्तुर्हरति दुष्कृतम् [।।*] [२*]

२२. संवत्सरे च त्रयोदशमे[3] लिखितमिद[ं*] शासनम् [।*] चक्रदा-सेनोत्कट्टितम्[4] [।।]

---

१. °सृष्टः। यतो पाठ अच्छा है।

२. °राम् पढ़ें।

३, त्रयोदशे पढ़ें।

४. °नोट्टङ्कितम् पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रभावतीगुप्ता का रिथपुर ताम्र-पट्ट अभिलेख

शासन वर्ष १९

स्थान : महाराष्ट्र के अमरावती जिले में रिथपुर से प्राप्त चार ताम्र-पट्ट ।

लिपि : पाँचवीं शताब्दी की वर्ग-शिरस्क (बॉक्स-हेडिड) दक्षिणी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : प्रभावतीगुप्ता द्वारा अश्वत्थनगर में पराशर गोत्र के ब्राह्मणों को भूमि का दान ।

संदर्भ : गुप्ते JPASB (NS), 20, pp. 58 ff; सरकार, SI, p. 439.

(प्रथम पट्ट)

१. [ँ१] जित(तं) भगवता । रामगिरि-स्वामिन‿पाद-मूलाद् गुप्तान[ा*]मादि-

२. राजो महाराज-श्री-घटोत्कचस्तस्य पुत्रो महाराज-श्री-चन्द्र-

३. गुप्त[स्*] तस्य पुत्रस्तत्पाद-परिगृहीत(तो) लिच्छवि-दौहित्रो

४. महादेव्या(व्यां) कुमारदेव्यामुत्पन्नो महाराज-श्री समुद्रगुप्त-स्तस्यपुत्र-

५. स्तत्पादानुद्ध्यातो न्यायागतानेक-गो-हिरण्य-कोटि-सहस्र-प्रद-स्सर्व्वराजो-

(द्वितीय पट्ट-प्रथम ओर)

६. च्छेत्ता पृथिव्यामप्रतिरथ‿परम-भागवतो महादेव्या(व्यां) दत्तदेव्यामु-

७. त्पनो(न्नो) महाराजाधिराज-श्री-चन्द्रगुप्तस्तस्य दुहिता धारण-सगोत्रा

८. नागकुलोत्पन्नाय(यां) कुबेरा(र)नाग-देव्यामुत्पन्ना उभय-कुलाल-

९. ङ्कार-भु(भू)ता वाकाटकाना(नां) महाराज-श्री-रुद्रसेनस्याग्र-महिषी

१०. वाकाटकानाम्महाराज-श्री-दामोदरसेन-प्रवरसेन-जननी भगव-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११. त्पादानुद्ध्याता साग्र-वर्ष-शता[:*] दो(जी)व-पुत्र-पौत्रा [श्री]-महादेवी-प्रभ[ा*]वती-

(द्वितीय पट्ट-दूसरी ओर)

१२. गुप्ता कौशिका-मार्ग्ग(मार्ग्गे) अश्वत्थ-नगरे सब्रह्न (ब्राह्मण)-पुरोग-ग्र[ा*]म-महत्तरा (रां)श्च

१३. कुशलमुक्त्वा सम[ा*]ज्ञापयत(ति) [।*] ऐहिकामुत्रिकमस्मिन्नगरे स्व-पुण्याप्यायनात्थ(र्त्थं)

१४. पराशर-सगोत्राणा(णां)तैत्तिरीय-ब्राह्मणानामप्यत्र[*]पुत्रापुत्रा-णा(सपुत्र-पौत्राणां)

१५. अभ्यन्तर-पुर-निवेशने[न*] सह कर्षक-निवेशनानि च चत्वार(रि)

१६. भुक्ता(क्त)का(क)-भोग-क्षेत्रमुदक-पूर्व्व(र्व्वं) शासनेनो(न) स-(प्र)-तिबद्धं[1][।*] उचितांश्चास्य

१७. पूर्व्व- राजानुमतांश्चातुर्वेद्य-ग्राम-मर्य्यादा- [परिहारा*] न्वितरा-मस्तद्यथा

(तृतीय पट्ट-प्रथम ओर)

१८. अ-करदायी अ-भट-च्छ[ा*]त्र-प्रावेश्य [:*] अ-पुष्प-क्षीर-संदोह[:*] अ-चारा-

१९. सन-चर्म्माङ्गार[:*] अ-लवण-क्लिन्व(न्न)-क्रे णि-ख[ा*]नक[:] सर्व्व-विस्वि(ष्टि)-परिहारा(र)

२०. परिहृत [:*] सनिधानं सोपनिधानं स-क्लृप्तोपक्लृप्तमाचन्द्रा॰

२१. दित्य-कालीय[:*] पुत्र-पै(पौ)त्रानुगामी [।*] भुञ्जता(तां) न केनचिद्व्याघात-

२२. × कर्तव्य[:*] सर्व्व-क्रियाभिस्संरक्षितव्य॒परिवर्द्धयितव्यश्च [।*] यश्चसमा (यश्चास्म)-

---

१. ॰द्धम् पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२३. च्छासनमगणयमाना[:*] स्वल्पामपि परिवाधा(धां) कुर्य्यात्कार-
येत वा तस्य

(तृतीय पट्ट-दूसरी ओर)

२४. ब्राह्मणैरावेदितस्य स-दण्ड-निग्रहं करिष्यामः [।*] अस्मि (स्मिं)-
श्च धर्म्मादर-

२५. करणे अनी(ती)तानेक-राज-दत्ता(त्त)-सञ्चित(न्त)न-परि-पालनं
पुन्या (ण्या)नुकीर्त्तन-

२६. परिहारात्थं न कीर्त्तयाम[:*] [।*] सङ्कल्पाधियोग-पराक्रमोपजि-

२७. तान्वर्त्तमानाम(तानवर्त्तमानाना)ज्ञापयामः [।*] व्यास-
गीतश्चात्र श्लोक‿प्रमाणं[1] [।*]

२८. स्व-दत्ता(त्तां) पर-दत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् [।*] गवां
शत-सहस्रस्य

२९. हन्तु‿पिबति दुष्कृतमिति[2] ।। वाकाटकाना(नां) महाराज-श्री-
प्रवर-

(चतुर्थ पट्ट)

३०. सेनस्य राज्य(ज्यं) प्रशासत[:*] स(सं)व्वत्सरे एकुन-विंशतिमे[3]
कार्त्तिक-मा-

३१. स-शुक्ल-पक्ष-द्वादश्या(श्यां) [।*] दु(दू)तक[ो*] देवनन्द-
स्वामी [।*] ली(लि)खिता[4] प्रभुसिङ्घे(सिंहे)न [।।*]

---

१. °णम् पढ़ें।

२. °तम् ।। इति पढ़ें।

३. एकोनविंशतितमे पढ़ें ।

४. लिखितं पाठ संगत है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रवरसेन (द्वितीय) का चम्मक ताम्र-पट्ट अभिलेख

शासन वर्ष १८

स्थान : महाराष्ट्र के अमरावती जिले में चम्मक ग्राम के एक खेत से प्राप्त सात ताम्र-पट्ट।

लिपि : वर्गशिरस्क (बॉक्स हेडिड) दक्षिणी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : प्रवरसेन (द्वितीय) द्वारा एक सहस्र ब्राह्मणों को भोजकट राज्य (प्रदेश) में चर्माङ्क ग्राम का दान।

संदर्भ : ब्यूलर, ASWI, 4, P. 116; IA, 12, P. 239; फ्लीट, CII, III, No. 55; सरकार, SI, P. 442.

(मुद्रा)

वाकाटक-ललामस्य विक्रम-प्राप्त-नृप-श्रियः [।*]

राज्ञ ⌒ प्रवरसेनस्य शासनं रिपु-शासनं[1] [।।*] [१*]

१. दृष्टं[2] [।।*] स्वस्ति [।।*] प्रवरपुरादग्निष्टोमाप्तोर्य्यामोक्थ्य-षोडश्यातिरात्र[3]-

२. वाजपेय-बृहस्पतिसव-साद्यस्क्र-चतुरश्वमेध-याजिन[4](नो)

३. वि[5] (वि) [ष्णुवृ]द्ध-सगोत्रस्य सम्रा[ट्]-वाकाटकानां महाराज-शृ(श्री)-प्रवरसेनस्य

---

१. °नम् पढ़ें।

२. °ब्यूलर ने इसकी व्याख्या ॐ की है।

३. सामान्यत अतिरात्र।

४. फ्लीट : याजिनः।

५. इस पाठ में याजिनः + विष्णु° की अशुद्ध सन्धि है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. सूनोः सूनोः अत्यन्त-[स्वा]मि-महाभैरव-भक्तस्य अ[ं*]स-भार-
सन्ति(न्नि)वेशि-

५. त-शिवलिङ्गोद्वहन-शिव-सुपरितुष्ट-समुत्पादि[त]-राजव[ं*]शा-

(द्वितीय पट्ट-प्रथम ओर)

६. नाम्पराक्रमाधिगत-भागीरथ्या(थ्य)मल-जल-मूर्द्धना(र्द्धा)भिषिक्ता-
नान्दशा-

७. श्वमेधावभृथ-स्नाता(ना)नाम्भारशिवानां महाराज-श्री-भवनागदौ-

८. हित्रस्य गौतमीपुत्रस्य पुत्रस्य वाकाटकानां महाराज-श्री-रुद्रसे-

९. नस्य सूनोरत्यत्न(न्त)-माहेश्वरस्य सत्यार्ज्जव-कारुण्य-शौर्य्य
विक्रम-न-

१०. य-विनय-महात्म्याधिम(क)त्व-पात्रागत[1]-भक्तित्व-धर्म्मविजयित्व-

(द्वितीय पट्ट-दूसरी ओर)

११. मनो-नैर्म्मा(र्म्म)ल्यादि-[गुणै]स्समुपेतस्य वर्ष-शतमभिवर्द्धमान-
कोश-

१२. दण्ड-साधन-सन्ना(न्ता)न-पुत्र-पौत्रिणः युधिष्ठिर-वृत्ते(त्ते)र्व्वा-
काटका-

१३. नां महाराज-श्री-पृथिवीषेणस्य सूनोर्भगवतश्चक्रपाणे ⌒ प्रसा-

१४. दोपार्ज्जित-श्री-समुदयस्य वाकाटकानां महाराज-श्री-रुद्रसेन[स्य*]

१५. सूनोर्म्महाराजाधिराज-श्री-देवगुप्त-सुतायां प्रभाव-

(तृतीय पट्ट-प्रथम ओर)

१६. ति(ती)-गुप्तायामुत्पन्त(न्न)स्य शम्भो ⌒ प्रसाद-धृति-कार्त्त-
युगस्य

१७. वाकाटकानाम्परम-माहेश्वर-महाराज-श्री-प्रवरसेनस्य वचना[द्*]

---

१. फ्लीट 'पा' के स्थान पर 'हा' पढ़ते हैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८. भोजकट-राज्ये मधुनदि (दी)-तटे चर्म्माङ्क[1]-नाम-ग्र[ा*]मः राज-
मानिक-भुमी (भूमि)-

१९. सहस्रैरष्टाभिः ८००० [परिमितः*] शत्र (त्रु) ध्नराज-पुत्र-कोण्ड-
राज-विज्ञाप्तया नाना-गो-

२० त्र-चरणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सहस्राय दत्तः [॥*]

(तृतीय पट्ट-दूसरी ओर)

२१. यतो[ऽ*]स्मत्सन्तका[ः*] सर्व्वाद्ध्यक्षाधियोग-नियुक्ता आज्ञा-
सञ्च[ा*]रि-कुलपुत्राधिकृता

२२. भटाच्छा (श्छा) श्चाश्च विश्रुत-पूर्व्वया [ऽऽ*] ज्ञया [ऽऽ*] ज्ञापयि-
तव्या [ः।*] विदितमस्तु वो यथे-

२३. हास्माकम्मनो[2]-धर्म्मायुर्ब्बल-विजयैश्वर्य्य-विवृद्धये इहामुत्र-हिता-

२४. र्थमात्मानुग्रहाय वैजैके[3] धर्म्म-स्थाने अपूर्व्व-दतया (त्त्या) उदक-
पूर्व्व-

२५. मत्तिसृष्टः [।*] अथास्योचितां पूर्व्व-राजानुमतां चातुर्व्वैद्य-ग्राम-म-

२६. र्य्यादान्वितरामस्तद्यथा[4] अ-करदायी[5] अ-भट-छ्छात्र-(च्छात्र)
प्रावेश्य [ः*]

(चतुर्थ पट्ट-प्रथम ओर)

२७. अ-पारम्पर-गो-वलि (ली) वर्द्द [ः*] अ-पुष्प-क्षीर-सत्दो
(न्दो) ह [ः*] अ-च[ा*] रा-

---

१. पहले 'ङ्का' उत्कीर्ण किया गया था। बाद में 'आ' की मात्रा अंशत मिटा दी गई।

२. फ्लीट का संशोधन : यथैष आत्मनो। परन्तु इसकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

३. वैजयिके पढ़ें।

४. मर्य्यादां वितराम॰ पढ़ें।

५. पहले 'यं' उत्कीर्णं किया गया था। बाद में 'यी' कर दिया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२८. सन-चर्म्माङ्गार[:*] अ-लवण-क्लिन्न-क्रे णि-खनक[:*] सर्व्व-वे-
(वि)ष्टि-परि-

२९. हार-परीहृ तः[१] सनिधिस्सोपनिधिः सक्लि(क्लृ)प्तोपक्लि(क्लृ)प्तः

३०. आ-चन्द्रादित्य-कालीयः पुत्र-पौत्र[ा*]नुगमकः [।*] भु[ं*]जतां न
के-

३१. नचि[द्*] व्याघातं(तः) कर्त्तव्यस्सर्व्व-क्रियाभिस्स [ं*]-रक्षितव्य
ः पर-वर्द्धायि-

३२. तवश्च[२] [।*] यश्चायं(श्चेदं) शासनमगणयमानो(नः)स्वल्प[ा*]-
मपि [प*] रिबाधा[३]-

(चतुर्थ पट्ट-दूसरी ओर)

३३. ङ्कु र्य्यात्कारयिता[४] वा तस्य ब्राह्मणैर्व्वेदितस्य स-दण्ड-निग्रहं
कुर्य्या-

३४. मः(म) [।*] अस्मि[ं*]श्च धर्म्माव(द)र-करणे अति(ती)-
तानेक-राज-दत्न(त्त)-सञ्चित्न(न्त)न-

३५. परिपालनं कृत-पुण्यानुकीर्त्तन-परिहारार्थं न कीर्त्तयामः [।।*]

३६. व्यास-गीतौ चात्र श्लोकौ प्रमानि(णी)कर्त्तव्यौ [।*] स्व-
दत्नाम्पर-दत्ना-[५]

३७. ञ्च यो हरेत वसुत्धरां[६] [।*] गवां शत-सहस्रस्य हन्तु(न्तु)-

(पंचम पट्ट-प्रथम ओर)

३८. र्हरति दुष्कृतं[७] [।।२।।*] षष्टि वर्ष-सहस्राणि स्वर्गे मोदति भू-

---

१. परिहृतः पढ़ें ।
२. परिवर्द्धयितव्यश्च पढ़ें ।
३. संभवत यहां 'ङ्कु' उत्कीर्ण करके मिटाया गया हैं ।
४. °कारयेत पढ़ें ।
५. स्वदत्ताम्परदत्ता° पढ़ें ।
६. वसुन्धराम् पढ़ें
७. °कृतम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३९. मिदः[।*]आच्छेत्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेदिति[१] [।।३।।*]

४०. श्शा (शा) सन-स्थितिश्चेयं ब्राह्मणैरीश्वरैश्चानुपालनीया तद्यथा राज्ञां स-

४१. प्ताङ्गे राज्ये अ-द्द्रोह-प्रवृन्त (त्त)ानां ब्रह्मघ्न-चौर-पारदारिक-राजा-

४२. पथ्यकारि-प्रभृति (ती)नां सङ्ग्र[ा*]म (मं) कुर्व्वतां[२] अन्य-ग्रामेष्वन-।।[३]

(पंचम पट्ट-दूसरी ओर))

४३. पर[ा*]द्धानां[४] आचन्द्रादित्य-कालीयः [।*] अतो [ऽ*]न्यथा कुर्व्वतामनुमोदतांव्वा

४४. राज्ञः भु(भू)मि-च्छेदं कुर्व्वन्तः[५] अ-स्तेयमिति[।।*] प्रा(प्र)-तिग्राहिणश्चात्र

४५. वार-नियुत्ता (क्ता): [।*] शाट्यायनः गणार्य्यः वात्स्य-देवार्य्यः भारद्वाज-

४६. कुमारशर्म्मार्य्य[:*]पाराशर्य्य-गुहशर्म्मा काश्यप-देव[ा*]र्य्यः महे-श्वरार्य्य[६]-

४७. मात्रार्य्य [:*] कौण्डिण्य (न्य)-रुद्रार्य्य [:*] सोमार्य्य [:*] हरि-शर्म्मार्य्य[:*]

---

१ वसेत् ।। इति पाठ अच्छा है ।

२. °तामन्य पढ़ें । फ्लीट ब्रह्मघ्न तथा संग्राम के पहले 'अ' जोड़ कर संशोधन करते हैं ।

३. यहाँ दो खड़ी रेखाएं अनावश्यक हैं ।

४. °नामाच° पढ़ें ।

५. कुर्वतः पढ़ें ।

६. र्य्य नीचे उत्कीर्ण ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(षष्ठ पट्ट-प्रथम ओर)

४८. भारद्वाज-कुमारशर्म्म[ा]र्य्यं[:*] को(कौ)ण्डिण्य(न्य)-मातृशर्म्मा वरशर्म्मा

४९. गोण्डशर्म्मा नागशर्म्मा भारद्वा[ज*]-शान्तिशर्म्मा वात्स्य:

५०. भोजकदेवार्य्यं[:*] मघशर्म्मा देवशर्म्मा भारद्वाज-मोक्ष-शर्म्म[ा*]

५१. [ना]गशर्म्मा रेवतिशर्म्मा धर्म्मार्य्यं[:*]भारद्वाज-शर्म्मार्य्यं[:*]

५२. नन्दनार्य्य [:*]मूलशर्म्मा ईश्वरशर्म्मा वरशर्म्मा

(षष्ठ पट्ट-दूसरी ओर)

५३. वान्स्य[1]-स्कन्दार्य्यं[:*]भारद्वाज-बप्पार्य्यं[:*]धर्म्मार्य्यं[:*] आत्रेय-स्कन्दार्य्यं[:*]

५४. गौतम-सोमशर्म्मार्य्यं[:*] भतृ(र्तृ)शर्म्मा रुद्रश[र्म्मा*]र्य्यं[:*] मघार्य्यं[:*]मातृ-

५५. शर्मार्य्यं[:*] ईश्वरशर्म्मार्य्यं[:*] गौतम-सगोत्र-मातृशर्म्मा-

५६. र्य्यं[:*] कौण्डिण्य(न्य)-देवशर्म्मार्य्यं[:*] वरशर्म्मार्य्यं[:*] रोहार्य्यं[:*]

(सप्तम पट्ट)

५७. गौतम-सगोत्र[2]-स्वामिदे[वा*]र्य्यं[:*] रेवतिशर्म्मार्य्यं[:*]

५८. ज्येष्ठशर्मार्य्यं[:*] शाण्डिल्य-कुमारशर्म्मार्य्यं[:*] स्वार्ति(ति)-शर्म्मा-

५९. र्य्यं[:*] श[ा]टचायण(न)-काण्ड[ा*]र्य्य-प्रभृतय: [।।*]सेनापतौ

६०. चित्रवर्म्मणि संवत्सरे[ऽ*]ष्टादश[3] १० ८ ज्येष्ठ-मास-शुक्ल-

६१. पक्ष-त्रयोदश्या [*] शासनं लिखितमितिः (ति) [।।*]

---

१. वात्स्य पढ़े ।

२. सरकार की प्रतिलिपि में 'गौतमगौत्र' है ।

३. °दशे पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तोरमाण-कालीन एरण वराह-मूर्ति अभिलेख

शासन वर्ष १

स्थान : मध्यप्रदेश के सागर जिले में एरण ग्राम के लगभग एक किलोमीटर पश्चिम को सुप्रसिद्ध जीर्ण वराह-मन्दिर में स्थित विशाल वराह-प्रतिमा पर उत्कीर्ण ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी, इसी स्थान पर एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण बुध गुप्त के अभिलेख से मिलती-जुलती ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : स्वर्गीय मातृविष्णु के अनुज धन्यविष्णु द्वारा वराह रूप विष्णु के मन्दिर का निर्माण । इस लेख के समय एरण पर तोरमाण का आधिपत्य था ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 36; सरकार, SI, p, 420; पाण्डेय, HLI, p, 138.

१. १ [।।*] जयति धरण्युद्धरणे घन-घोणाघात-घूर्ण्णित-महीध्रः [।*] देवो वराह-मूर्त्तिस्त्रैलोक्य-महागृह-स्तम्भः [।।१*] वर्षे प्रथमे पृथिवी[म्]

२. पृथु-कीर्तौ पृथु-द्युतौ [।*] महाराजाधिराज-श्री-तोरमाणे प्रशासति[1] ।[।२*] फाल्गुन-दिवसे दशमे ।[2] इत्येवं राज्य-वर्ष-मास-दिनैः [।*] एतस्यां

३. पूर्व्वायाम् ।[2] स्व-लक्षणैर्युक्त-पूर्व्वायाम् ।[।३*] स्व-कर्म्माभिरतस्य क्रतु-याजिनो[ऽ*]धीत-स्वाध्यायस्य विप्रर्षेर्म्मैत्रायणीय-वृषभस्येन्द्र-विष्णोः प्रपौत्रस्य ।[2]

---

१. फ्लीट इसे गद्य वाक्य मानते हैं । यद्यपि पहले पाद में मात्राओं का क्रम अनुष्टुम् छन्द के अनुसार नहीं है शेष तीन पादों में यह पाया जाता है ।

२. इन स्थानों पर पड़ी रेखा अनावश्यक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. पितुर्गुणानुकारिणो वरुणविष्णोः पौत्रस्य पितरमनुजातस्य स्व-वंश-वृद्धि-हेतोर्हरिविष्णोः पुत्रस्यात्यन्त-भगवद्भक्तस्य विधातु-रिच्छया ।[१]

५. स्वयंवरयेव राज-लक्ष्म्याधिगतस्य चतुः-समुद्र-पर्यन्त-प्रथित-यशसः अ-क्षीण-मान-[ध]नस्यानेक-शत्रु-समर-जिष्णोः महार[ा*]ज-मातृ-विष्णोः

६. स्वर्ग्गतस्य भ्रात्रानुजेन ।[२] तदनुविधायिना तत्प्रसाद-परिगृहीतेन[३] धन्यविष्णुना तेनैव [स]हाविभक्त-पुण्य-क्रियेण माता-पित्रोः

७. पुण्याप्यायनार्थमेष भगवतो वराह-मूर्त्तेर्ज्जगत्परायणस्य नारायणस्य शिला-प्रा[सादः] स्व-विषये[ऽ*]स्मिन्नैरिकिणे कारितः ।

८. स्वस्त्यस्तु गो-ब्राह्मण-पुरोगाभ्यः सर्व्व-प्रजा[भ्य इ]ति ।।

१, २. पड़ी रेखा अनावश्यक ।

३. इस शब्द के आगे एक छोटा-सा खड्ग जैसा चिह्न बना है । फ्लीट का सुझाव है कि यह इस बात का द्योतक है कि 'तेनैव सहाविभक्त-पुण्य-क्रियेण' 'धन्यविष्णुना' से पहले पढ़ना चाहिए ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिहिरकुल-कालीन ग्वालियर अभिलेख

शासन वर्ष १५

स्थान : मध्यप्रदेश में ग्वालियर के किले में स्थित सूर्य-मन्दिर की दीवार में लगे एक प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण। अब यह प्रस्तरखण्ड इण्डियन म्यूजियम, कलकत्ता में सुरक्षित है।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी, तोरमाण के एरण अभिलेख से मिलती-जुलती।

भाषा : संस्कृत।

विषय : मातृचेट नामक व्यक्ति द्वारा गोप नाम की पहाड़ी पर (जिस पर वर्तमान किला बना हुआ है) सूर्य-मन्दिर बनवाए जाने का वर्णन।

संदर्भ : राजेन्द्रलाल मित्र, JASB, 30 p. 267; फ्लीट, CII, III, No. 37; सरकार SI, p. 424; पाण्डेय HLI, p. 139.

१. [१ँ ।। स्वस्ति ।।*][१] [ज]यति जलद-वाल[२]-ध्वान्तमुत्सारयन्स्वैः किरण-निवह-जालैर्व्योम विद्योतयद्भिः [।*] उ[दय-गिरि]-तटाग्र[ं*] मण्डयन्[३] यस्तुरगैः[४] चकित-गमन-खेद-भ्रान्त-चंचत्सटान्तैः । [।१*] उदय[गिरि]-

२, [वनान्त][५]ग्रस्त-चक्रो[ऽ*]र्ति-हर्त्ता भुवन-भवन-दीपः शर्व्वरी-नाश-हेतुः [।*] तपित-कनक-वर्ण्णैरंशुभि꣡पङ्कजान[ा*]मभिनव-

---

१. सरकार का अनुमान।

२. सरकार 'वल' पढ़कर 'बेला' संशोधन सुझाते हैं।

३. न् पहले उत्कीर्ण होने से छूट गया था। बाद में यह पंक्ति के नीचे जोड़ा गया।

४. तुरङ्गैश्चकित॰ पढ़ें।

५. सरकार का सुझाव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रमणीयं यो विधत्ते स वो [ऽ*]व्यात् ।[।२*] श्री-तोरम[ाण इ]ति य: प्रथितो

३. [भू-चक्र]प: प्रभूत-गुण: [।*] सत्य-प्रदान-[१]शौर्य्याद्येन मही न्यायत[:*] शास्ता[२] [३।।*] तस्योदित-कुल-कीर्त्ते: पुत्रो [ऽ*]तुल-विक्रम: पति: पृथ्व्या: [।*] मिहिरकुलेति[३]ख्यातो[ऽ*]भङ्गो य: पशु-पतिम[र्च्चयति][४] [।।४*]

४. [तस्मिन्रा]जनि शासति पृथ्वीं पृथु-विमल-लोचने [ऽ*]र्त्तिहरे [।*] अभिवर्द्धमान-राज्ये पंचदशाब्दे नृप-वृषस्य ।[।५*] शशि-रश्मि-हास-विकसित-कुमुदोत्पल-गन्ध-शीतलामोदे [।*] कार्त्तिक-मासे प्राप्ते गगन-

५. [पतौ नि]र्म्मले भाति ।। [६*] द्विज-गण-मुख्यैरभिसंस्तुते च पुण्याह-नाद-घोषेण [।*] तिथि-नक्षत्र-मुहूर्त्ते संप्राप्ते सुप्रशस्त-दिने ।।[७*] मातृतुलस्य तु पौत्र: पुत्रश्च तथैव मातृदासस्य [।*] नाम्ना च मातृचेट: पर्व्व-

६. [त-दुर्ग्गानु*]वास्तव्य: ।। [८*] नाना-धातु-विचित्रे गोपाह्वयनाम्नि भूधरे रम्ये[।*] कारितवान्शैलमयं भानो: प्रासाद-वर-मुख्यम् ।[।९*] पुण्याभिवृद्धि-हेतोर्म्मातापित्रोस्तथात्मनश्चैव [।*] वसतां च गिरि-वरे[ऽ*]स्मिन[न्*] राज्ञ:

७. ......पादेन[५] [।।१०*] ये कारयन्ति भानोश्चन्द्रांशु-सम-प्रभं गृह-प्रवरं[६] [।*] तेषां वास: स्वर्ग्गे यावत्कल्प-क्षयो भवति ।।[११*] भक्तया रवेर्ब्बिरचितं सद्धर्म-ख्यापनं सुकीर्त्तिमयं[७] [।*] नाम्ना च

१. फ्लीट का संशोधन : प्रधान ।

२. सरकार शास्ता के स्थान पर शासिता या शिष्टा अच्छा समझते हैं ।

३. मिहिकुल इति अच्छा पाठ है ।

४. भण्डारकर : भेजे । परन्तु अक्षरों के अवशेषों को देखकर यह पाठ स्वीकार नहीं किया जा सकता । सरकार का अनुमान '°च्चंयति' ठीक लगता है ।

५. सरकार का अनुमान 'प्रसादेन' ।

६. प्रवरम् पढ़ें

७ °मयम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

केशवेति[1]-प्रथितेन च ।[2]

८. ......दि(?)त्येन [।।१२*] यावच्छर्व्व-जटा-कलाप-गहने विद्योतते चन्द्रमा दिव्य-स्त्री-चरणैर्व्विभूषित-तटा यावच्च मेरुर्नगः [।*] यावच्चोरसि नील-नीरद-निभे विष्णुर्व्वि(र्ब्बि)भर्त्यु ज्व(ज्ज्व)लां श्रीं[3]स्तावद्गिरि-मूर्ध्नि तिष्ठति

९. [शिला-प्रा]साद-सुख्यो रमे [।।१३*]

---

१. केशव इति पाठ अच्छा है ।

२. यहां पड़ी रेखा अनावश्यक है ।

३. छन्द की आवश्यकता के कारण श्रियं के स्थान पर श्रीं का प्रयोग किया गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यशोधर्मन् का मन्दसौर स्तम्भ अभिलेख

स्थान : मध्यप्रदेश के मन्दसौर (दशपुर) नगर से लगभग पाँच किलोमीटर दक्षिण-पूर्व को सोडणी (या सोंडणी) नामक बस्ती के दक्षिण में स्थित स्तम्भ । यही लेख पास के एक अन्य स्तम्भ पर भी उत्कीर्ण है । परन्तु वह सुस्पष्ट नहीं है ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी । चतुर्थ पंक्ति के 'उपगूढ' शब्द में 'ढ' द्रष्टव्य है ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : यशोधर्मन् के यश, उसकी राज्य-सीमाओं तथा मिहिरकुल की पराजय का वर्णन ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 33; कीलहॉर्न, IA, 18, p. 219; 20, p. 188; सरकार, SI, p. 418; पाण्डेय, HLI, p. 136; दिसकलकर, SSI, pp. 76-83.

१. वेपन्ते यस्य भीम-स्तनित[१]-भय-समुद्भ्रान्त-दैत्या दिगन्ताः शृङ्गाघातैः सुमेरोर्व्विघटित-दृषदः कन्दरा यः करोति । उक्षाणं तं दधानः क्षितिधर-तनया-दत्त-पञ्चाङ्गुलाङ्कं द्राघिष्ठः शूलपाणेः भवतां शत्रु-तेजाङ्सि[२] केतुः ॥ [१*]

२. आविर्भूतावलेपैरविनय-पटुभिर्ल्लङ्घिताचार-मार्ग्गैर्म्मोहादैदंयुगीनैरपशुभ-रतिभिः पीड्यमाना नरेन्द्रैः । यस्य क्ष्मा शार्ङ्गपाणेरिव कठिन-धनुर्ज्या-किणाङ्क-प्रकोष्ठं बाहुं लोकोपकार-व्रत-सफल-परिस्पन्दि[३]-धीरं प्रपन्ना ॥ [२]

---

१. यहाँ समास में असामर्थ्य दोष है ।

२. तेजांसि पढ़ें ।

३. फ्लीट : °स्पन्द ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. निद्याचारेषु यो[ऽ*]स्मिन्विनय-मुषि युगे कल्पना-मात्त्र-वृत्या-(त्त्या) राजस्वन्येषु पाङ्सुष्विव[१] कुसुम-बलिर्न्नाविभासे प्रयुक्तः। स श्रे योधाम्नि सम्राडिति मनु-भरतालर्क्क-मान्धातृकल्पे कल्याणे हेम्नि भास्वान्मणिरिव सुतरां भ्राजते यत्त्र शब्दः ॥[३*]

४. ये भुक्ता गुप्त-नाथैर्न्न सकल-वसुधाक्क्रान्ति-दृष्ट-प्रतापैर्न्नाज्ञा हूणाधिपानां[२] क्षितिपति-मुकुटाद्ध्यासिनी यान्प्रविष्टा देशांस्ता-न्धन्व-शैल-द्रु म-श(ग) हन-सरिद्वीर-बाहूपगूढान्वीर्य्यावस्कन्न-राज्ञः स्वगृह-परिसरावज्ञया यो भुनक्ति ॥[४*]

५. आ लौहित्योपकण्ठात्तल-वन-गहनोपत्यकादा महेन्द्रादा-गङ्गाश्लिष्ट-सानोस्तुहिन-शिखरिण ऽपश्चिमादा पयोधेः। सामन्तैर्यस्य बाहु-द्रविण-हृत-मदैः पादयोरानमद्भिश्चूडा-रत्नाङ्शु[३]-राजि-व्यतिकर-शबला भूमि-भागाः क्रियन्ते ॥ [५*]

६. स्थाणोरन्यत्त्र येन प्रणति-कृपणतां प्रापितं नोत्तमाङ्गं यस्याश्लिष्टो भुजाभ्यां वहति हिमगिरिर्दुर्ग्गशब्दाभिनाम् । नीचैस्तेनापि यस्य प्रणति-भुज-बलावर्ज्जन-क्लिष्ट-मूर्द्ध्ना चूडा-पुष्पोपहारैर्म्मिहिर-कुल-नृपेणार्च्चितं[४] पाद-युग्मं[५] ॥ [६*]

७. [गा]मेवोन्मातुमूर्द्ध्वं विगणयितुमिव ज्योतिषां चक्क्र-वालं निर्द्दे-ष्टुं मार्ग्गमुच्चैर्द्दिव इव सुकृतोपार्ज्जितायाः स्व-कीर्त्तेः। तेना-कल्पान्त-कालावधिरवनिभुजा श्री-यशोधर्म्मणा[ऽ*]यं स्तम्भः स्तम्भाभिराम-स्थिर-भुजपरिघेनोच्छ्रितिं नायितो[ऽ*]त्त्र ॥[७*]

---

१. पांसु° पढ़ें ।
२. अनुस्वार मूल में दिखाई नहीं देता ।
३. रत्नांशु पढ़ें ।
४. अनुस्वार मूल में दिखाई नहीं देता ।
५. युग्मम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. [श्ल]ाघ्ये जन्मास्य वङ्शे[1] चरितमघ-हरं दृश्यते कान्तमस्मिन्ध-
र्म्मस्यायं निकेतश्चलति नियमितं नामुना लोक-वृत्तम् [।]
इत्युत्कर्षं गुणानां लिखितुमिव यशोधर्म्मणश्चन्द्र-बिम्बे रागादु-
त्क्षिप्त उच्चैर्भुज इव रुचिमान्यः पृथिव्या विभाति ।।[८*]

९. इति तष्टूषया तस्य नृपतेः पुण्य-कर्म्मणः । वासुलेनोपरचिताः
श्लोकाः कक्कस्य सूनुना ।।[९*] उत्कीर्ण्णा गोविन्देन ।।

---

१. वंशे पढ़ें।

२. सरकार 'उत्कीर्णा' के पश्चात् प्रशस्ति या पूर्वा जोड़ने का सुझाव देते हैं।
उत्कीर्णाः का सम्बन्ध श्लोकाः से भी हो सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यशोधर्मन् (विष्णुवर्द्धन)-कालीन मन्दसौर अभिलेख

मालव संवत् ५८६

स्थान : मध्यप्रदेश में मन्दसौर स्थित दुर्ग के पूर्वी द्वार के निकट कूप में लगे चौकोर प्रस्तरखण्ड पर उत्कीर्ण ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी, यशोधर्मन् के मन्दसौर स्तम्भ अभिलेख की लिपि के समान । दोनों लेख गोविन्द नामक व्यक्ति द्वारा उत्कीर्ण हैं ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : यशोधर्मन् के अमात्य धर्मदोष के अनुज दक्ष द्वारा कूप निर्माण । लेख में यशोधर्मन् का अन्य नाम विष्णुवर्द्धन भी है ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 35; कीलहॉर्न, IA, 18, p. 220; 20, p. 188; सरकार, SI, p. 411, पाण्डेय, HLI, p. 131; दिसकलकर, SSI, pp. 84-95.

१. सिद्धम् [।।*] स जयति जगतां पतिः पिनाकी स्मित-रव-गीतिषु[1] यस्य दन्तकान्तिः । द्युतिरिव तडितां निशि स्फुरन्ती तिरयति च स्फुटयत्यदश्च विश्वम् ।। [१*] स्वयम्भूर्भूतानां स्थिति-लय-[समु]-

२. त्पत्ति-विधिषु प्रयुक्तो येनाज्ञां वहति भुवनानां विधृतये । पितृत्वं

१ गीतिषु में 'त' के दोनों बाजू मिल गए हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चानीतो जगति गरिमाणं गमयता स शम्भुर्भूयान्सि[1] प्रतिदिशतु
भद्राणि भव[ताम्] ।।[२*] फण-मणि-गुरु-भार[क्क्रा]-

३. न्ति-दूरावनम्रं स्थगयति रुचमिन्दोर्म्मण्डलं यस्य मूर्ध्नाम् [।*]
स शिरसि विनिबध्नन्रन्ध्रिणीमस्थिमालां सृजतु भवसृजो वः
क्लेश-भङ्गं भुजङ्गः ।।[३*] षष्टया सहस्रैः सगरात्मजानां
खात[ः*]

४. ख-तुल्यां रुचमादधानः । अस्योदपानाधिपतेश्चिराय यशान्सि[2]
पायात्पयसां विधाता ।।[४*] अथ जयति जनेन्द्रः श्री-यशोधर्म्म-
नामा प्रमद-वनमिवान्तः शत्रुसैन्यं विगाह्य [।*] व्रण-

५. किसलय-भङ्गैर्य्यो[ऽ*]ङ्ग-भूषां विधत्ते तरुण-तरु-लतावद्वीर-
कीर्त्तीर्व्विनाम्य[3] ।।[५*] आजौ जिती विजयते जगतीम्पुनश्च
श्री-विष्णुवर्द्धन-नराधिपतिः स एव । प्रख्यात औलिकर-लाञ्छन
आत्म-

६. वङ्शो[4] यनोदितोदित-पदं गमितो गरीयः ।। [६*] प्राचो
नृपान्सु-बृहतश्च बहूनुदीचः साम्ना युधा च वशगान्प्रविधाय येन
[।*] नामापरं जगति कान्तमदो दुरापं राजाधिराजपरमे-

७. श्वर इत्युदूढमू ।।[७*] स्निग्ध-श्यामाम्बुदाभैः स्थगित-दिनकृतो
यज्वनामाज्य-धूमैरम्भो मेघ्यं मघोना[ऽ*]वधिषु विदधता गाढ-
सम्पन्न-सस्याः । संहर्षाद्वाणिनीनां कर-रभस-हृतो-

८. द्यान-चूताङ्कुराग्रा राजन्वन्तो रमन्ते भुज-विजित-भुवा भूरयो
येन देशाः ।।[८*] यस्योत्केतुभिरुन्मद-द्विप-कर-व्याविद्ध-लोध्र-
द्रुमैरुद्धूतेन वनाध्वनि ध्वनि-नदद्विन्ध्याद्रि-रन्ध्रैर्व्वलैः [।*] बाले-

---

१. °भूयांसि पढ़ें ।
२. यशांसि पढ़ें ।
३. °व्विनमय्य पाठ अच्छा है ।
४. °वंशो पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९. यच्छवि-धूसरेण[1] रजसा मन्दाङ्शु[2] संलक्ष्यते पर्य्यावृत्त-शिखण्डि-चन्द्रक इव ध्यामं रवेर्म्मण्डलम् ।।[९*] तस्य प्रभोर्व्वंङ्शक्ता[3] नृपाणां पादाश्रायाद्विश्रुत-पुण्य-कीर्तिः । भृत्यः स्व-नैभृत्य-जिता-

१०. रि-षट्क ग्रासीद्वसीयान्किल षष्ठिदत्तः ।।[१०*] हिमवत इव गाङ्गस्तुङ्ग-नम्रः प्रवाहः शशभृत इव रेवा-वारि-राशिः प्रथीयान् [।*] परमभिगमनीयः शुद्धिमानन्ववायो यत उदित-गिरि-

११. म्णस्तायते नैगमानाम् ।।[११*] तस्यानुकूलः कुलजात्कलत्रात्सुतः प्रसूतो यशसां प्रसूतिः । हरेरिवाङ्शं[4] वशिनं वराहं वराहदासं यमुदाहरन्ति ।।[१२*] सुकृति-विषयि(य)[5]-तुङ्ग रूढ-मूलं

१२. धरायां स्थितिमपगत-भङ्गां स्थेयसीमादधानम् [।*] गुरु-शिखरमिवाद्रेस्तत्कुलं स्वात्म-भूत्या रविरिव रविकीर्तिः सुप्रकाशं व्यधत्त ।।[१३*] बिभ्रता शुभ्रमभ्रङ्शि[6] स्मार्त्तं वर्त्मोचितं सताम् [।*] न विसंव्वा

१३. दिता येन कलावपि कुलीनता ।।[१४*] धुत-धीदीधिति-ध्वान्तान्हविर्भुज इवाध्वरान् [।*] भानुगुप्ता ततः साध्वी तनयांस्त्रीनजीजनत् ।।[१५*] भगवद्दोष इत्यासीत्प्रथमः कार्य्यवर्त्मसु । ग्राल-

१४. म्बनं बान्धवानामन्धकानामिवोद्धवः ।। [१६*] बहु-नय-विधिवेधा गह्वरे[ऽ*]प्यर्थ-मार्ग्गे विदुर इव विदूरं प्रेक्षया प्रेक्षमाणः । वचन-रचन-वन्धे संस्कृत-प्राकृते यः कविभिरुदि-

---

१. फ्लीट : धूमरेण ।
२. मन्दांशु पढ़ें ।
३. °व्वंश° पढ़ें ।
४. °वांशं पढ़ें ।
५. कीलहॉर्न ने विषय पढ़ा है । परन्तु इकी मात्रा स्पष्ट दिखाई देती है । प्रस्तुत संशोधन सरकार का है ।
६. °भ्रंशि पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५. तरागं गीयते गीरभिज्ञः ॥[१७*] प्रणिधि-दृगनुगन्त्रा यस्य बौद्धेन चाक्षणा न निशि तनु दवीयो वास्त्यदृष्टं धरित्र्याम् [।*] पदमुदयि दधानो[ऽ*]नन्तरं तस्य चाभूत्स भयमभयदत्तो नाम

१६. [विघ्न]न्प्रजानाम् ॥[१८*]विन्ध्यस्यावन्ध्य-कर्म्मा शिखर-तट-पतत्पाण्डु-रेवाम्बु-राशेर्ग्गो-लाङ्गूलैः सहेल[1]-प्लुति-नमित-तरोः पारियात्रस्य चाद्रेः । आ सिन्धोरन्तरालं निज-शुचि-सचिवाद्ध्या-

१७. सितानेक-देशं राजस्थानीय-वृत्या(त्त्या) सुर-गुरुरिव यो वर्ण्णिनां भूतये[ऽ*]पात् ॥[१९*] विहित-सकल-वर्ण्णासङ्करं शान्तडिम्बं कृत इव कृतमेतद्येन राज्यं निराधि । स धुरमयमिदानीं

१८. दोषकुम्भस्य सूनुर्गुरु वहति तदूढां धर्म्मतो धर्म्मदोषः ॥ [२०*] स्वसुखमनभिवाच्छ(ञ्छ)[2]न्दुर्ग्गमे [ऽ*]द्ध्वन्यसङ्गां धुरमतिगुरु-भारां यो[3]दधद्भर्त्तु रर्थे । वहति नृपति-वेषं केवलं लक्ष्म-मात्रं

१९. वलिनमिव विलम्बं कम्बलं बाहुलेयः ॥[२१*] उपहित-हित-रक्षा-मण्डनो जाति[4]-रत्नैर्भुज इव पृथुलांसस्तस्य दक्षः कनीयान् [।*] महदिदमुदपानं खानयामास बिभ्र-

२०. च्छ्रुति-हृदय-नितान्तानन्दि निर्दोषनाम ॥[२२*] सुखाश्रेय-च्छायं परिणति-हित-स्वादु-फलदं गजेन्द्रेणारुग्णं द्रुममिव कृता-न्तेन बलिना । पितृव्यं प्रोद्दिश्य प्रियमभयदत्तं पृ-

---

१. फलीट : सहेलं । परन्तु मूल में अनुस्वार का कोई चिह्न नहीं है ।

२. फलीट : सुखमनति॰ ।

३. सरकार ने यो [ऽ*]दध॰ पढ़ा है । परन्तु भूतकाल की क्रिया का यहां स्थान नहीं है । धर्म्मदोष का वर्णन वर्तमान क्रिया से होगा जैसा कि आगे 'वहति' से स्पष्ट है ।

४. कीलहॉर्न : ज्ञाति ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२१. थु-धिया प्रथीयस्तेनेदं कुशलमिह कर्म्मोपरचितं (म्)।। [२३*]
पञ्चसु शतेषु शरदां यातेष्वेकान्ननवति[1]-सहितेषु । मालव-गण-
स्थिति-वशात्काल-ज्ञानाय लिखितेषु ।।[२४*] य-

२२. स्मिन्काले कल-मृदु-गिरां कोकिलानां प्रलापा भिन्दन्तीव स्मर-
शर-निभाः प्रोषितानां मनांसि । भृङ्गालीनां ध्वनिरनुवनं तार-
मन्द्रश्च यस्मिन्नाधूत-ज्यं धनुरिव नदच्छ्रूयते पुष्प-

२३. केतोः ।।[२५*] प्रियतम-कुपितानां कम्पयन्बद्ध-रागं[2] किसलयमिव
मुग्धं मानसं मानिनीनां [।*] उपनयति नभस्वान्मान-भङ्गाय
यस्मिन्कुसुम-समय-मासे तत्र निर्म्मापितो[ऽ*]यम् ।।[२५*]

२४. यावत्तुङ्गैरुदन्वान्किरण-समुदयं सङ्ग-कान्तं तरङ्गैरालिङ्गन्नि-
न्दु-बिम्बं गुरुभिरिव भुजैः संविधत्ते सुहृत्ताम् [।*] बिभ्रत्सौधा-
न्त-लेखा-वलय-परिगतिं मुण्ड-मालामिवायं सत्कूपस्तावदा-

२५. स्तामममृत-सम-रस-स्वच्छ-विष्यन्दिताम्बुः ।।[२०*] धीमां(मान्)
दक्षो दक्षिणः सत्य-सन्धो ह्रीमांच्छूरो वृद्ध-सेवी कृतज्ञः । बद्धो-
त्साहः स्वामि-कार्य्येष्वखेदी निर्द्दोषो[ऽ*]यं[3] पातु धर्म्मं चिराय
।।[२८*] उत्कीर्ण्णा[4] गोविन्देन[5] ।।

---

१. एकान्ननवति=एकात् न नवति ।

२. फ्लीट : रामयन्बद्ध° । सरकार का पाठ कम्पयन्बद्ध अच्छा है । मूल में 'क' स्पष्ट है ।

३. श्लोक २२ तथा २८ में दक्ष तथा निर्दोष दोनों नाम साथ-साथ प्रयुक्त हुए हैं । लगता है दक्ष का दूसरा नाम निर्दोष था । उसके कुल के कुछ नामों में भी 'दोष' पद का समावेश है ।

४. यहाँ सरकार 'पूर्व्वा' या 'प्रशस्तिः' तथा फ्लीट 'प्रशस्तिः' जोड़ने का सुझाव देते हैं ।

५. यशोधर्मन् का मन्दसौर स्तम्भ लेख भी इसी गोबिन्द ने उत्कीर्ण किया था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रभाकर-कालीन मन्दसौर अभिलेख

मालव संवत् ५२४

स्थान : मध्यप्रदेश में मन्दसौर के दुर्ग की पूर्वी दीवार में भीतर की ओर लगे एक प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण जो अब ग्वालियर के पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित है।

लिपि : गुप्तकालीन दक्षिणी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : राजा प्रभाकर के सेनापति दत्तभट्ट द्वारा एक स्तूप, कूप, प्याऊ तथा (भिक्षुनिवासार्थं) वाटिका का निर्माण। दत्तभट्ट को चन्द्रगुप्त (द्वितीय) के पुत्र गोविन्दगुप्त के सेनापति वायुरक्षित का पुत्र बताया गया है।

संदर्भ : एम. बी. गर्दे, EI, 27, p. 12; सरकार, SI, p. 406.

१. सिद्धम् [।।*] ये[ने]दमुद्भव-निरोध-परंपरायां मग्नं जगद्विविध-
दुःख-निरन्तरायाम् [।*] तित्रासुना त्रिपदिरो[1] निरदेशि धर्म्म-
स्तस्मै नमो[ऽ*]स्तु सुगताय [ग]ताय शान्तिम् [।।१*]

२. गुप्तान्वय-व्योमनि चन्द्र-कल्पः श्री-चन्द्रगुप्त-प्रथिताभिधानः [।*]
आसीन्नृपो लोकवि[लो]चनानां नवोदितश्चन्द्र इवापहर्ता [।।२*]
भुवपती[नां]भुवि भूपतित्वमाच्छिद्य

३. धी-विक्रम-साधनेन [।*] नाद्यापि मोक्षं समुपैति येन स्व-वंश-
पाशैरवपाशिता भूः [।।३*] गोविन्दवत्ख्यात-गुण-प्रभावो
गोविन्दगुप्तोर्ज्जित[त*]-ना[मधे]यम् [।*] वसुन्धरेश-

---

१. सरकार का संशोधन : त्रिपदिको।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. स्तनयं प्रजज्ञे[1] स दित्यदि[त्यो]स्तनयैस्सरूपम् [।।४*]य[स्मि]-
न्नृपैरस्तमित-प्रतापैश्शिरोभिरालिङ्गित-पाद-पद्मे । विचार-दो-
[लां] विबुधाधिपो[ऽ*]पि शङ्का-परीतः

५. समुपा[रु]रोह[।।*] सेनापतिस्तस्य बभूव नाम्ना वाय्वादिना
रक्षित-पश्चिमेन [।*] यस्यारि-सेनास्समुपेत्य सेनां न कस्यचि-
ल्लोचन-मार्ग्गमीयुः [।।६*] शौचानु-

६. राग-व्यवसाय-मेधा-दाक्ष्य-क्षमादिङ्गुण-राशिमेकः [।*] यशश्च
यश्चन्द्र-मरीचि-गौरं दधार धाराधर-धीर-घोषः [।।७*] उदीच्य-
भूभृत्कुल-चन्द्रिकायां स रा[ज]पुत्र्यां

७. जं(ज)नयांबभूव । नाम्नात्मजं दत्तभटं गुणानां कीर्तेश्च यो[ऽ*]
भून्निलयः पि[ते]व ।[।८*] दाने धनेशं धियि वाचि चेशं रतौ
स्मरं संयति पाश-पाणिम् [।*] यमर्त्थि-

८. विद्वत्प्रमदारि-वर्ग्गास्सम्भावयांचक्रुरनेकधैकम् [।।९*] गुप्ता-
न्वयारिद्रुम-धूमकेतुः प्रभाकरो भूमिपतिर्य्यमेनम् [।*] स्वेषाम्ब-
लानां बलदेव-वीर्य्यं गुणा-

९. नुरागादधिपं चकार [।।१०*] चिकीर्षुणा प्रत्युपकार-लेशं तेनैष
पित्रोः शुभ-योग-सिद्धयै । स्तूप-[प्र]पाराम-वरैरुपेतः कूपो
[ऽ*]र्ण्णवागाध-जलो व्यखानि । [।११*] यस्मि-

१०. न्सुहृत्सङ्गम-शीतलञ्च मनो-मुनीनामिव निर्म्मलं च । वचो
गुरूणामिव चाम्बु पत्थ्यं पेपीयमानः सुखमेति लोकः ।[।१२*]
शरन्निशानाथ-करामलाया[2]

११. विख्यापके मालव-वङ्श(वंश)-कीर्त्तेः । शरद्गणे पञ्चशते
व्यतीते त्रिधातिताष्टाभ्यधिके क्रमेण । [।१३*] भृङ्गाङ्ग-भारा-
लस-बाल-पद्मे काले प्रपन्ने रमणीय-साले ।

---

१. शुद्ध रूप 'जनयामास' है ।
२. 'या पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२. गतासु देशान्तरित-प्रियासु प्रियासु काम-ज्वलनाहुतित्वम् [।।१४*]
नात्युष्ण-शीतानिल-कम्पितेषु प्रवृत्त-मत्तान्यभृत-स्वते(ने)षु ।
प्रियाधरोष्ठारुण-पल्लवेषु

१३- नवां व[ह]त्सूपवनेषु कान्तिम्[1] [।।१५*] यो धातु-मात्रे हत-धातु-
दोषः सर्व्व-क्रिया-सिद्धिमुवाच तस्य[2] । कुन्देन्दु-शुभ्रो[ऽ*] भ्र-
विघृष्ट-यष्टिरयं कृतो धातुधर[3]: सकूपः [।।१६*]

१४. अनेक-सरिदङ्गनाङ्ग-परिभोग-नित्योत्सवो महार्णव इवाम्बुतो-
(नो) निचय एष मा भू[त्*]क्षयी । सुरासुर-नरोरगेन्द्र-महितो
[ऽ*]प्ययं धातु-धृक्परैतु सम-

१५. कालताममर-भूधरार्क्केन्दुभिः ।[:१७*] स्तूप-कूप-प्रपारामा ये
चैते परिकीर्त्तिताः [।*] लोकोन्त(त्त)र-विहारस्य सीम्नि
ते[ऽ*]भ्यन्तरीकृता[:*] ।।[१८*] रविलस्य कृतिः ।

१, ऊपर के दोनों श्लोकों में वसन्त ऋतु का वर्णन है यद्यपि उसका नाम नहीं दिया गया ।

२. भगवान् बुद्ध से अभिप्राय है ।

३. सरकार : धातुवरः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराज हस्तिन् का खोह ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त संवत् १६३

स्थान : मध्यप्रदेश के सतना जिले में खोह ग्राम के पास की घाटी से प्राप्त ताम्र-पट्टों पर उत्कीर्ण, जो अब लखनऊ संग्राहलय में सुरक्षिन हैं।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी। इसी पाँचवीं-छठी शताब्दी ईसवी को मध्य भारत की प्रतिनिधि लिपि कहा जा सकता है।

भाषा : संस्कृत।

विषय : महाराज हस्तिन् द्वारा कुछ ब्राह्मणों को कोर्प्परिक नामक अग्रहार का दान।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No, 22.

(प्रथम पट्ट)

१. नमो महादेवाय—स्वस्ति त्रि-षष्ट्यु त्तरे[ऽ*]ब्द-शत गुप्त-नृप-राज्य-भुक्तौ

२. महाश्वयुज-संवत्सरे[1] चैत्र-मास.शुक्ल-पक्ष-द्वितीय[ा*]यामस्या-न्दिवस-

३. पूर्व्वायां[2] नृपति-परिव्राजक-कुलोत्पन्नेन महाराज-देवाढ्य-प्रनप्त(प्त्र)ा

४. महाराज-श्री-प्रभञ्जन-नप्त्रा महाराज-दामोदर-सुतेन गो-सहस्र-

---

१. फ्लीट संवत्यरे पढ़कर संवत्सरे संशोधन करते हैं।
२. फ्लीट यहाँ 'तिथौ' जोड़ते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. हस्त्यश्व-हिरण्यानेक-भूमि-प्रदेन गुरु-पितृ-मातृ-पूज[ा*]-तनतप-(तत्प)रेणा-[1]

६. त्यन्त-देव-ब्राह्मण-भक्तेन नैक-समर-शत-विजयिना स्व-वन्शा-[2] मोद-क-

७. रेण-महाराज-श्री-हस्तिना स्व-पुण्याप्यायनार्थमग्निस्व[ा*]मि-पुत्र-भारद्वाज-

८. सगोत्र-वाजसनेय-सब्रह्मचारिणे देवस्वामिने शर्व्वस्वामिने च

९. गोरि(गौरी)स्वामिने वाजि(ज)सनेय-सब्रह्मचारिणे कौत्स-सगोत्राय दि-

१०. वाकर-स्वामिने च स्व[ा*]तिस्वामिने वाजसनेय-सब्रा(ब्र)ह्मचा-रिणे भार्ग्ग-

११. व-सगोत्राय वरुणशर्म्मणः(णे) बप्पस्वामिने वासुल-सगोत्र[ा*]य

१२. कठ-सब्रह्मचारिणे कुमारदेवरेव[3] वाजि(ज)सनेय-सब्रा(ब्र)ह्म-च[ा*]रि-

१३. न(णे) मात(तृ)शर्म्मः(र्म्मा) नागशर्म्म[ा*] रुखरदेवः कौद्रवदेवः विष्ण(ष्णु)देवः

(द्वितीय पट्ट)

१४. देवनाग[ः*]कुमारसेनः[4] रुद्रशर्म्म[ा*][5] देवराङ्ग(ङ्गि)रा लम्वो

---

१. 'त' के स्थान पर भूल से 'न' उत्कीर्ण हो गया था। बाद में छोटा सा 'त' 'न' से पहले जोड़ दिया गया परन्तु 'न' को काटा नहीं गया।

२. वंश पढ़ें।

३. °रदेवाय पढ़ें।

४. 'न' के पश्चात् किसी अक्षर का चिह्न है जो अनावश्यक है।

५. यहाँ एक रेखा है जिसे फ्लीट ने अनावश्यक बताया है। परन्तु लगता है कि यह 'र्म्म' तथा 'दे' के अन्तराल को पाटने के लिए प्रयुक्त की गई है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(म्बो)ष्ठ[:*]देवमित[1]

१५. महादेव[*:]गुण्ठक-इत्येवमादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो(भ्य) [उ*]त्तरे पट्टे कोर्प्परि-

१६. काग्रहारः सोद्रङ्गः सोपरिकरः अ-चाट-भट-प्रावेश्यो[ऽ*]तिसृष्ट-

१७. स्तस्याघाटाः पूर्व्वेण कोर्प्पर-गर्त्ता। उत्तरेणानिमुक्तक-कोणकः

१८. वङ्गर-ग्रामकस्य दक्षिण-प[ा*]र्श्वे वलक-माद्धये म(द्धयमे) वृक: अम्व्र(म्र)ातसंता(भा?)र-

१९. कः [।*]पश्चिमेन नागसरी। दक्षिणेन बलवर्म्म-परिच्छेदः [।।*] तदस्म-

२०. कु(त्कु)लोत्थैर्म्मत्पादमि(पि)ण्डोपजीविभिर्व्वा कालान्तरेष्वपि न व्याघातः कार्य्य[:*] [।*]

२१. एवमाज्ञाप्त(ज्ञप्ते) यो(ऽ*)न्यथा कुर्य्यान्त(त्त)महं देहान्तर-गतो [ऽ*]पि महतावध्याने-

२२. न निर्द्दहे[यम् ।*]दु(उ)क्तञ्च भगवाता[2] परमर्षिणा वेद-व्यासेन [।*]पूर्व्व-दत्ता[ं*]

२३. द्विजातिभ्यो यत्नाद्रक्ष्य(क्ष) युधिष्ठिरः(र) [।*]मही [ं*]मह[ा]-मतां श्रेष्ठ दानाच्छ्रे-

२४. यो[ऽ*]नुपालन(नम्) ।[।१*] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः [।*] स(य)स्य य[3]

२५. यस्य यदा भूमिस्तस्य [तस्य*][4] तदा फलन्(म्) [।।२*]स्व)दत्ता[ं*] पर-दत्तां वा यो हरे-

---

. देवमित्रः पढ़ें।

२. भगवता पढ़ें।

३. अगली पंक्ति के आरम्भ में भूल से फिर 'य' उत्कीर्ण किया गया है।

४. यस्य दो बार आया है अतः तस्य भी दो बार आना चाहिए।

२६. त वसुन्धरा:(राम्)[।*] स विष्ठ[ा*]या[*] कृमिर्भूत्वा पित्रभि[१]
सह पच्यते [।।३*]

(तृतीय पट्ट)

२७. षष्टि: (ष्टि) व्व(व)[र्ष*]-सहस्राणि स्वर्ग्गे मोदति भ(भू)-
मिद: [।*] आच्छेत(त्ता)

२८. छ(चा)नु मन्त[ा*]म(च) त[ा*]न्येव[२] नरके वसे[त्*] [।।४*[
लिखितञ्च वक्काम[ा*]त्य-प्रन-

२९. प्त्रनत्रा(प्त्रा) भौगिक-नरदत्त-नप्ता(प्त्रा) भोगिक-रविदत्त-
पुत्रेन(ण) महा-

३०. सान्धिविग्रहिक-सुर्यदतेन[३][।*] भग्रहो दूतक [:*] [।।*]

---

१. पितृभि: पढ़ें ।
२. 'त' की बाएं बाजू की रेखा गोल होकर मिल गई है, जिससे यह अक्षर 'न' लगता है ।
३. सूर्यदत्तेन पढ़ें । 'त' के नीचे दूसरे 'त' का धुन्धला सा चिन्ह दिखाई देता है । 'न' के आगे फ्लीट ने विसर्ग पढ़ा है । संभवत: यह लेख की समाप्ति का सूचक चिह्न है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराज संक्षोभ का खोह ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त संवत् २०९

स्थान : मध्यप्रदेश के सतना जिले में खोह ग्राम के पास की घाटी से प्राप्त दो ताम्र-पट्टों पर उत्कीर्ण।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : छोडुगोमी नामक एक व्यक्ति की विज्ञप्ति पर महाराज संक्षोभ द्वारा ओपाणि ग्राम स्थित पिष्टपुरी देवी के मन्दिर के लिए ग्राम (की भूमि) के आधे भाग का दान।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 25; सरकार, SI, p. 394; पाण्डेय, HLI, p. 106.

(प्रथम पट्ट)

१. ओम्[1] नमो भगवते वासुदेवाय ॥ स्वस्ति नवोत्तरे[ऽ*]व्द(ब्द)-शतद्वये गुप्त-नृप-र[ा*]ज्य-भुक्तौ

२. श्रीमति प्रवर्द्धमान-विजय-राज्यो[2] महाश्वयुज-स[ं*]वत्सरे चैत्र-मास-शुक्ल-

३. पक्ष-त्त्रयोदश्य[ा*]मस्यां संव(व)त्सर-मास-दिवस-पूर्व्वायां[3][।*] चतुर्दश-विद्या-स्थान-विदि-

४. त-परमार्थस्य कपिलस्य'व[4] महर्षेः सर्व-तत्व(त्त्व)ज्ञस्य भर-द्वाज-सगोत्रस्य नृप-

---

१. यहाँ एक प्रतीक है। सरकार इसे सिद्धं का सूचक ग्रहण करते हैं।
२. 'राज्ये पढ़ें।
३. फ्लीट इससे आगे तिथौ जोड़ते हैं।
४. कपिलस्यैव पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. पि(ति)-परिव्राजक-सुशर्म्मणः कुलोत्पन्नेन महाराज-श्री-देवाढ्य-पुत्र-प्रनप्त्रा महारा-
६. ज-श्री-प्रभञ्जन-प्रनप्त्रा महाराज-श्री-दामोदर-नप्त्रा गो-सहस्र-हस्त्यश्व-हिरण्यानेक-
७. भूमि-प्रदस्य गुरु-पितृ-मातृ-पूजा-तत्परस्यात्यन्त-देव-व्रा(ब्रा)ह्मण-भक्तस्यानेक-समर-
८. शत-विजयिनः साष्टादशाटवीराज्याभ्यन्तरं डभाला[1]-राज्यमन्वया-गतं समडि[2]
९. पालयिष्णो(ष्णो)रनेक-गुण-विख्यात-यशसो महाराज-ग्री(श्री)-हस्तिनः सुतेन
१०. वर्णाश्रम-धर्म्म-स्थापना-निरतेन परम-भागवतेनात्यन्त-पितृ-भक्तेन स्व-वं-
११. शामोद-करेण महाराज-श्री-संक्षोभेन(ण) मातापित्रोरात्मनश्च पुण्याभि-
१२. व्रिद्धि(वृद्ध)ये छोडुगोमि-विज्ञाप्त्या तमेव च स्वग्ग(र्गं)-सो-पान-पंक्तिमारोपय-

(द्वितीय पट्ट)

१३. ता भगवत्याः पिष्टपुर्याः कारितक-देवकुले व(ब)लि-चरु-सत्रो-पयो-
१४. गार्थः(र्थं) खण्ड-स्फुटित-संस्कारार्थञ्च मणिनाग-पेठे श्रोपाणि-ग्राम-
१५. स्यार्द्धं चोर-द्रोहक-वर्ज्जः(र्ज्जं) ताम्रशासनेनातिसृष्टं(टम्) [।*] तदस्मत्कुलोत्थौ(त्थैः)म-
१६. त्पाद-पिण्डोपजीविभिर्व्वा कालान्तरेष्वपि न व्याघातः कार्य्यः [।*] एवमाज्ञा(ज्ञ)-

---

१. फ्लीट ने 'भा' का विकल्प 'हा' प्रस्तुत किया है।
२. फ्लीट सम्यक्, सम्पदि, सपदि विकल्प से संशोधन प्रस्तुत करते हैं। सरकार समधि सुझाते हैं जो अधिक संगत है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७. प्त(प्ते)[१] यो[ऽ*]न्यथा कुर्यात्तमहं देहान्तर-गतो[ऽ*]पि महता [ऽ*]वध्यानेन निर्द्दहेयं(यम्) [।।*]

१८. उक्तं च भगवता परमर्षिणा वेदव्यासेन व्यासेनः(न) [।*] पूर्व्व-दत्तां द्विजातिभ्यो

१९. यत्नाद्रक्ष युधिष्ठिरः(र) [।*] महीम्महिमता [*] श्रेष्ठ दानाच्छ्रे-यो[ऽ*]नुपालनः(नम्) [।।१*] बहुभिः[२]

२०. वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः [।*] यस्य यस्य यदा भूमि-स्तस्य तस्य तदा

२१. फलं(लम्) [।।२*] पष्टि वर्ष-सहस्राणि स्वर्ग्गे मोदति भूमिदः [।*] आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्ये-

२२. व नरके वसेत् [।।३*] भूमि-प्रदानान्ना(न्न) परं प्रदानं दानाद्वि-शिष्टं परिपालनञ्छ[३] [।*]

२३. सर्व्वे[ऽ*]तिसृष्टा [*] परिपाल्य भूमि[*] नृपा नृगाद्यास्त्रिदिवं प्रपन्नाः ।। लिखितञ्च[४]

२४. जीवित-नप्त्रा भुजंगदास-पुत्रेश्वरीदासेनेति[५] [।*] स्व-मुखाज्ञा [।*] चैत्र-दि २० ८[६] [।।*]

---

१. फ्लीट का विकल्प-आज्ञापिते ।
२. बहुभिर्व्वसुधा पढ़ें ।
३. परिपालनञ्च पढ़ें ।
४. फ्लीट यहाँ शासनम् जोड़ते हैं ।
५. फ्लीटः पुत्रेश्वरदा॰ ।
६. वही : ९ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खण्ड ४

गुप्तोत्तर-कालीन अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महानामन् का बोध-गया अभिलेख

गुप्त संवत् २६९

स्थान : बिहार के गया जिले में गया से लगभग दस किलोमीटर दक्षिण को प्रसिद्ध प्राचीन बौद्ध स्थल बोधगया से प्राप्त प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण। अब यह प्रस्तर-खण्ड इण्डियन म्यूजियम, कलकत्ता में सुरक्षित है।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : बौद्ध मुनि महानामन् द्वारा बोधिमण्ड (बोध-गया) में बुद्ध-मन्दिर का निर्माण।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 71.

१. ॐ[१] [।।*] व्याप्तो येनाप्रमेयः सकल-शशि-रुचा सर्व्वतः सत्व (त्त्व)-धातुः क्षुण्णाः पाषण्ड-योधास्सुगति-पथ-रुधस्तर्क्क-शास्त्राभियुक्ताः [।*] सम्पूर्ण्णो

२. धर्म्म-कोषः प्रकृति-रिपु-हृतः साधितो लोक-भूत्यै ।[२] शास्तुः शाक्यैक-व (ब)न्धोर्ज्जयति चिरतरं तद्यशस्सारतन्त्रम् ।।[१।।*] नैरोधीं शुभ-भावना-

३. मनुसृतः संसार-संक्लेश-जिन्मैत्रेयस्य करे विमुक्ति-वशिता यस्याद्भुता व्याकृता। निर्व्वाणावसरे च येन चरणौ दृष्टौ मुनेः

---

१. चिह्न द्वारा प्रदर्शित।

२. अनावश्यक चिह्न।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. पावनौ ।[1] पायाद्वः स मुनीन्द्र-शासन-धरः स्तुत्यो महाकाश्यपः ॥ [२॥*] संयुक्तागमिनो विशुद्ध-रजसः सत्वा(त्त्वा)नुकम्पोद्यताः शिष्या

५. यस्य सकृद्विचेरुमलां लङ्काचलोपत्यकाम् [।*] तेभ्यः शील-गुणान्विताश्च शतशः शिष्य-प्रशिष्याः क्रमाज्जातास्तुङ्ग-नरेन्द्र-

६. वंश-तिलकाः प्रोत्सृज्य राज्य-श्रियम् ॥[३॥*] ध्यानो-दयाहित-हितः शुभाशुभ-विवेक-कृद्विहत-मोहः सद्धर्म्मातुल-विभवो भवो व(ब)भूव

७. श्रमणस्तत ॥[४॥*] राहुलाख्यश्च तच्छिष्य उपसेनो यतिर्यतः [।*] महानामा क्रमादेवमुपसेनस्ततोपरः ॥[५॥*] वात्सल्यं शरणा-

८. गतस्य सततं दीनस्य वैशेषिकं व्यापत्सायक-सन्तति-क्षत-धृते-रार्त्तस्य चापत्यकं (कम्) । क्रूरस्याहित-कारिणः प्रविततं व(ब)न्धोर्यथा-

९. भावतः एवं सच्चरितोद्भवेन यशसा यस्याचितं भूतलं[2] ॥[६॥*] आम्र-द्वीपाधिवासी पृथु-कुल-जलधिस्तस्य शिष्यो महीयान्

१०, लङ्का-द्वीप-प्रसूतः परहित-निरतः सन्महानाम-नामा । तेनोच्चै-र्व्वो(र्ब्वो) धि-मण्डे शशिकर-धवलः सव्र्वतो मण्डपेन ।[3]

११. कान्तः प्रासाद एष स्मर-व(ब)ल-जयनिः कारितो लोक-शास्तुः ॥ [७॥*] व्यपगत-विषय-स्नेहो हत-तिमिर-दशः प्रदीप-वदसङ्गः [।*]

---

१. अनावश्यक चिह्न ।
२. भूतलम् पढ़ें ।
३. यहाँ अर्धविराम की रेखा अनावश्यक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२. कुशलेनानेन जनो वो(बो)धि-सुखमनुत्तरं भजताम् ॥[८॥*]
यावद्ध्वान्तापहारी प्रवितत-किरणः सर्व्वतो भाति भास्वान्या-
वत्पूर्ण्णो[ऽ*]म्बु-

१३. राशिः फणि-फण-कुटिलैरूर्म्मि-चक्रैस्समन्तात् [।*] यावच्चेन्द्रा-
धिवासो विविध-मणि-शिला-चारु-शृङ्गः सुमेरुः शोभाढ्यम्

१४. तावदेतद्भवनमुरु-मुनेः शाश्वतत्वम्प्रयातु ॥ [९॥*] सम्बत्[१]
२०० ६० ९ चैत्र शुदि[२] ७ ॥

---

१. संवत् पढ़ें ।
२. शुक्लदिवसः का संक्षेप ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यशोवर्मदेव-कालीन नालन्दा अभिलेख

स्थान : बिहार के प्रसिद्ध स्थान नालन्दा से प्राप्त एक प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण ।

लिपि : अफसद अभिलेख के सदृश उत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : महाराज यशोवर्मदेव के मन्त्री के पुत्र मालाद द्वारा नालन्दा में बालादित्य-निर्मित बुद्ध के मन्दिर के लिए दान ।

संदर्भ : हीरानन्द शास्त्री, EI, 20, p.3 7.

१. ॐ[१] [।।*] सन्सा(संसा)र-स्थिर-व(ब)न्धनात्कृत-मतिर्मोक्षाय यो देहिनां कारुण्यात्प्रसभं शरीरमपि यो दत्वां(त्त्वा) तुतोषार्थिने [।*] सेन्द्रैर्यः स्व-शिरः-किरीट-मकरी-घृष्टांह्रि[२]-

२. पद्मः सुरैस्तस्मै सर्व्वं-पदार्थ-तत्व(त्त्व)-विदुषे वु(बु)द्धाय नित्य नमः ।।[१।।*] सर्व्वेषां मूर्ध्नि दत्वा(त्त्वा) पदमवनिभृतामुद्गतो भूरि-धामा निर्स्त्रिशांशु-प्रदान-प्रदलित-निखिलाराति-घो-

३. रान्धकारः [।*]ख्यातो यो लोक-पालः सकल-वसुमती-पद्मिनी-वो(बो)ध-हेतुः श्रीमान्भास्वानिवोच्चैस्तपति दिशि-दिशि श्री-यशोवर्म्मदेवः ।।[२।।*] तस्यासौ परम-प्रसाद-म-

४. हितः श्रीमानुदाराशयः पुत्रो मार्ग-पतेः प्रतीत-तिकिनोदीची-पते-र्मन्त्रिणः [।*] मालादो भुवि नन्दनो[ऽ*]रि-दमनो यो व(ब)न्धु-मत्यास्सुधीर्दीनाशा-परिपूरणै-

---

१. चिह्न मात्र ।

२. 'घृष्टाङ्घ्रि पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. क-चतुरो धीरो विशुद्धान्वयः ॥[३॥*] यासावूर्जित-वैरि-भू-प्रविगलद्दानाम्वु(म्बु)-पानोल्लसन्माद्यद्भृङ्ग-करीन्द्र-कुम्भ-दलन-प्राप्त-श्रियाम्भूभुजाम् । नालन्दा ह-

६. सतीव सर्व्व-नगरीः शुभ्राभ्र-गौर-स्फुरच्चैत्यांशु-प्रकरैस्सदागम-कला-विख्यात-विद्वजना ॥[४॥*] यस्यामम्वु(म्बु)धरावलेहि-शिखर-श्रेणी वि-

७. हारावली मालेवोर्ध्व-विराजिनी विरचिता धात्रा मनोज्ञा भुवः [।*] नाना-रत्न-मयूख-जाल-खचित-प्रासाद-देवालया सद्विद्याधर-सङ्घ-

८. रम्य-वसतिर्धत्ते सुमेरोः श्रियम् ॥[५॥*] अत्रासह्य-पराक्रम-प्रणयिना जित्वा[ऽ*]खिलान्विद्विषो वा(बा)लादित्य-महानृपेण सकलम्भुक्त्वा च भू-मण्डलम् [।*]

९. प्रासादः सुमहानयम्भगवतः शौद्धोदनेरद्भुतः कैलासाभिभवेच्छयेव धवलो मन्ये समुत्थापितः ॥[६॥*] अपि च ॥ न्यक्कुर्वन्निन्दु-कान्तिन्तुहिन-गि-

१०. रि-शिरः-श्रेणि-शोभान्निरस्यन् शुभ्रामाकाश-गङ्गान्तदनु मलिन-यन्मूकयन्वादि-सिन्धून् । मन्ये जेतव्य-शून्ये भुवन इह वृथा भ्रान्तिरित्यक-

११. लय्य भ्रान्त्वा क्षोणीमशेषाञ्जित-विपुल-यशस्त (स्स्त)म्भ उच्चै-स्स्थितो वा ॥[७॥*] अत्रादायि निवेद्यमाज्य-दधिमद्दीपस्तथा भासुरश्चातुर्जातक-रेणु-मिश्रममल-

१२. न्तोयं सुधा-शीतलं¹ । साध्वी चाक्षत-नीविका भगवते वु(बु)द्धाय शुद्धात्मने मालादेन यथोक्त-वंश-यशसा तेनातिभक्त्या

---

१. °लम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वयं[1] ।।[८।।*]

१३. यो भिक्षु-सङ्घस्य भूयो दत्तन्तेनैव सम्यग्व(ग्ब)हु-घृत-दधिभिर्व्य-
ञ्जनैर्युक्तमन्नं[2] भिक्षुभ्यस्तच्चतुर्भ्यो व(ब)हु-सुरभि चतुर्जात-
कामोदि नित्यं तोयं स[त्रे] विभक्तं पुनरपि

१४. विमलं भिक्षु-सङ्घाय दत्तम् ।।[९।।*] तेनैवाद्भु ुत-कर्म्मणा न्निज-
मिह क्रीत्वा[ऽऽ*]र्य-सङ्घान्तिकान्मुक्त्वा चीवरिकां प्रदाय
विधिना सामान्यमेकन्तथा । कालम्प्रेरयितुं सुखे-

१५. न लयनन्दत्तं स्व-देशम्वि(शं वि)ना तेभ्यो नर्द्दरिकावधेश्च परत:
शाक्यात्मजेभ्य: पुन: ।।[१०।।*] दानं यदेतदमलङ्ग ुण-शालि-
भिक्षु-पूर्ण्णेन्द्रसेन वचन-प्रतिवो(बो)धितेन । तेन प्रतीत-

१६. यशसा भुवि निर्म्मलाया भ्रात्रा व्यधायि शरदिन्दु-निभाननाया:
।।[११।।*] पित्रोर्भ्रातु: कलत्र-स्वसृ-सुत-सुहृदान्तस्य धर्म्मैक-
धाम्नो दत्तं दानं यदेतत्सकलमतिरसेनायुरा-

१७. रोग्य-हेतो: सर्व्वेषाञ्जन्म-भाजां भव-भय-जलधे: पर-संतारणार्थं
श्रीमत्सम्वो(म्बो)धि-कल्पद्रुम-विपुल-फल-प्राप्तये चानुमोद्यम्
।।[१२।।*] चान्द्रो यावच्चकास्ति स्फुरदुरु-किरणो लो-

१८. क-दीपश्च भास्वान् एषा यावच्च स-जलधि-वलया द्यौश्च
दत्तावकाशा । यावच्चैते महान्तो भुवन-भर-धुरान्धारयन्तो
महीध्रास्तावच्चन्द्रावदाता धवलयतु दिशाम्म-

१९. ण्डलं कीर्त्तिरेषा ।।[१३।।*] यो दानस्यास्य कश्चित्कृत-जगद-
वधेरन्तरायं विदध्यात्साक्षाद्वज्रासनस्थो जिन इह भगवानन्तर-
स्थ: सदा[ऽऽ*]स्ते । वा(बा)लादित्येन राज्ञा प्रदलित-रि-

---

१. स्वयम् पढ़ें ।
२. °मन्नम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२०. पुणा स्थापितश्चैष शास्ता पञ्चानन्तर्य-कर्तुर्गतिमतिविष-
मां-धर्म्म-हीनः स यायात् ।।[१४।।*] इत्येवं शीलचन्द्र-प्रथित-
करणिक-स्वामिदत्तावलङ्घ्यां सङ्घाज्ञां मूर्ध्नि कृत्वा श्रुत-लव-

२१. विभवावप्यनालोच्य भारं[1]। हृद्यामेतामुदारां त्वरितमकुरुताम-
प्रपञ्चां प्रशस्ति वाञ्छेतां किन्न पंगू शिखरि-तरु-फलावाप्ति-
मुच्चैः करेण ।।[१५।।*]

---

१. भारम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्रोणसिंह का भमोद्र मोहोता ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त-वलभी संवत् १८३

स्थान : गुजरात प्रदेश में भावनगर के निकट भमोद्र मोहोता ग्राम के एक खेत में से प्राप्त ताम्र-पट्ट पर उत्कीर्ण।

लिपि : कुटिलाक्षर ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : वलभी के महाराज द्रोणसिंह द्वारा पाण्डुराज्ञी देवी के निमित्त त्रिसंगमक ग्राम का दान।

संदर्भ : ए. एम. टी. जैक्सन, JBBRAS, 20, No. 54, p. 1 ff; एल. डी. बॉर्नेट, EI, 16, pp. 17-19; सरकार, SI, p. 426.

१. ॐ[1] स्वस्ति [।।*] वलभीतः परमभट्टारकपादानुध्यातो महाराज-द्रोणसिंह×कुशली स्वविषय[2] सर्व्वानेवास्मत्सन्तकायुक्तक-विनियुक्तक-मह-

२. त्तर-द्राङ्गिक-ध्रुवस्थानाधिकरणं[3] चाट-भटादी[ं*]श्च समाज्ञापयत्यस्तु वो विदितं यथा मया[4] विजयायुद्ध(र्द्धं)म्मर्-फल-यशोविषय-व्रि(वृ)द्ध-

३. ये नो वर्षसहस्राय सर्व्व-कल्याणाभिप्राय-संपत्तये च हस्तवप्रा-

१. सरकार इसे सिद्धम् का चिह्न समझते हैं।
२. सरकार का संशोधन : स्वविषये; बॉर्नेट : स्वविषयकान्।
३, बॉर्नेट का संशोधन : °करणिक-चाट°।
४, बॉर्नेट : महा°।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हरण्यां-श्री-भगवत्या पाण्डुराज्यायाः[१] माता-पित्रो पुण्या-
प्यायन-नि-

४. मित्तमात्मनश्च पुण्याभिवृद्धये[२] आचन्द्रार्कार्ण्णव-क्षिति-स्थिति-सरित्पर्व्वत-समकालीनं बलि-चरु-वैश्वदेवाद्यानां क्रियाणां समुत्सर्प्पणार्त्थं [।]

५. त्रिसंगमक-ग्रामो गन्ध-धूप-दीप-तैल्य[३]-माल्योपयोज्यं देवकुलस्य च पतित-विशीर्ण्ण-प्रतिसंस्कारणार्त्थं[४] सत्त्रोपयोज्ये(ज्य)स्सहिरण्या-

६. देयस्सहान्यैश्चादानैर[५]चाट-भट-प्रावेश्यं ब्रह्मदेयस्थित्त्या(त्या) उदकातिसर्ग्गेण निसृष्टः [।*]यतो[ऽ*] स्योपचितन्यायत[६] भुञ्जतः[७] कृश(ष)तः प्रदिशत-

७. × कर्षापयतो वा न केनचिस्स्वल्पा[८] बाधा विचारणा वा कार्य्या [।*] यश्चाछिद्यमानमनुमोदोयुरसो[९] महापातकैस्सोपपातकैश्च

८. संयुक्तास्मद्वंशागामि[१०]-राजभिरन्यैश्च सामान्यं भूमिदायमवेत्य[ा*]-स्मद्दायो[ऽ*]नुमन्तव्यो[ऽ*]पि चात्र व्यास-कृताः श्लोका भवन्ति [।*]

९. षष्टिं वर्ष सहस्राणि स्वर्ग्गे मोदति भूमिदः [।*] आच्छेत्ता

---

१. °राज्ञ्याः पढ़ें । बॉर्नेट का संशोधन : राजाया : -
२. बॉर्नेट : व्रद्धये ।
३, तैल पढ़ें ।
४, बॉर्नेट का पाठ तथा सरकार का संशोधन 'संस्करणार्त्थं' ठीक नहीं।
५. र' पंक्ति के नीचे पीछे जोड़ा गया है ।
६. ०स्योचितन्यायतः पढ़ें । बॉनेट का षंशोधनः ०न्यायेन ।
७. बॉर्नेट तथा सरकारः 'भुजेंतः' । दोनों ही ने 'ञ्ज' को नहीं पहचाना
८, केनचित्स्वल्पा पढ़े ।
९. ०नुमोदेतासौ पढ़ें ।
१०, संयुक्तस्स्यात् । अस्म० पढ़ें ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चानुमन्ता च ।[1] तान्येव नरके वशे[से]त् [॥१*] स्व-दत्तां परदत्त[ां*] वा यो हरेत वसुन्धरां [।*][2]

१०. गवां सतसहस्रस्य हन्तु [ऽ*]प्राप्नोति किल्बिषं(षम्) [॥२*] वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजिभि[3] श(स)गरादिभि[:।*] यस्य यस्य यदा भूमि[स्*]तस्य तस्य तद[ा*]फलं (लम्) [॥३*]

११. भीरुवकदेवकर्म्मान्तिक:[4] [।*] सं १०० ८० ३ श्रावण-शुद्ध-१० ५ [।*] स्वयमाज्ञा[5] [।*] लिखितं षष्ठिदत्त-पुत्रेण कुम[ा*]-रिल-क्षत्रिकेन(ण) [॥*]

---

१. रेखा अनावश्यक ।

२, ०राम् पढ़ें ।

३. राजभि: पढ़ें ।

४, रु तथा व के बीच ग ? उत्कीर्ण करके मिटा दिया गया है । बॉर्नेट तथा सरकार देवी-कर्म्मान्तिक संशोधन करते हैं । किन्तु मूल लेख में यि में से इ की मात्रा को काटा गया है । अत: भीरुवकदेव, कर्म्मान्तिक पाठ अधिक अच्छा हैं ।

५, स्वमुखाज्ञा के स्थान पर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदित्यसेन-कालीन शाहपुर सूर्य-प्रतिमा अभिलेख

हर्ष संवत् ६६

स्थान : बिहार के पटना जिले में सकरी नदी के दक्षिण तट पर शाहपुर ग्राम से प्राप्त सूर्य-प्रतिमा की पीठिका पर उत्कीर्ण। इस समय यह प्रतिमा उपलब्ध नहीं है।

लिपि : अफसद अभिलेख के समान कुटिलाक्षर ब्राह्मी।

विषय : बलाधिकृत सालपक्ष द्वारा भूमिदान तथा नालन्दा में सूर्य-प्रतिमा की स्थापना। यह प्रतिमा नालन्दा से शाहपुर ले जाई गई होगी।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, 15, p 12; फ्लीट, CII, 1II, No. 43.

१. ······ख······ल······ढ·····ग······चन्द्रक्षितिकालं यावत्प्रति[१]-
पादितं [।।*]

२. ॐ सम्वत् ६० ६ मार्ग्ग[२] शु[२] दि[२] ६ (?) अस्यान्दिवस-मास-
संवत्सरानुपूर्व्वायां श्री-आदित्यसेन[३]-

३. [देव]-राज[ये] ना(?)-लन्द (?)-महाग्रहारे साधु[ना]
व(ब)लाधिकृत-सालपक्षेण दे[य][४]-धर्म्मोऽयं प्रतिष्ठितं (तः)

४. [मातापित्रोरा]त्मनश्च पुण्याभिवृद्धये [।।*]

---

१. प्र में 'र' दिखाई नहीं देता।
२. मार्गशीर्ष शुक्ल दिवस के संक्षेप।
३. फ्लीट के अनुसार यहाँ सन्धि होकर श्यादित्य···होना चाहिए।
४. य उत्कीर्ण नहीं किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदित्यसेन का अफसद अभिलेख

स्थान : बिहार के गया जिले में नवादा नगर से लगभग २४ किलोमीटर उत्तर पूर्व को सकरी नदी के दक्षिण तट के निकटवर्ती अफसद ग्राम से प्राप्त एक प्रस्तरखण्ड पर उत्कीर्ण जो अब उपलब्ध नहीं परन्तु लाल चाक पर बनाई गई इसकी प्रतिकृति कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी। अक्षरों की लम्ब रेखाएं नीचे से नुकीली होने के कारण इसे कुटिल लिपि कहते हैं।

भाषा : संस्कृत।

विषय : उत्तरवर्ती गुप्तवंश के प्रथम आठ राजाओं का वर्णन। आठवें राजा आदित्यसेन द्वारा विष्णु-मन्दिर, उसकी माता श्रीमती द्वारा मठ तथा पत्नी कोणदेवी द्वारा तालाब निर्माण।

संदर्भ : फ्लीट,, CII, III, No. 42; पाण्डेय, HL1, p. 149; दिसकलकर, SSI, pp. 165-76.

१. ॐ [।।*] आसीद्दन्ति-सहस्र-गाढ-कटको विद्याधराध्यासितः सद्वंशः स्थिर उन्नतो गिरिरिव श्रीकृष्णगुप्तो नृपः। दृप्ताराति-मदान्ध-वारण-घटा-कुम्भ-स्थलीः क्षुन्दता यस्यासंख्य-रिपु-प्रताप-जथिना दोष्णा मृगेन्द्रायितं (तम्)।।[१*] सकलः कलङ्क-रहितः

२. क्षत-तिमिरस्तोयधेः शशाङ्क इव[१]। तस्मादुदपादि सुतो देवः श्री-हर्षगुप्त इति ।।[२*] यो योग्या-काल-हेलावनत-दृढ-धनुर्भीम-वा-

---

१. 'इ' के लिखने की प्रकार द्रष्टव्य है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(बा)णौघ-पाती मूर्तै(त्तैं): स्व-स्वामि-लक्ष्मी-वसति-विमुखितै-
रीक्षितः सास्रु (श्रु)-पातं[१]। घोराणामा-

३. हवानां लिखितमिव जयं श्लाघ्यमाविर्द्दधानो वक्षस्युद्दाम-शस्त्र-
व्रण-कठिन-किण-ग्रन्थि-लेखा-च्छलेन ॥[३*] श्री-जीवितगुप्तो
[ऽ*] भूत्क्षितीश-चूडामणिः सुतस्तस्य। यो दृप्त-वैरि-नारी-मुख-
नलिन-वनैक-शेशेरकरः[२] ॥[४*]

४. मुक्तामुक्त-पयः-प्रवाह-शिशिरासूत्तुङ्ग-ताली-वन-भ्राम्यद्दन्ति-करा-
वलून-कदली-काण्डाषु वेलास्वपि। श्च्योतत्स्फार-तुषार-निर्झर-
पयः-शीते[ऽ*]पि शैले स्थितान्यस्योच्चैर्द्विषतो मुमोच

५. न महाघोरः प्रताप-ज्वरः ॥[५*] यस्यातिमानुषं कर्म्म दृश्यते वि-
स्मयाज्जनौघेन। अद्यापि कोशवर्धनतटात्प्लुतं पवनजस्येव ॥[६*]
प्रख्यात-शक्तिमाजिषु पुरः-सरं श्री-कुमा-

६. रगुप्तमिति। अजनयदेकं स नृपो हर इव शिखि-वाहनं तनयं
॥[७*] उत्सर्प्पद्वात-हेला-चलित-कदलिका-वीचि-माला-वितानः
प्रोद्यद्धूली-जलौघ-भ्रमित-गुरु-महामत्त-

७. मातंग[३]-शैलः। भीमः श्रीशानवर्म्म-क्षितिपति-शशिनः सैन्य-
दुग्धोद-सिन्धुर्ल्लक्ष्मी-संप्राप्ति-हेतुः सपदि विमथितो मन्दरीभूय
येन ॥[८*] शौर्य-सत्य-व्रत-धरो यः प्रयाग-गतो व-[४]

८. ने। अम्भसीव करीषाग्नौ मग्नः स पुष्प-पूजितः ॥[९*]श्री-
दामोदरगुप्तो[ऽ*]भूत्तनयस्तस्य भूपतेः। येन दामोदरेणेव दैत्या
इव हता द्विषः ॥[१०*] यो मौखरेः समितिषूद्ध-

---

१. पातम् पढ़ें।
२. शिशिर पढ़ें। मूल को फ्लीट ने शेसेर पढ़ा है।
३. मातङ्ग पाठ अच्छा है।
४. फ्लीट : ध।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९. त-हूण-सैन्या वल्गद्घटा विघटयन्नुरु-वारणानां[१]। संमूर्च्छितः सुर-वधु(ध)र्वरयं(यन्) ममेति तत्पाण[२]-पङ्कज-सुख-स्पर्शाद्विवु-(बु)द्धः ।।[११*] गुणव[द्*]-द्विज-कन्याना[ं*]नानालंकार-यौवन-

१०. वतीनां[३]। परिणायितवान्स नृपः शतं निसृष्टाग्रहाराणां[४] ।।[१२*] [श्री]महासेनगुप्तो [ऽ*]भूत्तस्माद्वीराग्रणी[:*] सुतः। सर्व्व-वीर-समाजेषु लेभे यो धुरि वीरता[ं*] [।।१३*] श्र[ी] मत्सुस्थितवर्म्म-युद्ध-विजय-

११. श्लाघा-पदाङ्कं मुहुर्यस्याद्यापि विवु(बु)द्ध-कुन्द-कुमुद-क्षुण्णा-च्छहारा[ायि]त[ं*]। लौहित्यस्य त[टे]षु[५] [शी]तल-त[ले]-षूत्फुल्लनाग-द्रुमच्छाया-सुप्त-विवु(बु)द्ध-[सि]द्ध-[मि]थुनैः स्फीतं यशो गीयते ।।[१४*]वसुदेवा-

१२. दिव तस्माच्छ्री-सेवन-[शो? भो]दित-चरण-युगः। श्री-माधव-गुप्तो[ऽ*]भून्माधव इव विक्रमैक-रस[:।।] [१५*] [———⏑⏑] नुस्मृतो धुरि रणे श्लाघवतामग्रणीः सो(सौ)जन्यस्य निधानमर्थ-निध(च)-

१३. य-त्यागो[द्*]धुराणां वर[६][:]। लक्ष्म[ी]-स[त्य-स]रस्वती-कुल-गृ[हं] धर्म्मस्य[७] सेतुर्दृढः पूज्यो ना[स्ति] स [भू]-तले [⏑⏑ ⏑———⏑]ल[:?] सद्गुणैः ।।[१६*] च[क्रं] पाणि-तलेन सो[ऽ*]प्युदवहत्तस्यापि शार्ङ्ग[ं*]धनु-

---

१. नाम् पढ़ें।
२. पाणि पढ़ें।
३. नाम् पढ़ें।
४. णाम् पढ़ें।
५. 'ट' स्पष्ट है। केवल 'ए' की मात्रा दिखाई नहीं देती।
६. फ्लीट 'धरः' पढ़कर 'वरः' संशोधन करते हैं।
७. फ्लीट : धर्मस्य ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. नाशायासुहृदा[*]सुखाय सुहृदां तस्याप्यसिर्नन्दकः । प्राप्ते विद्विषतां वधे प्रतिह[तं?]तेनाप[--⌣-----⌣⌣-⌣-] ढ(?)रि(?)म(?) [--]न्याः प्रणेमुर्ज्जनाः [॥१७*] आजौ मया विनिहितां व(ब)-

१५. लिनो द्विष[न्तः] कृ[त्यं] न म(मे)[ऽ*]स्त्यपरमित्यवधार्य वीरः [।] श्री-हर्षदेव-निजसंगम-वाञ्छया च (?) [--⌣-⌣⌣⌣-⌣⌣---⌣--॥] [१८*] श्रीमन्व(न्ब)भूव दलितारि-करीन्द्र-कुम्भ-मुक्ता-रजः[1]

१६. पटल-पांसुल-मण्डलाग्रः । आदित्यसेन इति तत्तनयः क्षितीश-चूडाम[णि]र्द्द [⌣⌣-⌣⌣-⌣--॥] [१९*] [---⌣⌣-⌣] मागतमरिध्वंसोत्थमाप्तं यशः श्लाघ्यं

१७. सर्व्वधनुष्मतां पुर इति श्लाघां परा बिभ्रति[2] । आशीर्व्वाद-परं-परा चि(?)र-सक्त(?)द्[--⌣--⌣-- ---⌣⌣-⌣-⌣⌣⌣---⌣] यामासम (?) ॥[२०*] आजो स्वेद-च्छलेन ध्व-

१८. ज-पट-शिखया मार्ज्जतो दान-पङ्कं खङ्गं क्षुण्णेन मुक्ता-शकल-सिकत[ली]कृ(?)त्य(?) [--⌣-- ----⌣--⌣⌣⌣⌣⌣⌣-] मत(त्त)-मा[तं]ग-घातं तद्गन्धाकृष्त[3] सर्प्पद्व(द्ब)-

१९. हल-परिमल-भ्रात्त(न्त)-मत्तालि-जालं[4] ॥[२१*]आव(ब)द्ध-भीम-विकट-भ्रुकुटी-कठोर-संगा(ग्रा)म [-⌣⌣⌣-⌣⌣--⌣--।--⌣-⌣⌣]व-वल्लभ-भृत्य-वर्ग्ग-गोष्ठीषु पेश-

---

१. 'र' के आगे एक अनावश्यक बिन्दु उत्कीर्ण है ।

२. बिभ्रति पढ़ें ।

३- कृष्ट पढ़ें । फ्लीट ने मूल को ही कृष्ट पढ़ा है ।

४. जालम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२०. लतया परिहास-शीलः ॥[२२*] सत्य-भर्त्तृ-व्रता यस्य मुखोप-
ध[ा]न-तापसी । प[रि]हास [–⌣––––––––––⌣–⌣–॥]
[२३*] [––––⌣–]ज्ञः सकलरिपु-व(ब)ल-ध्वंस-हेतुर्ग्गरी-

२१. यान्निर्स्त्रिशोत्खात-घात-श्रम-जनित-जडो[ऽ*]प्यूर्ज्जित-स्व-प्रतापः।
युद्धे मत्तेभ-कुम्भ-स्थ[ल⌣⌣⌣⌣––⌣– - ⌣ - - - -]
[श्वे]तातपत्र-स्थगित-वसुमती-मण्डलो लो-[1]

२२. क-पालः ॥[२४*] आजौ मत्त-गजेन्द्र-कुम्भ-दलन-स्फीत-स्फुरद्दो-
र्युगो ध्वस्तानेकरिपुप्रभाव-[व⌣---]यशोमण्डलः । न्यस्ताशेष-
नरेन्द्र-मौलि-चरण-स्फार-प्रतापान-

२३. लो लक्ष्मीवान्समराभिमान-विमल-प्रख्यात-कीर्त्तिर्नृपः ॥[२५*]
येनेयं शरदिन्दु-विम्ब[2]-धवला प्रख्यात-भूमण्डला लक्ष्मी-संगम-
कांक्षया सुमहती कीर्त्तिश्चरं कोपिता । याता सा-

२४. गर-पारमद्भुततमा सापत्न्य-वैरादहो तेनेदं[3] भवनोत्तमं क्षिति-
भुजा विष्णोः कृते कारितं[4]॥ [२६*] तज्जनन्या महादेव्या
श्रीमत्या कारितो मठः । धार्मिकेभ्यः[5] स्वयं दत्तः सुरलो-

२५. क-गृहोपमः ॥[२७*]शंखेन्द-स्फटिक-प्रभा-प्रतिसम-स्फार-स्फुर-
च्छीकरं नक्र-क्रान्ति-चलत्तरङ्गविलसत्पक्षि-प्रनृत्यत्तिमि । राज्या
खानितमद्भुतं सुतपसा पेपीयमानं

२६. जनैस्तस्यैव प्रिय-भार्यया नरपतेः श्री-कोणदेव्या सरः ॥ [२८*]

---

१. यहाँ एक पड़ी रेखा अनावश्यक है ।
२. बिम्ब पढ़ें ।
३. 'ने' और 'दं' के बीच अनावश्यक बिन्दु ।
४. तम् पढ़ें ।
५. पलीट : केभ्य ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यावच्चन्द्र-कला हरस्य शिरसि श्रीः शार्ङ्गिणो वक्षसि व्र(ब्र)-ह्मास्ये च सरस्वती कृत-

२७. [⏑ - - - ⏑ - - ⏑ -] । [भोगे] भूभुजगाधिपस्य च तडिद्या-वद्घनस्योदरे तावत्कीर्तिमिहातनोति धवलामादित्यसेनो नृपः ।।[२९*] सूक्ष्मशिवेन गौडेन प्रशास्तिर्व्विकटाक्षरा ।। (।)

२८. [- - -] मा मिता सम्यग्धार्मिकेण सुधीमता ।। [३०*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धरसेन (द्वितीय) का मालिया ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त-वलभी संवत् २५२

स्थान : गुजरात के जूनागढ़ नगर से ३७ किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में मालिया नगर से प्राप्त दो ताम्र-पट्टों पर उत्कीर्ण ।

लिपि : छठी शताब्दी ईसवी की सौराष्ट्र अथवा काठियावाड़ की प्रतिनिधि लिपि, दक्षिणी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : मैत्रक कुल के राजा धरसेन (द्वितीय) द्वारा ब्राह्मण रुद्रभूति को पञ्चमहायज्ञ के लिए अन्तरत्रा, डोम्भिग्राम तथा वज्रग्राम नामक तीन ग्रामों में भूमिदान ।

संदर्भ : फ्लीट, CII, III, No. 38.

(प्रथम पट्ट)

१. ॐ स्वस्ति वलभीतः प्रसभ-प्रणतामित्राणां मैत्रकाणामतुल-बल-सपत्न[1]-मण्डलाभोग-संसक्त-संप्रहार-शत-लब्ध-प्रतापः

२. प्रतापोपनत-दान-मानार्ज्जवोपार्ज्जितानुरागानुरक्त-मौलभृत-मित्र-श्रेणी-बलावाप्त-राज्य-श्रीः परम-माहेश्वरः श्री-सेनापति-

३. भटार्क्कः [।।*] तस्य सुतस्तत्पाद-रजो[ऽ*]रुणावनत-पवित्रीकृत-शिराः शिरोवनत-शत्रु-चूडामणि-प्रभा-विच्छुरित-पाद-नख-पङ्क्तिदीधितिर्द्दी-

४. नानाथ-कृपण-जनोपजीव्यमान-विभवः परममाहेश्वरः श्री-सेना-पति-धरसेनस्तस्यानुजस्तत्पाद-प्रणाम-प्रशस्ततर-विमल-

---

१. फ्लीट : संपन्न ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. [मौलि*][१]-मणिर्म्मन्वादि-प्रणीत-विधि-विधान-धर्म्मा धर्म्मराज इव विहित-विनय-व्यवस्था-पद्धतिरखिल-भुवन-मण्डलाभोगैक-स्वामिना-परम-स्वामिना

६. स्वयमुपहित-राज्याभिषेकः महा-विश्राणनावपूत-राज्य-श्रीः परम-माहेश्वरो महाराज-द्रोणसिंहः सिंह इव [॥*] तस्यानुजः स्व-भुज-

७. वल-पराक्रमेण पर-गज-घटानीकानामेक-विजयी शरणैषिणां शरणमववोध्धा[२] शास्त्रार्थ-तत्वा(त्त्वा)नां कल्पतरुरिव सुहृत्प्र-

८. णयिनां यथाभिलषित-काम-फलोपभोगदः परमभागवतः श्री-महाराज-ध्रुवसेनस्तस्यानुजस्तच्चरणारविन्द-प्रणति-प्र-

९. विधौताशेष-कल्मषः सुविशुद्ध-व्य(स्व)-चरितोदक-प्रक्षालित-सकल-कलि-कलङ्कः प्रसभ-निर्ज्जितारा‍ति-पक्ष-प्रथित-महिमा

१०. परमादित्य-भक्तः श्री-महाराज-धरपट्टस्तस्यात्मजस्तत्पाद-सपर्य्यावाप्त-पुण्योदय[:*] शैशवात्प्रभृति-खड्ग-द्वितीय-बाहुरे-

११. व समद-पर-गज-घटा-[ऽऽ*]स्फोटन-प्रकाशित-सत्व(त्त्व)-निकषः तत्प्रभाव[३]-प्रणतारा‍ति-चूडारत्न-प्रभा-संसक्त-सख्य(व्य)-पा-

१२. द-नख-रश्मि-संहति[:*] सकल-स्मृति-प्रणीत-मार्ग्ग-सम्यक्परि-पालन-प्रजा-हृदय-रञ्जनादन्वर्थ-राज-शब्दो रूप-कान्ति-स्थैर्य्य-

१३. गाम्भीर्य्य-बुद्धि-संपद्भिः स्मर-शशाङ्कार्द्रि(द्र)राजोदधि-त्रिदश-गुरु-धने[शा*]नतिशयाना(नो)[ऽ*]भय-प्रदान-परतया तृण-व-

---

१. धरसेन (द्वितीय) के भर ताम्र-पट्ट अभिलेख में यह पाठ मिलता है। उसी के आधार पर यह यहाँ जोड़ा गया है।

२. °वबोद्धा पढ़ें।

३. यहां त् के विषय में फ्लीट की शङ्का निराधार है। वास्तव में त् सयुक्त अक्षर 'त्प्र' में उचित स्थान पर उत्कीर्ण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. दपास्त[ा*]शेष-स्व-कार्य्य-फल: पादचारीव सकल-भुवन-मण्डला-
भोग-प्रमोद: परममाहेश्वर: श्री-महारा-

१५. ज-गुहसेन: [।।*] तस्य सुतस्तत्पाद-नख-मयूख-संतान-निर्वृत्त-
जाह्नवी-जलो(लौ)घ-विक्षालिताशेष-कल्मष: प्रणयि-शत-

१६. सहस्रोपजीव्य-भोग-संपत् रूप-लोभादिवाश्रृ(श्रि)तस्सरसमा-
भिगामिकैर्गुणै[:*] सहज-शक्ति-शिक्षा-विशेष-विस्मा-

१७. पिताखिल-धनुर्द्धर: प्रथम-नरपति-समतिसृष्टानामनुपालयिता
धर्म्म्य-दायानामपाकर्त्ता

१८. प्रजोपघात-कारिणामुपप्लवानां दर्शयिता श्री-सरस्वत्योरेकाधि-
वासस्य संहताराति-

(द्वितीय पट्ट)

१९. पक्ष-लक्ष्मी-परिक्षोभ[1]-दक्ष-विक्रम: क्रमोपसंप्राप्त विमल-पार्थिव-
श्री: परममाहेश्वर: महाराज-

२०. श्रि(श्री)-धरसेन: कुशली सर्व्वानेवायुक्तक-विनियुक्तक-द्राङ्गिक-
महत्तर-चाट-भट-ध्रुवाधिकरणिक-दाण्डपाशिक-

२१. राजस्थानीय-कुमारामात्यादीनन्यांश्च यथा-संबध्यमानकान्
समाज्ञापयत्यस्तु व: संविदितं यथा मया माता-

२२. पित्रो: पुण्याप्यायनायात्मनश्चैहिकामुष्मिक-यथाभिलषित-फला-
वाप्तये अन्तरत्रायां शिवक-पद्रके वीरसेन-

२३. दन्तिक-प्रत्यय-पादावर्त्त-शतं एतस्मादपरत: पादावर्त्ता—पञ्च-
दश तथा अपर-सीम्नि स्कम्भसेन-प्रत्यय-पादावर्त्त-शतं विंशा-
धिकं

२४. पूर्व्व-सीम्नि पादावर्त्ता दश डोम्भिग्रामे पूर्व्व-सीम्नि वर्द्धकि-
प्रत्यय-पादावर्त्ता नवति[:*] वज्रगामे[ऽ*]पर-सीम्नि ग्राम-
शिखर-पादावर्त्त-शतं

---

१. कई अन्य वलभी अभिलेखों में 'परिभोग' पाठ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२५. शीव्यि[1](?)दिन्न-महत्तर-प्रत्यया अष्टाविङ्शति-पादावर्त्त सरा वापी । भुम्भुस-पद्रके कुटुम्वि(म्बि)बोटक-प्रत्यया(य)-पादावर्त्त-शतं

२६. वापी[2] च । एतत्सोद्रङ्गं सोपरिकरं स-वात-भूत-धान्य-हिरण्यादेयं सोत्पद्यमान-विष्टी(ष्टि)कं समस्त-राजकीयानाम-

२७. हस्त-प्रक्षेपणीयं भूमि-च्छिद्र-न्यायेन उन्नत-निवासी(सि)-वाज-सनेयी(यि)-कण्व-वत्स-सगोत्र-ब्राह्मण-रुद्रभूतये बलि-चरु-वैश्व-

२८. देवाग्निहोत्रातिथि-पञ्चमहायाज्ञिकानां क्रियाणां समुत्सर्पणार्थं-माचन्द्रार्क्कार्ण्णव-सरित्क्षिति-स्थिति-समकालीनं पुत्र-पौ-

२९. त्रान्वय-भोग्यं उदक-सर्ग्गेण निसृष्टं [।*] यतो[ऽ*]स्योचितया ब्रह्मदेय-स्थित्या भुंजतः कृषतः कर्षयतः प्रदिशतो वा

३०. न कैश्चित्प्रतिषेधे वर्त्तितव्यमागामि-भद्र-नृपतिभिश्चास्मद्वंश-जैरनित्यान्यैश्वर्य्याण्यस्थिरं मानुष्यं सामान्यं च भूमि-

३१. दान-फलमवगच्छद्भिरयमस्मद्दायो[ऽ*]नुमन्तव्यः परिपालयितव्य-श्च [।*] यश्चैनमाच्छिन्द्यादाच्छिद्यमानं वानु-

३२. मोदेत स पञ्चभिर्म्महापातकै[ः*]।।[3] सोपपातकै[ः*] ।।[4] स(सं)-युक्तस्स्यादित्युक्तं च भगवता वेद-व्यासेन व्यासेन ।।(।)

३३. षष्टिं वर्ष-सहस्राणि स्वर्ग्गे तिष्ठति भूमि-दः [।*] आच्छेत्ता चानुमन्ता च ।[4] तान्येव नरके वसेत् ।।[१*] पूर्व्व-दत्तां

---

१. फ्लीट : वी (?) कि (?) ।

२. पंक्ति के आरम्भ में दो अक्षरों का स्थान खाली है । लगता है यहां ताम्र-पट्ट में कोई दोष था । ऊपर की पंक्ति के भी दो अक्षर स्पष्ट नहीं है ।

३ .पूर्ण विराम जैसी रेखाएं दोनों स्थानों पर संभवतः विसर्ग के लिए हैं ।

४. अर्धविराम की एक रेखा यहां अनावश्यक है ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३४. द्विजातिभ्यो यत्नाद्रक्ष युधिष्ठिर ।।(।)मही[*] महिमतां श्रेष्ठ।।[१] दानाच्छ्रेयो [ऽ*]नुपालनम् ।।[२*] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता

३५. राजभिस्सगरादिभिः ।।(।) यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलमितिः[२] ।[।३*] लिखितं स[ा*]न्धिविग्रहिक-स्कन्दभटेन ।।

३६. स्वहस्तो मम महाराज-श्री-धरसेनस्य ।। दू[३] चिर्ब्बर [:*]।। सं २०० ५० २ वैशाख ब १० ५ [।।*]

---

१. पूर्ण विराम की दो रेखाएं यहां अनावश्यक है ।

२. फलम् ।। इति पाठ अच्छा है ।

३. दूतकः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विष्णुगुप्त-कालीन मनग्राँव अभिलेख

शासन वर्ष १७

स्थान : बिहार में बक्सर नगर से लगभग २२ किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम को मनग्राँव में एक जमींदार के घर से प्राप्त प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण, जो पटना संग्रहालय में सुरक्षित है।

लिपि : अफसद अभिलेख के समान कुटिलाक्षर उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : अविमुक्तज्ज (अविमुक्तार्य) नामक शैव द्वारा अङ्गार-ग्राम स्थित सुभद्रेश्वर (शिव) के मन्दिर में दीपक के तेल के लिये दान।

सन्दर्भ : अल्तेकर, EI, 26, p. 241.

पाठ

१. ॐ [।*] महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-विष्णुगुप्तदेव-प्रवर्द्धमान विजयराज्य-
२. सम्वत्सरे सप्तदशे सम्वत् १० ७ श्रावणशुदि २ चुन्दस्कीलातपोवन-
३. प्रतिष्ठित-श्रीमित्त्रकेशवदेव-प्रतिव(ब)द्धपुष्पपट्टे स्वसिद्धान्ता-भिरत[1] अने-
४. कशिवसिद्धायतनतीर्थविगाहनपवित्त्रीकृततनुः कुटुक्कदेशी-
५. य[2] अविमुक्तज्जः[3] अङ्गारग्रामके सकलकुटुम्वि(म्बि)नां सका-शादाचन्द्रा-

---

१. स्वसिद्धान्ताभिरतोऽनेक° पढ़ें।
२. °देशीयोऽवि° पढ़ें।
३. °ज्जोऽङ्गार° पढ़ें।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. र्कक्षितिसमकालीनं तैलस्य पलमेकमुपक्रीय भगवत:

७. श्रीसुभद्रेश्वरदेवस्य प्रदीपार्थं प्रतिपादितवान् ।। एवं योन्यथा

८. करोति यदत्रापायंस्तनद[1]वाप्नोतीति ।। लिखितं देवदत्तेन

९. संक्षिप्ता क्रयचीरिका[2] । उत्कीर्णं सूत्रधारेण कुलादित्येन धीमता ।।

---

१. अनन्त सदाशिव अल्तेकर इसका पाठ-शोध करके 'यदत्र पापं स तदवाप्नोतीति' पढ़ते हैं । उनका दूसरा सुझाव-'योऽत्रापायस्स तमवाप्नोतीति उन्हें स्वयं इतना स्वीकार्य नहीं ।

२. क्रय-चीरिका = क्रयलेख्य
गृह-क्षेत्रादिकं क्रीत्वा तुल्यमूल्याक्षरान्वितम् ।
पत्रं कारयये यत्तु क्रयलेख्यं तदुच्चते ।। (बृहस्पति)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीवितगुप्त (द्वितीय) का देवबरणार्क अभिलेख

स्थान : बिहार में आरा नगर से लगभग ५० किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम को देवबरणार्क ग्राम के मन्दिर में एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण।

लिपि : अफसद अभिलेख के समान कुटिलाक्षर उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : सूर्य देवता के लिए वारुणिका ग्राम के पूर्व प्रदान को तथैव रखने का अनुमोदन। इस लेख में आदित्यसेन के अनन्तर तीन परवर्ती गुप्त राजाओं का वर्णन है। यहाँ बालादित्य तथा मौखरी नृप सर्ववर्मन् एवं अवन्तिवर्मन् का उल्लेख महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, 16, p. 68, 73; फ्लीट, CII. III, No. 46; पाण्डेय, HLI, p. 153.

१. ·········[1][न]मः [।।*] स्वस्ति शक्तित्त्रयोपात्त-जयशब्दान्महा-
नौ-हा(ह)स्त्यश्व-पत्ति-सम्भार-दुर्निवाराज्जय-स्कन्धावारात्
गोमतिकोट्टक-समीप-वास-

२. [कात्]······[2][श्री-माधव] गुप्तस्तस्य पुत्त्रस्तत्पादानुध्यातः परम-
भट्टारिकायां राज्ञ्यां महादेव्यां श्री-श्रीमत्यामुत्पन्नः परमभागवतः
श्री-आदित्य[3][से]-

---

१. भगवानलाल इन्द्रजी द्वारा यहाँ सुझाया गया पाठ 'वरुणवासिभट्टारकाय' स्वीकार्य नहीं क्योंकि जैसा कि फ्लीट ने कहा है यहाँ पाँच या छः से अधिक अक्षर नष्ट हुए प्रतीत नहीं होते।

२. फ्लीट के अनुसार यहाँ माधवगुप्त का कोई धार्मिक विरुद उत्कीर्ण रहा होगा।

३. सन्धि करने पर श्यादित्य होना चाहिए—फ्लीट।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. [नदेवस्तस्य] पु[त्र]स्तत्पादानुध्यातः परमभट्टारिकायां राज्ञ्यां महादेव्यां श्री-कोणद(दे)व्यामुत्पन्नः परममाहेश्वर-परमभट्टारक-महार[ा]ज[ा]-

४. [धिराज-परमेश्वर]-श्रीद(दे)वगुप्तद(दे)वस्तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यातः परम-भट्टारिकाया [*] राज्ञ्या[*]महादेव्या[*]कमलदेव्या[1]मुत्पन्नः परममाहे-

५. [श्वरपरमभट्टारक-म]हाराजा[धि]राज-परमेश्वर-श्री-विष्णुगुप्त-देवस्तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यातः परमभट्टारिकाया [*]राज्ञ्या[*] महादेव्या[*]श्री-इज्जादे[2][व्या]-

६. [मुत्पन्नः परम······[3]परम]-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-जीवितगुप्तदेव[:*] कुशली नगरभ(भु)क्तौ वालवीवैषयिक-श्री-वा(?वो)···

७. ··· ···पद्र (?)लिक(?क्ष)-न्तषयाति-वारुणिका-ग्राम-गोष्ठ[ा] न(?)कुलतलावाटक-दूत-सीमकर्मकरमद्या(?)

८. ·····तक-राजपुत्र-राजामत्र[4]-महा ·····क्षतिक-महादण्डनायक-महाप्रतिहार-मह[ा]सा-

९. ·····प्र(?)मातसा·····क[ु]मा[ा]रामात्य-राजस्थानीयोपरिक-·····धिक-चौरोद्धरणिक-दाण्डिक-द(दा)ण्ड-

१० [पाशिक]·····क······र्ष्णिवल-व्यायत-किशोरवाटक ग्[र]ा-मह··· द ·····त····· यणिकग····· पतिकर्म-

---

१. भगवानलाल इन्द्रजी कमल के स्थान पर कुमार पढ़ते हैं।

२. फ्लीट : 'श्रीज्जा'।

३. वही : भागवत या माहेश्वर।

४. वही : राजामात्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११. ······रसक·········तास्मत[प]ाद-प्रसादोपजीविनश्च प्रतिव[ा]-
सिनश्च व्रा(ब्रा)ह्मणोत्तरा[न्*] महत्तर-क(कु)क्षिपुर-

१२. ·········विज्ञापित-श्री-वरुणवासि-भट्टारक-प्रतिव(ब)-द्धभोजक-
सूर्यमित्रेण उपरिलिखि-

१३. [त]········ग्रामादिसंयुतं परमेश्वर-श्री-वा(बा)लादित्यदेवेन
स्वशासनेन भगव[1]-श्री-वरुणवासिभट्टारक······

१४. ······क···व-परिवाहक·····भोजकहन्समित्रस्य समापत्[त्*]
या यथाकलाध्यासिभिश्च एवं परमेश्वर-

१५. श्री-शर्व्ववर्म्म······भोजकरिषिमित्र[2]······यतकं[3] एवं परमेश्वर-
श्री[म*]दवन्तिवर्म्मणा पूर्व्व-दत्तकमवल-

१६. [म्ब्य]······एवं मह[ा]रा[जाधिरा*]ज-परमेश्वर·····शासन-
दानेन भोजक-दुर्द्धरमित्रस्यानुमो—

१७. दित··· ···तेन भुज्यते [।*] तदहम्[4] किमपि·····एवं·········
मतिमान्········आनुपा(मो)दितमिति सर्व्वसमाज्ञापना[।*]
एता

१८. ········पयु··························वरुणवास्यायतनं तदनु
···
दत्तम्··

१९. ······················त्यक्ष ··································
सोद्रङ्गं सोपरिकरं सदशापराध-पञ्च·······················
··························[।।*]

---

१. फ्लीट : भगवच्छ्री ।
२. भोजक-ऋषि अथवा भोजकर्षि ।
३. यतकम् पढ़ें ।
४. तदहं पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शीलादित्य (सप्तम) का अलीना ताम्र-पट्ट अभिलेख

गुप्त-वलभी संवत् ४४७

स्थान : गुजरात के कैरा (खेड़ा) जिले में नादियाड नगर से लगभग २२ किलोमीटर उत्तर-पूर्व को अलीना ग्राम के पास से प्राप्त दो ताम्र-पट्टों पर उत्कीर्ण। अब रॉयल एशियाटिक सोसाइटी लन्दन में सुरक्षित।

लिपि : दक्षिणी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : शीलादित्य (सप्तम) द्वारा ब्रह्मचारी आखण्डलमित्र को पञ्चमहायज्ञादि सम्पन्न कराने के लिए महिलाबली ग्राम का दान।

संदर्भ : ब्यूलर, IA, 7, p. 79; फ्लीट, CII, III, No. 39.

१. ॐ स्वस्ति श्रीमदानन्दपुरसम[ा*]वासित-जयस्कन्धावारे[1] प्रसभ-प्रणतामित्राणां मैत्रकाणामतुलबल-संपन्न-मण्डलाभो[गसंस]-क्त-संप्रहार-शत-लब्ध-प्रतापा-

२. त्प्रतापोनत-दान-मानार्ज्जवोपार्जितानुरागादनुरक्ता[2]-मौलभृतः[3]-श्रेणी-बलावाप्त-राज्यश्रियः परममाहेश्वरः[4]-श्री-भट्टावर्क्कादा(द)-व्यवच्छिन्न-वंशान्मा-

---

१. स्कन्धावारात् पढ़ें।
२. रक्त पढ़ें।
३. भृत पढ़ें।
४. माहेश्वर पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. तापितृ-चरणारविन्द-प्रणति-प्रविक्क्ताशेष-कल्मषः शैशवात्प्रभृति खङ्गद्वितीयः[१]-बाहुरेव समद-पर-गज-घटास्फ[ो]टन-प्रकाशित-[सत्त्व-नि]कषः तत्प्र[२]-

४. [भा]व-प्रणताराति-चूड़ार[*त]न-प्रभा-स[*]सक्त-पाद-नख-रश्मि-संहतिः सकल-स्मृति-प्रणीति(त)-मार्ग्गः-[३]सम्यक्क्रिया-पालनः[४]-प्रजा-हृदया-रञ्जना[द*]-न्वर्त्थ-राजशब[दो] रूप-का-

५. न्ति-स्थैर्य्य[५]-गांभीर्य्य-बुद्धि-संपद्भिः स्मर-शश[ा]ङ्काद्रिराजोदा(द)धि-त्रिया(त्रि)दशगुस(रु)-धनेशानतिशयानः शरणगताभय-प्रदानः[६]-परतया तृणवद्ध(द)पास्ता[शेष-स्व]वीर्य्य-

६. फलः प्रार्त्थनाधिकार्त्थ-प्रद[ाना]नन्दित-विद्वत्सुहृत्प्रणयिहृदय [:*] पादचारीव सकलभुवनमण्डलाभोगप्रम[ो*]द[:] परम-

७. माहेश्वरः श्री गुहसेनः [।।*[तस्य सुतः तत्पाद-नख-[मयूख*]-संतान-विसृज(त)-जाह्नवीजलौघ-प्रक्षालिताशेष-कल्मषः प्रणयि-शतस-

८. हस्रोपजीव्यमान-संपद् रूप-लोभादि[वा]श्रृ(श्रि)तः सरभा(भ)-समाभिगामिकैः गुणैः सहज-शक्तिः[७]-शिक्षा विशेष-विस्मापित-लब्ध-धनुर्धरः[८] प्रथम-[न]-

९. रपति-समतिसृष्टानामनुपालयिता धर्म्म[दाया]नामपि(पा)कर्त्ता-प्रजोपघातकारिणां[९] उपप्लवानां शमयिता श्री-सरस्वत्योरेकाधि-

---

१. द्वितीय पढ़ें ।
२. प् के नीचे र का चिह्न नहीं लगा है ।
३. मार्ग्ग पढ़ें ।
४. पालन पढ़ें ।
५, यहाँ 'र्' का चिह्न उत्कीर्ण नहीं है ।
६. प्रदान पढ़ें ।
७. शक्ति पढ़ें ।
८. फ्लीट इसे 'सर्व्व' या 'अखिल' से बदलते हैं ।
९. °कारिणाम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वासस्य सहोपप[1]ति-प-

१०. पक्ष-लक्ष्मी-परिभोग-दक्ष-विक्रमः विक्रमोपम-संप्राप्त[2]-विमल-पार्त्थिव-श्रीः परममाहेश्वरः श्री-धरसेनः [।।*] तस्य सुतः तत्पादानुद्ध्यातः सकल-जगदानन्दनात्य।(य)द्भु ु-

११. त-गुण-समुद्र[3]स्थगित-समग्र-दिग्मण्डलः समर-शत-विजय-शोभा-सनाथ-मण्डलाग्रद्य[* ु]ति-भासुरासन-पीठो व्यू(दू)ढ-गुरु-मनोरथ-महाभाव(र): सर्व्व-विद्या-पार-परम-

१२. भागाधिगम-विमल-मतिरपि सर्व्वतः सुभाषित-लवेनापि स्वोप-[4] पादनीय-परितोषः समग्र-लोकागाध-गांभीर्य्य-हृदयोपि सव्य(च्च)-रितातिशय-सुव्यक्त-परम-

१३. कल्याणस्वभावः [ि*] खलीभूत-कृतयुग-नृपति-पथ-विशोधनाधि-गतोदग्र-कीर्त्तिः धर्म्मानुगा(रो)धा(ो)ज्ज[व*]लतरीकृतार्त्थ-सुखस[ं]पदु[प*]-सेवा-निरहढ(निरूढ)-वर्ज[5] मादित्य[6]त्वि(द्वि)तीय-नामा

१४. पा(प)रमम[ा*]ह[े*]श्वरः ग्री(श्री)-गी(शी)लादित्यः [।।*] तस्य सुतः[6] तत्पादानुध्यातः स्वयवु(मु)पेन्द्रगुरुणेप(व) गुरुः[7] गुरुणात्यादरवता समभिलषणीयाणामपि[8] राजलक्ष्मी[ं*]

---

१. फ्लीट इसे संहताराति से बदलते हैं ।
२. फ्लीट विक्रमोपसंप्राप्त या विक्रमोपक्रमसंप्राप्त परिवर्तन सुझाते हैं । परन्तु मूल को बदले बिना ही अर्थ ठीक लगता है ।
३. समुदय पढ़ें ।
४. फ्लीट स्व को सुखो से बदलते हैं ।
५. धर्म्मादित्य पढ़ें ।
६. फ्लीट के अनुसार यहां तस्यानुजः उत्कीर्ण किया जाना चाहिए था । अगले नृप को कुछ अन्य लेखों में शीलादित्य का अनुज कहा गया है ।
७. यह शब्द यहाँ अनावश्यक है ।
८. समभिलषणीयामपि पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५. स्कन्धासक्त[ां] परमभद्राणां[१] धुर्य्यस्तदाज्ञा[२]-स[ं*]पादने(नै)-
क-रसतयोद्वाहन[३]-खेद-सुख-रतिभ्यां[४] अनायासित-[सत्त्व*]-
संपत्ति[:*] प्रभाव-सां(सं)पद्वा(व)शीकृत-नृपति-शत-शिरो-

१६. रत्ना(न)-व्ना(च्छा)योपगूह(ढ)-पादपीठोपि परामावज्ञा[५]भिमान-
सह(र)सानालि[ङ्ग*]त-मनोवृत्तिः प्रणतीरोका[६] परित्यज्य
प्रख्यात-पौरुषाभिमानैरा(र)प्या(प्य)रातिभिरनासा[दि]-

१७. त-प्रकृत्योपायः[७] कृत-निखिल[८]-भुवनामा(मो)द-विमल-गुण-स[ं]
हतिः प्रसभ-विघटित-सकल-कलि-त्रिल[सि*]सत-गतिर्मंत्र[९]-
जनाभिद्रा(दो)हिभिराशषैः (रशेषैः) दोषैरनामृ-

१८. [ष्टा*]त्युन्नत-हृदय[:*] प्रख्यात-पौरुषः शास्त्र-कोट(कौश)-
लातिशय[ो]गुण[१०]गणतिथ-विपक्ष-क्षितिपति-लक्ष्मी-स्वयं-स्वयं[११]
ग्राहे(ह)-प्रकाशित-प्रवीर-पुरुष-प्रथमः(म)-[संख्या]-

१९. धिगमः य(प)रमम[ा*]हेश्वरः श्री-खरग्रहः [।*] तस्य सुतः
तत्पाद[ा*]नुध्यातः सर्व्व[ं*] [*वि]द्याधिगमः-पहित[१२]-निखिल-
विद्वज्जन-मनः परितोषिति[१३]-ष(श)य [:*] सत्[त्*]व-

---

१. परमभद्र इव पढ़ें ।

२. धुर्य्य के ऊपर र् का चिह्न तथा ज्ञ में ञ का चिह्न उत्कीर्ण नहीं है ।

३. रसतयोद्वहन् पढ़ें ।

४. भ्याम् पढ़ें ।

५. परावज्ञा पढ़ें ।

६. प्रणतिमेकां पढ़ें ।

७. प्रतिक्रियोपायः पढ़ें ।

८. ख में इ की मात्रा उत्कीर्ण नहीं है ।

९. फ्लीट का संशोधन-गतिर्न्नीच ।

१०. यह शब्द यहाँ अनावश्यक है ।

११. दूसरा 'स्वयं' अनावश्यक है ।

१२. °धिगम-विहित-पढ़ें ।

१३. परितोषाति° पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२०. स [ं*] पत्त्यागै: शौर्य्येण च विगतानुस[ं*]धान-समाहितारातिपक्ष-मनोरथ-रथाक्ष-भंग: सम्यगुपलक्षितानेकशास्त्रकलालोकचरित्रगह्वर-वि-

२१. भागोपि परमभद्र-प्रा(प्र)कृतिरतिकृतृ(त्रि)भ-प्रश्रयोपि विभ(न)य-शोभा-विभूषणा:(ण:) समर-शत-जयपताकाहरण-प्रत्ययोदग्र-बाहु-दण्ड-विध्वंसित-प्र[तिप]क्ष-

२२. दर्प्पोदय: स्व-धनु[:*]-प्रा(प्र)भाव-[परि*]भूतास्त्रकौशलाभिमान-सकल-नृपति-मण्ड[ला*]भिनन्दित-शासना(न): पर[ममा]हेश्वर: ग्री(श्री)-घरसा(से)न: [।।*] तस्यानुज: त[त्]प[ादानु]-

२३. ध्यात: सच्चरित[ा*]तिरु(श)यित-सकल-पूर्व्व-नरपति: दुस्साधना[ना*]मपि प्रसाधयिता विषय[ा*]णाम् मू[ं*] [र्]-त्तम[ा*]निव पुरुषकार: परिवृद्ध-गु[णा]नुराग-[निर्भ्भ]-

२४. र-चित्तवृत्ति[भि*]: मनुरिव स्वा(स्व)यमभ्युपपन्न: प्रकृतिभिरवि(धि)गत-कलाकलाप [:*]कान्ति तिरस्कृत-सलाछ(ञ्छ)न:(न)-कुमुदा(द)-नाथ[:*] प्राज्य-स्थगित-दिग[न्त]तराल[:]

२५. प्रध्वंसित-ध्वान्त-राशि: सततोदित-सविता प्रकृतिभ्य[:*] पर[ं*] प्रत्ययमर्त्थवन्तमतिप(ब)हुतिथप्रयोजनानुबंधमम[1][ा*]गम-परिभू(पू)र्ण[ं*] विदधाम(न): सन्धि-विग्रह-

२६. समास-निश्चय-निपुण[:*] स्थानमनुपदेशं ददन्तं[2] गुणवृद्धिराजदिनित[3]-स[ं*]स्क[*]र-साधूनां राज्य-शालातु[री]यतन्त्रयोरुभयोरपि निष्णात: प्रक्क्र-

२७. ति-विक्रमोपि करुणामृदुहृदय: श्रुतवानप्यि(प्य)ग[र्]व्वत: कान्तोपि प्रशमि(मी) शि(स्थ)रसौह[ा*]र्द्दोपि निरसिता दोष-

---

१. एक म अतिरिक्त है।

२. फ्लीट का संशोधन : स्थानानुरूमादेशं ददतां।

३. फ्लीट का संशोधन : विधानजनित।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोषवता[1]मुदयसमुपज[ि]न-

२८. त-जनानुराग-परिवृ[ं*]हित-भुवन-समर्त्थित-प्रथित-बालादित्यि (त्य)-द्वितीयनाम[ा*] परममाहमन(हेश्वर)ग्री(श्री)-धरसन[2][।।*] तस्य सुतः तत्पादरदेल[3]-प्रणा-

२९. म-धरणि-कषण-दि(ज)नित-किण-लांछन-ललाट-चन्द्र-स(श)-कल[:*] शिशुभाव एव श्रवणनिहित-मौक्तिकालंकार-विभ्रमा-मल-श्रु त-विशो(शे)ष[:*] प्रदान-स-

३०. लिल-क्षालिताग्रहस्तारविन्दः व्यास[4] इव मृदु-कर-ग्रहणादमन्दी-कृतानन्दविधिः वसु[ं*]धरायाः रा(का)र्म्मुरा(क)-धनुर्व्व[े*]द इव सभाविनाश[5]प्रलक्ष्यकलाप[:*] प्र-

३१. णत-समस्त-सामन्त-मण्डलापमोनिर्भृ त-चूडामण-नियमन-शासनः परम[माहे*]श्वरः परमभट्टारक-महार[ा*]जाधिराज-परमेश्वर-चक्रवर्ति-श्री-ध-

३२. र-सेनः [।।*] ततपितामह-भ्रातृ-श्री-शीलादित्यस्य वा(शा)ङ्ग-पाणेरिवाग्रजन्मनो[7] भक्ति-बन्धुरावयव[कल्पित-प्रणते]रतिधव-लया तत्पादारविन्द-प्रपृ(वृ)त्त्या चरण-नख-मणि-

३३. [रु]चा मन्दाकिन्येव नित्या(त्य)ममलितोत्तमांव(ग)देशस्या-व(ग)स्त्यस्य[े*]व राजक्चोः[8] द[ा*]क्षिण्यमानतन्वानस्य[9] प्रवलधवलिव्नो(म्ना) यग(श)सां वलय[े*]न म-

---

१. दूसरा दोष शब्द यहाँ अनावश्यक है।
२. ध्रु वसेनः पढ़ें।
३. °पादकमल पढ़ें।
४. इसका संशोधन फ्लीट ने कन्याया किया है।
५. संभाविताशेष पढ़ें।
६. मण्डलोत्तमाङ्ग-धृत-चूडामणीयमान पढ़ें।
७. खरग्रह(द्वितीय) के अभिलेख के आधार पर फ्लीट °रिवाङ्गजन्मनो संशोधन करते हैं।
८. राजर्षेः पढ़ें।
९. °मातन्वानस्य पढ़ें।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३४. [ण्डित]-ककुभा नवयाथरलिताशेपि: खड्गपरिवम[1]-मण्डलस्य पये(यो)द-श्याम-शिखर-चूचुर-कचि-सम-विन्यस्त-स्तन[2]युगाया: क्षित [ ]: पत्य [ ]:-श्री[दिरभ]ट-

३५. स्याग्रजः[3] क्षिति[प*]स[ं]हृतेः चरु विभागस्य[4] गु (शु)चिर्य्यग-(श)ोङ्ग(ङ्शु)क-भृतः स्वयंवराभिलाषिणीमिव राज[य]श्रि-यमर्प्पयन्त्या: कृत-प[ि]रग्रह[: शौर्य्यमप्रतिह]-

३६. त-प्रतापा[5]नमित-प्रचण्डरिपुमण्डलं मण्डलाग्रमपालंपधुग्रानः[6] शरदि प्रसभम[ा*]कृष्ट-शिलीमुख-पा(बा)णासनापादितप्रसाध-[नानां]

३७. पर-भुवां विधिवदाचरितकरग्रहणः पूर्व्व[मे*]व विविध-वर्न्न(र्ण)ोज[ज्*]वलेन ग्रु(श्रु)तातिशय[*]नो[द्भा]सित-श्रवण-युगलः पुन[ः-पुनरुक्तेनेव रत्ना]-

३८. [ल]ङ्[क]ारेणालङ्कृतग्रो(श्रो)त्रा(त्रः) परिस्फुरत्का(क)-टक-विकट-कीट-पक्ष-रत्नकिरणमि(म)प(वि)च्छिन्न-प्रदान-सलिल-निवहानवसे[क[7]-विलसन्नव-शैवलां]-

३९. कुरम(मि)प(व)ाग्रपाणिमुद्वह[न्*] धृत-विश[ा*]ल-रत्न-प(व)लय-जलधि-वेल[ा*]-तटायम[ा*]न-भुज-परिष्वक्त-विश्वम्[भ]रः परमम[ा*]हेश्वरः श्री-ध्रुवसेनस्तस्याग्र-

---

१. फ्लीट द्वारा संशोधित पाठ : नभसि यामिनीपतेर्व्विरचिताखण्डपरिवेष ।

२. फ्लीट द्वारा संशोधित पाठ : चूचुक-रुचिर-सह्य-विन्ध्यस्तन ।

३. °ङ्गजः पढ़ें ।

४. संहतेरनुरागिण्यः पढ़ें ।

५. फ्लीट प्रताप के स्थान पर व्यापारम् संशोधन प्रस्तुत करते हैं । परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं है ।

६. ०ग्रमिवालम्बमानः पढ़ें ।

७. निवहावसेक पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४०. [जोऽपर]-म[हीप]ति-स्पर्द्ध(र्श)-दोष-नाग(श)न-[ि]धय[े]व लक्ष्म्या स्वयमतिस्पष्ट-चेष्टमाश्लिष्टाङ्गयष्[टिरति-रुचिरतर-चरित-गरिम-परिकलित-सकल-न]रपा [त]रति-

४१, प्रकृष्टानुराग-[स*]रभस-वशीकृत-प्रणत-समस्त-सामन्तचक्र-चूडा-मणि-मयूख[खचित-चरणकमल-युगलः]प्रोद्दाम[ोदार]दो [र्द्दण्ड]-दलित-द्विषद्व-

४२. र्ग-दर्प्पः प्रसर्प्पत्पटीयःप्रताप-प्लोषिताशेष-शत्रु-व[ं*]शः प्रणयि-पक्ष-नि[क्षिप्त-लक्ष्मीकः प्रेरित-गदोत्क्षि]प्त-सु[दर्शन-चक्रः परिहृत-

४३. [बाल-क्री]डोऽनधःकृत-द्विजातिरेक-विक्रम-प्रसाधित-धरित्रीतलो-नङ्गीकृतजलशय्य[ोपूर्व्व-पुरुषोत्त]मः [साक्षाद्धर्म्म इव सम्यग्व्य]-वस्था-

४४. पित-वर्णाश्रमाचारः पूर्व्वैरप्युर्व्वि(र्व्वी)पतिभिः तृष्णालव-लुब्धैः यान्यपहृता[नि देवब्रह्म]-द[े]या[नि ते]षामप्य[तिसरल]मनःप्र-

४५. [स]रमुत्स[ङ्क]ल[नानु]मोदनाभ्यां परिमुदित-तृ(त्रि)भुवना-भिनन्दितोच्छ्रितोत्कृष्ट-धवल-ध[र्म्म]ध[वजः [प्रकाशित-नि]ज-वङ्शः द[े]व-द्विज-गुरू]न् प्रतिपूज्य-यथार्ह]मनवरत-

४६. प्रवर्त्तित-महोद्रङ्ग[ा]दि- दान-व्यसनानुपजात[१]-संतोषोपात्तोदार-कीर्तिः(र्त्ति)-[परं]परा [दन्तुरित-नि ि]खल-दिक्चक्रवालः [स्पष्ट-मेव य]थार्त्थ[ं] धर्म्मादित्यि(त्य)-

४७. [द्वि]तीय-नामा पर[म*]माहेश्वरः श्री-खरग्रहः [।।*] तस्या-ग्रजन्मनः कुमुदषण्ड-श्री-[विकासिन्या कलावतश्चन्द्रिकयेव कीर्त्या धवलित-स]कल-दिग्मण्ड-

---

१. व्यवस्थानोपजात या व्यवसायोपजात पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४८. लस्य खंडितागुरु-[वि]लेपन-विङ[1]-श्यामल-विन्ध्य-[शै]ल-विपुल-पयोधरायाः क्षि[तेः पत्यु]ः श्री-शीलादित्यस्य सूनु[र्नव-प्रालेय-किरण इ]व

४९. प्रतिदिन-संवर्द्धमान-हृदय[2]कला-चन्द्र(क्र)वालः [केसर]न्द्र-[शि]-शुरिव राजलक्ष्मीं सकल[3]-वन[स्थलीमि]वालंकुर्व्वाणः[शिख]-ण्डिकेतन इव रुचि [मच्चूडा]-म[ण्डनः]

५० प्रचण्ड-शक्ति-प्रभावश्च शरदागम इव[4] द्विषतां परममाहेश्वरः परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-बप्प(बाव)-पादानुध्यातः परमभ[ट्]टारक-[महारा-]

५१. जाधिराज-परमेश्वरः श्री-शीलादित्य देवस्तस्य सुतः[5] पारमैश्वर्य्य [:*] [कोपाकृष्ट-निस्तृ(त्रि)ङ्श-पात-विदलिताराति-करि-कुम्भ-स्थलोल्लसत्प्र [सृत-म]हा-प्रतापानलः प्रा[कार]-

५२. [परिगत*]-जगन्मण्डल-लब्धस्थितिः विकट-निज-दोर्द्दण्डावलंबिना सकल-भुवनाभोगभाजा मन्थास्फलन-विघु[त-दुग्धसि]न्धु-फे[न-पिण्ड-पा]ण्डुर-यशो-विता[नेन]

५३. विहितातपत्रः परम[माहे*]श्वरः परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-बप्प-पादानुध्यातः परमभट्टारक-महारा[जाधि]-राज-प[रमेश्व]र-[श्री]-शीलादित्य[देवः] [।।*] [तत्पुत्रः]

---

१. पिण्ड पढ़ें ।
२. हृदय शब्द यहां अनावश्यक है ।
३. °लक्ष्मीमचल पढ़ें ।
४. फ्लीट के अनुसार इससे आगे द्विषतां तक निम्न पाठ उत्कीर्ण नहीं हुआ है—प्रतापत्रानुल्लसत्पद्मः संयुगे विदलयन्नम्मोधरानिव परगजानुदय। तपन-बालातप इव संग्रामेषु मुष्णन्नभिमुखानामायूंषि
५. सुतः के साथ जोड़ें—सतोपरपृथ्वी-निम्र्माण-व्यवसायासादित ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५४. प्रतापानुराग-प्रणत-समस्त-सामन्त-चूडामारि(मणि)नख-मयूख-
निचित-रञ्ज[ज]त-पादारविन्दः परम[मा*]हेश्वरः परमभट्टारक-
महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-[बप्प]-पादा-

५५. नुद्धयातः परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-शीला-
दित्यदेव[:।।*]तस्यात्मजः प्रशमितरिपुबल-दर्प्पः विपुल-जयमङ्ग-
लाश्रयः श्री-समालिं[गन-लालि]त-

५६. वक्षा[:*] सम[*ु]पोढ-नारसिङ्घ-विग्रहोर्जिजतो[द्*]धुरशक्तिः
समुद्धा(द्ध)त-विपक्ष-भूभृत्-कृतनिखिल-गोमण्डल-रक्षः पुरुषो-
त्तम[:*] प्रणतनाभूत[१]-पार्त्थिव-किरीट-

५७. [मा]णिक्य-[म]सृणित-चरण-नख-मयूख-रंजितागे(शे)जा(ष)-
दिग्वधू-मुखः परममाहेश्वरः परमभट्टारक-महाराजाधिराज-
श्री-बप्प-पा-

५८. [दा]नुध्यातः परमभट्टारां(रक)-महार(रा)ल(जा)धिराज-परमे-
श्वर-श्री-शीलादित्यदेवः परममाहेश्वरः[१] [।।*] तस्यात्मजः
प्रथित-दुस्सह-वीर्य्यचक्रो लक्ष्म्यालय[ो]

५९. [नर]क-नाश-कृतप्रयत्नः पुथ्वी-समुद्धरण-कार्य-कृतैकनिष्ठः
संपूर्ण्ण-चन्द्र-कर-नि[र्*]म्मल-जात-कीर्त्तिः [।।*] ज्ञात-[त्र]-
य[ो]-गुणमयो जित-वैं[र]-पक्षः संप[न्न]-

६०. [-⏑]म-सुखः सुखदः सदैव ज्ञानालय [:*] सकल-वन्दित-लोक-
पालो विद्याधरैरनुगतः[२] प्रथितः प्रि(पृ)थिव्यां [।।*] रत्नोज[ज्*]
वलो वर-तनु-

६१. [र्गु]ण-रत्न-राशिः ऐश्वर्य्यं-विक्रम-गुणैः परमैरुपेतः सत[त्*]वो-

---

१. शीलादित्य का यह विशेषण ५७ वीं पंक्ति में आ चुका है । यहाँ यह अनावश्यक है ।
२. तुलना करें आदित्यसेन के अफसद लेख में-विद्याधराध्यासितः (पंक्ति-१)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पकारकरणे सततं प्रवृत्तः स[ा*]क्षा[ज्*]जनार्दना(न) इवार्दित-दुष्ट-दर्प्पः [।।*]

६२. युद्धाः(द्धे)सकृद्गा(ग)ज-घटा-घटनैक-दक्षः पुण्यालयो जगति गीतमहाप्रतापः राजाधिराज-परम[े*]श्वर-वङ्श-जन्मा श्री-ध्रूभटो जयति जा-

६३. त-महाप्रमोदं(दः)[।।*] [स च*] परमेश्वरः[१] परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परा(र)मेश्य(श्व)र-श्री-प(ब)प्प-पाया(दा)नुद्धयातः परा(र)मभट्टारन(क)-महाराजा-

६४. धिराज-परमेश्वर-श्री-शीलादित्यदेवः सर्व्वानेव समाज्ञापयत्यस्तु वः संविदित[ं*] यथा मया म[ा*]तापित्रोरात्मश्च पुण्य-यशोभिवृ-

६५. द्धये ऐहिकामुष्मिक-फलावाप्तय्यर्थं श्रीमदानन्दपूर-वास्तव्य तच्चातुर्विद्यसामान्य-श[ा*] र्क्कराक्षिसगोश्र(त्रा)बह्वृच-स-ब्रह्मचारि-

६६. भट्टाखण्डलमित्राये(य)भट्ट-विष्णु-पुत्राय बलि-चरु-वैश्वदेवा-ग्निहोत्र-क्रतु-क्र(क्रि)याद्युत्सर्प्पणात्थे (त्थं) ग्री(श्री)-खेटकाहारे उप्पलहेट-

६७. पथके महिल(ला?)वली-न[ा*]-ग्रामः सोद्रङ्ग[:]स[ो]परिका(क)रः सोतपद्या(द्य)मान-विष्टिकः स-भूत-पा(वा)त-प्रत्या-दोयः[२] स-दशापराधः स-

६८. भोग-भागः स-धान्य-हिरण्याद[े*]यः सर्व्वराजकीयानः (नाम्) अहस्तप्रक्षो(क्षे)पश(ण)ीयः पूर्व्व-प्रदत्त-दोप(देव)-दाय-प्र(ब्र)ह्मदाय-वर्ज्जा (र्ज्जं) भूम्रा(भू)मिच्छिद्रन्याय [े*]नाचन्[द्र]ा[र्*]क्का-

---

१. परममाहेश्वरः पढ़ें।

२. प्रत्यायः पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६९. ण्णव-क्षिति-पर्व्वत-समकालीनः पुत्रपौत्रान्वय-भोग्य उदय(क)ा-
तिसर्ग्गेण ब्रह्मदायत्वेन प्रतिपादितः [।*] यतोभ्य(स्य)ोचि-
तया ब्रह्मदा[य-स्थि]-

७०. त्या भुंजतः कृषतः कर्षापयतः प्रतिदिशतो वा न कैश्चिद् व्यासेधे
र्व्वात्तितव्य[ं*]।। आगामि-भद्रनृ(नृ)पतिभिः अ-

७१. स्मद्वङ्शजैरन्यैर्व्वानित्यानित्यान्यैश्वर्य्याण्यस्थिर[ं*] मानुज्य
(ष्य)कं सामान्यं च भूमिदानं(न)फलं[2] अवगच्छद्भिः[3] अयम-

७२. स्मद्दायोनुमन्तव्यः पालयितव्यश्च [।।*] उक्तञ्च पे(वे)द-
व्यासो(से)न व्यासेन [।*] बहुभि [र्*]व्वसुरधा[4] भुक्ता राजभिः
सगरादिभिः

७३. यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल[ं*]। (।।) यानीह
दत्तानि पुरा न्न(न)रेन्द्रैः धनानि धर्म्मायतना(नी)कृआ(कृ)-
तानि निर्म्माल्यवान्तः(त)-

७४. प्रति[मा]नि तानि के(को) नाम [सा*]धु[ः*] प्रतिराददीतः[5]
[।।*]षष्टि-वर्व(र्ष)-सहस्राणि स्व[र्*]ग्ग[े*] तिष्ठति भु[भू]-
मिदः अ(आ)च्छेत्ता चानुमंत[ा]च्च(च) तान्येव नर-

७५. [के व] सेत् ।। भुष्वा(विन्ध्या)टवीष्वते(तो)यासु सषु(शुष्क)-
कोटर-वासिनः कृष्ण[ा*]हयो हि जायन्तो(ते) भूमिद[ा*]यं
हरन्ति य [े*]।। दूतके(को)त्र महाप्रतिहा-

---

१. 'र्वानित्यान्यै' पढ़ें।
२. फलम् पढ़ें।
३. द्भिर् पढ़ें।
४. वसुधा पढ़ें।
५. पुनराददीत पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७६. [र]····· [1]ह[ा*]क्षपटलिक-त्र[2]-राजकुल-श्री-सिद्धसेन [:*]ग्री(श्री)-शर्व्वटासुतः [।*] तव(था)तन्नियुक्त-प्रतिनिर्त्तक-कुलपुत्रासा(मा)-

७७. त्य-ग [ु*]हेन हेम्वटपुत्रेण लिखितमिति[3] ।। संव[त्]सर-शत-चतुष्टये सप्तचत्वारिङ्शदधिके द्ये(ज्ये)ष्ठ(ष्ठ)-शुद्ध पंचम्यां[4] ग्रङ्क-

७८. त[:*] सव[5] ४०० ४० ७ श्रे(ज्ये)ष्ठ गु(शु) ५ [।।*] स्वहस्तो मम [।।]

---

१. ब्यूलर के ग्रनुसार यहाँ श्री-देट होना चाहिए। फ्लीट के ग्रनुसार यहाँ केवल 'म' की ग्रावश्यकता है।

२. यह ग्रक्षर यहाँ ग्रनावश्यक है।

३. फ्लीट के ग्रनुसार 'लिखित' से ग्रागे 'शासनम्' होना चाहिए।

४. पंचम्याम् पढ़ें।

५. संवत् पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईश्वरवर्मन् का जौनपुर अभिलेख

स्थान : उत्तरप्रदेश के जौनपुर नगर में जामा मस्जिद के दक्षिणी द्वार के मस्तक पर एक प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण। लेख का अधिकांश नष्ट हो गया है।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : मौखरि राजा ईश्वरवर्मन् का वर्णन। धारा नगरी, आन्ध्रकुल, सुराष्ट्र प्रदेश, रैवतक पर्वत आदि नाम यहाँ उपलब्ध होते हैं।

संदर्भ : कनिंघम, ASI, 11, p. 124; फ्लीट, CII, III, No. 51.

पाठ

१. ······र···क्ष···ल···गम् ॥ दोर्भ्याम(मा)त्मभुवो धनुः सह-भुवा क्षत्त्रेण लब्ध(ब्ध)ात्मना विस्तरि-

२. ·· [३]दयिनि मुखराणां भूभुजामन्ववाये। सकल-पुरुष-शक्ति-व्यक्त-शार्ङ्ग-प्रतापो

३. ···कर्म्मणा याज्ञं धू[1]मवितान-मेघ-निवहः पुण्यं वितेने दिवि[2] ॥

४. ······लक-स्रस्तालकाग्रं कुलैः ॥ तस्य दिक्षु [व]ततामल-कीर्त्तेरात्मजो नृपतिरीश्वरवर्म्मा

५, ······[कृ]पानुराग-शमित-क्रूरागमोपद्द्रवैर्लोकानन्द-करैर्गुणै-र्गुणवतां को नाम

६. ······[अ]धिष्ठितं क्षितिभुजां सिंहेन सिंहासनं[3] ॥ धारा-मार्ग्ग-विनिर्गताग्नि-कणिका

---

१. ध के नीचे 'उ' की मात्रा नष्ट हो गई है।

२. पूर्ण विराम से आगे पंक्ति को पूरा करने के लिए कुछ उत्कीर्ण किया गया है।

३. सिंहासनम् पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७. ......दम् ॥ विन्ध्यादद्रेः प्रतिरन्ध्रमन्ध्रपतिना शंकापरेणासितं यातो रैवतकाचलं

८. ......सां वारणानां घटासु व्याप्तेषूत्खात-खड्ग-द्युति-खचित-भुजेष्वन्ध्रसेनाभटेषु

९. ......र-प्रपात-सलिलैः स्नातं शिलागन्धिभिः प्रालेयाद्रि-भुवश्च शीतपयसः प्रक्षा-

१०. ......रेणुभिर्गिरि-सरित्पुरोर्म्मिभङ्गाकुलैरुत्सर्प्पद्भिरनुप्रगेपि[1] दिवसो यस्यापा-

११. ......विः य......येन..............

---

१. प्रागेऽपि पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईशानवर्मन् का हड़ाहा अभिलेख

विक्रम संवत् ६११

स्थान : उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में हड़ाहा के निकट के ग्राम से प्राप्त शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण जो लखनऊ संग्राहलय में सुरक्षित है।

लिपि : छठी शताब्दी ईसवी की उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : मौखरि राजा ईशानवर्मन् के पुत्र सूर्यवर्मन् द्वारा जंगल-स्थित एक पुराने शिव-मन्दिर का जीर्णोद्धार।

संदर्भ : हीरानन्द शास्त्री, EI, 14, pp. 110-120; सरकार, SI, p. 385; दिसकलकर, SSI, pp. 96-105,; दशरथ शर्मा, JOR, Madras, 9, 1935, pp. 78 ff; JNSI, 27, pt. 1, 1965, p. 103.

१. लोकाविष्कृति[1]-संक्षय-स्थिति-कृतां यः कारणं वेधसाम्[2] ध्वस्त-ध्वान्तचयाः परास्त-रजसो ध्यायन्ति यं योगिनः। यस्यार्द्ध-स्थित-योषितोपि[3] हृदये नास्थायि चेतो-भुवा भूतात्मा त्रिपुरान्तकः स

२. जयति श्रेयः-प्रसूतिर्भवः ॥ [१*] आशोणां फणिनः फणोपल-रुचा सैङ्घीं (सैंहीं) वसानं त्वचं शुभ्रां लोचन-जन्मना कपिशयद्भासा कपालावलीम् [।*] तन्वीं ध्वान्त-नुदं मृगाकृति-भृतो विभ्रत्कलां मौलिना दिश्यादन्ध-

---

१. सरकार पंक्ति के आरम्भ में १" चिह्न पढ़ते हैं।

२. °सां पढ़ें।

३. योषितेऽपि पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. क-विद्विषः स्फुरदिह स्थेयः पदं वो वपुः ।। [२*] सुत-शतं लेभे नृपोश्वपतिर्व्वैवस्वताद्यद्गुणोदितम् [।*] तत्प्रसूता दुरित-वृत्ति-रुधो मुखराः क्षितीशाः क्षतारयः ।। [३*]तेष्वापे हरिवर्म्मणावनिभुजा[1] भूतिर्भु-

४. वो भूतये ।[2] रुद्धाशेष-दिगन्तराल-यशसा रुग्णारि-संपत्त्विषा। सङ्ग्रामे हुतभुक्प्रभाकपिशितं वक्त्रं समीक्ष्यारिभिर्यो भीतैः (तैः) प्रणतस्ततश्च भुवने ज्वाला-मुखाख्यां गतः ।।[४।।*] लोकस्थितीनां स्थितये स्थि-

५. तस्य मवोरिवाचार-विवेक-मार्ग्गे। जगाहिरे यस्य जगन्ति रम्याः सत्कीर्त्तयः कीर्त्तयितव्य-नाम्नः ।।[५।।*] तस्मात्पयोधेरिव शीत-रश्मिरादित्यवर्म्मा नृपतिर्ब्बभूव । वर्ण्णाश्रमाचार-विधि-प्रणीतेर्यं प्राप्य

६. साफल्यमियाय धाता ।।[६।।*] हुतभुजि मख-मध्यासङ्गिनि ध्वान्त-नीलम्[3] वियति पवन-जन्म-भ्रान्ति-विक्षेप-भूयः । मुखरयति समन्तादुत्पतद्धूम-जालम्[4] शिखि-कुलमुरुमेघाशङ्कि यस्य

७. प्रसक्तम् ।।[७।।*]तेनापीश्वरवर्म्मणः क्षितिपतेः क्षत्र-प्रभावाप्तये ।[5] जन्माकारि कृतात्मनः क्क्रतु-गणेष्वाहूत-वृत्र-द्विषः । यस्योत्खात-कलि-स्वभाव-चरितस्याचार-मार्गं नृपा यत्नेनापि ययाति-

८. तुल्यशसो नान्ये[ऽ*]नुगन्तुं क्षमाः ।।[८।।*] नीत्या शौर्यं विशालं सुहृदमकुठि(टि)ने(ले)नोत्तमेच्छाङ्कुलेन[6] । त्यागं पात्रेण वित्त-

---

१. हीरानन्द शास्त्री एवं सरकार : तेष्वादौ हरिवर्म्मणो[ऽ*]वनिभुजो ।
२. विराम रेखा अनावश्यक ।
३, ४. °लं पढ़ें ।
५. पड़ी रेखा अनावश्यक है ।
६. हीरानन्द शास्त्री मकुटिलेनोत्तमुर्व्वी संशोधन सुझाते हैं जो अनावश्यक है । आगे की रेखा अनावश्यक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रभवमपि हृ(ह्रि)या यौवन संयमेन [।*] वाचं सत्येन चेष्टां श्रुति-पथ-विधिना प्रश्रये-

९. णोत्तमर्द्धिम्[1] यो बध्नंनै (ध्नन्नै)व खेदं व्रजति कलिमय-ध्वान्त-मग्ने[ऽ*]पि लोके ।।[९।।*] यस्येज्यास्वनिशं यथा-विधि हुत-ज्योतिर्ज्वलज्जान्मना[2] धूमेनाञ्जन-भङ्ग-मेचक-रुचा दिक्चक्र-वाले तते । आयाता नव-

१०. वारि-भाक-विनमन्मेघावली प्रावृडित्युन्मादोद्धत-चेतसः शिखि-गणा वाचालतामाययुः[3] ।।[१०।।*] तस्मात्सूर्य्यं इवोदयाद्रिशिरसो धातुर्म्मरुत्वानिव क्षीरोदादिव तर्जितेन्दु-किरणः कान्तप्रभः कौस्तुभः [।*]

११. भूतानामुदपद्यत स्थिति-करः स्थेष्ठं महिम्नः पदम्[4] राजन्राजक-मण्डलाम्बर-शशी श्रीशानवर्म्मा नृपः ।।[११।।*] लोकानामुप-कारिणारि-कुमुद-व्यालुप्त-कान्ति-श्रिया ।[5] मित्रस्याम्बुरुहाग (क)रद्युतिकृता भूरि-

१२. प्रताप-त्विषा । येनाच्छादित-सत्पथं कलि-युग-ध्वान्तावमग्नञ्जग-त्सूर्येणेव समुद्यता कृतमिदं भूयः प्रवृत्तक्रियम् ।।[१२।।*] जित्वा[ऽऽ*]न्ध्राधिपतिं सहस्र-गणित-त्रेधा-क्षरद्वारणम्[6] व्यावल्गन्नियुताति-

१३. संख्य-तुरगान्भङ्क्त्वा रणे सूलिकाम्(न्)[।*]कृत्वा चायति-मौ(मो)चित-स्थल-भुवो गौडान्समुद्राश्रयानध्यासिष्ट नत-क्षितीश-चरणः सिङ्हासनं यो जिती ।।[१३।।*] प्रस्थानेषु बलार्णवाभि-गमन-क्षोभ-स्फुटद्भू तल-

---

१. ॰र्द्धि पढ़ें ।
२. रेखा अनावश्यक ।
३. सातवें श्लोक में भी ऐसा ही भाव प्रकट किया गया है ।
४. पदं पढ़ें ।
५. रेखा अनावश्यक है ।
६. ॰णं पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४. प्रोद्धू त-स्थगितार्क्क-मण्डल-रुचा दिग्व्यापिना रेणुना । यस्या-मूढ-दिनादि-मध्य-विरतौ लोके[ऽ*]न्धकारीकृते ।[1] व्यक्ति नाडिकयैव यान्ति जयिनो यामास्त्रियामास्विव ॥[१४॥*] प्रविशती कलि-मारुत-घट्टिता-

१५. क्षितिरलक्ष्य-रसातल-वारिधौ । गुण-शतैरवबध्य समन्ततः स्फुटित-नौरिव येन बलाद्धि(द्धृ)ता ॥[१५॥*] ज्याघात-व्रण-रूढि-कर्क्कश-भुजा व्याकृष्ट-शार्ङ्ग-च्युतान्यस्यावाप्य पतत्रिणो रणमुखे[2] प्राणानमुञ्च-

१६. न्द्विषः । यस्मिन्शासति च क्षितिं क्षिति-पतौ जातेव-भूयस्त्रयी ।[3] तेन ध्वस्त-कलि-प्रवृत्ति-तिमिरः श्री-सूर्य्यवर्म्मा[ऽ*]जनि ॥[१६॥*] यो बालेन्दु-सकान्ति कृत्स्न-भुवन-प्रेयो दधद्यौवनम्[4] शान्तः शास्त्र-विचारणा-

१७. हित-मनाः पारङ्कलानाङ्गतः । लक्ष्मी-कीर्त्ति-सरस्वती-प्रभृतयो यं स्पर्धयेवाश्रिता लोके कामित-कामि-भाव-रसिकः कान्ता-जनो भूयसा ॥[१७॥*] सद्वृत्तेन बलात्कलेरवनतिता[5](स्ता) वत्प्रवृद्धात्मनो वाणै-

१८. स्तावदवस्थितं स्मृति-भुवः कान्ता-शरीर-क्षतौ । लक्ष्म्या तावद-काण्ड-भङ्ग-भयं त्यक्तम्परापाश्रयम्[6] यावन्नाविरकारि यस्य जनता-कान्तं वपुर्व्वेधसा ॥ [१८॥*]लक्ष्म्यः[7] शत्रु-भुवः कुच-ग्रह-भयावेश-भ्रम-

---

१. रेखा अनावश्यक है ।
२. हीरानन्द शास्त्री : रणमखे ।
३. रेखा अनावश्यक है ।
४. °नं पढ़ें ।
५. सरकार : °नति (तं) ता° ।
६. °यं पढ़ें ।
७. लक्ष्मीः पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९. ल्लोचना ।[1] येनाकृष्य भुजेन विस्फुरदसि-ज्योतिः-कणासङ्गिना[2] कान्ता मन्मथिनेव कामित-विदा गाढं निपीड्योरसा ।[3] प्रायेणान्य-मनुष्य-संश्रय-कृतं भावं परित्याजिता ।।[१९।।*] तेनानतोन्नति-कृता

२०. मृगया गतेन दृष्ट्वाद्यमन्धक-भिदो भवनं विशीर्ण्णम् [।*] स्वेच्छा-समुन्नतमकारि ललाम भूमेः क्षेमेश्वर-प्रथित-नाम शशाङ्क-शुभ्रम् ।। [२०।।*] एकादशातिरिक्तेतु षट्षु शातित-विद्विषि । शतेपु शरदां

२१. पत्यौ भुवः श्रीशानवर्म्मणि ।।[२१।।*] यस्मिन्काले [ऽ*]म्बुवाहा नव-गवल-रुचः प्रान्त-लग्नेन्द्र-चापास्तन्वन्त्याशा-वितानं स्फुरदुरु-तडितः सान्द्र-धीरं क्वणन्तः । वाताश्चावान्ति नीपान्नव-कुसुम-चयानभ्र-मूर्ध्नो

२२. धुनानास्तस्मिन्मुक्ताम्बु-मेघ-द्युति भवनमदो निर्म्मितं शूल-पाणेः ।।[२२।।*] कुमारशान्तेः पुत्रेण गर्ग्गराकट-वासिना । नृपानुरागा-त्पूर्व्वेयमकारि रविशान्तिना ।। [२३।।*] उत्कीर्ण्णा मिहिरवर्म्मणा[।।*]

---

१. विरामरेखा अनावश्यक है ।

२. सरकार : कलासङ्गिना ।

३. विरामरेखा अनावश्यक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शर्ववर्मन् का असीरगढ़ मुद्रा अभिलेख

स्थान : यह अभिलेख मूलतः एक मुद्रा पर था जो लुप्त हो चुकी है। इसकी प्रतिकृति मध्यप्रदेश के बरहानपुर नगर से लगभग १७ किलोमीटर पूर्वोत्तर असीरगढ़ दुर्ग में महाराजा सिन्धिया की एक पेटी से प्राप्त हुई थी।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी। मात्राएं लम्बी और लहरिया हैं।

भाषा : संस्कृत।

विषय : मौखरि राजा शर्ववर्मन् की वंशावली का उल्लेख।

संदर्भ : प्रिंसेप, JASB, 5 p. 482; विल्सन, JRAS, 3, p. 377; फ्लीट, CII, III, No. 47.

पाठ

१ चतुस्समुद्रातिक्क्रान्त-कीर्त्तिः प्रतापानुरागोपनतान्यराजा(जो) वर्णाश्रम-व्यवस्था-

२. पन-प्रवृत्तचक्क्रश्चक्क्रधर इव प्रजानामर्त्तिहर[:*] श्रि(श्री)-महाराज-हरिवर्म्मा [।।*] तस्य

३. पुत्रस्तत्पादानुद्ध्या[ा*]तो जयस्वामिनि-भट्टारिका-देव्य[ा*]-मुत्पन्नः श्री-महाराजादित्यव-

४. र्म्मा [।।*] तस्य पुत्रस्तत्पादानुद्ध्यातो हर्षगुप्ता-भट्टारिका-देव्या-मुत्पन्नः श्री-मह[ा*]रा-

५. जेश्वरवर्म्मा [।।*] तस्य पुत्रस्तत्पादानुद्ध्यात उपगुप्ता[1]-भट्टारिका-देव्यामुत्पन्नो

---

१. चार्ल्स विल्किन्स ने इसे 'उमागुप्ता' पढ़ा। परन्तु जैसा कि फ्लीट ने कहा है यद्यपि इस लेख में प्रयुक्त हुए 'म' तथा 'प' बहुत समान हैं फिर भी इस स्थल का अक्षर 'प' ही है और फिर 'आ' की मात्रा तो इस अक्षर पर है ही नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. मह[ा*]राजाधिराज-श्रि(श्री)-ईशान[१]वर्म्मा [।।*] तस्य पुत्र-स्तत्पादानुद्ध्यातो ल(?)क्ष[म][२]ीव-

७. [त]ी-भट्टारिका-मह[ा*]देव्यामुत्पन्न परममा[३]हेश्वरा[रो] म[४]-

८. हाराजाधिराज-श्री-शर्व्ववर्म्मा मौखरिः [।।*]

---

१. श्रीशान° पढ़ें ।

२. फ्लीट का अनुमान । 'म' मूल में उत्कीर्ण नहीं है ।

३. यह अक्षर स्पष्ट नहीं है ।

४. 'म' का केवल बायाँ बाजू दिखता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनन्तवर्मन् का बराबर गुहा अभिलेख

स्थान : बिहार में गया नगर से लगभग २२ किलोमीटर पूर्वोत्तर को पनारी ग्राम के निकट 'बराबर' पहाड़ी की लोमश ऋषि गुहा के प्रवेश द्वार पर उत्कीर्ण।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : मौखरि राजा अनन्तवर्मन् द्वारा प्रवरगिरि (बराबर पहाड़ी) की गुहा में भगवान कृष्ण की प्रतिमा की स्थापना तथा अपने पिता शार्दूलवर्मा-का यशोवर्णन।

संदर्भ : प्रिंसेप, JASB, 6, p. 674; भगवानलाल इन्द्रजी, IA, 13, p. 428, नोट 55; फ्लीट, CII, III, No. 48.

१. ॐ[1][।।*] भूपाना[ं*] मौखरीणां कुलमतनुगुणोलंचकारात्मजात्या[2]।[3] श्री-शार्दूलस्य यो[4]भूज्जनहृदयहरो[5]नन्तवर्म्मा सुपुत्त्रः[।*]

२. कृष्णस्याकृष्णकीर्त्तिः प्रवरगिरि-गुहा-संश्रितं विंवमेतत्[6] मूत्त लोके यश[:*] स्वं रचितुमिव मुदाचीकरत्कान्तिमत्सः ।।

---

१. मूल लेख में 'ॐ' का चिह्न तीसरी पंक्ति के सम्मुख प्रान्त में उत्कीर्ण है।

२. °गुणोऽलंचकार पढ़ें।

३. यह अर्ध-विराम अनावश्यक है।

४. योऽभूज्ज° पढ़ें।

५. °हारोऽनन्तवर्म्मा पढ़ें।

६. बिंबमेतत् पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. कालः शत्त्रु महीभुजां प्रणयिणां[1] इच्छाफलः पादपो ।[2]
दीपः क्षत्त्रकुलस्य नैक-समर-व्यापार-शोभावतः [।*]

४. कान्ता-चित्त-हरः स्मरप्रतिसमः पाता व(व) भूव क्षितेः
श्री-शार्दू ल इति प्रतिष्ठित-यशा[ः*] सामन्तचूडामणिः ॥

५. उत्पक्ष्मान्तविलोहितोरुतरलस्पष्टेष्टतारां रुषा ।[3]
करोति विषमां यत्त्र स्वदृष्टिं रिपो(पौ) ।

६. तत्त्राकर्ण्ण-विकृष्ट-शार्ङ्ग-शरधि-व्यस्तशरोत्त(न्त)ावहः
तत्पुत्त्रस्य पतत्यनन्तसुखदस्यानन्तवर्म्मश्रुतेः ॥

---

१. प्रणयिणाम् पढ़ें ।

२, ३. ये दोनों अर्ध-विराम चिह्न अनावश्यक हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनन्तवर्मन् का नागार्जुनी (उत्तरी) गुहा अभिलेख

स्थान : बिहार में गया नगर से लगभग २४ किलोमीटर पूर्वोत्तर को जाफरा ग्राम के निकट नागार्जुनी पहाड़ी की एक उत्तरी गुहा के मस्तक पर उत्कीर्ण। इसके निकट अशोक के पौत्र दशरथ का अभिलेख भी उत्कीर्ण है।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : अनन्तवर्मन् द्वारा गुहा के अन्दर भूतपति (शिव) तथा देवी (पार्वती) की संयुक्त (अर्धनारीश्वर) प्रतिमा की स्थापना।

संदर्भ : राजेन्द्रलाल मित्र, JASB, 16, p. 594; फ्लीट, CII, III, No. 49.

१. ॐ[१] [।।*] आसीतमहीक्षितामनुरिव[२] क्षत्त्रस्थितेर्द्देशिकः
श्रीमान्मत्त-गजेन्द्र-खेल-गमनः श्री-यज्ञवर्म्मा नृपः [।*]

२. यस्याहूत-सहस्रनेत्र-विरह-क्षामा सदैवाध्वरैः
पौलोमी चिरमश्रुपातमलिनां धा[३](ध]त्ते कपोलश्रियं[४] ।। [१*]

३. श्री-शार्दूल-नृपात्मजः परहितः श्री-पौरुषः श्रूयते ।[५]
लोके चन्द्र-मरीचि-निर्म्मल-गुणो योनन्तवर्म्माभिधा(ध): [।*]

४. दृष्टादृष्ट-विभूति कर्तृ-वरदं तेनाद्भुतं कारितं ।[६]
विम्वं[७] भूतपतेर्गुहाश्रितमिदं देव्याश्च पायाज्जगत् ।। [२*]

---

१. ॐ का चिह्न तीसरी पंक्ति के सम्मुख प्रान्त में उत्कीर्ण है।

२. चार्ल्स विल्किन्स तथा राजेन्द्रलाल मित्र : °महीक्षितां मनुरिव। मूल में अनुस्वार नहीं है।

३. फ्लीट जिसे आ की मात्रा पढ़ते हैं वह विसर्ग प्रतीत होता है।

४. °श्रियम् पढ़ें।

५, ६. दोनों स्थानों पर अर्धविराम का चिह्न अनावश्यक है।

७. बिम्बं पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. अन्सान्ताकृष्ट[1]-शाङ्गं-प्रवितत-सशर-ज्या-स्फुरन्मण्डलान्तव्यक्त[2]-
भ्रूभङ्ग-लक्ष्म-व्यतिकर-शवलाखण्ड-वक्त्रेन्दु-विम्व[:*][3] ।

६. अन्तायानन्तवर्म्मा स्मर-सदृश-वपुर्ज्जीविते नि[:*]स्पृहाभिः
दृष्ट[:*] स्थित्वा मृगीभिः सुचिरमनिमिष-स्निग्धमुग्धे-
क्षणाभिः ।।[३*]

७. अत्याकृष्टात्कुरर-विरुत-स्पर्द्धिनः शाङ्गं-यन्त्राद्वेगाविद्धः प्रवितत-
गुणादीरितः सौष्ठवेन ।

८. दूरप्रापी विमथित-गजोद्भ्रान्त-वाजी प्रवीरो वाणोरि[4]-स्त्री-
व्यसन-पदवी-देशिकोनन्तनाम्ना(म्न): ।।[४*]

---

१. अंस॰ पढ़ें ।
२. व्यक्त के आगे लगा अर्धविराम चिह्न अनावश्यक है ।
३. बिम्ब : पढ़ें ।
४. वाणोऽरि पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनन्तवर्मन् का नागार्जुनी (दक्षिणी) गुहा अभिलेख

स्थान : विहार में गया नगर से लगभग २४ किलोमीटर पूर्वोत्तर को जाफरा ग्राम के निकट नागार्जुनी पहाड़ी की एक दक्षिणी गुहा के प्रवेश द्वार पर उत्कीर्ण ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत :

विषय : अनन्त वर्मन् द्वारा कात्यायनी नाम से पार्वती की एक मूर्त्ति की स्थापना तथा भवानी नाम से उसी देवी के लिए एक गांव का दान। गांव का नाम लेख में मिटा दिया गया है ।

सदर्भ : फलीट, CII, III, N0. 50.

१. ओम् [।।*] उन्निद्रस्य सरोरुहस्य सकलामाक्षिप्य शोभां रुचा ।[१]
सावज्ञं महिषासुरस्य शिरसि न्यस्तः क्वणन्नूपुरः ।

२. देव्या वः स्थिरभक्तिवादसदृशीं युञ्जन्फलेनार्थितां । दिश्या-
दच्छनखाङ्शुजाल-जटिलः पादः पदं संपदां ।। [१*]

३. आसीदिष्टसमृद्धयज्ञमहिमा श्रीयज्ञवर्म्मा नृपः । प्रख्याता (तो)
विमलेन्दुनिर्म्मलयशा [:*] क्षात्त्रस्य धाम्नः पदं ।

४. प्रज्ञानान्वयदानविक्क्रमगुणैर्यो राजकस्याग्रणी[:*] भूत्वापि प्रकृति-
स्थ एव विनयादक्षोभ्यसत्[त्*]वोदधि [:*] ।। [२*]

५. तस्योदीर्णमहार्णवोपमरणव्यापारलव्य(ब्धं) यशः [।*] तन्वानः
ककुदं सुखेषु ककुभं कीर्त्[त्*]या जितेदंयुगः [।*]

---

१. प्रथम और तृतीय पादों के अन्त में अनावश्यक विराम चिह्न ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. श्रीमान्व(ब)न्धुसुहृज्जन प्रणयिनामाशाः फलैः पूरय[न्*]।
पुत्त्रः कल्पतरोरिवाप्तमहिमां[1] शार्दूलवर्म्मा नृपः ।। [३*]

७. तस्यानन्तमनन्तकीर्त्तियशसोऽनन्तादिवर्म्माख्यया । ख्यातेनाहित-
भक्तिभावितधिया पुत्त्रेण पूतात्मना [।*]

८. आसूर्यक्षितिचन्द्रतारकमियं पुण्यास्पदं वाञ्च्छ(ञ्छ)ता । विन्य-
स्ताद्भुताविन्ध्यभूधरगुहामाश्रित्य कात्यायनी ।। [४*]

९. धौताङ्होमलपङ्कदोषममलैर्माहानदैरम्वु(म्बु]भिः । व्याधूतोपवन-
प्रियङ्गुवकुलैरामोदितं वायुभि [ः*।]

१०. कल्पान्तावधिभोग्यमुच्चशिखरिच्छायावृतार्क्कद्युति । [- -] ग्राम-
मनल्पभोगविभवं रम्यं भवान्यै ददौ ।।[५*]

---

१. °महिमा पढ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षवर्धन का बाँसखेड़ा ताम्र-पट्ट अभिलेख

हर्ष संवत् २२

स्थान : उत्तरप्रदेश में शाहजहानपुर से लगभग ४० किलोमीटर दूर बाँसखेड़ा ग्राम से प्राप्त ताम्र-पट्ट पर उत्कीर्ण।

लिपि : पश्चिमोत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : महाराज हर्षवर्धन द्वारा बालचन्द्र एवं भद्रस्वामी नामक ब्राह्मणों को अहिच्छत्रा भुक्ति के अन्तर्गत मर्क्कटसागर ग्राम का दान।

संदर्भ : ब्यूलर, EI, 4, pp. 208-211; दिसकलकर, SSI, pp. 129-36.

१. श्री[1] स्वस्ति]॥*] महानौ-हस्त्यश्व-जयस्कन्धावाराच्छ्रीवर्द्धमान-कोटचा महाराज-श्री-नरवर्द्धनस्तस्य पुत्रस्ततपादानुध्यातश्श्री-वज्रिणीदेव्यामुत्पन्न ‿ परमादित्य-भक्तो महाराज-श्री-राज्य-वर्द्धनस्तस्य पुत्रस्ततपादानु-

२. ध्यातश्श्रीमदप्सरोदेव्यामुत्पन्न ‿ परमादित्य-भक्तो महाराज-श्रीमदादित्यवर्द्धनस्तस्य पुत्रस्ततपादानुध्यातश्श्री-महासेनगुप्ता-देव्यामुत्पन्नश्चतुस्समुद्रातिक्रान्तकीर्त्ति ‿ प्रतापानुरागोप-

३. नतान्यराजो वर्णाश्रमव्यवस्थापनप्रवृत्तचक्र एकचक्ररथ इव प्रजानामर्त्तिहर[2] ‿ परमादित्यभक्त ‿ परमभट्टारकमहाराजा-धिराज-श्री-प्रभाकरवर्द्धनस्तस्य पुत्रस्ततपा[दा]-

४. नुध्यातस्सितयश ‿ -प्रतान-विच्छुरित-सकल-भुवनमण्डल ‿ परि-गृहीत-धनद-वरुणेन्द्र-प्रभृति-लोकपाल-तेजास्सत्पथोपार्ज्जिता-नेक-द्रविण-भूमि-प्रदान स[*]-प्रीणितार्थिहृदयो-

---

१. चिह्न मात्र।

२. ब्यूलर : 'मार्त्तिहर'।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. [ऽ*]तिशयित-पूर्व्वराज-चरितो देव्याममलयशोमत्यां श्री-
यशोमत्यामुत्पन्न॒परमसौगतस्सुगत इव परहितैकरत॒परम-
भट्टारक-महाराजाधिराज-श्री-राज्यवर्द्धनः [।*] राजानो युधि दु-

६. ष्ट-वाजिन इव श्री-देवगुप्तादय ×कृत्वा येन कशाप्रहार-
विमुखास्सर्व्वे समं संयताः । उत्खाय द्विषतो विजित्य वसुधा-
ङ्कृत्वा प्रजानां प्रियं प्राणानुज्झितवानराति-भवने सत्यानुरोधेन
यः । [।।१*] तस्या-

७. नुजस्तत्पादानुध्यात॒परम-माहेश्वरो महेश्वर इव सर्व्व-
सत्वा[१]नुकम्पी परम-भट्टारक-महराजाधिराज-श्री-हर्षः अहि-
च्छत्रा-भुक्तावङ्गदीय-वैषयिक-पश्चिम-पथक-सम्व(म्ब)[द्ध]-
मर्क्कट-सा-

८. गरे [स]मुपगतान्महासामन्त-महाराज-दौस्साधसाधनिक-
प्रमातार-राजस्थानीय-कुमारामात्योपरिक-विषयपति-भट-चाट-
सेवकादीन्प्रतिवासि-जानपदांश्च समाज्ञापय[ि]त वि[दि]तम-

९. [स्तु] यथायमुपरि लिखित-ग्रामस्स्वसीमा-पर्य्यन्तस्सो-
द्रङ्गस्सर्व्व-राज-कुलाभाव्य-प्रत्याय-समेतस्सर्व्व-परिहृत-परिहारो
विषयादुद्धृतपिण्ड॒पुत्त्र-पौत्त्रानुगश्चन्द्रावर्क-क्षिति-समका-

१०. [ली]नो भूमिच्छिद्र-न्यायेन मया पितु॒परम-भट्टारक-
महाराजाधिराज-श्री-प्रभाकरवर्द्धन-देवस्य मातुर्भट्टारिका-
महादेवी-राज्ञी-श्री-यशोमतीदेव्या ज्येष्ठ-भ्रातृ-परमभट्टारक-

११. महाराजाधिराज-श्री-राज्यवर्द्धनदेव-पादानाञ्च पुण्य-यशो
[ऽ*] भिवृद्धये भरद्वाज-सगोत्र-व(ब)हृवृचच्छन्दोग-सव्र(ब्र)ह्म-
चारिभट्ट-वा(बा)लचन्द्र[२]-भद्रस्वामिभ्यां प्रतिग्रह-धर्म्मेणा[ऽ*]-
ग्रहारत्वेन प्रतिपा-

---

१. 'सत्वा' पढ़ें ।
२. बालचन्द्र व भद्रस्वामी के नामों को पृथक दिखाने के लिए उनके बीच चिह्न उत्कीर्ण है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२. दितो विदित्वा भवद्भिस्समनुमन्तव्य॒प्रतिवासि-जान-पदैर-
प्याज्ञा-श्रवण-विधेयैर्भूत्वा यथा समुचित-तुल्य-मेय-भाग-भोग-
कर-हिरण्यादि-प्रत्याया एतयोरेवोपनेया स्सेवोपस्थान[ञ्च]क-

१३. रणीयमित्यपि (मिति । अपि) च । अस्मत्कुलक्क्रममुदाहर-
द्भिरन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनीयं[1] । लक्ष्म्यास्तडित्सलिल-
बुद्-बुद[2]-चञ्चलाया दानं फलं परयश॒परिपालनञ्च ।।[२*]
कर्म्मणा म-

१४. नसा वाचा कर्त्तव्यं प्राणिभिर्हितं (तम्) । हर्षेणैतत्समाख्यात-
न्धर्म्मार्ज्जनमनुत्तमं[3][।।३*] दूतको[ऽ*]त्र महाप्रमातार-
महासामान्त-श्री-स्कन्दगुप्तः महाक्षपटलाधिकृत-महासामन्त-म-

१५. हाराज[भानु]समादेशादुत्कीर्ण्णं[4]

१६. ईश्वरेणेदमिति सम्वत्[5] २० २

१७. कार्ति[6] व दि १ [।*]

१८. [7]स्वहस्तो मम महाराजाधिराज-श्री-हर्षस्य [।।*]

---

१. °यम् पढ़ें ।
२. बुद्बुद पढ़ें ।
३. °मम् पढ़ें ।
४. °र्णम् पढ़ें ।
५. संवत् पढ़ें ।
६. कार्तिक पढ़ें ।
७. यह पंक्ति १६-१७ के सम्मुख है । इसके अक्षर शेष अभिलेख के अक्षरों से बड़े व अलंकृत हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षवर्धन का मधुबन ताम्र-पट्ट अभिलेख

हर्ष संवत् २५

स्थान : उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले में मधुबन ग्राम से प्राप्त एक ताम्र-पट्ट पर उत्कीर्ण ।

लिपि : पश्चिमोत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : महाराज हर्षवर्धन द्वारा श्रावस्ति भुक्ति के कुण्डधानी विषय में सोमकुण्डका ग्राम का कूट दान-पत्र के आधार पर इसे भोगने वाले वामरथ्य नामक ब्राह्मण से छीनकर, वातस्वामी तथा शिवदेवस्वामी नामक दो अन्य ब्राह्मणों को दान।

संदर्भ : कीलहॉर्न, EI, 7, p. 155.

१. ॐ[1] स्वस्ति [।।*] महा-नौ-हस्त्यश्व-जयस्कन्धावारात्कपित्थि-काया: महाराज-श्री-नरवर्द्धनस्तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यात: श्री-वज्रिणी-देव्यामुत्पन्न: परमादित्य-भक्तो-

२. महाराज-श्री-राज्यवर्द्धनस्तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यात: श्री-अप्सरो-देव्यामुत्पन्न: परमादित्य-भक्तो महाराज-श्रीमद(दा)दित्यवर्द्धन-स्तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यात: श्री-महा-

३. सेनगुप्ता-देव्यामुत्पन्नश्चतुस्समुद्रातिक्क्रान्त-कीर्त्तिः प्रतापानुरागो-पनतान्य-राजा(जो) वर्णाश्रम-व्वयस्थापन-प्रवृत्त-चक्र एक-चक्क्र-रथ इव प्रजानामार्ति-हर:

---

१. चिह्न मात्र ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. परमादित्य-भक्तः परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-श्री-प्रभाकर-वर्द्धनस्तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यातः सित-यशः-प्रतान-विच्छुरित-सकल-भुवन-मण्डलः परिगृहीत-

५. धनद-वरुणेन्द्र-प्रभृति-लोकपाल-तेजाः सत्पथोपार्ज्जितानेक-द्रविण-भूमि-प्रदान-सम्प्रीणितार्थि-हृदयो[ऽ*]तिशयित-पूर्व्वराज-चरितो देव्याममल-यशोमत्यां

६. श्री-यशोमत्यामुत्पन्नः परम-सौगतः सुगत इव परहितैक-रतः परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-श्री राज्यवर्द्धनः [।*] राजानो युधि दुष्ट-वाजिन इव श्री-देवगुप्ता-

७. दयः कृत्वा येन कशा-प्रहार-विमुखाः सर्व्वे समं संयताः [।*] उत्खाय द्विषतो विजित्य वसुधां कृत्वा प्रजानां प्रियं प्राणानुज्झि-तवानराति-भवने सत्यानुरोधेन यः [॥१॥*] तस्यानुज-

८. स्तत्पादानुध्यातः परम-माहेश्वरो महेश्वर इव सर्व्व-सत्वा(त्त्वा)-नुकम्पी परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-श्री-हर्षः श्रावस्ती-भुक्तौ कुण्डधानी-वैषयिक-सोमकुण्डका-ग्रामे

९. समुपगतां(तान्) महासामन्त-महाराज-दौस्साध-साधनिक-प्रमा-तार-राजस्थानीय-कुमारामात्योपरिक-विषयपति-भट-चाट-सेवका-दीन्प्रतिवासि-जनपदा(दां)श्च समा-

१०. ज्ञापयत्यस्तु वः सम्वि(संवि)दितं(त)मयं सोमकुण्डका-ग्रामो व्रा(ब्रा)ह्मण-वामरथ्येन कूट-शासनेन भुक्तक इति विचार्य यतस्तच्छासनं भङ्क्त्वा तस्मादाक्षिप्य च स्व-सीमा-

११. पर्य्यन्तः सोद्रङ्गः सर्व्व-राजकुलाभाव्य-प्रत्याय-समेतः सर्व्व-परिहृत-परिहारो विषयादुद्धृत-पिण्डः पुत्र-पौत्रानुगः चन्द्रार्क्क-क्षिति-समकालीनो

१२. भूमिच्छिद्र-न्यायेन मया पितुः परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-श्री-प्रभाकरवर्द्धनदेवस्य मातुः परम-भट्टारिका-महादेवी-राज्ञी-श्री-यशोमती-देव्याः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३. ज्येष्ठ-भ्रातृ-परमभट्टारक-महाराजाधिराज-श्री-राज्यवर्द्धनदेव-पादानां च पुण्य-यशोभिवृद्धये सावर्ण्णि-सगोत्र-च्छन्दोग-सब्र(ब्र)-ह्मचारि-भट्ट-वातस्वामि-

१४. विष्णुवृद्ध-सगोत्र-व(ब)ह्वृच-सब्र(ब्र)ह्मचारि-भट्ट-शिवदेव-स्वामिभ्यां प्रतिग्रह-धर्म्म(र्म्मे)णाग्रहारत्वेन प्रतिपादितः [।*] विदित्वा भवद्भिः समनुमन्तव्यः प्रति-

१५. वासि-जनपदैरप्याज्ञा-श्रवण-विधेयैर्भूत्वा यथासमुचित-तुल्य-मेय-भाग-भोग-कर-हिरण्यादि-प्रत्याया अनयोरेवोपनेयाः सेवोपस्थानं च करणीयमित्य(ति । अ)-

१६ पि च ।। अस्मत्कुल-क्रममुदारमुदाहरद्भिरन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनीयं[1] [।*] लक्ष्म्यास्तडित्सलिल-बुद्बु(बुद्बु)द-चंचलायाः दानं फलं पर-यशः-परिपालनं च ।।[२।।*]कर्म्मणा

१७. मनसा वाचा कर्त्तव्यं प्राणिने हितं[2] [।*] हर्षेणैत[त्*]समाख्यातं धर्म्मार्ज्जनमनुत्तमं[3] ।। [३।।*] दूतकोत्र महासामन्त-श्री-स्कन्दगुप्तः[।*] महाक्षपटलाधिकरणाधि-

१८. कृत-सामन्त-महाराजेश्वरगुप्त-समादेशाच्चोत्कीर्ण्णं गर्ज्जरेण [।।*] सम्वत् (संवत्) २० ५ मार्ग्गशीर्ष-वदि ६ [।।*]

---

१. °यम् पढ़ ।
२. हितम् पढ़ ।
३. °मम् पढ़ें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शशाङ्क-कालीन मिदनापुर ताम्र-पट्ट अभिलेख

स्थान : बंगाल के मिदनापुर जिले के कलेक्टर बी. आर. सेन द्वारा १६३७ में किसी व्यक्ति से प्राप्त दो ताम्र-पट्टों पर उत्कीर्ण जिनका प्राप्ति-स्थान अज्ञात है।

लिपि : छठी-सातवीं शताब्दी की पूर्वोत्तरी ब्राह्मी।

विषय : प्रथम पट्ट में राजा शशाङ्क के अधीन दण्डभुक्ति तथा उत्कल के शासक सामन्त सोमदत्त द्वारा भट्टेश्वर नामक ब्राह्मण को महाकुम्भार-पद्रक ग्राम का दान।

द्वितीय पट्ट में दाम्यस्वामी नामक ब्राह्मण को कुम्भारपद्रक ग्राम में कुछ भूमि का दान।

संदर्भ : रमेशचन्द्र मजुमदार, JRASB (L), II, 194८, pp. 1-9.

(प्रथम पट्ट)

१. [स]म्वत् १० ६ भाद्र दि १० ६ [।।*] विष्णोः पोत्त्राग्र-वि-
क्षेप-क्षणभा[वित-साध्वसां(साम्)। शेषा][1]-

२. शेष-शिरो-मध्यमध्यासीन-महा-तनुं (नुम्) ।।[१*] कामाराति-
शिरोभ्रष्ट-[गङ्गौघ-ध्वस्त][2]-

३. कल्मषां (षाम्) [।*] श्री-शशाङ्के महीं पाति चतुर्जलधि-मेखलां
(लाम्) ।।[२*] तस्य पाद-न[ख-ज्योत्स्ना][3]-

४. विभूषित-शिरोमणौ[।*] श्री-सामन्त-महाराज-सोमदत्ते गुणाधि-
के ।।[३*] स[र्व-शास्त्रा][4]-

५. गमात्सन्न-कालेय-ध्वान्त-संहतौ [।*] सहितामुत्कल-देशेन दण्ड-
भुक्ति प्रशा[सति।।] [४*]

१, २, ३. रमेशचन्द्र मजुमदार का अनुमान।

४. सरकार का अनुमान : स[त्व-समा]-।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६. सत्य-शौर्य-कृतास्त्रत्व-रूप-विद्यादयः पृथक् [।*] पाण्डवेषु स्थिताः सन्ति य[स्मि]-

७. न्नेकत्र ते गुणाः ॥[५*] अमात्यो यस्य गुणवान्प्रकीर्ण्णदास इति श्रुतः [।*] साधुकारि-

८. तया नित्यं यः पूज्यैः पूज्यते द्विजैः ॥[६*] अगामिनो नृपान्सर्व्वान् ज्ञापयित्वा

९. प्रणम्य च [।*] प्राह तावीरकं सर्व्वं कारणं लोकसंगतं (तम्)॥ [७*] भूमेर्गोचर्म-मात्रा[या]

१०. दाने स्वर्गः फलं स्मृतं (तम्) पराशर-सुतस्योच्चैर्व्वाचं श्रुत्वेति भाषितं (तम्) ॥ [८*] तेने[दञ्च]

११. समाम्नात[*] मनु-शास्त्रानुवर्त्तिना [।*] श्री-सामन्तेन कृतिना सोमदत्ते[न]

१२. धीमता ॥[९*] भट्टेश्वराय गुणिने काम्यपायाध्वर्यवे [।*] मु(म)हा (?) कुम्भारपद्रको

१३. दत्तः सर्व्व-मण्डल-वर्जित[ः*] ॥ [१०*] तद्योत्रास्मत्कुले जातो मोहादन्यो[ऽ*]पि वा [नरः] [।*]

१४. पापं प्रकुरुते लोभान्महा-पातकवान्भवेत् ॥ [११*] सुखाना-मन्व ....

१५. ......स्यात्याल्य-धीमतः [।*] द्विजदेवस्य माहेतो श्लोकाः स(?) ....सहिता[२]

(द्वितीय पट्ट)

१. [स]म्वत् ८ पौष दि १० २ अस्मिन्दिवस-मास-सम्वत्सरे ॥ विष्णोः पुत्राग्र-विक्षे-

---

२. रमेशचन्द्र मजूमदार का अनुमान ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. प-क्षण-भावित-साध्वसां [।*] शेषाशेष-शिरोमध्यमध्यासीन-महातनु (नुम्) ।। [१*] कामारा-

३. ति-शिरो-भ्रष्ट-गङ्गौघ-ध्व[स्त*]कल्मषां (षाम्) [।*]श्री-शशाङ्के महीम्पाति चतुर्ज्जलधि-मेखलां (लाम्)[।।२*]

४. यस्य गाम्भीर्य-लावण्य-व (ब)हु-रत्नतया[ऽ*]नया[।*] न समः क्षारकालुष्य-व्यालोपय-

५. तयोदधि[1][:*]।।[३*] तस्य पाद-नख-ज्योत्स्ना-विभूषित-शिरोमणौ [।*] श्रीमान्महाप्रति (ती)-

६. हारे शुभ-कीर्त्तौ विचक्षणेः[2] ।।[४*] दण्ड-भुक्तिमिमां पाति पितृवत्पाप-वर्जिते [।*]

७. धर्म-शास्त्रानुरोधेन न्यायान्यायं विचेतरि ।।[५*] अस्यां तावीर-करणं विप्र-प्र-

८. धान-सङ्गतं(तम्)[।*] भविद्वर्त्तमानाधीन्विज्ञापयति सुनृतं (तम्)।। [६*] क्रीत्वा]ऽ*]स्मत्तो

९. यथा-न्यायं शुभकीत्तिरे (र)यं[3] वु (बु)धः [।*]चत्वारिङ्श (रिंश) द्दौ द्रोणान्द्रोणवापं च

१०. वास्तुना ।।[७*] केत(?)पद्रकोद्द शे[4] ग्रामे कुम्भारपद्रके [।*] भरद्वाज-सगोत्रा-

---

१. सरकार : क्षर-कालेप्यालो[पाङ्ग*]तयोदधि[:*] ।
२. विसर्ग अनावश्यक ।
३. मजुमदार का संशोधन : °रिमं ।
४. मजुमदार का संशोधन °कदेशे अनावश्यक। तुलना करें—कुमारगुप्त (प्रथम) का दामोदरपुर ताम्र-पट्ट अभिलेख (वर्ष १२४) पंक्ति ११ में उत्तर-पश्चिमोद्देशे ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११. य माध्यन्दिनाय धीमते [॥८*] दाम्यस्वामिन एतस्मै पित्रो[:*] पुण्याभिवृद्धये [॥९*][1]

१२. तद्यो वा [ऽ*[स्मद् कुले जातो मोहादन्यो [ऽ*]पि वा नरः [।*] पापं प्रकुरुते मोहान्मह-

१३. [त्पा*]तकवान्भवेत्[2] ॥ [१०*]

---

१. श्लोक का पूर्वार्द्ध छूट गया है।

२. यह पंक्ति ताम्र-पट्ट के दूसरी ओर उत्कीर्ण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुलिकेशी (द्वितीय) का एहोळे अभिलेख

शक संवत् ५५६

स्थान : कर्णाटक प्रदेश में बीजापुर जिले के एहोळे ग्राम के मेगुटि मन्दिर की पूर्वी पार्श्व-भित्ति पर उत्कीर्ण ।

लिपि : दक्षिणी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : चालुक्य राजा पुलिकेशी (द्वितीय) के आश्रित कवि रविकीर्ति द्वारा अपने आश्रयदाता के वीरचरितों का वर्णन तथा उसके वंश की प्रशस्ति एवं जैन मन्दिर का निर्माण ।

संदर्भ : **फ्लीट**, IA, 5, p. 67 ff; 8, pp. 237 ff; AS WI, 3, pp. 129 ff; **कीलहॉर्न**, EI, 6, pp.1-12 ff; **दिसकलकर**, SSI, pp. 137-58.

१. जयति भगवान्जि(ञ्जि)नेन्द्रो [वी]त-ज[रा-म]रण-जन्मनो यस्य [।*] ज्ञान-समुद्रान्तर्ग्ग[त]मखिलञ्जगदन्तरीपमिव । [।१*] तदनु चिरमपरि[मे]यश्चलुक्य-कुल-विपुल-जलनिधिर्ज्जयति ।। (।) पृथिवी-मौलि-ललाम्नां य‿प्रभव‿पुरुष-रत्नानाम्। ।। [२*] शूरे विदुषि च विभजन्दानम्मानञ्च युगपदेकत्र ।। (।)

२. अविहित-यथा-सं[ख्यो] [ज]यति च सत्याश्रयस्सुचिरस् ।। [३*] पृथिवी-वल्लभ-शब्दो येषामन्वर्थताञ्चिरञ्जातः (ञ्चिरंयातः) [।*] तद्वंशेषु जिगीषिषु बहुष्वप्यतीतेषु ।। [४*] नाना-हेति-पतित-भ्रान्ताश्व-पत्ति-द्विपे नृत्यद्भीम-कव(ब)न्ध-खड्ग-किरण-ज्वाला-सहस्र(स्रे)रणे [।*]

३. लक्ष्मीर्भावित-चापला[ऽ*]पि च कृता शौर्य्येण येनात्मसात्(द्)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा [ऽऽ]सीज्जयसिङ्ह-वल्लभ इति ख्यातश्चलुक्यान्वयः ॥[५*]
तदात्मजो [ऽ*] भूद्रणराग-नामा दिव्यानुभावोजगदेक-नाथः [।*]
अमानुषत्वं किल यस्य लोकस्सुप्तस्य जानाति वपु-प्रकर्षात्।[६*]
तस्याभवत्तनूज-पोलेकेशि(शी)य[:] श्रितेन्दु-कान्तिरपि[।*]

४. श्री-वल्लभो [ऽ*] प्ययासीद्वातापिपुरी-वधू-वरताम् ॥ [७*]
यत्त्रिवर्ग्ग-पदवीमलं क्षितौ नानुगन्तुमधुना[ऽ*]पि राजकम् [।*]
भूश्च येन हयमेध-याजिना प्राप्तावभृथ-मज्जना बभौ [॥८*]
नळ-मौर्य्य-कदम्ब-काळ-रात्रि:(त्रि-)स्तनयस्तस्य बभूम(व)
कीर्त्तिवर्म्मा[।*] पर-दार-निवृत्त-चित्त-वृत्ते-रपि धीर्यस्य रिपु-श्रि-

५.. या[ऽ*]नुकृष्टा ॥ [९*] रण-पराक्रम-लब्ध-जय-श्रिया सपदि येन
विरुग्न(ग्ण)मशेषतः [।*] नृपति-गन्धगजेन महौजसा पृथु-कदम्ब-
कदम्ब-कदम्बकम् [॥१०*] यस्मिन्सुरेश्वर-विभूति-गताभिलाषे
राजा[ऽ*] भवत्तदनुज × किल मङ्गल(ले)शः[।*] य-पूर्व्व-
पश्चिम-समुद्र-तटोषिताश्व-सेना-रज-पट-विनिर्म्मित-दिग्वितानः
[॥११*] स्फुरन्मयूखैरसि-दीपिका-शतैः(तैर्)

६. व्युदस्य मातङ्ग-तमिस्र-सञ्चयम् [।*]अवाप्तवान्योरण-रङ्ग-मन्दिरे
कटच्चुरि-श्री-ललना-परिग्रहम् ॥[१२*] पुनरपि च जिघृक्षोस्सै-
न्यमाक्रान्त-सालम् (लं) रुचिर-बहु-पताकं रेवती-द्वीपमाशु [।*]
सपदि महदुदन्वत्तोय-संक्रान्त-बिम्बम्(म्बं) वर(रु)ण-बलमिवा-
भूदागतं यस्य वाचा ॥[१३*] तस्याग्रजस्य तनये नहुषानुभागे(वे)
लक्ष्म्या किलाभि-

७. लषिते पुलिकेशि-नाम्नि [।*] सासूयमात्मनि भवन्तमत-
पितृव्यम्(व्यं)ज्ञात्वा [ऽ] परुद्ध-चरित-व्यवसाय बुद्धौ [॥१४*]
स यदुपचित-[म]न्त्रोत्साह-शक्ति-प्रयोग-क्षपित-बल-विशेषो
मङ्गलेशस्समन्तात् [।*] स्व-तनय-गत-राज्यारम्भ-यत्नेन सार्द्धं
निजमतनु च राज्यञ्जीवितञ्चोज्झति स्म ॥[१५*]तावत्तच्छत्र
(त्त्र)-भङ्गे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्धं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. यस्यासह्य-प्रताप-द्युति-ततिभिरिवाक्क्रान्तमासोत्प्रभातम् [।*] नृत्यद्विद्युत्पताकै॒प्रजविनि मरुति क्षुण्ण-पय्य(र्य्य)न्त-भागै-र्गर्ज्जद्भिर्व्वारि-वासै(है)रलि-कुल-मलिनं व्योम यातं कदा वा ॥ [१६*]ल[ब्ध्वा] कालं भुवमुपगते जेतुमाप्पायिकाख्ये गोविन्दे च द्विरद-निकरैरुत्तराम्भैमरथ्या: [।*] यस्यानीकैर्युधि भय-रस-ज्ञत्वमेक॒प्रयात-स्तत्रावाप्तम्फलमुपकृतस्या--

९. परेणापि सद्यः ।(।।)[१७*] वरदा तुङ्ग-तरङ्ग-रङ्ग-विलसद्धंसावली-मेखलां वनवासीमवमृद्नतस्सुर-पुर-प्रस्पर्द्ध (र्द्धि)नीं सम्पदा [।*] महता यस्य बलार्ण्णवेन परितस्सञ्छादितोर्व्वीतलं । स्थल-दुर्गञ्जल-दुर्गतामिव गतं तत्तत्क्षणे पश्यताम् [।।१८*] गङ्गालुपेन्द्रा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्ज्जित-सम्पदो [ऽ]पि[।*]यस्यानुभावोपनतास्सदा [ऽऽ]सन्ना-

१०. सन्न-सेवामृत-पान-शौण्डाः [१९*] कोङ्कणेषु यदादिष्ट-चण्ड-दण्डाम्बु-वीचिभिः [।*] उदस्तास्तरसा मौर्य्य-पल्वलाम्बु-समृद्धयः । (।।) [२०*] अपर-जलधेर्ल्लक्ष्मी(क्ष्मीं) यस्मिन्पुरीम्पुरभित्प्रभे मदगज-घटाकारैर्न्नावं शतैरवमृद्नति [।*] जलद-पटलानीकाकि(की)र्ण्णन्नवोत्पल-मेचकञ्जलनिधिरिव व्योम व्योम्नस्स-

११. मो [ऽ]भवदम्बुभिः(धिः) [।।२१*] प्रतापोपनता यस्य लाट-मालव-गूर्ज्जराः । दण्डोपनत-सामन्त-चर्य्याच[ा]र्य्या इवाभवन् ।। [२२*] अपरिमित-विभूति-स्फीत-सामन्त-सेना- मुकुट-मणि-मयूखाक्क्रान्त-पादारविन्दः [।*] युधि पतित-गज(जे)न्द्रानीक-वी(बी)भत्स-भूतोभय-विगलित-हर्षो येन चाकारि हर्षः ।। [२३*] भुवमुरुभिरनीकैम्शा-

१२. सतो यस्य रेवो(वा)-विविध-पुलिन-शोभा[ऽ*] वन्ध्य-विन्ध्योपकण्ठ [: ।*] अधिकतरमराजत्स्वेन तेजो-महिम्ना शिखरिभिरिभ-वर्ज्या[र्ज्यो] व[र्ष्मं]णा स्पर्द्धयेव [।।२४*] विधिवदुपचिताभि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्शक्तिभिश्शक्र-कल्प-स्तिसृभिरपि गुणौघैस्स्वैश्च माहा-
कुलाद्यै [: ।*] अगमदधिपतित्वं यो महाराष्ट्रकाणां नव-नवति-
सहस्र-ग्राम-भाजां त्रयाणां [।।२५*] गृहिणां स्व-

१३. स्व-गुणैस्त्रि-वर्ग्ग-तुङ्गाविहितान्य-क्षितिपाल-मान-भङ्गा [: ।*]
अभवन्नुपजात-भीति-लिङ्गा यदनीकेन स-को[स*]ला×
कलिङ्गा [: ।।२६*] पिष्टं पिष्टपुरं येन जातं दुर्ग्गमदुर्ग्गम-
ञ्चित्रं यस्यकलेर्वृत्तम् [त्तं] जातं दुर्ग्गम-दुर्ग्गमम् । (।।) [२७*]
सन्नद्ध-वारण-घटा-स्थगितान्तरालम्(लं) नानायुध-क्षत-वर-
क्षतजाङ्ग-रागम् [।*] आसीज्जलं यदवमर्द्दितमभ्र-गर्भं कौनाळम-

१४. म्बरमिवोर्जि(र्ज्जि)त-सान्ध्य-रागम् ।। [२८*] उद्धूतामल-
चाव(म)र-ध्वज-शत-च्छत्रा(त्त्रा)न्धकारैर्व्व(र्ब्बे)लैः शौर्य्योत्साह-
रसोद्धतारि-मथनैर्म्मौल[ा*] दिभिष्षड्विधैः [।*] आक्क्रान्तात्म-
बलोन्नतिम्बल-रजस्सञ्छन्न-काञ्चीपुरः(र)-प्राकारन्तरित-
प्रतापमकरोद्य⁀पल्लवानां पतिम् ।। [२९*] कावेरी-दृत-
शफरी-विलोल-नेत्रा चोळानां सपदि जयोद्यतस्य यस्य [।*]
प्रश्च्योतन्मद-गज-से

१५. तु-रुद्ध-नीरा संस्पर्शं परिहरति स्म रत्न-राशेः । (।।) [३०*]
चोळ-केरळ-पाण्ड्यानाम्(नां) यो [ऽ*] भूत्तत्र महर्द्धये [।*]
पल्लवानीक-नीहार-तुहिनेतर-दीधितः ।। [३१*] उत्साह-प्रभु-
मन्त्र-शक्ति-सहिते यस्मिन्समस्ता दिशो जित्वा भूमि-पतीन्वि-
सृज्य महितानाराद्ध्य देव-द्विजान् [।*] वातापीन्नगरीं प्रविश्य
नगरीमेकामिवोर्व्वि(र्व्वी)मिमाम्(मां) चञ्चन्नीरधी(धि)-
नील-नीर-परिखां

१६. सत्याश्रये शासति ।। [३२*] त्रिंशत्सु त्रि-सहस्रेषु भारता-
दाहवादितः [।*] सप्ताब्द-शत-युक्तेषु श(ग)तेष्वब्देषु पञ्चसु
[३३*] पञ्चाशत्सु कळौ काले षट्सु पञ्च-शतासु च [।*]
समासु-समतीतासु शकानामपि भूभुजाम् ।। [३४*] तस्याम्बुधि-
त्रय-निवारित-शासनस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७. सत्याश्रयस्य परमाप्तवता प्रसादं [।*] शैलञ्जिनेन्द्र-भवनम्भ-वनम्महिम्ना-न्निर्म्मापितम्मतिमता रविकीर्त्तिनेदम् ।। [३५*] प्रशस्तेर्व्वसतेश्चास्याः(स्या) जिनस्य त्रि-जगद्गुरो × कर्त्ता कारयिता चापि रविकीर्ति × कृती स्वयम् ।। [३६*] येनायोजि नवे[ऽ]श्म-स्थिरमर्त्थ-विधौ विवेकिना जिन-वेश्म [।*]स विजयतां रविकीर्त्ति × कविता-

१८. श्रित-कालिदास-भारवि-कीर्त्तिः । (।।) [३७*] मूलावळ्ळि-वेळ्मळति कवाडमच्चनूर्गङ्गवूर्पु ळिगेडे-गण्डवग्राम [।*] इति ग्रस्य भुक्ति [ः।*] गिरि(रे)स्तटा-त्पश्चिम[ा]भिगत-निमूवारिर्य्याव [त्*] महापथान्त-पुरस्य सि(सी)मा उत्तरतः दक्षिणतो

१९·········ग ·····न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महेन्द्रपाल का पेहवा अभिलेख

स्थान : हरयाणा के कुरुक्षेत्र जिले के पेहवा नगर में एक भवन की दीवार में लगे पुस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण ।

लिपि : नौवीं-दसवीं शताब्दी ईसवी की देवनागरी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : तोमरवंशी राजा जज्जुक के गोग्ग, पूर्णराज तथा देवराज नामक तीन पुत्रों द्वारा विष्णु के तीन मन्दिरों का निर्माण । तोमर वंश की प्रशस्ति

संदर्भ : ब्यूलर, EI, I, p. 242.

१. ओं[1] नमो माधवाय ।। याते यामवती-पतौ शि[खरिषु क्षामे]षु सर्वात्मना ध्वस्ते ध्वान्त-रिपो जने विघटिते स्रस्ते च तारा-गणे । भ्रष्टे भू-वलये गतेषु च तथा रत्नाकरेष्वेकतामेको यस्स्वपिति प्र-

२. धान-पुरुष⏑⏑ पायात्स वः शार्ङ्ग भृत् ।।[१।।*] दृष्टि⏑⏑ [पायात्त्रिजग]दखिलं शार्ङ्गिण × कान्त-मूर्ते × कान्ता-सद्भ्रू-स्फुरित-सुभग-स्निग्ध-ताराभिरामा । उद्यत्तीव्र-स्मर-जलनिधौ मज्जतश्श्री-मुखेन्दु-स्फार-ज्योत्स्ना-[भव]-

३. ⏑ ⏑ [रुचः] स्मेर-गण्ड-स्थलस्य ।।[२।।*] क्षेत्रं कुरो[र्विविध-पाप-म]लाभिघात-दक्षं क्रियादुदयमस्त-समस्त-तापम् । श्रद्धया-

१. चिह्न मात्र ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सितं मुनि-गणैरुदितातम-वो(बो)घ-प्रद्ध्वस्त-गाढ-तिमिर-प्रकट-प्रमोदैः ।।[३।।*] पोत-

४. [स्संसार-सिं¹]धौ सुर-पथ-गमने स्यन्दनस्साधु-[वर्ग————]तवह्ने॒ प्रलय-जलधरस्सम्पतत्सान्द्र-धारः । नाना-व्याधि-प्रव[ब]न्ध-प्रचुरतरतम॒-पङ्क-बिद्ध्वंस-भानुर्नीरञ्चैतत्समन्ता-[द्*] द्यतु दुरित-

५. [गणं चारु] [सा]रस्वतं वः ।।[४।।*] यश्शक्तः स्व-कुल [मनुग्र-हीतु]¹मृद्धया भिन्दान॒ पर-व(ब)ल-मानसं समन्तात् । स श्श्रीमाञ्जयति महेन्द्रपालदेवः शान्तारिश्शशधर-सुन्दरः शरण्यः ।।[५।।*]आसीत्तोमर-तुङ्ग-वंश-ति-

६. [लकश्चण्ड-प्र]तापोज्व(ज्ज्व)लो राजा रंजित-साधु-वृत्त-[हृदयो दु]र्वृत्त-शैलाशनिः । नाम्ना जाउल इत्यपूर्व-चरित-ख्यातो दयालंकृतिस्तत्वा(त्त्वा)लोकि-विलोकित-क्षितिपति-व्यापार-लब्धोदयः ।।[६।।*] येन ज्ञाति-कुलं क-

७. [––⏑⏑––नी]तं परां संपदं छिन्नाराति-करीन्द्र-कुम्भ-शकलैः×कृत्वोपहारं भुवः । कीर्त्या(र्त्त्या) यस्य च नाक-नाग-निकर-व्यासङ्गतः सङ्गमाद्व्योम्नश्च स्फुरदिन्दु-सुन्दर-रुचा स्व-स्सिन्धुलीलायितम् ।।[७।।*] प्रतिदिश-

८. [ममरा]णां मन्दिराण्युच्छ्रिताग्र-स्थगित-शशधराणि स्फारमारो-पितानि । जगति वितत-भासा येन दूरं विभान्ति स्व-यश इव निरोद्धुं शङ्कवो दिङ्निखाताः ।।[८।।*] तत्संतान-महोदधे॒ प्रमुदित-प्रोद्यद्भुजङ्गाश्र-

९. याद्दुर्लङ्घ्याद्घन-मौक्तिकांशु-निकर-स्फारीभवत्सम्पदः । प्रख्याता-जनि यस्स्व-वङ्श-तिलकः श्री-वज्रटाख्य॒ प्रभु॒ प्राप्ताशेष-

---

१. ब्यूलर का अनुमान ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनोरथश्शुभतर-व्यापार-तुङ्गोन्नतिः ॥[९॥*] तस्य स्फुरदिन्दु-
रुचिः शौरेरिव जल-

१०. धि-कन्यका जाता [।] नाम्ना मङ्गलदेवी जाया गिरिजेव
गिरिशस्य ॥[१०॥*] तस्मात्तस्याञ्जज्जुक॒ प्रादुरासीदुच्चै-
श्शान्तस्सत्सु निर्मत्सरेषु । क्रूर × केतुर्द्दुर्द्धरारातिचक्रे क्रुद्ध-
चत्सेना-कुञ्जरद्ध्वान-रौद्रे ॥[११॥*] तस्य

११. स्फुरन्निशित-खड्ग-निकृत्त-शत्रोस्त्रस्तान्ध-दीन-निकरोद्धरणोरु-
कीर्तेः(र्त्तेः) । सद्वृत्त-रक्त-वनिता-तिलकाङ्क-कल्पे कान्ते व(ब)-
भूवतुरुदार-शशाङ्क-कान्ते ॥[१२॥*] एका चन्द्रेति विख्याता
द्वितीया नाइ(यि)केति च । विशि-

१२. ष्ट-गुण-निर्माणा[द्*] द्वे एव सदनं श्रियः ॥[१३॥*] चन्द्रायास्स-
मजनि गोग्गनामधेयो धीराणां धुरि विनिवेशितो विधात्रा ।
भूनाथो द्विषदिभ-कुम्भ-भेद-निर्यन्मुक्ताभि[र्महित-महीतल]
शिशतासिः ॥[१४*॥] अ[सू]त[च वि-]

१३. चक्षणं क्षत-विपक्ष-पक्ष-प्रभं प्रभाकर-करोत्करं स्व-व(ब)ल-
सैनिकाम्भोरुहाम् । अधर्म-परिपन्थिनं तदनु पूर्णराजं सुतं स्व-
वंश-गगनोदरे तुहिन-[दीधितिं नायि]का ॥[१५॥*] कर-त[ल[-
स्थगिताधर-पल्ल-

१४. वा॒ प्रतनु-कान्ति-कपोल-तलोदरम् । सिषिचुरस्रु (श्रू)-जलैर्य-
दरि-स्त्रियस्सरलित-प्रचुरालक-जालकाः ॥[१६॥*] तस्य भ्राता
गुण-निधिरभूत्सोदरो देवराजः स्फूर्जत्तेज॒-प्रवहित-पर-स्फार-
सेनान्धकारः । स्था-

१५. नं क्षान्तेः क्षत-कलि-मलः क्षिप्त-रागादि-दोषः स्निग्ध-च्छायस्तरु-
रिव ततस्सत्फलाम्म्र-मूर्तिः (र्त्तिः) ॥[१७॥*] नामापि प्रकटतरं
निशम्य यस्य क्रुद्धस्य भ्रुकुटि-तरङ्गितान्नस्य । दृप्तानां युधि
विकसद्विगाढ-भासां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६. सस्रंसे करतलतः कृपण-दण्डः ।[।१८*।।] यदास्य-सरसीरुहं सरसमर्थिनां पश्यतान्नितान्तमगमत्क्षणात्क्षयमुपद्रवो मानसः । व्यघूर्णता च सम्भ्रमात्प्रतिभट-द्ध्वनद्दिन्तनां घटा-विघटनोन्मुखी

१७. समिति यस्य सद्यः पुरः ।।[१६।।*] इत्युद्दाम-प्रकटित-गुणोद्-गार-रम्या × क्रमेण प्राप्त-श्रीकाश्शुभतर-धियस्साधु-रक्तास्त्रयो [ऽ*]पि । विष्णोस्सौधान्यतुल-महस × कारयामासुरत्र त्रस्तास्ती [व्राद्भवजल]-निधेर्दु र्ग[मा]-

१८. न्मन्द-वो(बो,धैः ।।[२०।।*] गोग्गेन कारितं मध्ये पूर्णराजेन पृष्ठतः । पुरतो देवराजेन घनान्ध-तमसछि (श्छि)दे ।[।२१।।*] चतुस्समुद्र-सीमांकं यावदेतन्मही-तलम् । इदमायतनं तावद्विभातु सदनं श्रियः ।।[२२।।*] धन्वन्तरि-प्र-

१६. तिनिधिश्श्रुत-सार-मूर्ति (र्त्ति)स्सद्व(द्ब)न्धुरच्युत इति प्रकटाभि-धानः । काम्वो(म्बो)जज ⌣ प्रभु-मन × कमल-द्विरेफो रामस्य सूनुरिह कारयिता व(ब) भूव ।।[२३।।*] यक्षपालक-नामैको द्वितीयो गेज्जराभिधः । पाटला[ख्य]स्तृती[योऽपि ग्रा]-

२०. मो भोगाय कल्पितः ।।[२४।।*] अत्रार्थैः क्षमा नाथैः श्रेयो [ऽ*] र्थ देहस्य । संसारं दृष्टवोचैः(च्चैः) कर्तव्या सद्वु (द्बु)द्धिः ।।[२५*] स्व-कुल-गगन-भ[ानुः]—⌣—ार-प्रसक्तः श्रुत-विनय-विदग्धो भट(ट्ट)राम × किलासीत् । अकृत मधुर-[बन्धां मु]⌣⌣स्तस्य

२१. सूनुस्सरस-ललित सारां ल्ली(ली)लयेमां प्रशस्तिम् ।।[२६।।*] व(ब)भूव सुत्रधारो[ऽ*]त्र दुर्लभादित्य-संज्ञितः । × × × × ⌣— —⌣[बा?]ला-दित्येन धीमता ।।[२७।।*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वीसलदेव का दिल्ली-टोपरा स्तम्भ अभिलेख

विक्रम संवत् १२२०

स्थान : दिल्ली के कोटला फीरोजशाह में स्थित अशोक के स्तम्भ पर उत्कीर्ण। यह स्तम्भ अपने मूल-स्थान टोपरा (हरियाणा) से फीरोजशाह तुग़लक द्वारा दिल्ली लाया गया था।

लिपि : तेरहवीं शताब्दी ईसवी की देवनागरी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : शाकम्भरी चौहान नरेश वीसलदेव (विग्रहराजदेव) के वीर चरितों का उल्लेख।

संदर्भ : राधाकान्त शर्मा, AR, 1, pp. 379-82; एच. टी. कोलब्रुक, AR, 7, pp. 179-81; कैप्टन विल्फोर्ड, AR, 9, pp. 178-89; कीलहॉर्न, IA, 19, p. 215.

(भाग-क)

ॐ[1] [।।*] संवत् १२२० वैशाख-शुति[2] १५ [।।*]
शाकंभरी-भूपति-श्रीमदवेल्लदे-
वात्मज[3]-श्रीमद्वीसलदेवस्य ।।

१. ॐ[1] [।।*] अंभो नाम रितु-प्रिया-नयनयोः प्रत्यर्थि-दंतान्तरे प्रत्य-
क्षाणि तृणानि वैभव-मिलत्काष्ठं यशस्तावकं।

२. मार्ग्गो लोक-विरुद्ध एव विजनः शून्यं मनो विद्विषां श्रीमद्विग्रह-

---

१. चिह्न मात्र।
२. शुक्ल-तिथि का संक्षेप।
३. °ज के आगे विसर्ग उत्कीर्ण करके काट दिए गए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजदेव भवतः प्राप्ते प्रयाणोत्सवे ॥ [१*]

३. लीला-मंदिरसोदरेषु भवतु स्वांतेषु वाम-भ्रुवां शत्रूणां तु न विग्रह-क्षितिपते न्याय्यो[ऽ*]त्र वासस्तव ।

४. शंका वा पुरुषोत्तमस्य भवतो नास्त्येव वारां-निधेर्न्निर्म्मथ्यापहृत-श्रियः किमु भवान्क्रोडे न निद्रायितः ॥] २*]

(भाग-ख)

१. ॐ[१] ॥ आ विंध्यादा हिमाद्रेर्व्विरचित-विजयस्तीर्थ[२]-यात्रा-प्रसंगा-दुद्ग्रीवेषु प्रहर्त्ता नृपतिषु विनमत्कन्धरेषु प्रसन्नः ।

२. आर्यावर्त्तं यथार्थं पुनरपि कृतवान्म्लेच्छ-विच्छेदनाभिर्द्देवः शाकंभरीन्द्रो जगति विजयते वीसल-क्षोणिपालः ॥[३*]

३. ब्रू(ब्रू)ते संप्रति चाहमान-तिलकः शाकंभरी-भूपतिः श्रीमद्विग्रह-राज एष विजयी संतानजानात्मनः ।

४. अस्माभिः करदं व्यधापि हिमवद्विंध्यांतरालं भुवः शेष-स्वीकर-णाय मा [ऽ*]स्तु भवतामुद्योग-शून्यं मनः ॥[४*]

५. संवत् श्री-वि(वै)क्रमादित्ये १२२० वैशाख-शुति १५ गुरौ [॥*] लिखितमिदं राजादेशात्(ज्)ज्योतिषिक-श्री-तिलकराज-प्रत्यक्षं गौडान्वय-कायस्थ-माहव-पुत्र-श्रीपतिना ।

६. अत्र समये महामंत्री राजपुत्र-श्री-सल्लक्षणपालः ॥

---

१. चिह्न मात्र ।

२. 'विजय के आगे विसर्ग अनावश्यक ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

प्रकीर्ण अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पिप्रावा अस्थि-कलश अभिलेख

स्थान : उत्तरप्रदेश में बस्ती जिले के पिप्रावा ग्राम के निकट एक स्तूप में से प्राप्त अस्थि-कलश पर उत्कीर्ण ।

लिपि : ब्राह्मी ।

विषत : भगवान बुद्ध के अवशेषों का प्रतिष्ठापन ।

संदर्भ : **ब्यूलर, तथा बार्थ**, JRAS, 1898, pp. 387 ff; **जी. दौम्मसन**, Jounral des Savants, oct. 1906, pp. 541 ff; **बार्थ**, IA, 36, pp. 117 ff; **फ्लीट**, JRAS, 1907, pp. 105 ff; **सरकार**, SI, p. 81.

१. इयं सलिल-निधने बुधस भगवते सकियनं[1] [।]
इदं शरीर-निधानं बुद्धस्य भगवतः शाक्यानां

२. सुकिति-भतिनं[2] स-भगिनिकनं स-पुतदलनं [।।]
सुकृति-भ्रातृणां स-भगिनीकिनां स-पुत्रदाराणाम्

१. 'यनं' पंक्ति के ऊपर उत्कीर्ण है । संभवतः पहले यह छूट गया था । सरकार ने 'यानं' पढ़ा है, परन्तु आ की मात्रा का सर्वथा अभाव है ।
२. सरकार ने 'सुकीर्ति-भक्तचोः' संस्कृत छाया दी है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वीरदेव का घोसरवा अभिलेख

स्थान : बिहार के पटना जिले के बिहार नगर से बारह किलोमीटर दक्षिण-पूव घोसरवा ग्राम ।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : वीरदेव द्वारा वज्रासन (भगवान बुद्ध) के मन्दिर तथा दो चैत्यों का निर्माण ।

संदर्भ : कीलहॉर्न, IA, 17, p. 307.

१. ॐ श्रीमानसौ जयति सत्व (त्त्व)-हित-प्रवृत्त-सन्मानसाधिगत-तत्व(त्त्व)-नयो मुनीन्द्रः । क्लेशात्मनां दुरित-नक्र-दुरास-दान्तः-सन्सा (संसा) र-सागर-समुत्त-

२. रणैक-सेतुः ।। [१*] अस्यास्मद्गुरवो व(ब)भूवुरव (ब) लाः सम्भूय हर्त्तुं मनः का लज्जा यदि केवलो न व(ब)लवानस्मि त्रिलोक-प्रभौ ।

३. इत्यालोचयते-व मानस-भुवा यो दूरतो वर्जितःश्रीमान्विश्व-मशेषमेतदवताद्वो(द्बो)धौ स वज्रासनः ।।[२*]

४. अस्त्युत्तरापथ-विभूषण-भूत-भूमिर्देशोत्तमो न-गरहार इति प्रतीतः । तत्र द्विजातिरुदितोदित-वङ्श(वंश)-जन्मा नाम्नेन्द्रगुप्त इति राज-सखो व(ब)भूव ।।[३*]रज्ज(ज्जे)कया द्विज-वरः स गुणी गृ-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. ह्रिण्या युक्तो रराज कलया[ऽ*]मलया यथेन्दुः । लोकः पतिव्रत-कथा-परिभावनासु संकीर्त्तनं प्रथममेव करोति यस्याः ।।[४*] ताभ्यामजा-

६. यत सुतः सुतरां विवेकी यो वा(बा)ल एव कलितः परलोक-वु(बु)द्धया । सर्व्वोपभोग-सुभगे [ऽ*]पि गृहे विरक्तः [प्रव्र]ज्यया सुगत-शासनमभ्युपे(पै)-

७. तु (तुम्) ।।[५*] वेदानधीत्य सकलान् कृत-शास्त्र-चिन्तः श्रीमत्कनिष्कमुपगम्य महाविहारं(रम्) । आचार्य-वर्यमथ स प्रशम-प्रशस्यंसर्व्वज्ञशान्तिमुपगम्य

८. तपश्चचार ।।[६*]सो[ऽ*]यं विशुद्ध-गुण-सम्भृत-भूरि-कीर्त्तेः शिष्यो [ऽ*]नुरूप-गुण-शील-यशो-[ऽ*]भिरामः । वा(बा)लेन्दु-वत्कलि-कलङ्क-विमुक्त-कान्ति-र्वन्द्यः

९. सदा मुनि-जनैरपि वीरदेवः ।।[७*]वज्रासनं वन्दितुमेकदा[ऽ*]थ श्रीमान्महावो(बो)धिमुपागतो[ऽ*]सौ । द्रष्टुं त[तो] [ऽ*]गात्सहदे(शि)-भिक्षून् श्रीमद्यशोवर्म्म-

१०. पुरं विहारं ।।[८*] तिष्ठन्नथेह सुचिरं प्रतिपत्ति-सारः श्री-देवपाल-भुवनाधिप-लब्ध(ब्ध)-पूजः । प्राप्त-[illegible]: प्रतिदिनोदय-पूरिताशः पूषेव दारित-

११. तमःप्रसरो रराज ।। [९*] भिक्षोरात्म-समः सुहृद्भुज इव श्री-सत्यवो(बो)धेर्निजो नालन्दा-परिपालनाय नियतः सङ्घ-स्थितेर्यःस्थितः । येनैतौ स्फु-

१२. टमिन्द्रशैल-मुकुट-श्री-चैत्य-चूडामणी श्रामण्य-व्रत-सम्वृ(संवृ)तेन जगतः श्रेयोऽर्थमुत्थापितौ ।।[१०*] नालन्दया च परिपालितयेह सत्या श्रीम-

१३. द्विहार-परिहार-विभूषिताङ्गया । उद्भासितो [ऽ*]पि व(ब)हु-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कीर्त्ति-वधू-पतित्वे यः साधु साधुरिति साधु-जनैः प्रशस्तः ॥[११*] चिन्ता-ज्वरं शमयिता[ऽ*]ऽर्त्त-जन-

१४. स्य दृष्टया धन्वन्तरेरपि हि येन हृतः प्रभावः। यश्चेप्सितार्थ-परिपूर्ण्ण-मनोरथेन लोकेन कल्पतरु-तुल्यतया गृहीतः ॥[१२*] तेनैतद-

१५. त्र कृतमात्म-मनोवदुच्चै-र्व्वज्रासनस्य भवनं भुवनोत्तमस्य। संजायते यदभिवीक्ष्य विमानगानां कैलास-मन्दर-महीधर-शृंङ्ग-शङ्का ॥[१३*] सर्व्व-

१६. स्वोपनयेन सत्व(त्त्व)-सुहृदामौदार्यमभ्यस्यता सम्वो(म्बो)धो विहित-स्पृहं सह गुणैर्व्विस्पर्द्धि वीर्यन्तथा। अत्रस्थेन निजे निजाविह ब्र्(वृ)हत्पुण्याधिकारे

१७. स्थिते येन स्वेन यशो-ध्वजेन घटितौ वङ्शा(वंशा)वुदीची-पथे ॥[१४*]सोपान-मार्गमिव मुक्ति[पुर]स्य कीर्त्तिमेताम्वि(तां-वि)धाय कुशलं यदुपात्तमस्मात्।

१८. कृत्वा[ऽऽ*]दितः स-पितरं गुरु-वर्गमस्य सम्वो(सम्बो)धिमेतु जन-राशिरशेष एव ॥[१५*] यावत्कूर्म्मो जलधि-वलयं भूत-धात्रीं वि(बि)भर्त्ति ध्वान्त-ध्वन्सी(ध्वंसी) तपति तपनो यावदेवोग्र-रश्मिः।

१९. स्निग्धालोकाः शिशिरमलसा यामवत्यश्च याव-त्तावत्कीर्त्तिर्जयतु भुवने वीरदेवस्य शुभ्रा ॥[१६*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दन्तिदुर्ग का एलोरा ताम्र-पट्ट अभिलेख

शक संवत् ६६३

स्थान : महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में एलोरा नामक प्रसिद्ध प्राचीन स्थल से प्राप्त दो ताम्र-पट्ट।

लिपि : उत्तरी ब्राह्मी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : राष्ट्रकूट राजा दन्तिदुर्ग द्वारा नवसारिका मूल के कुछ ब्राह्मणों को चन्दनपुरी चौरासी के अन्तर्गत पिप्पलाल नामक ग्राम का दान।

संदर्भ : एस. के. दीक्षित, EI, 25, p. 25.

(प्रथम-पट्ट)

१. ॐ स्वास्ति[।*] बदरिकावासकात्समधिगत-पंच-महाशब्द-म-
२. हा-सामन्ताधिपति-राष्ट्रकूटान्वय-गोत्रालंकार-श्री-कक्कं-
३. राज[स्] तत्पादानुद्धचात-परम-माहेश्वर-समाधिगत-पंच-म
४. हाशब्द-महासामन्ताधिपति-श्रीमदिन्द्रराज-[स्तत्*]-सुत[ो*] मेरु-महीधर-
५. गिर (? विजर)-स्थिर-रुचिर-समुन्नते विकसित-यशसि महति स इन्द्रराज्ञा (राजस्या)-
६, न्वये अनेक-चातुर्द न्त-गज-घटाटोप-समर-संघट्ट-ल-
७, ब्ध-विजयी(यः) समधिरात-पञ्च-महाशब्द-महासामन्ताधिपति-
८. प्री(पृ)थिवी-वल्लभ-खड्गावला(लो)क-श्री-दन्तिदुर्ग-राजः कुशली
९. सर्वानेव राज-सामन्त-भोगिक-विषयपति-राष्ट्रकूट-महत्तरा-
१०. धिकारिकादी[न्*] समाज्ञापयत्यस्तु वो विदितं यथा च मया एल[ा*]पुर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११. व्यवस्थितेन अश्वयुज-शुद्ध-त्रयोदश्यां स्व-हस्तेन पादां(दौ) प्रक्षा-

१२. ल्य परलोकमपेक्षत्वमङ्गीकृत्य (लोकमपेक्ष्य) महत्फलं च श्रुत्वा चन्दनपुरि-

१३. चतुराशित्या(रशीत्य)न्तर्गत-पिप्पलालं नाम ग्राम[:*] नवसारि-

१४. का-विनिर्ग्गत-भरद्वा[ज]-सगोत्राय तथा[ऽ*]ध्वर्य्यु-रेवादित्य-

१५. भट्टाय तथा माउलाय तथा[गो]विसरेभ्य(भ्यो)गुहेश्वर-ती-

(द्वितीय-पट्ट)

१६. र्थ-स्नातेन बलि-चरु-वैश्वदेवाग्निहोत्रादिक्र(क्रि)यो-

१७. त्सर्प्पणार्त्थं माता-पित्रोरात्मनश्च पुण्य-यशो-[ऽ*]भि-

१८. ब्रि(वृ)द्धये पिप्पलाल-ग्राम[:*] प्रतिपादितः यत[:*] अ-चाट-भट-प्रवेश्य[:*] अ-

१९. भ्यन्तर-सिद्धिक[:*] सर्व्वादानं-संग्राह्य[:*] यतो [ऽ*]स्म[द्]-वंशै(श्यै)रन्यैर्व्वा भोग-नृ-

२०. पतिभिः (भावि-नृपति-भोगपतिभिः) नल-वेणु-कदळी-सार-संसार-जल-बुद्बुदोपमं जीवित-

२१. मवधार्य्य अस्मद्दायो[ऽ*]नुमन्तव्य[:*] प्रतिपालयितव्यश्च यो वा [ऽ*]ज्ञा-

२२. न-तिमिरान्धावृत-मतिराचि(च्छ)न्द्यादाछि(च्छ)द्यमानं वा[ऽ*] नुमोदेत स

२३. पंचभिर्महा-पातकै[:*] संयु[न*]क्त[।*] उक्तं च भगवतो(ता) वेदव्यासेन[।*] षष्टिं

२४. वर्ष-सहस्राणि स्वर्गिग(र्गे) तिष्ठति भूमिदः। आच्छेता(त्ता) चानुमन्ता च

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२५. तान्येव नरके वसे[त्*]। [। *] विन्ध्याटवीष्वतोयासु शुष्क-
कोटर-वासिन[:।*]

२६. क्रि(कृ)ष्णाहयो हि जायंते(यन्ते) भूमि-दायं हरन्ति ये [।।*]
बहुभिर्वसु-

२७. धा भुक्ता राजभि[:*] सगरादिभि: यस्य यस्य यदा भूमि[स्]
तस्य तस्य तदा फ-

२८. लं(लमं) [।।*] सं ६०० ६० ३ अश्वयुज-शुद्ध-त्रयोदश्यां
सोमवारे

२९. लिखितमिदं कुक्कुरेन(ण) गवंग [वाब्बा]भिहितेन [।।*]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजयसेन का देवपारा अभिलेख

स्थान : बंगाल के राजशाही जिले में देवपारा।

लिपि : देवनागरी।

भाषा : संस्कृत।

विषय : सेन वंशी राजा विजयसेन द्वारा शिव-मन्दिर का निर्माण। शिव को यहां प्रद्युनेश्वर कहा गया है। प्रशस्ति में सेन वंश का वर्णन।

संदर्भ : कीलहॉर्न, EI, 1, p. 305.

१. ओं [।।*] ओं नमः शिवाय ।।

वक्षोंशुकाहरण-साध्वस-कृष्ट-मौलि-माल्य-च्छटाहत-रतालय-दीप-भासः । देव्यास्त्रपा-मुकुलितं सुखमिन्दु-भाभिर्व्वीक्ष्याननानि हसितानि जयन्ति शम्भोः ।।[१*] लक्ष्मी-वल्लभ-

२. शैलजा-दयितयोरद्वैत-लीला-गृहं प्रद्युम्नेश्वर-शव्द(ब्द)-लाञ्छ-नमधिष्ठानं नमस्कुर्म्महे। यत्रालिङ्गन-भङ्ग-कातरत[या] स्थित्वा-न्तरे कान्तयोर्द्देवीभ्यां कथमप्यभिन्न-तनुता-शिल्पेऽन्तरायःकृतः ।। [२*] यत्सिंहासनमीश्वर-

३. स्य कनक-प्रायं जटा-मण्डलं गङ्गा-शीकर-मञ्जरी-परिकरैर्य-च्चामर-प्रक्रिया। श्वेतोत्फुल्ल-फणाञ्चलः शिव-शिरः-सन्दान-दामोरगश्छत्त्रं यस्य जयत्यसावचरमो राजा सुधा-दीधितिः ।।[३*] वंशे तस्यामर-स्त्री-वि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. तत-रत-कला-साक्षिणो दाक्षिणात्य-क्षौणीन्द्रैर्व्वीरसेन-प्रभृतिभिर-
भितः कीर्त्तिमद्भिर्व्व(र्ब्ब)भूवे । यच्चारित्रानुचिन्ता-परिचय-
शुचयः सूक्ति-माध्वीक-धाराः पाराशर्येण विश्व-श्रवण-परिसर-
प्रीणनाय प्रणीताः ॥ [४*]

५. तस्मिन् सेनान्ववाये प्रति-सुभट-शतोत्सादन-ब्र(ब्र)ह्मवादी
स ब्र(ब्र)ह्म-क्षत्त्रियाणामजनि कुल-शिरो-दाम सामन्तसेनः ।
उद्गीयन्ते यदीयाः स्खलदुदधि-जलोल्लोल-शीतेषु सेतोः
कच्छान्तेष्वप्सरोभिर्द्दशरथ-तनय-स्पर्द्धया युद्ध-गाथाः ॥ [५*]

६. यस्मिन् सङ्गर-चत्वरे पटु-रटत्तूर्योपहूत-द्विष-द्वर्गे येन कृपाण-
काल-भुजगः खेलायितः पाणिना । द्वैधीभूत-विपक्ष-कुञ्जर-घटा-
विश्लिष्ट-कुम्भ-स्थली-मुक्ता-स्थूल-वराटिका-परिकरैर्व्व्या-

७. प्तं तदद्याप्यभूत् ॥ [६*] गृहाद्गृहमुपागतं व्रजति पत्तनं पत्तना-
द्वनाद्वनमनुद्रुतं भ्रमति पादपं पादपात् । गिरेर्ग्गिरमधिश्रितन्तरति
तोयधिं तोयधेर्यदीयमरि-सुन्दरी-सरक-पृष्ठ-लग्नं यशः ॥ [७*]
दुर्व्वृत्तानामयमरि-

८. कुलाकीर्ण्ण-कर्ण्णाट-लक्ष्मी-लुण्टाकानां कदनमतनोत्तादृगेकाङ्ग-
वीरः । यस्मादद्याप्यविहत-वसा-मान्स-मेदः-सुभिक्षां हृष्यत्-
पौरस्त्यजति न दिशं दक्षिणां प्रे[त]-भर्त्ता ॥ [८*] उद्गन्धीन्याज्य-
धूमैर्म्मृग-शिशु-रसिताखिन्न-

९. वैखानस-स्त्री-स्तन्य-क्षीराणि कीर-प्रकर-परिचित-ब्र(ब्र)ह्म-
पारायणानि । येनासेव्यन्त शेषे वयसि भव-भयास्कन्दिभिर्म्म-
स्करीन्द्रैः पूर्ण्णोत्सङ्गानि-पुलिन-परिसरारण्य-पुण्याश्रमाणि
॥ [९*] अ-चरम-परमात्म-ज्ञान-भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजयसेन का देवपारा अभिलेख

स्थान : बंगाल के राजशाही जिले में देवपारा ।

लिपि : देवनागरी ।

भाषा : संस्कृत ।

विषय : सेन वंशी राजा विजयसेन द्वारा शिव-मन्दिर का निर्माण । शिव को यहां प्रद्युनेश्वर कहा गया है । प्रशस्ति में सेन वंश का वर्णन ।

संदर्भ : कीलहॉर्न, EI, 1, p. 305.

१. ओं [।।*] ओं नमः शिवाय ।।

वक्षोंशुकाहरण-साध्वस-कृष्ट-मौलि-माल्य-च्छटाहत-रतालय-दीप-भासः । देव्यास्त्रपा-मुकुलितं सुखमिन्दु-भाभिर्व्वीक्ष्याननानि हसितानि जयन्ति शम्भोः ।।[१*] लक्ष्मी-वल्लभ-

२. शैलजा-दयितयोरद्वैत-लीला-गृहं प्रद्युम्नेश्वर-शव्द(ब्द)-लाञ्छ-नमधिष्ठानं नमस्कुर्म्महे । यत्रालिङ्गन-भङ्ग-कातरत[या] स्थित्वा-न्तरे कान्तयोर्द्देवीभ्यां कथमप्यभिन्न-तनुता-शिल्पेऽन्तरायःकृतः ।। [२*] यत्सिंहासनमीश्वर-

३. स्य कनक-प्रायं जटा-मण्डलं गङ्गा-शीकर-मञ्जरी-परिकरैर्य-च्चामर-प्रक्रिया । श्वेतोत्फुल्ल-फणाञ्चलः शिव-शिरः-सन्दान-दामोरगश्छत्त्रं यस्य जयत्यसावचरमो राजा सुधा-दीधितिः ।।[३*] वंशे तस्यामर-स्त्री-वि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. तत-रत-कला-साक्षिणो दाक्षिणात्य-क्षौणीन्द्रैर्व्वीरसेन-प्रभृतिभिर-
भितः कीर्त्तिमद्भिर्व्व(र्ब्ब)भूवे । यच्चारित्रानुचिन्ता-परिचय-
शुचयः सूक्ति-माध्वीक-धाराः पाराशर्येण विश्व-श्रवण-परिसर-
प्रीणनाय प्रणीताः ।। [४*]

५. तस्मिन् सेनान्ववाये प्रति-सुभट-शतोत्सादन-व्र(ब्र)ह्मवादी
स व्र(ब्र)ह्म-क्षत्त्रियाणामजनि कुल-शिरो-दाम सामन्तसेनः ।
उद्गीयन्ते यदीयाः स्खलदुदधि-जलोल्लोल-शीतेषु सेतोः
कच्छान्तेष्वप्सरोभिर्द्दशरथ-तनय-स्पर्द्धया युद्ध-गाथाः ।। [५*]

६. यस्मिन् सङ्गर-चत्वरे पटु-रटत्तूर्योपहूत-द्विष-द्वर्गे येन कृपाण-
काल-भुजगः खेलायितः पाणिना । द्वैधीभूत-विपक्ष-कुञ्जर-घटा-
विश्लिष्ट-कुम्भ-स्थली-मुक्ता-स्थूल-वराटिका-परिकरैर्व्व्यार्-

७. प्तं तदद्याप्यभूत् ।। [६*] गृहाद्गृहमुपागतं व्रजति पत्तनं पत्तना-
द्वनाद्वनमनुद्रुतं भ्रमति पादपं पादपात् । गिरेर्गिरमधिश्रितन्तरति
तोयधिं तोयधेर्यदीयमरि-सुन्दरी-सरक-पृष्ठ-लग्नं यशः ।। [७*]
दुर्व्वृत्तानामयमरि-

८. कुलाकीर्ण्ण-कर्ण्णाट-लक्ष्मी-लुण्टाकानां कदनमतनोत्तादृगेकाङ्ग-
वीरः । यस्मादद्याप्यविहत-वसा-मान्स-मेदः-सुभिक्षां हृष्यत्-
पौरस्त्यजति न दिशं दक्षिणां प्रे[त]-भर्त्ता ।। [८*] उद्गन्धीन्याज्य-
धूमैर्म्मृग-शिशु-रसिताखिन्न-

९. वैखानस-स्त्री-स्तन्य-क्षीराणि कीर-प्रकर-परिचित-व्र(ब्र)ह्म-
पारायणानि । येनासेव्यन्त शेषे वयसि भव-भयास्कन्दिभिर्म्म-
स्करीन्द्रैः पूर्ण्णोत्सङ्गानि-पुलिन-परिसरारण्य-पुण्याश्रमाणि
।। [९*] अ-चरम-परमात्म-ज्ञान-भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१० ष्मादमुष्मान्निज-भुज-मद-मत्तारातिमाराङ्क-वीरः। अभवदन-वसानोद्भिन्न-निर्णिक्त-तत्तद्गुण-निवह-महिम्नां वेश्म हेमन्त-सेनः ।। [१०*]मूर्द्धन्यर्द्धेन्दु-चूडामणि-चरण-रजः सत्य-वाक्कण्ठ-भित्तौ शास्त्रं श्रोत्रे[ऽ*]रि-

११. केशाः पद-भुवि भुजयोः क्रूर-मौर्व्वी-किणाङ्कः । नेपथ्यं यस्य जज्ञे सततमियदिदं रत्न-पुष्पाणि हारास्ताडङ्कं नूपुर-स्रक्कनक-वलयमप्यस्य भृत्याङ्गनानाम् ।। [११*] यद्दोर्व्वल्लि-विलास-लब्ध(ब्ध)-गतिभिः शल्यैर्व्विदीर्ण्णोरसां

१२. वीराणां रण-[ती]र्थ-वैभव-वशाद्दिव्यं वपुर्व्वि(र्ब्बि)भ्रताम् । संसक्तामर-कामिनी-स्तन तटी-काश्मीर-पत्राङ्कितं वक्षः प्रागिव मुग्ध-सिद्ध-मिथुनैः सातङ्कमालोकितम् ।। [१२*] प्रत्यर्थि-व्यय-केलि-कर्म्मणि पुरः स्मेरं मुखं वि(बि)भ्रतोरे-

१३. तस्यैतदसेश्च कौशलमभूद्दाने द्वयोरद्भुतम् । शत्रोः को[ऽ*]पि दधे[ऽ*]वसादमपरः सख्युः प्रसादं व्यधादेको हारमुपाजहार सुहृदामन्यः प्रहारं द्विषाम् ।।]१३*] महाराज्ञी यस्य स्व-पर-निखिलान्तःपुर-वधू-

१४. शिरो-रत्न-श्रेणी-किरण-सरणि-स्मेर-चरणा । निधिः कान्तेः साध्वी-व्रत-वितत-नित्योज्ज्वल-यशा यशोदेवी नाम त्रिभुवन-मनोज्ञाकृतिरभूत् ।। [१४*] ततस्त्रि-जगदीश्वरात्समजनिष्ट देव्यास्ततो [ऽ*]प्यराति-व(ब)ल-शातनोज्ज्व-

१५. ल-कुमार-केलि-क्रमः । चतुर्ज्जलधि-मेखला-वलय-सीमा-विश्व-म्भरा- विशिष्ट-जय-सान्वयो विजयसेन-पृथ्वी-पतिः ।। [१५*] गणयतु गणशः को भूपतींस्ताननेन प्रति-दिन-रण-भाजा ये जिता वा हता वा । इह जगति विषे-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६. हे स्वस्य वंशस्य पूर्व्वः पुरुष इति सुधांशौ केवलं राज-शब्द
(ब्द): ।। [१६*] संख्यातीत-कपीन्द्र-सैन्य-विभुना तस्यारि-
जेतुस्तुलां किं रामेण वदाम पाण्डव-चमू-नाथेन पार्थेन वा
हेतोः खड्ग-लतावतंसित-भुजा-मात्रस्य येनार्ज्जितं सप्ता-

१७. म्भोधि-तटी-पिनद्ध-वसुधा-चक्रैकराज्यं फलम् ।।[१७*] एकैकेन
गुणेन येन परिणतं तेषां विवेकादृते कश्चिद्धन्त्यपरश्च रक्षति
सृजत्यन्यश्च कृत्स्नं जगत् । देवो[ऽ*]यं तु गुणैः कृतोव(ब)हु-
तिथैर्द्धीमान् जघान द्विषो वृत्त-स्थान पुषच्चकार च

१८. रिपूच्छेदेन दिव्याः प्रजाः ।।[१८*] दत्त्वा दिव्य-भुवः प्रति-
क्षितिभृतामुर्व्वीमुरीकुर्व्वता वीरासृग्लिपि-लाञ्छितोऽसिरमुना
प्रागेव पत्त्रीकृतः । नेत्थं चेत् कथमन्यथा वसुमती भोगे
विवादोन्मुखी तत्राकृष्ट-कृपाण-धारिणि गता भ-

१९. ङ्गं द्विषां सन्ततिः ।।[१९*] त्वं नान्य-वीर-विजयीति गिरः
कवीनां श्रुत्वाऽन्यथा-मनन-रूढ-निगूढ-रोषः । गौडेन्द्र-भद्रवदपा-
कृत-कामरूप-भूपं कलिङ्गमपि यस्तरसा जिगाय ।।[२०*]
शूरंमन्य इवासि नान्य किमिह स्वं राघव श्लाघसे स्प-

२०. र्द्धां वर्द्धन मुञ्च वीर विरतो नाद्यापि दर्प्पस्तव । इत्यन्यो-
न्यमहर्न्निश-प्रणयिभिः कोलाहलैः क्ष्मा-भुजां यत्-कारागृह-
यामकैर्न्नियमितो निद्रापनोद-क्लमः ।।[२१*] पाश्चात्य-चक्र-
जय-केलिषु यस्य यावद्गङ्गा-प्रवाहमनुधावति

२१. नौ-विताने । भर्गस्य मौलि-सरिदम्भसि भस्म-पङ्क-लग्नोज्झितेव
तरिरिन्दु-कला चकास्ति ।। [२२*] मुक्ताः कर्प्पास-वी(बी)-
जैर्म्मरकत-शकलं शाक-पत्त्रैरलावू(बू)-पुष्पै रूप्याणि रत्नं
परिणति-भिदुरैः कुक्षिभिर्द्दाडिमानाम् । कुष्माण्डी-वल्लरीणां वि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२२. कसित-कुसुमैः काञ्चनं नागरीभिः [२३*] शिक्ष्यन्ते यत्-प्रसादाद्ब(द्ब)हु-विभव-जुषां योषितः श्रोत्रियाणाम् ।। [२४*] अश्रान्त-विश्राणित-यज्ञ-यूप-स्तम्भावलीं द्रागवलम्व(म्ब)मानः । यस्यानुभावाद्भुवि सञ्चचार काल-क्रमादेक-पदो[ऽ*]पि धर्म्मः ।।[२४*] मेरोरा-

२३. हत-वैरि-सङ्कुल-तटादाहूय यज्वा[ऽ*]मरान् व्यत्यासं पुर-वासिनामकृत यः स्वर्गस्य मर्त्त्यस्य च । उत्तुङ्गैः सुर-सद्मभिश्च विततैस्तल्लैश्च शेषीकृतं चक्रे येन परस्परस्य च समं द्यावा-पृथिव्योर्व्वपुः ।।[२५*] दिक्शाखा-मूल-काण्डं गगन-तल-म-

२४. हाम्भोधि-मध्यान्तरीयं भानोः प्राक्प्रत्यगद्रि-स्थिति-मिलदुदयास्तस्य मध्याह्न-शैलम् । आलम्व(म्ब)-स्तम्भमेकं त्रिभुवन-भवनस्यैक-शेषं गिरीणां स प्रद्युम्नेश्वरस्य व्यधित वसुमती-वासवः सौधमुच्चैः ।।[२६*] प्रासादेन तवामुनैव हरितामध्वा

२५. निरुद्धो मुधा भानो[ऽ*]द्यापि कृतो[ऽ*]स्ति दक्षिण-दिशः कोणान्तवासी मुनिः । अन्यामुच्छ-पथो [ऽ*]यमृच्छतु दिशं विन्ध्यो [ऽ*]प्यसौ वर्द्धतां यावच्छक्ति तथा[ऽ*]पि नास्य पदवीं सौधस्य गाहिष्यते ।।[२७*]स्रष्टा यदि स्रक्ष्यति भूमि-चक्रे सुमेरु-मृत्-पिण्ड-विवर्त्तनाभिः ।

२६. तदा घटः स्यादुपमानमस्मिन् सुवर्ण्ण-कुम्भस्य तदर्घितस्य ।।[२८*]वि(बि)लेशय - विलासिनी-मुकुट-कोटि-रत्नाङ्कुर-स्फुरत्-किरण-मञ्जरी-च्छुरित-वारि-पूरं पुरः । चखान पुर-वैरिणः स जल-मग्न-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२७. पौराङ्गना-स्तनैण-मद-सौरभोच्चलित-चञ्चरीकं सरः ।।[२९*] उच्चित्राणि दिगम्व(म्ब)रस्य वसनान्यर्द्धाङ्गना-स्वामिनो रत्नालंकृतिभिर्व्विशेषित-वपुः-शोभाः शतं सुभ्रुवः । पौराढ्याश्च पुरीः श्मशान-वसतेर्भिक्षा-भु-

२८. जो[ऽ*]स्याक्षयां लक्ष्मीं सव्यतनोद्दरिद्र-भरणे सुज्ञो हि सेनान्वयः ।। [३०*]चित्र-क्षौमेभ-चर्म्मा हृदय-विनिहित-स्थूल-हारोरगेन्द्रः श्रीखण्ड-क्षोद-भस्मा कर-मिलित-महा-नील-रत्नाक्षमालः । वेषस्तेनास्य तेने गरुड़-मणि-लता-गोन-

२९. सः कान्त-मुक्ता-नेपथ्य-न्त्रस्थिरिच्छा-समुचित-रचनः कल्प-कापालिकस्य ।।[३१*]वा(बा)होः केलिभिरद्वितीय-कनक-च्छत्त्रं धरित्री-तलं कुर्व्वाणेन न पर्यशेषि किमपि स्वैनेव तेनेहितम् । किन्तस्मै दिशतु प्रसन्न-वरदो [ऽ*]प्यर्द्धेन्दु-मौलिः

३०. परं स्वं सायुज्यमसावपश्चिम-दशा-शेषे पुनर्द्दास्यति ।।[३२*] प्रस्तोतुमस्य परितश्चरितं क्षमः स्यात् प्राचेतसो यदि पराशर-नन्दनो वा । तत्-कीर्त्ति-पूर-सुरसिन्धु-विगाहनेन वाचः पवित्र-यितुमत्र तु नः प्रयत्नः ।। [३३*] यावद्वास्तोस्पति-

३१. पूर-धुनी भुर्भुवः-स्वः पुनीते यावच्चान्द्री कलयति कलोत्तंसतां भूत-भत्तु(र्त्तुः) । यावच्चेतो गमयति सतां श्वेतिमानं त्रि-वेदो तावत्तासां रचयतु सखी तत्तदेवास्य कीर्त्तिः ।। [३४*] निर्णिक्त-सेन-कुल-भूपति-मौक्तिकानामग्रन्थिल-ग्र-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३२. थन-पक्ष्मल-सूत्र-वल्लिः । एषा कवेः पद-पदार्थ-विचार-शुद्ध-
वु(बु)द्धेरुमापतिधरस्य कृतिः प्रशस्तिः ॥ [३५*]
धर्म्म-प्रणप्ता मनदास-नप्ता वृ(बृ)हस्पतेः सूनुरिमां
प्रशस्त्तिं [*।] चखान वारेन्द्रक-शिल्पि-गोष्ठी-चूडामणी राणक
शूलपाणिः ॥ [३६*]

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	प्राचलित	प्रचलित
४	६	विजित	विजिते
१२	३	वढीते से लेकर नोट १ को छोड़कर शेष पृष्ठ १२ तथा पृष्ठ १३ को पृष्ठ ६ के अन्त में पढ़ें।	
१७	५	समयं	सयमं
१८	६	शयाय	अयाय
२५	५	सर्वपाषडान्	सर्वपाषण्डान्
२५	११	मञते	मन्यते
२६	३	उसघातो	उपघातो
३०	७	थमं	धमं
३१	१३	अर्थस्थ	अर्थस्य
३२	३	रोपरा	टोपरा
३७	४	कल्याणगमेव	कल्याणमेव
३७	१४	°यिष्पामि	°यिष्यामि
४५	४	चवम्	एवम्
८२	७	14	140
१००	१७	षरीवाह	परीवाह
१०१	१८	मेदे	भेदे
१०२	५	करुण्येन	कारुण्येन
१७३	१२	°प्रतमां	°प्रतिमां
१८२	१३	कुलपगीत	कुलोपगीत
१८४	११	°दौत्रहस्यि	°दौहित्रस्य
१८४	१३	°सृहीतो	°गृहीतो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९७	१	°गणयमाना	°गणयमान
२०८	३	तटा	तटो
२२०	१०	शत	शते
२३४	१	श्रादेशात्स्फीत-शील-श्रु त-धवल-धि पाठ पंक्ति के श्रन्त में जोड़ें।	
२३४	१४	पर—	पार—
२४२	२	(ध)	(धू)
२४२	१५	श्लाघवता°	श्लाघावता°
२४३	७	श्रीम°	श्रीमा°
२५७	६	-हृदया-	-हृदय-
२५७	८	शरणगत°	शरणागत°
२५८	४	(य)	(त्य)
२६६	१०	°रात्मश्च	°रात्मनश्च
२७३	७	-भाक-	-भार-
२७५	८	शतेपु	शतेषु
२७६	१३	°श्वक्रचधर	°श्चचक्रधर
२७८	१३	मूत्त	मूर्त्तं
२७९	५	पंक्ति के श्रारम्भ में जोड़ें—श्रीशार्दूलनृपः।	
२८७	१७	-व्वयस्थापन-	-व्यवस्थापन-
२९९	१०	-रिपो	-रिपौ
३०२	१	कृपण-	कृपाण-
३०२	१३	-द्वरेफो	-द्विरेफो
३०४	१३	व्यधापि	व्यधायि
३१३	७	(लमं)	(लम्)
३१५	१९	धूमैम्मृग-	धूमैर्म्मृग-
३१८	२	श्रोत्रियाणास्	श्रोत्रियाणाम्
३१९	१७	पूर-	पुर-

—०—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गिरनार शिला अभिलेख १-२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गिरनार शिला अभिलेख ३-४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

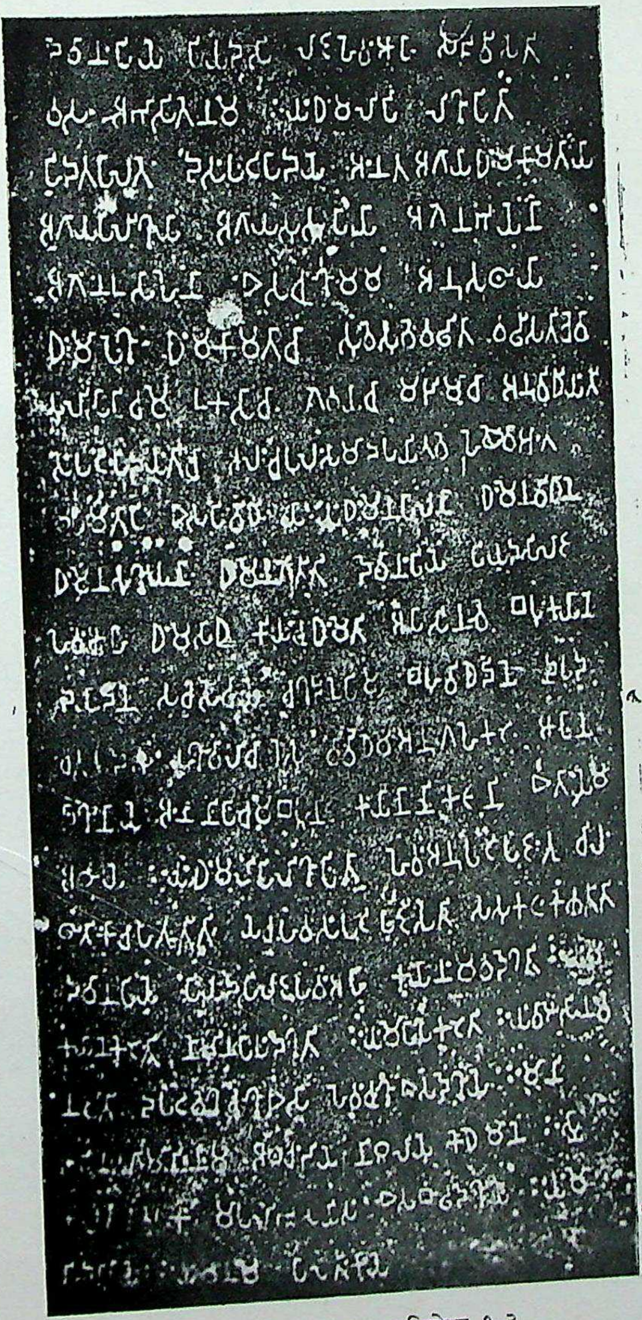

दिल्ली-टोपरा स्तम्भ अभिलेख १-३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

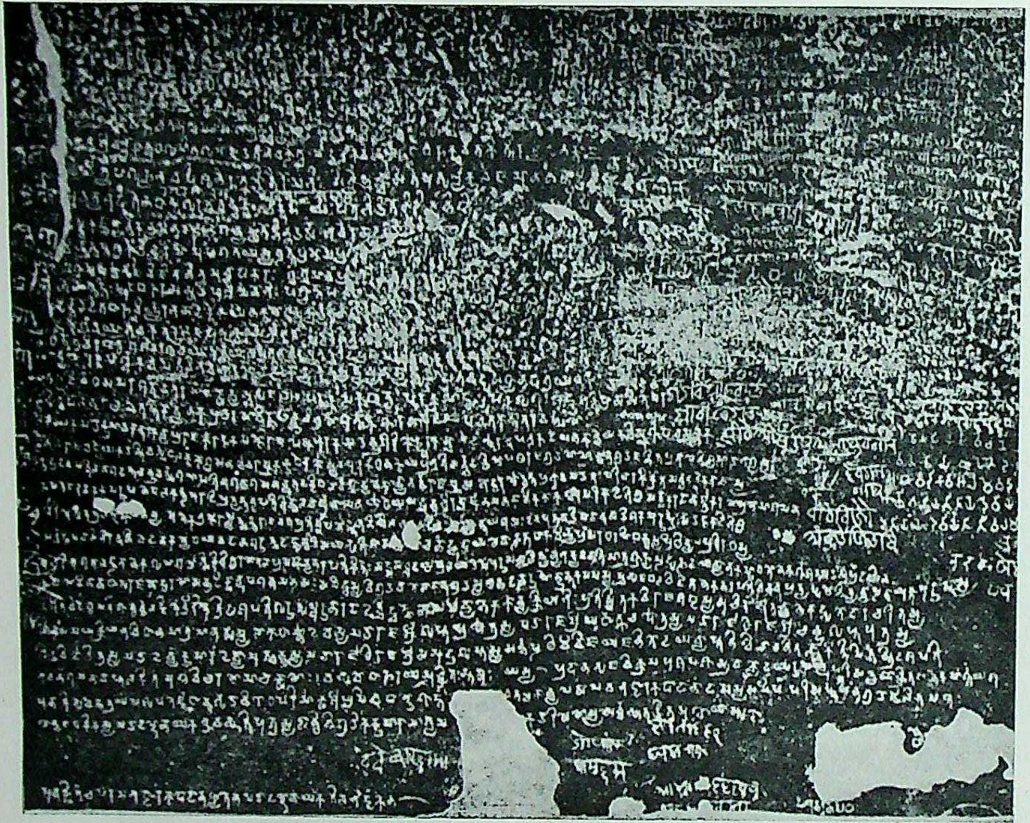

समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

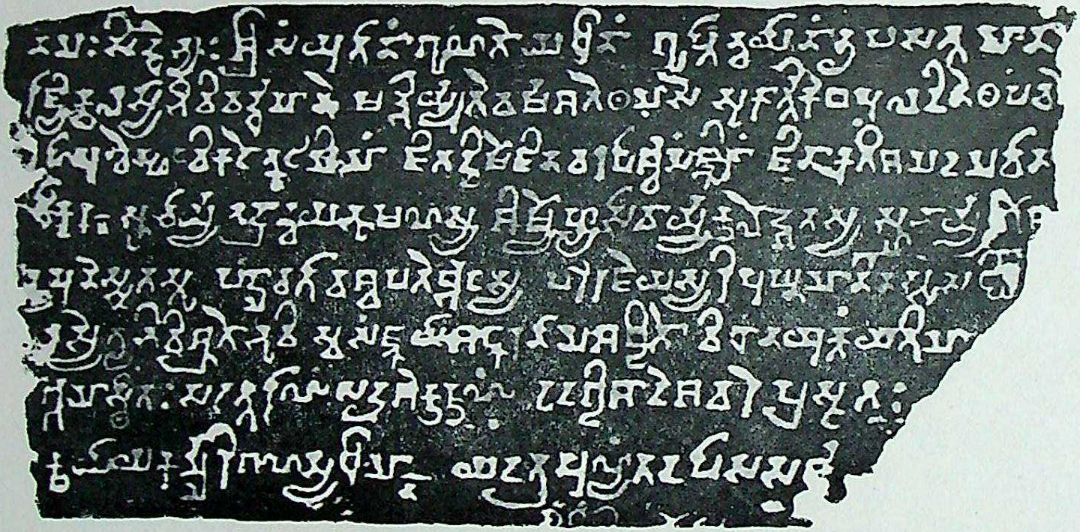

कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन उदयगिरि गुहा अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

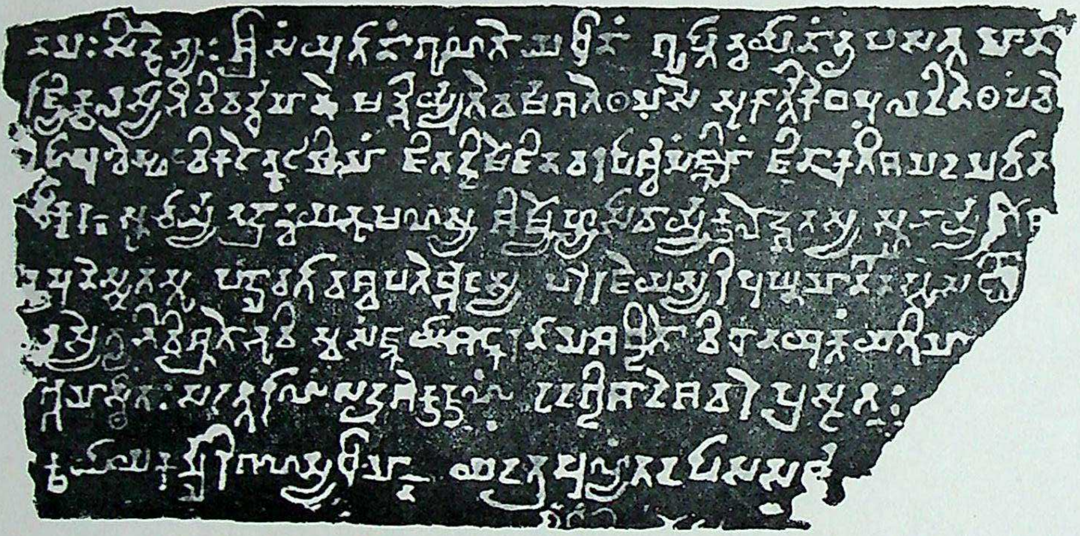

कुमारगुप्त (प्रथम)-कालीन उदयगिरि गुहा अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

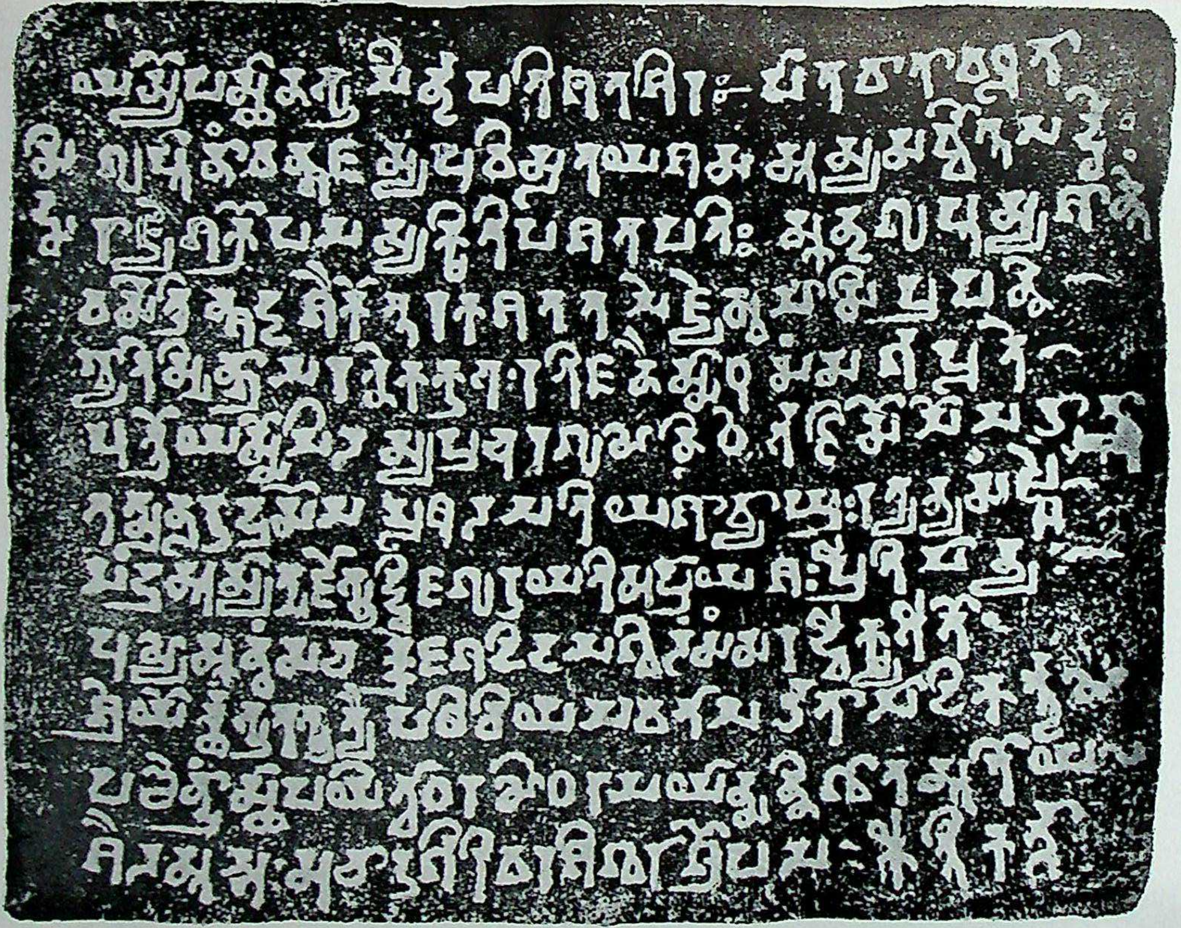

स्कन्दगुप्त-कालीन कहाऊँ स्तम्भ अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

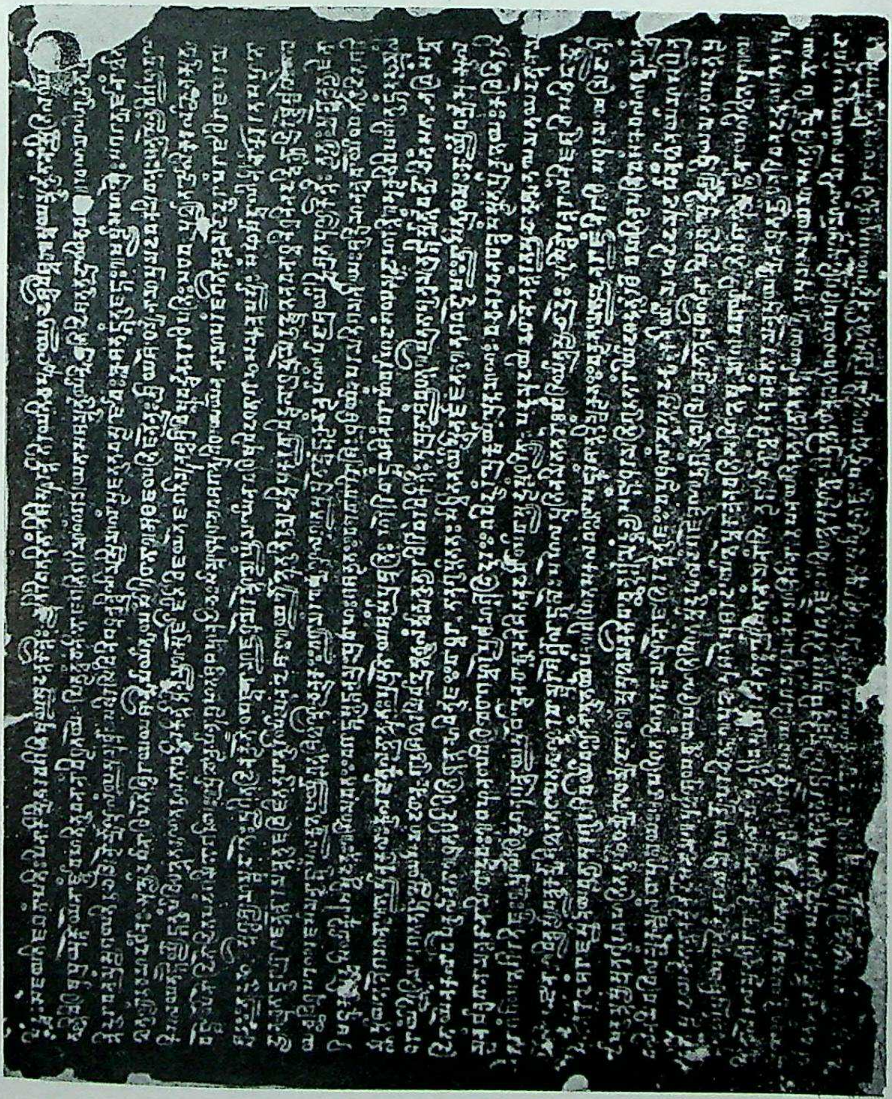

यशोधर्मन्-कालीन मन्दसौर अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

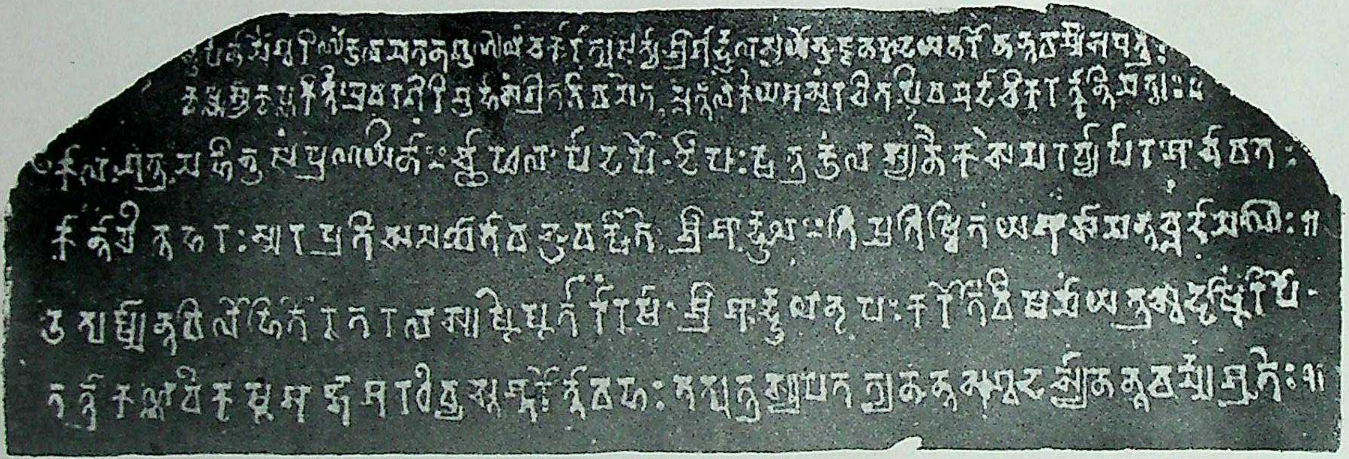

अनन्तवर्मन् का बराबर गुहा अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनन्तवर्मन् का नागार्जुनी (उत्तरी) गुहा अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

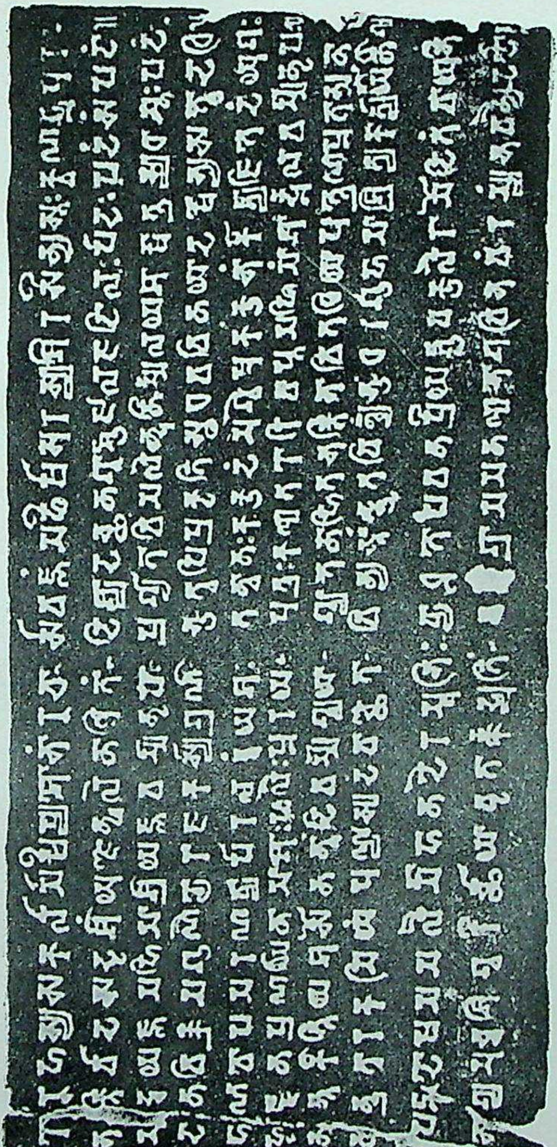

अनन्तवर्मन् का नागार्जुनी (दक्षिणी) गुहा अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

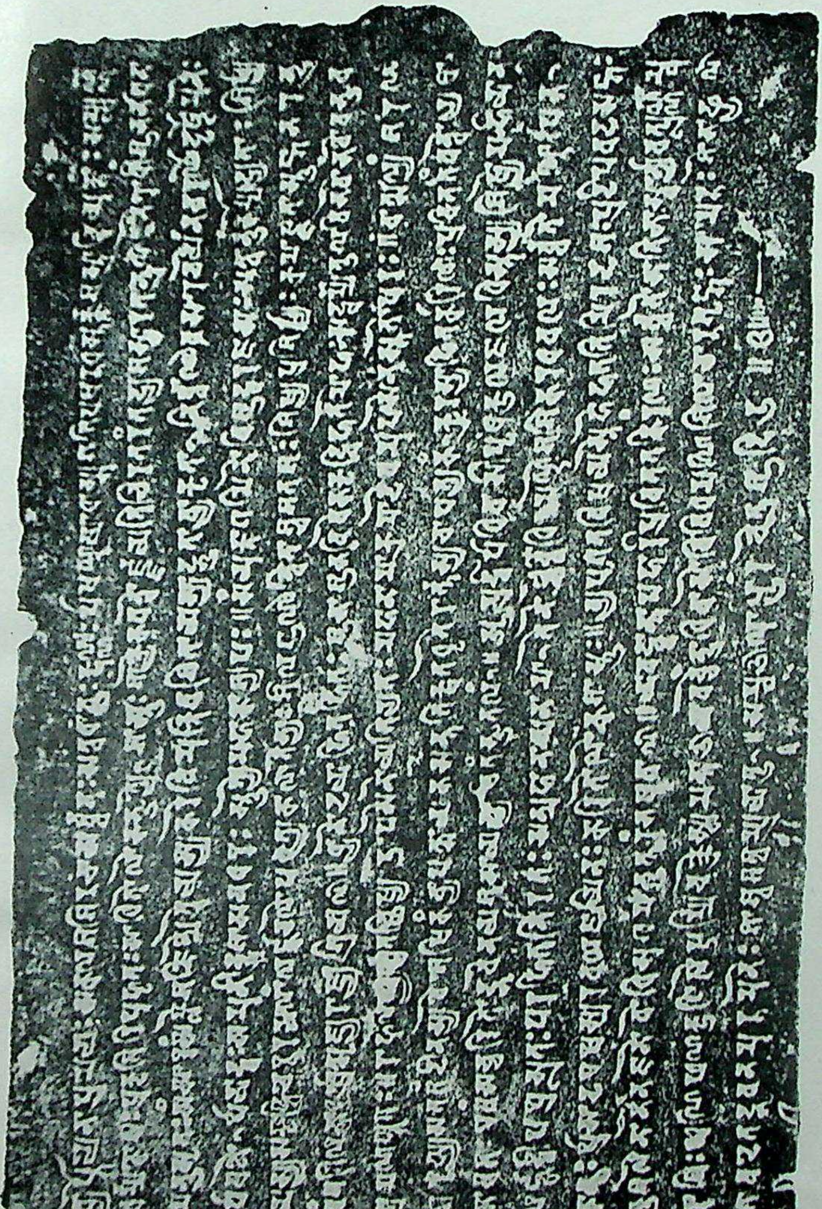

महानामन् का बोध-गया अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

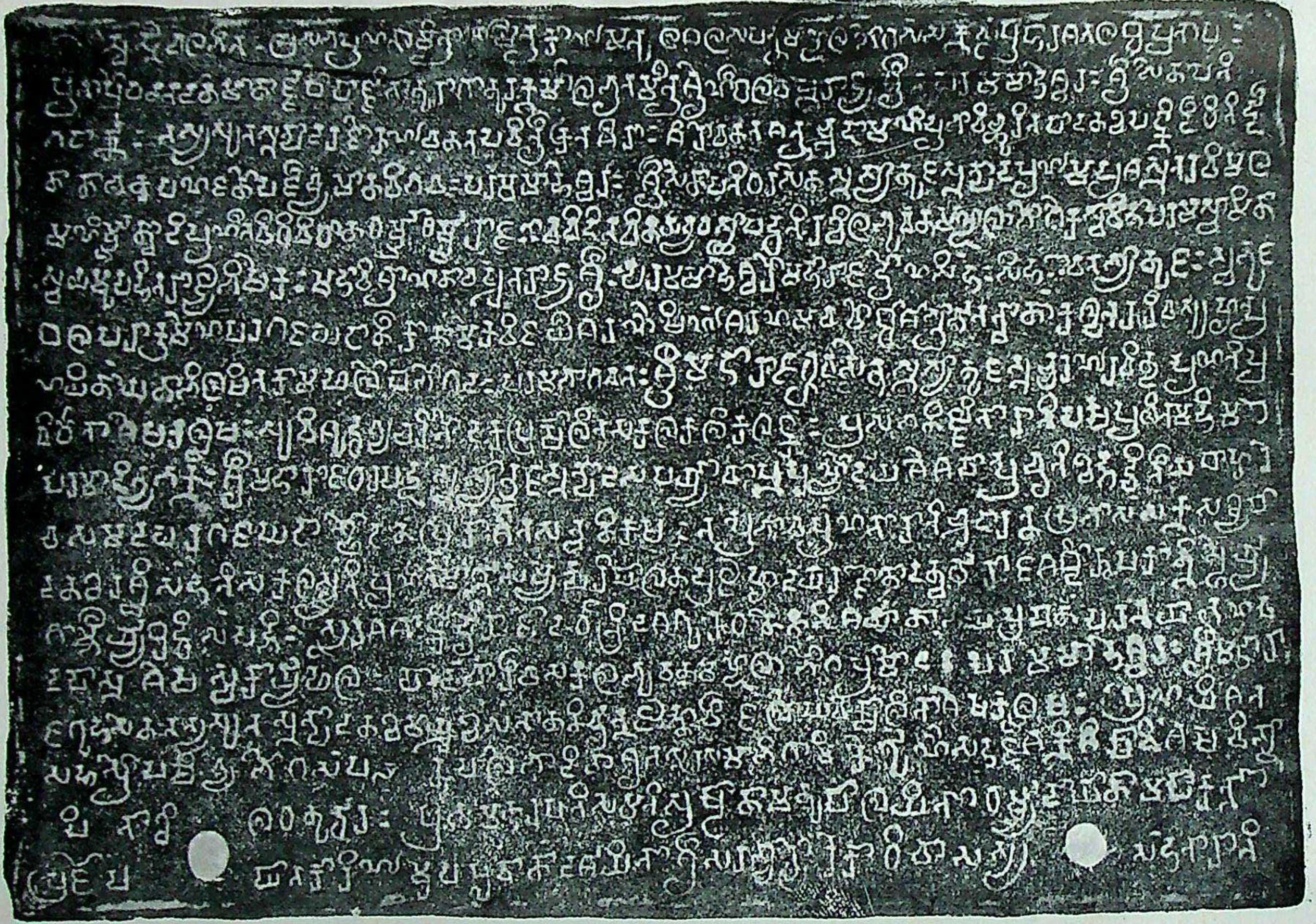

धरसेन (द्वितीय) का मालिया ताम्र-पट्ट (१) अभिलेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh